हिन्दी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत

शोध-प्रबन्ध



लेखक

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद शर्मा

एम० ए०, पी-एच० डी०

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रकाशक :

[illegible] एण्ड कम्पनी,
४, बाई-का-बाग,
इलाहाबाद-२

वितरक :

विश्वविद्यालय प्रकाशन
विशालाक्षी,
चौक, वाराणसी

मूल्य : १८ रुपये

मुद्रक :

[illegible] मुद्रणालय,
इलाहाबाद-३

प्राक्कथन

प्रस्तुत प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य

कहानी ने आधुनिक युग की सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा का गौरव प्राप्त किया है। उसकी व्यापक लोकप्रियता के प्रमाण विभिन्न क्षेत्रों में दृष्टिगत हो रहे हैं। एक ओर समीक्षा और शोध के स्तर पर उसके मूल्यों और उपलब्धियों का परीक्षण विद्वज्जन, अनुसंधित्सु और समीक्षक वर्ग द्वारा हो रहा है तो दूसरी ओर सामान्य कोटि के पाठक उसके माध्यम से मानसिक परितृप्ति प्राप्त कर रहे हैं। कहानियों की पत्रिकाएँ स्वतन्त्र रूप से जनरुचि का नेतृत्व कर रही हैं। साहित्यिक पत्रों में ही नहीं राजनीतिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन-प्रधान पत्रों में भी कहानियों को स्थान प्राप्त होने लगा है। कहानी में मानव व्यक्तित्व का विश्लेषण पात्रों के विविध कार्यों, भावों, क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं द्वारा होता है। बिना पात्र के कहानी की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि उसके व्यक्तित्व के चतुर्दिक् जीवन के समस्त कार्य-व्यापार का प्रसार होता है। अतएव कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व की अवतारणा और उसका विश्लेषण अत्यावश्यक प्रक्रिया है। कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व में पाठक की रुचि को विकसित करने के लिये उनके आकार-प्रकार का वर्णन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता वरन् व्यक्तित्व के अन्तर्निहित तत्वों का सांकेतिक विश्लेषण भी करता है। यह सम्भव नहीं है कि कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व की उपेक्षा कर कहानी रचना के साथ न्याय कर सके।

हिन्दी कहानी-साहित्य पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से कई उल्लेखनीय दशकों को पार करता हुआ आज 'सचेतन कहानी' की सीमा तक पहुँच चुका है। उसमें पात्रों के व्यक्तित्व के विविध रूप विभिन्न विधियों से विश्लेषित होते रहे हैं। कहानी के दृश्य-फलक पर इतने प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व प्रकाशित हुए हैं जितने हमारे जीवन को प्रतिबिम्बित और रूपायित करने के लिये अपेक्षित ही नहीं पर्याप्त भी हैं। बाह्य स्वरूप के वर्णन तथा मनोभावों और वृत्तियों की व्याख्या द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करता हुआ कहानीकार युगानुकूल रचनाएँ प्रस्तुत करता रहा है। प्रत्येक काल में पात्र का महत्त्व कहानी में किसी न किसी रूप में रहा है। जहाँ कलेवर का स्वरूप स्थूल है वहाँ बाह्य स्वरूप के वर्णन पर विशेष बल

किया गया है और जहाँ कहानी में व्यक्तित्व के सूक्ष्म विश्लेषण को प्रधानता दी गयी है वहाँ उसके आन्तरिक स्वरूप को अंकित किया गया है।

कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को किस प्रकार विश्लेषित किया जाता है और हिन्दी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रक्रिया का स्वरूप क्या है, इसकी ओर समीक्षकों और शोध-कर्ताओं का ध्यान आकृष्ट नहीं हो सका है। यह आश्चर्य एवं खेद का विषय है। व्यक्तित्व को मानव की अन्यतम उपलब्धि एवं सर्वोत्कृष्ट विशेषता समझकर पाश्चात्य देशों में मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस सम्बन्ध में असंख्य प्रयोग एवं परीक्षण हुए हैं। पाश्चात्य साहित्य में व्यक्तित्व से सम्बन्धित विशिष्ट ग्रन्थ उपलब्ध हैं। हिन्दी समीक्षा-जगत् में कहानियों में प्राप्त व्यक्तित्व-विश्लेषण को विधिवत् समझने और शोध-स्तर पर उसकी विविध प्रवृत्तियों का विवेचन करने का प्रयास अब तक नहीं हुआ है। सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा० हरदेव बाहरी एम० ए०, डी० लिट्० की प्रेरणा से इस शोध-प्रबन्ध के लेखक को उद्देश्य विशेष से हिन्दी की लगभग तीन हजार कहानियों को पढ़ने एवं उनके सार-संक्षेप को लिखने की आवश्यकता पड़ी थी। लेखक को अनुभव हुआ कि हिन्दी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण की एक महत्त्वपूर्ण और क्रमशः विकसित परम्परा है जिसमें दर्शन, मनोविज्ञान एवं संस्कृति का समन्वित रूप निहित है। विभिन्न युगों में हिन्दी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के क्षेत्र और क्षमता का विस्तार होता रहा है। देश, समाज और व्यक्ति की समस्याओं का वास्तविक स्वरूप और उनके समाधान के प्रयत्न पात्रों के व्यक्तित्व में साकार होते रहे हैं। लेखक ने निष्ठापूर्वक प्रयास किया है कि व्यक्तित्व-विश्लेषण से सम्बन्धित हिन्दी में प्रामाणिक रचनाएं उसे प्राप्त हों और वह कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण एवं विश्लेषण की गतिविधि का ज्ञान प्राप्त कर अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि कर सके। कहानियों की शिल्पविधि,[1] विकासक्रम[2] और रचना-प्रक्रिया[3] पर कई उत्कृष्ट शोध-ग्रन्थ प्राप्त हुए। कहानी-रचना विधान पर विचारपूर्ण पुस्तकें प्राप्त हुईं। परन्तु पात्रों के व्यक्तित्व को परिप्रेक्ष्य में रखकर उनके ऐतिहासिक और तात्त्विक विवेचन से सम्बद्ध एक भी ग्रन्थ हिन्दी में अब तक प्राप्त न हो सका।

---

१. डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, "हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास" (शोधप्रबन्ध), (प्रकाशित — साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, प्रयाग), सन् १९५२।

२. डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा, "हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन," (शोध-प्रबन्ध — भाग १-२), (प्रकाशित — सरस्वती पुस्तक सदन, मोतीकटरा, आगरा)।

३. डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव, "प्राचीन एवं नवीन हिन्दी कहानियों की रचना-प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन," (शोधप्रबन्ध, शोध निर्देशक महोदय से प्राप्त)।

आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य में मनोविज्ञान का सम्बन्ध जोड़ कर पात्रों के चरित्र पर कुछ ही लेखकों के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण किन्तु अधूरी और संक्षिप्त बातें कही गयीं। हिन्दी कहानियों के समग्र विकास को ध्यान में रखकर विभिन्न युगों की रचना-प्रवृत्तियों को देखने और उनमें पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की स्थितियों की समीक्षा करने का प्रयत्न अब तक किसी भी आलोचक अथवा शोधकर्ता द्वारा नहीं हुआ है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हिन्दी कहानियों के विकास-क्रम के आधार पर विभिन्न दशकों में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप, विशेष प्रवृत्तियों और उपलब्धियों के साथ ही उनकी सीमाओं पर भी मनोविज्ञान-सम्मत विवेचन उपस्थित करने का एक ऐसा विनम्र प्रयास है जिसकी अपनी सीमाएँ भी हैं। कई सहस्र हिन्दी कहानियों का अध्ययन, मनन और उनमें प्राप्त पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण को समझना तथा वैज्ञानिक विचार पद्धति पर उसकी व्यवस्थित समीक्षा प्रस्तुत करना बड़ा ही कठिन कार्य है। एक शोध-प्रबन्ध के द्वारा कोई भी समस्त हिन्दी कहानी साहित्य में वर्णित सभी प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के सम्यक् अनुशीलन एवं सर्वाङ्गपूर्ण विवेचन का दावा नहीं कर सकता। इस शोधकर्त्ता का उद्देश्य सुधी विचारकों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट करना है कि हिन्दी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण को सुनियोजित और क्रमबद्ध रूप में देखने, समझने और सुविचारित आलोचना-पद्धति के आधार पर परखने की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। इस उद्देश्य की महत्ता समझी जाय और इस दिशा में उत्कृष्ट उपयोगी कार्य हो, यही शोधकर्ता का विनम्र निवेदन है और इस निवेदन की संपूर्ति ही उसकी सफलता होगी।

प्रबन्ध-योजना

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को विषय विवेचन की सुविधा की दृष्टि से कुछ अध्यायों में विभक्त कर दिया गया है। प्रथम अध्याय में कहानी की महत्ता पर विचार किया गया है। कहानी की प्रमुख परिभाषाओं को विवेच्य विषय के सन्दर्भ में देखने का प्रयास हुआ है। हिन्दी के विद्वानों की कहानी सम्बन्धी विचारधारा को व्यक्तित्व-विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। व्यक्तित्व के लक्षण, स्वरूप एवं विशेषताओं पर पाश्चात्य मनोविज्ञान-विशारदों और विचारकों ने जो महत्त्वपूर्ण विचार तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं उनके आधार पर व्यक्तित्व के तत्त्वों का विश्लेषण भी इस अध्याय में किया गया है।

द्वितीय अध्याय में कहानी और अन्य पात्र-प्रधान साहित्यिक विधाओं में उप-

---

१. डा० देवराज उपाध्याय, "आधुनिक हिन्दी कथा-सहित्य और मनोविज्ञान," (शोध प्रबन्ध- १९५६) (प्रकाशित साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, प्रयाग)।

कहानी व्यक्तित्व-विश्लेषण का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है। कहानी के पात्रों को मुख्य वर्गों में विभक्त कर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं और सीमाओं का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित और विश्लेषित करने की जो शक्ति और सीमाएँ हैं उन पर भी तुलनात्मक विवेचन के अन्तर्गत विचार हुआ है।

तीसरे अध्याय में व्यक्तित्व-विश्लेषण के उन सभी साधनों और पद्धतियों का विवेचन हुआ है जो कहानीकार द्वारा प्रयुक्त होते हैं। साहित्य और मनोविज्ञान ने कहानीकार को पात्रों के बाह्य स्वरूप और आन्तरिक वृत्तियों के वर्णन तथा विश्लेषण के जो साधन प्रदान किये हैं उनका प्रयोग किस प्रकार होना चाहिए और किन सतर्कताओं को ध्यान में रख कर कहानी में पात्रों की अवतारणा करनी चाहिए — इन बातों पर कुछ विस्तारपूर्वक इस प्रकरण में विचार किया गया है।

चौथे अध्याय में हिन्दी कहानी की पूर्वपीठिका में उपलब्ध साहित्य पर विचार हुआ है। तत्कालीन कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण की दृष्टि से सामाजिक एवं नैतिक मान्यताओं को संक्षेप में देखने का प्रयास है। कहानी के आविर्भाव और विस्तार के लिये पृष्ठभूमि के रूप में इस युग की देन का मूल्यांकन किया गया है।

पाँचवें अध्याय में हिन्दी कहानियों के प्रारंभिक युग (१९०१ से १९१०) की व्यक्तित्व विश्लेषण सम्बन्धी विशेषताओं की विवेचना है। अनुवादों के माध्यम से जो प्रेरणा हिन्दी कहानीकारों को प्राप्त हुई और पात्रों के सृजन में उनका उपयोग जिस प्रकार हुआ उसका संक्षेप में उल्लेख किया गया है। मौलिक हिन्दी कहानियों की परम्परा के आविर्भाव और प्रसार का परिचय देते हुए प्रमुख कहानीकारों की रचनाओं में व्यक्तित्व-विश्लेषण की स्थितियों को देखने और उनके महत्व को व्यक्त करने की चेष्टा की गयी है।

छठे अध्याय में विकास युग (१९११ से १९३६) की कहानियों में प्राप्त व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप पर कुछ विस्तार से विचार किया गया है। प्रेमचन्द और प्रसाद ने इस काल को अपनी रचनाओं से समृद्ध और गौरवान्वित किया है। उनकी रचनाओं में अनेक वर्गों के पात्रों के व्यक्तित्व की अवतारणा हुई है। इनकी कहानियों में अधिकतर पात्रों के कार्य, विचार और व्यवहार को भावुकता और आदर्श के आधार पर निरूपित और विश्लेषित किया गया है। इस युग के प्रारम्भ में आदर्शवादिता की प्रधानता रही है परन्तु अन्त तक पहुँचते-पहुँचते अधिकांश कहानीकारों में यथार्थ चित्रण का आग्रह बढ़ गया है। इन प्रवृत्तियों ने व्यक्तित्व-विश्लेषण की दिशा तथा शैलियों में परिवर्तन किये हैं। इन पर इस अध्याय में विचार हुआ है।

सातवें अध्याय में उत्कर्षकाल (१९३७-४७) में उपलब्ध व्यक्तित्व-विश्लेषण का

विवेचन प्रस्तुत करता है। मनोविज्ञान, दर्शन, साम्यवाद और यौनवाद ने हिन्दी कहानी के मंच पर अन्तर्मुखी पात्रों को प्रतिष्ठित किया। व्यक्तित्व के आंतरिक स्वरूप की मनोविज्ञान-सम्मत व्याख्या कहानी को तथ्यपरकता और विश्वसनीयता प्रदान करने लगी। फ्रायड और मार्क्स के विचारों से प्रभावित होकर जो यौनवादी और यथार्थवादी कहानियाँ लिखी गयीं उनकी प्रवृत्तियों का इस प्रकरण में विवेचन किया गया है। पात्रों की क्रियाओं प्रतिक्रियाओं को इस काल की कहानियों में किस प्रकार व्यक्त किया गया — इस पर भी विचार हुआ है।

आठवाँ अध्याय स्वातंत्र्योत्तर काल (१९४८-६६) की प्रमुख कहानियों में उपलब्ध व्यक्तित्व-विश्लेषण को विभिन्न रचनाओं के आधार पर उपस्थित करता है। देश और समाज के समक्ष स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नयी-नयी समस्याएँ आयी हैं। उनके अंक में उभरने वाले पात्रों के विचारों और कार्यों के द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण के क्षेत्र का विस्तार हुआ है। इस अध्याय में नगरबोध और सामयिक समस्याओं से सम्बद्ध कहानियों के उदाहरण प्रस्तुत कर विवेच्य विषय को प्रमाण और तर्क का आधार दिया गया है। आधुनिकतम हिन्दी कहानी में कुण्ठा और विषाद के अंकन द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण की जो एकांगी चेष्टा हो रही है उस पर भी संक्षेप में विचार किया गया है।

और अन्त में प्रस्तुत है उपसंहार। इसमें सम्पूर्ण चर्चित विषय को एक-सूत्रता तथा सुसम्बद्धता देने का प्रयास है। व्यक्तित्व-विश्लेषण के महत्व की स्थापना की गयी है तथा उसके प्रकाशपूर्ण भविष्य के सम्बन्ध में आस्था प्रकट की गयी है।

स्थापनाएँ और संकेत

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध निम्नलिखित स्थापनाओं को इस विश्वास के साथ उपस्थित करता है कि उनके द्वारा हिन्दी कहानी-साहित्य में उपलब्ध व्यक्तित्व-विश्लेषण सम्बन्धी विचारों के वैज्ञानिक परीक्षण और विवेचन का मार्ग प्रशस्त होगा, साथ ही हिन्दी कहानी की इस दिशा की उपलब्धियों का सही मूल्यांकन होगा :

(१) कहानी इस युग की सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा है और इस लोकप्रियता का कारण मानव है। कहानी के पात्र के रूप में उसके व्यक्तित्व के विश्लेषण द्वारा कहानीकार अपनी रचना को सप्राणता प्रदान करता है।

(२) कहानीकार अपनी सीमाओं में रहते हुए भी सक्षम एवं विश्वसनीय व्यक्तित्व विश्लेषणकर्त्ता है।

(३) व्यक्तित्व का कहानी और मनोविज्ञान से समान रूप से अटूट सम्बन्ध है।

(४) पात्र के व्यक्तित्व, उसके समस्त विचारों, व्यवहारों, क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं से कहानी का अनिवार्य सम्बन्ध है।

(५) कुशल कहानीकार मनोविज्ञान के निष्कर्षों का उपयोग कर अपने पात्रों के व्यक्तित्व को सहज और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करता है।

(६) हिन्दी कहानी-साहित्य के प्रारम्भिक काल से अब तक व्यक्तित्व-विश्लेषण की क्रिया अपने विकास-पथ पर गतिशील है।

(७) प्रसाद काल में व्यक्तित्व-विश्लेषण व्यापक रहा है।

(८) प्रेमचन्द काल में व्यक्तित्व-विश्लेषण में व्यापकता है और गहराई भी।

(९) स्वातन्त्र्योत्तर काल में व्यक्तित्व-विश्लेषण में व्यापकता, गहराई और सूक्ष्मता तीनों विशेषताएँ विद्यमान हैं।

(१०) आधुनिकतम कहानी में कुण्ठा, विषाद और [illegible] के नाम पर एकांगी व्यक्तित्व-विश्लेषण को प्रश्रय दिया जा रहा है।

(११) कहानी के द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण के आयाम के विस्तृत होने की अनन्त सम्भावनाएँ हैं।

उपर्युक्त स्थापनाओं के साथ प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को शोधकर्त्ता पूर्ण विनम्रता सहित हिन्दी साहित्य को, उससे सम्बद्ध समस्त विचारक जगत् को अर्पित करता है।

आभार-प्रदर्शन और कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रबन्ध प्रस्तुतकर्त्ता आभारी है डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम', एम० ए०, डी० लिट्० के प्रति, जिन्होंने इस विषय को शोधकार्य के लिये उपयुक्त ही नहीं बताया वरन् इसकी स्वीकृति भी दिलायी। स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने विषय के प्रारूप को ध्यान से देखकर इसमें महत्त्वपूर्ण संशोधन किये और बहुमूल्य सुझाव दिये। इनके प्रति हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा समर्पित है। आंग्ल भाषा के विद्वान् प्रो० सदानन्द दुबे के सान्निध्य एवं सद्भाव से भी बल प्राप्त हुआ है। वे स्नेह और धन्यवाद के पात्र हैं। श्री [illegible] मिश्र एवं श्री रसिक बिहारी श्रीवास्तव के सहयोग के बिना यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता, अतएव इस उद्योग की पूर्ति का समस्त श्रेय [illegible] है। आदरणीय डा० रामचन्द्र तिवारी ने बहुमूल्य संकेतों और [illegible] से [illegible] को गतिशील बनाया है। उनके प्रति शोधकर्त्ता सादर [illegible] है।

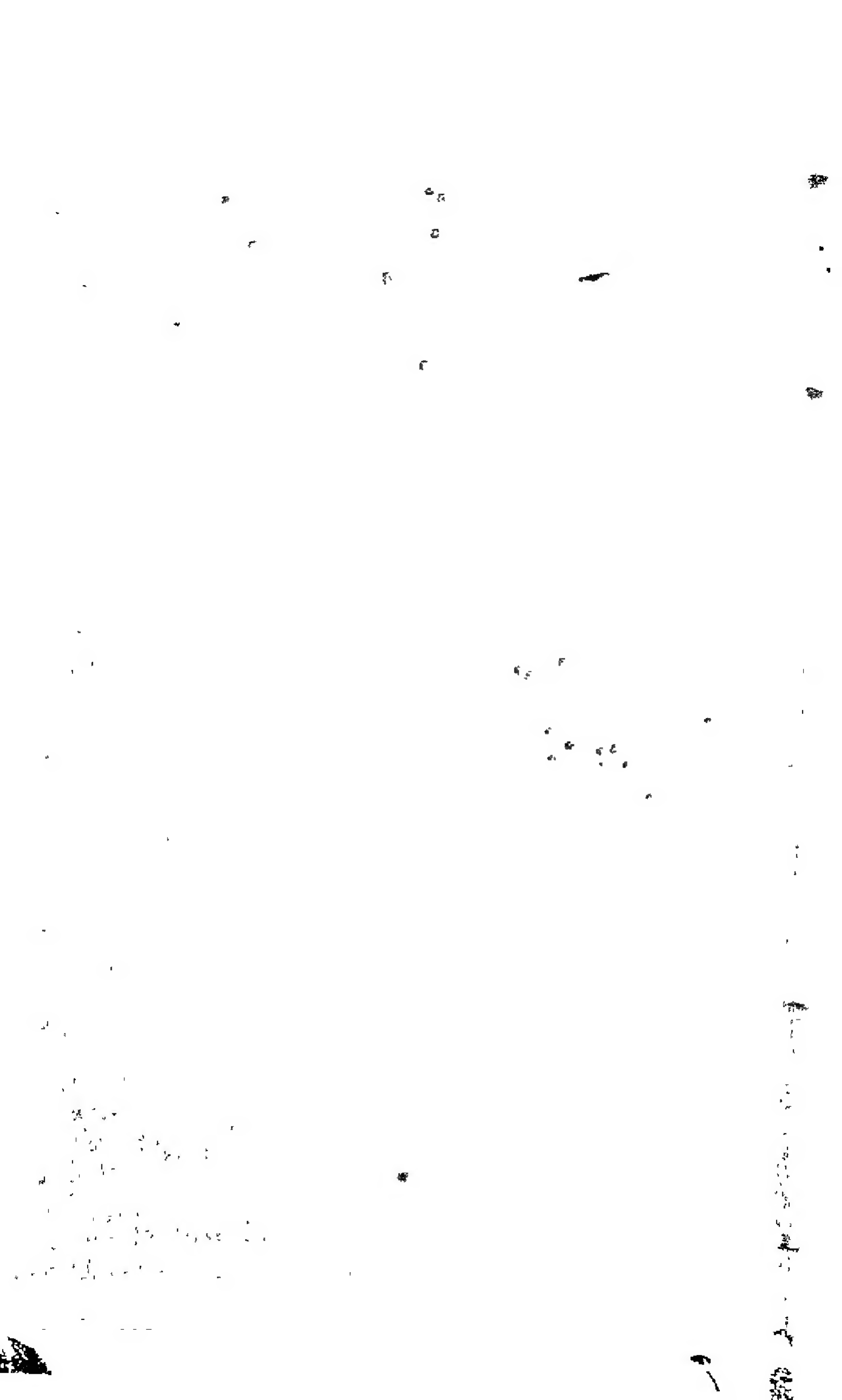
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के पुस्तकालय से शोधकर्त्ता को उल्लेखनीय सहायता प्राप्त हुई है। गोरखपुर विश्ववि-

जय से मनोविज्ञान सम्बन्धी विपुल सामग्री उपलब्ध हुई है। अतएव प्रबंध प्रस्तुतकर्ता इनके व्यवस्थापकों के प्रति आभार प्रदर्शन आवश्यक समझता है।

परमादरणीय गुरुवर डा० भोलानाथ तिवारी ने कार्यव्यस्तता, अस्वस्थता और विविध व्यवधानों के बीच अपना अमूल्य समय देकर सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को ध्यान से देखा, संशोधित किया और प्रस्तुत आकार में आने योग्य बना दिया है। उनकी प्रेरणा और सहायता से ही यह कार्य पूर्ण हुआ है। प्रबन्ध प्रस्तुतकर्ता उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता को व्यक्त करता हुआ उनके मंगलमय आशीष हेतु विनम्र निवेदन प्रस्तुत करता है।

शोध-ग्रन्थ का प्रकाशन वर्तमान दशक में एक साहसपूर्ण और दुष्कर प्रयास बन चुका है। लेखक अत्यधिक उपकृत और आभारी है विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के संचालक श्री पुरुषोत्तम दास जी मोदी तथा भार्गवप्रेस, इलाहाबाद के स्वत्वाधिकारी श्री द्वारका नाथ जी भार्गव के प्रति। इन महानुभावों के सम्मिलित प्रयत्न से ही प्रस्तुत शोधप्रबन्ध को प्रकाश में आने का अवसर मिला है। प्रकाशन सम्बन्धी कठिनाइयों को दृष्टिपथ में रख कर इस प्रबन्ध के कई अध्याय साभिप्राय निकालने पड़े हैं। भार्गव प्रेस के व्यवस्थापक श्री पाण्डेय जी के सहयोग से यह प्रकाशन-कार्य सम्पन्न हुआ है, लेखक उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना अपना आवश्यक कर्तव्य समझता है।

स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त, ७१ —राजेन्द्र प्रसाद शर्मा



दो शब्द

आज 'कहानी' हिन्दी-साहित्य की एक समृद्ध विधा के रूप में मान्य है और रचना, परिचर्चा, शोध एवं समीक्षा — इन सभी दृष्टियों से कहानी-साहित्य का महत्त्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। कहानियों में व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा और उसका विश्लेषण रचना और आलोचना की एक जटिल प्रक्रिया है। इसका सम्बन्ध जीवन के सूक्ष्म गतिशील यथार्थबोध और मन की निगूढ़ सर्जनात्मक चेष्टा दोनों से है। हमें प्रसन्नता है कि प्रस्तुत शोध-कृति के लेखक डॉ० राजेन्द्र शर्मा अपने अध्ययन-क्रम में प्रत्येक स्तर पर अपने दायित्व के प्रति सजग रहे हैं।

हिन्दी कहानी में व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा का आरंभ गुलेरी जी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' (१९१६ ई०) से माना जा सकता है। इसमें लहनासिंह के प्रेम, साहस, त्याग एवं बलिदान के साथ ही सूबेदारनी के दृढ़, सहज एवं उदात्त प्रेम की सांकेतिक झलक कहानी को एक विशिष्ट स्तर पर प्रतिष्ठित कर देती है। इसके बाद प्रसाद की रूमानी कहानियों में व्यक्तित्व-प्रतिष्ठा की सजग एवं समर्थ चेष्टा लक्षित होती है। उनकी कहानियों के नायक-नायिका वैयक्तिक प्रेम-भावना एवं सामाजिक नैतिक कर्तव्य-भावना अथवा एक ही आलम्बन के प्रति प्रेम एवं घृणा की समस्तरीय तीव्रता से परिचालित होने के कारण विशिष्ट व्यक्तित्व से मंडित हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में व्यक्तित्व-प्रतिष्ठा कुछ सीधे सुधारवादी सूत्रों के आधार पर हुई है। उनके पात्र जीवन के विविध क्षेत्रों से आते हैं और अपनी नैतिक मर्यादा, न्याय-प्रियता एवं आदर्शवादी जीवन-दृष्टि के कारण मन को प्रभावित करते हैं। उनकी अंतिम कहानियों में यह आदर्शवादी व्यक्तित्व-रचना पूर्णत: खंडित हो गई है और उनके पात्र मनुष्यता के स्तर से गिर कर परंपरा पोषित उदात्त जीवन-मूल्यों के सामने यथार्थ स्थिति-जन्य विद्रूपता के प्रतीक बनकर खड़े हो जाते हैं। प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र, यशपाल, जोशी, अश्क और अज्ञेय की कहानियों में व्यक्तित्व-व्यञ्जना की प्रवृत्ति अधिक सजग और स्पष्ट हुई है। इनके पात्र अधिक यथार्थजीवी एवं विश्वसनीय हैं। उनमें आदर्शीकृत मानव व्यक्तित्व की खोल हटाकर यथार्थ मानव का चेहरा झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है। उनमें परंपरा के प्रति अविश्वास, शंका और विद्रोह की प्रवृत्ति भी लक्षित होती है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद की 'नई कहानी' वस्तुत: यथार्थ-बोध की कहानी है। आज का व्यक्ति यथार्थ की उपज है। उसके व्यक्तित्व की खोज यथार्थ के स्तर पर ही संभव है। व्यक्ति-मन के गहन स्तरों में उतर कर झाँकने तथा क्रूर

यथार्थ को निरपेक्ष एवं तटस्थ दृष्टि से स्वीकारने की प्रक्रिया में आज की कहानी रची जा रही है। इसलिए उसमें प्रतिष्ठित व्यक्तित्व भी किसी प्रकार के दिव्य प्रभा-मण्डल से युक्त न होकर कुंठित, खुरदुरा, विद्रूप, द्वन्द्व-रत, संघर्षशील किन्तु अपेक्षाकृत विश्वसनीय है। डॉ० शर्मा ने अपने अध्ययन-क्रम में इन समस्त संभावनाओं पर गंभीर विचार प्रस्तुत किया है।

डॉ० शर्मा ने पृष्ठ-भूमि के रूप में कहानी की महत्ता, परिभाषा, लक्षण के साथ ही व्यक्तित्व-प्रक्रिया के स्वरूप पर भी विचार किया है। प्रसंगवश उन्होंने काव्य, नाटक, उपन्यास एवं संस्मरण आदि विधाओं में व्यक्तित्व-विश्लेषण की सापेक्षिक संभावना का विवेचन भी किया है। इसी संदर्भ में व्यक्तित्व के बाह्य एवं आन्तरिक स्वरूप के विश्लेषण का मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करके उन्होंने कथा-साहित्य के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की अध्ययन-परंपरा को आगे बढ़ाया है। विद्वान् लेखक ने हिन्दी-कहानी के उद्भव और विकास को प्रथम युग-प्रारंभिक काल (१९०१-१०ई०); द्वितीययुग-विकास-काल (१९११-१९३५ई०); तृतीययुग-उत्कर्ष काल (१९३६-४७ई०); और स्वातंत्र्योत्तर युग-(१९४७ से अबतक) विभाजित किया है और प्रथम तीन युगों के प्रत्येक कहानीकार की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण का अध्ययन अलग-अलग प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण प्रवृत्तियों के आधार पर कहानियों को वर्गीकृत करके किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण अध्ययन में विषय-प्रतिपादन एवं विवेचन की दो भिन्न पद्धतियाँ अपनाई गई हैं। अच्छा होता यदि सम्पूर्ण अध्ययन मानव-व्यक्तित्व के विभिन्न मनोविज्ञान-सम्मत रूपों, प्रवृत्तियों, दिशाओं एवं जटिलताओं के विकास-रेखाओं को स्पष्ट करते हुए किया गया होता और प्रत्येक युग की प्रतिनिधि कहानियों को स्थापनाओं की पुष्टि के लिए उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जाता।

कहानियों को विश्लेषण का आधार बनाने पर लेखक की संपूर्ण शक्ति व्यक्तित्व की जटिलताओं के विश्लेषण में लगती और विवेचन अपेक्षाकृत और गंभीर होता। कुछ भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी-कहानी के संपूर्ण विकास को अध्ययन-विषय बनाकर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व-विश्लेषण का यह महत्त्वपूर्ण प्रयास है। इस रूप में प्रस्तुत शोध सर्वथा अभिनन्दनीय है। लेखक की भाषा संयत, स्पष्ट, आवश्यक विचार-आलोचन-विवेचन में पूर्ण समर्थ है। भविष्य में डॉ० शर्मा आधुनिक हिन्दी-साहित्य के मनोवैज्ञानिक अध्ययन द्वारा हिन्दी-जगत् को लाभान्वित करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

(डॉ०) रामचन्द्र तिवारी (रीडर, हिन्दी-विभाग, गोरखपुर-विश्वविद्यालय)
सरस्वती सदन, बेतिया हाता, गोरखपुर

तुलसी जयन्ती
१८-७-७१

समर्पण

साहस, धैर्य एवं प्रेरणा के मूर्तिमान रूप

पूज्य पिताजी

तथा

स्नेह, सारल्य एवं उदारता की प्रतीक-स्वरूपा

ममतामयी माता जी

को

सादर समर्पित

यह शोध-कृति

अर्चना के लघु पुष्प के

रूप में

स्नेह भाजन—

—राजेन्द्र

विषय-सूची

आधार-भूमि

कहानी की महत्ता

गद्य-साहित्य की विभिन्न विधाओं में, अपने कलात्मक रूप तथा आकर्षक अभिव्यक्ति के कारण, कहानी को विशेष महत्व प्राप्त है। संक्षिप्त आकार के भीतर अत्यधिक मर्मस्पर्शिता तथा प्रभविष्णुता को समेटे हुए कहानी ने वर्तमान युग में अन्य विधाओं की तुलना में सर्वाधिक प्रसार द्वारा अपनी लोकप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। शिल्पगत नियमों की विशिष्ट सीमाओं के भीतर रहकर भी कहानी साहित्य ने जीवन के सभी पक्षों की तात्विक व्याख्या का साहस किया है और विभिन्न ज्वलन्त प्रश्नों के सांकेतिक समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। यह सत्य है कि काव्य, नाटक तथा उपन्यास आदि में साहित्य-रचनाकार को विशद भूमि तथा स्वतंत्र वर्णन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं और कहानीकार के लिये अपनी प्रत्येक कहानी में एक ही संवेद्य को सधी शब्दावली में सतर्कता के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक है। अपने उद्देश्य को वह एक क्षण के लिये भी विस्मृत कर अन्य अवान्तर प्रसंगों में जाने की चेष्टा नहीं कर सकता। एक कहानी में जीवन के एक अंश, एक दृश्य या एक ही प्रश्न को वह अत्यधिक कला-कुशलता के साथ प्रकाशित करता है।

मानव-मन के भावचित्रों, अनुभूतियों और कल्पनाओं को भी कहानीकार अपनी रचना के दृश्यपट पर उतारता तथा उन्हें कला का आकर्षक आवरण प्रदान करता है। कलात्मक और गठित शैली में मानव के अन्तर की व्याख्या कहानीकार द्वारा सहज और स्वाभाविक रूप में होती है। बाह्य-जगत के विभिन्न व्यापारों से मानव व्यक्तित्व के अनेकरूपीय सम्बन्ध कैसे बनते और बिगड़ते हैं, उनमें क्या परिवर्तन होते हैं, इसका वर्णन भी कहानी के द्वारा होता है। इनकी व्याख्या का अथवा विशद विवेचन का न तो कहानीकार को अवसर प्राप्त होता है न कहानी में उसकी आवश्यकता ही होती है। अतएव इन विभिन्न मानवीय-सम्बन्धों का सांकेतिक उल्लेख ही कहानी में प्राप्त होता है। सम्पूर्ण जीवन की विशद विवेचना का कार्य तो कवि, नाटककार अथवा उपन्यासकार द्वारा ही सम्भव है, परन्तु जीवन के वे अमूल्य क्षण, जिनमें

मानव-मन को एकदम आकृष्ट करने, आन्दोलित करने अथवा संवेदनात्मक-अनुभूति प्रदान करने की [illegible]-शक्ति होती है, कहानीकार की पकड़ में ही आते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं से पृथक जीवन की मनो. क्रियाओं को प्रकाशित करने वाला ज्योति-पुञ्ज [illegible] कहानी है और [illegible] विद्युत की क्षिप्रता, आकर्षण और आन्दोलन शक्तियाँ इसमें विद्यमान हैं।

आधुनिक मानव-जीवन आर्थिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आस्थाओं, मूल्यों और धारणाओं में अभूतपूर्व तथा विघटनशील परिवर्तनों के कारण विविध [illegible] समस्याओं तथा विशृंखलताओं से प्रभावित है। इस युग में जीवन की विशद और व्यापक धारा [illegible] बिखरी हुई प्रयोग के अनेक क्षेत्रों में प्रवाहित होकर आगे बढ़ गयी है। जीवन के प्रत्येक क्षण का, प्रत्येक अनुभूति अथवा प्रभावान्विति का सम्पूर्ण जीवन-दर्शन पर गहरा प्रभाव लक्षित हो रहा है। कहानी जीवन के इन खण्डचित्रों को [illegible] के आवेष्टन में सजाकर आकर्षक रूप में प्रस्तुत करती है। आज के मानव-जीवन को समझने, व्यक्त करने और उसकी सहज-संवेदना से पाठक वर्ग को [illegible] करने की अप्रतिम-शक्ति कहानी में निहित है।

मनुष्य को मनोविज्ञान के माध्यम से समझने का व्यापक प्रयत्न विश्व के सभी प्रगतिशील देशों में हो रहा है। मनोविज्ञानवेत्ताओं ने मानव-व्यक्तित्व की व्याख्या के निमित्त अनेक परीक्षण तथा प्रयोग कर महत्वपूर्ण निष्कर्षों को उपलब्ध किया है। मानव की मूल प्रवृत्तियों, स्वभाव, संवेग तथा क्रिया-प्रतिक्रिया को विभिन्न विधियों और परीक्षण द्वारा समझने का प्रयास किया गया है। उसकी मानसिक स्थिति का प्रमाण-सिद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिये विविध प्रणालियों का अनुसरण किया गया है। मन के कार्य-व्यापारों की तात्त्विक व्याख्या द्वारा मानव-व्यक्तित्व को विश्लेषित करने में मनोविश्लेषकों (Psycho-analytics) ने विशेष अभिरुचि प्रदर्शित की है। कहानी उनके प्रयोग तथा निष्कर्षों के उपयोग के लिये अत्युपयोगी साहित्यिक विधा प्रमाणित हुई है। मनोवैज्ञानिकों के प्रयोग तथा परीक्षण के लिये वह भूमि निर्मित करती तथा उनके निष्कर्षों के व्यवहार द्वारा मानव-मन के विविध रहस्यों का उद्‌घाटन करती है।

मनोविश्लेषण ने तो कहानी-साहित्य के लिये भाव-प्रकाशन का एक नया और सुविस्तृत क्षेत्र ही प्रदान कर दिया है। चेतन-अचेतन मन की व्याख्या और उससे सम्बन्धित अगणित प्रश्नों ने जीवन के जो सत्य तथा तथ्य प्रकट किये हैं उन्हें कहानी-कार ने पूरी ईमानदारी से व्यक्त करने का प्रयास किया है। मानव-व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिये मनोविश्लेषण की अत्याधुनिक स्थापनाओं ने विचार और विवेचन की नयी दिशा प्रदान की है और कहानीकार ने पूर्ण सतर्कता से उसे ग्रहण किया है। मानवीय कुण्ठाओं, भावना ग्रन्थियों और प्रतिक्रियाओं की वैज्ञानिक परीक्षण-विधि ने फ्रायड और

उसके परवर्ती मनोविश्लेषकों के प्रयत्न और सतत् परिश्रम का अवलम्बन कर कहानी-कार को विपुल विचार-सामग्री प्रदान की है। इस शताब्दी के विश्व के श्रेष्ठ कहानी-कारों ने मनोविश्लेषण को आधार मान कर मानव-व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण तथा कलात्मक चित्रण किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी को एक लोकप्रिय साहित्यिक विधा का उल्लेखनीय गौरव प्राप्त हुआ है। आधुनिक अत्यधिक कार्य-व्यस्तता के मध्य प्रबुद्ध पाठक-वर्ग इसके द्वारा अल्पावधि में मानव चरित्र को उसके विविध कार्य-व्यापारों में देख कर आनन्दित होता है। सामान्य शिक्षित जन मनोरंजन तथा कौतूहल के लिये रुचिपूर्वक कहानी पढ़ते और साहित्य के माध्यम से अपनी रसात्मक-वृत्ति को सन्तुष्ट करते हैं। समीक्षक तथा साहित्यिक-अनुशीलन की ओर प्रवृत्त विद्वत्वर्ग इसे, वर्तमान उपलब्धियों के कारण, गम्भीर विश्लेषण-प्रधान रचना-प्रक्रिया मान कर इसके महत्व को स्वीकृति प्रदान करता है। समाज के परिप्रेक्ष्य में मानव-व्यक्तित्व की कलात्मक व्याख्या इसी के माध्यम से हो रही है। अतएव समाज की अगणित समस्याएँ इसी के आलोक में अपने समाधान की ओर अग्रसर हो रही हैं। मनोविज्ञान के तथ्यों का आकलन और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति का प्रयत्न इसके माध्यम से हो रहा है। तात्पर्य यह कि साहित्य, समाज और मनोविज्ञान के विविध पक्षों का सशक्त और प्रभाव-पूर्ण प्रकाशन आधुनिक कहानियों में अत्यधिक सफलता के साथ हो रहा है। नवीन मान्यताओं और गतिशील जीवन-दर्शन के विविध पक्षों की व्याख्या करती हुई कहानी मानव-व्यक्तित्व के रहस्यों का उद्घाटन भी अद्भुत क्षमता के साथ कर रही है। लोकप्रिय साहित्यिक विधा के रूप में जन-मानस ने उसे व्यापक स्वीकृति ही नहीं प्रदान की है, वरन् समर्थ रचना-प्रक्रिया के रूप में उसका अभिनन्दन भी किया है।

कहानी का स्वरूप एवं व्यक्तित्व-विश्लेषण : हिन्दी समीक्षकों की दृष्टि में

हिन्दी कहानी-साहित्य के विकासशील एवं प्रभावपूर्ण रूप ने उसकी विविध सम्भावनाओं की ओर समीक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया है। पाश्चात्य-साहित्य के प्रभाव को स्वीकार करते हुए कहानी की शिल्प-विधि का गम्भीरता से विवेचन किया गया है और साथ ही चरित्रगत विशेषताओं को ध्यान में रखकर मानव व्यक्तित्व की सम्यक् प्रतिष्ठा को भी कहानी के प्रमुख उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दी कहानी के स्वरूप तथा रचना-पद्धति को ध्यान में रखते हुए सुधी विचारकों ने उसकी परिभाषा निश्चित करने का भी प्रयास किया है। उनकी मान्यताओं में जहाँ सादृश्य है, वहीं विशेष लक्षणों के सम्बन्ध में मत-वैभिन्य भी है। परन्तु मानव एवं उसके सशक्त व्यक्तित्व को कहानी के मुख्य वर्ण्य-वस्तु के रूप में प्रायः सभी समीक्षकों

मान्यता प्रदान की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'आख्यायिका' को कहानी का पर्याय माना है और उसमें कथा-तत्व की प्रधानता का विवेचन करते हुए लिखा है :

"आख्यायिका साहित्य का वह रूप है जिसके कथाप्रवाह और कथोपकथन से इतर बातें प्रमुख रूप से अधिक विद्यमान रहता है और उसे दबाने वाले भाव-विधान या उक्ति-वैचित्र्य के लिये और थोड़ा स्थान बचता है।"[1]

मानव जीवन के पक्ष-विशेष को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने की विशेषता को डा० श्यामसुन्दर दास ने अपनी कहानी-सम्बन्धी व्याख्या में अधिक महत्व प्रदान किया है। इस ओर यह कहानी-कला के विधान के निरूपण के कारण इस विधा में मानव व्यक्तित्व का अंश विशेष ही अभिव्यक्त हो पाता है। कल्पना एवं सत्य के संयोग से मानव जीवन की आंशिक झाँकना ही कहानी का लक्ष्य है, इस मान्यता को स्थापित करते हुए उन्होंने लिखा है :

"गल्प मनुष्य-जीवन की आनुषंगिक कथा को कल्पना के रंग से रंजित कर गद्य में व्यक्त करती है। .... गल्प या छोटी कहानी केवल एक प्रसंग को लेकर उसकी मार्मिक झलक दिखा देने का ही उद्देश्य रखने लगी है। .... वह जीवन का समय-सापेक्ष्य चतुर्दिक चित्र न अंकित कर केवल एक अंश में घनीभूत जीवन दृश्य दिखाने लगी है।"[2]
कहानी के स्वरूप और उद्देश्य पर विचार करते हुए श्री इलाचन्द्र जोशी ने उसे व्यक्ति के सामान्य जीवन की वास्तविक वेदना की अभिव्यक्ति माना है। अपनी कलात्मक अभिव्यंजना के माध्यम से कहानी मानव व्यक्तित्व को उसके रूप-विशेष में प्रस्तुत करती है। उनका कथन है :

"कहानी की विशेषता यही है कि वह व्यक्ति के प्रतिदिन के साधारण जीवन की वास्तविक वेदना की सत्ता को यथार्थ रूप से अंकित करके अनन्त की सत्ता के साथ मिला देने में समर्थ होती है .... कहानी के मूल भावों का सम्बन्ध हृदय से होना चाहिये, मस्तिष्क की कूट-बुद्धि से नहीं। उसका ध्येय रसावेग (Emotion) के उभाड़ने का होना चाहिए, विश्लेषण-वृत्ति को जाग्रत करने का नहीं। उसमें कामिनी की कमनीयता और कुसुम की सम्मोहकता होनी चाहिये, पुरुष की रूक्षता और पहाड़ की कठोरता नहीं। वह रसात्मक होनी चाहिये, ज्ञानात्मक नहीं।"[3]

सुधी समीक्षक श्री गिरिधारी लाल शर्मा ने भी कहानी को मानव-जीवन के विविध पक्षों एवं तथ्यों की अभिव्यक्ति की सशक्त विधा के रूप में स्वीकृति दी है।

---

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का भाषण : २८वाँ हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, पृ० ६।
२. डॉ० श्यामसुन्दर दास, 'साहित्यालोचन', पृ० १६८।
३. श्री इलाचन्द्र जोशी, 'साहित्य-सर्जना,' पृ० ४२, ४३।

उनके कथनानुसार प्रधान-पात्र के व्यक्तित्व को केन्द्र मानकर कहानी जीवन की तात्विक व्याख्या करती है। उनका विचार है कि :

'....कहानी किसी एक पात्र के जीवन की कोई विशेष घटना मात्र है। किन्तु वह घटना केवल जैसी तैसी घटना नहीं, वह मानव हृदय में अपना गहरा असर डालने वाली होती है। उससे जीवन में एक वेग, एक गति का संचार होता है, क्योंकि इससे वैचित्र्य तथा वास्तविकता के सामञ्जस्य की प्रतिष्ठा होती है। पूर्णता व पराकाष्ठा की तो वहाँ गुञ्जाइश ही नहीं। कहानी अपने प्रधान-पात्र के भावना-चित्र की गहरी छाप लगाती हुई, अपने ध्येय की प्राप्ति की ओर अग्रसर होती रहती है।'[1]

डा० श्रीकृष्णलाल के मतानुसार आधुनिक कहानी चुने हुए मानव-व्यक्तित्व की व्याख्या घटना-विशेष के सहारे करती है। विभिन्न प्रसंग तथा घटना का विस्तार पात्र-विशेष के व्यक्तित्व को अभिव्यंजित करते हैं। कल्पना और तथ्य का समन्वय भी जीवन के यथार्थ रूप को चित्रित करने के उद्देश्य से ही होता है। कहानी की इस विशेषता पर विचार करते हुए उन्होंने लिखा है :

'आधुनिक कहानी साहित्य का एक विकसित कलात्मक रूप है, जिसमें लेखक अपनी कल्पना-शक्ति के सहारे कम से कम पात्रों अथवा चरित्रों के द्वारा कम से कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से मनोवांछित कथानक, चरित्र, वातावरण, दृश्य अथवा प्रभाव की सृष्टि करता है।'[2]

डा० श्रीपति शर्मा के विचारानुसार कहानी एक भाव को व्यक्त कर मानव-जीवन का अंशमात्र ही चित्रित करती है। उसमें व्यक्तित्व की एक झलक, चरित्र का एक रूप अथवा एक स्थिति का कलात्मक अंकन होता है। सीमित क्षेत्र में कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व का जो रूप प्रस्तुत करता है वह वर्णित कथानक के सर्वथा अनुकूल तथा अति प्रभावपूर्ण होता है। प्रेमचन्द की कहानी-कला के विवेचन के प्रसंग से वे कहते है

'गल्प वह रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसका कथा-विन्यास, उसकी शैली सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें जीवन का सम्पूर्ण तथा वृहद् रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता, न उसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का सम्मिश्रण होता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के बेलबूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य

---

१. गिरिधारी लाल शर्मा, 'कहानीकला', पृ० ११ ।

२. डॉ० श्रीकृष्णलाल, 'हिन्दी कहानियाँ'- भूमिका भाग- पृ० २३ ।

अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"[1]

यद्यपि कहानी मुख्य घटना को ही आधार मानकर मानव-जीवन का एक अंश प्रस्तुत करती है तथापि उसमें वेग, गति तथा प्रभाव अपेक्षित मात्रा में विद्यमान रहते हैं। पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण की सहज प्रक्रिया घटनाक्रम के साथ सहजगति से आगे बढ़ती है। डा० महेन्द्र ने इस तथ्य पर विचार करते हुए मानव व्यक्तित्व एवं कहानी के पारस्परिक गहन सम्बन्ध की विवेचना करते हुए पात्रों को कहानी-रचना में प्रमुख स्थान दिया है :

श्री गुलाबराय ने कहानी को पात्र के व्यक्तित्व पर आधारित एवं केन्द्रित माना है। उनकी दृष्टि में कहानी का उद्देश्य चारित्रिक विशेषताओं के प्रकाशन द्वारा मानव व्यक्तित्व का निरूपण है। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहानी के स्वरूप एवं लक्ष्य का विवेचन इस प्रकार किया है :

'छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति-केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक उत्थान, पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला वर्णन हो।'[2]

कहानी और व्यक्तित्व-विश्लेषण

कहानी की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए विचारकों ने उसे मानव-जीवन से सम्बन्धित माना है तथा विभिन्न स्थितियों से पात्रों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में समर्थ घोषित किया है। कहानी का मुख्य विषय मानव है इसलिए उसके व्यक्तित्व का कलात्मक तथा प्रभावपूर्ण अंकन विशेष प्रकार से कहानी द्वारा होता है। मनुष्य के विभिन्न कार्यों द्वारा उसके व्यक्तित्व का यथार्थ रूप स्वतः व्यक्त होता रहता है। कहानीकार व्यक्तित्व के बाह्य एवं आन्तरिक स्वरूप का सांकेतिक तथा कला-सम्पन्न चित्रण करता है। वातावरण एवं परिस्थितियों के सजीव तथा उपयुक्त वर्णन भी व्यक्तित्व के निरूपण में महत्त्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं। मनुष्य की क्षमता तथा दुर्बलता का समान रुचि के साथ चित्रण करने वाला कुशल कहानीकार व्यक्तित्व-विश्लेषण में मनोवैज्ञानिक चित्रण का सन्तुलन बनाये रखता है। केवल बाह्य-स्थितियों का वर्णन व्यक्तित्व के चित्रण के लिये पर्याप्त नहीं, मानसिक जगत् का विश्लेषण बाह्य वर्णन से कहीं अधिक आवश्यक है। श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का विचार इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है :

---

१. डा० श्रीपति शर्मा, 'कहानीकला और प्रेमचन्द', पृ० १३।

२. गुलाब राय, एम० ए०, 'सिद्धान्त और अध्ययन', पृ० २०६।

'जो श्रेष्ठ कथाकार होते हैं, वे मनुष्यों के सच्चे मनोभाव का विश्लेषण कर उनको यथार्थ रूप में अंकित करते हैं। वे मनुष्यों की क्षमता को पहचानते हैं, और अक्षमता को भी। उनमें सहानुभूति भी इतनी विशालता रहती है कि वे किसी भी स्थिति में एकमात्र बाह्य परिस्थिति पर ही ध्यान दे कर मनोभावों की उपेक्षा नहीं करते। इसी से सच्चे भावों की अभिव्यक्ति में ही कला का सच्चा सौन्दर्य प्रदर्शित होता है।'[1]

कहानीकार पात्र-विशेष के रूप में मानव-व्यक्तित्व की व्याख्या करता है, परन्तु उसके कार्यों में समाज के घनिष्ठ तथा अनिवार्य सम्बन्ध को वह विस्मृत नहीं करता। जीवन-क्षेत्र में अन्य व्यक्तियों से जाने-अनजाने उसके व्यक्तित्व का सम्बन्ध-सूत्र निर्मित होता तथा अनेक प्रकार से उसे अन्य व्यक्तियों से आबद्ध करता है, अतएव मानव का व्यक्तित्व समाज-सापेक्ष्य विश्लेषण द्वारा ही सही रूप में अंकित हो पाता है। अपनी वैयक्तिकता के कारण मनुष्य का स्वतन्त्र अस्तित्व भी है तथा विशिष्ट व्यक्तित्व-निर्माण की वही आधारभूमि है। परन्तु कहानी के चित्र-पट पर सामाजिक परिवेश के मध्य ही जीवन चित्रित होता है। व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार उसका सम्बन्ध अन्य मानवों से दिखलाता है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही जीवन का विकास सम्भव है, अतएव व्यक्ति का सम्पर्क समाज के विभिन्न वर्गों से स्थापित होता है। कहानी के धरातल पर इस सामाजिक सम्पर्क की कलात्मक अभिव्यक्ति होती है।

मानव-व्यक्तित्व का परिचालन जिन मानसिक वृत्तियों एवं शक्तियों द्वारा होता है, उनका विश्लेषण भी कहानी का उद्देश्य है। यद्यपि उपन्यासकार अथवा मनोविज्ञान-वेत्ता विवेचक की भांति उसे विशद् वर्णन एवं विश्लेषण की न तो सुविधा होती है न आवश्यकता ही, तथापि कहानीकार संकेतों और कलापूर्ण व्यंजना द्वारा व्यक्ति के अन्तर्जगत की प्रभावपूर्ण व्याख्या कर लेता है। मानव-मन अनन्त रहस्यों का भण्डार है और व्यक्तित्व का नियामक, परिचालक तथा सचेतक भी। इसलिये उसकी ओर कुशल कहानीकार की दृष्टि सहज ही केन्द्रित रहती है। मनोविज्ञान-सम्मत व्याख्या अन्तर्जगत के विश्वसनीय रूप कहानी के चित्र-पट पर प्रस्तुत करती है। कहानी की लोकप्रियता का एक महत्वपूर्ण कारण मानव-मन का आकर्षक चित्रण भी है।

कहानी में जितना महत्व उपयुक्त और प्रभावपूर्ण कथानक का है, उससे कम महत्व पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण का नहीं है। व्यक्तित्व के बाह्य रूप का चित्रण कर

कहानीकार हमारे सुपरिचित विश्वसनीय चरित्रों के प्रत्यक्ष स्वरूप को प्रस्तुत करता है। [illegible] ही व्याख्या द्वारा अनेक रहस्यों को [illegible] प्रदान करता है। वह व्यक्ति-विशेष के सामाजिक सम्बन्धों के आलोक में विविध कार्यों का वर्णन करता है और उसके विश्वसनीय [illegible] की ओर अग्रसर होने में सहायता प्राप्त करता है। संस्कृति, [illegible] जैसी [illegible] समस्याओं का विवेचन भी व्यक्ति की प्रत्यक्ष और परोक्ष [illegible] घटनाओं द्वारा होता है। कहानी के आधुनिक रूप के [illegible] प्राप्त हो उठा है। कल्पना और आदर्श अब यथार्थ के [illegible] जीवन के विविध पहलुओं को कलापूर्ण ढंग से [illegible] व्याख्या [illegible] बनाते हैं।

कोई भी [illegible] कहानीकार [illegible] व्यक्तित्व के कलात्मक विश्लेषण की उपेक्षा [illegible] नहीं कर सकता, [illegible] में पात्रों की अवतारणा करते समय [illegible] कहानीकार ने उन्हें विशेष महत्त्व न दिया हो परन्तु कहानी की सफलता के लिये अन्त तक यह अनिवार्य हो जाता है कि उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पाठक-वर्ग के [illegible] अंकित [illegible] हो जाय। कहानी का मूलाधार पात्र और उसका व्यक्तित्व ही है, अतएव कहानीकार [illegible] न तो उसकी उपेक्षा कर सकता है न उसके प्रति उदासीन ही रह सकता है। कहानी का विस्तार भी सीमित होता है, इसलिये अधिकांश उत्कृष्ट कहानियों में आरम्भ से ही व्यक्तित्व-विश्लेषण का कलात्मक रूप उभरने लगता है।

कहानी-रचना का एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण उपकरण कथावस्तु है। घटना-विशेष को कथावस्तु के रूप में ग्रहण कर कहानीकार अपनी रचना का आधार प्राप्त करता है। परन्तु विचारणीय प्रश्न है कि घटना के वर्णन का उद्देश्य क्या है? मानव व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण विश्लेषण ही इसका महत्तम उद्देश्य है। कथावस्तु मानव-जीवन के अंग विशेष को प्रकाश में लाकर पात्रों के व्यक्तित्व को तीव्र संवेदना के साथ प्रस्तुत करने का साधन ही तो है। सजीव पात्र के व्यक्तित्व को निष्क्रिय एवं निरुद्देश्य कैसे माना जाय? उसके साथ जाने-अनजाने घटना-क्रम का सम्बन्ध बनेगा ही। घटना व्यक्तित्व के आदर्श एवं स्तुत्य पक्ष को व्यक्त कर सकती है और संकीर्ण, निन्दनीय स्वरूप की अभिव्यक्ति भी कर सकती है। कहानी एक ऐसी रचना-प्रक्रिया है जिसमें गतिशीलता तथा सजीवता है, इसलिये घटना और उससे सम्बद्ध स्थितियाँ व्यक्तित्व को सप्राण तथा गतिशील बना देने की चेष्टा करती हैं।

कहानी चाहे जिस प्रकार की हो उसमें पात्र अवश्य होंगे। फिर आवश्यक हो जाता है कि वे पात्र व्यक्तित्व-रहित न हों। इस प्रकार व्यक्तित्व और उसका विश्लेषण प्रत्येक वर्ग की कहानी में अनिवार्य स्थान प्राप्त करते हैं। केवल मनोरंजन का दावा

करने वाली कहानियां और उनके रचयिता भी किसी न किसी रूप में वर्णित पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं। मनोरंजन-प्रधान जासूसी कहानियों में पात्रों की तीव्र-बुद्धि, साहस तथा कर्मठता का चित्रण होता है जिससे उनका व्यक्तित्व स्वतः विश्लेषित हो जाता है। अपराधी मनोवृत्तियों तथा अनैतिक कार्य-कलापों के वर्णन समस्यामूलक असामाजिक व्यक्तित्व के विश्लेषण में महत्त्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं। हास्यपरक तथा कौतूहल-वर्द्धक कहानियां मानव-व्यक्तित्व की उल्लास-प्रधान प्रवृत्तियों के चित्रण द्वारा व्यक्तित्व का मनोरंजक एवं जिज्ञासा-प्रधान स्वरूप प्रस्तुत करती हैं। तात्पर्य यह है कि कहानी चाहे घटना-प्रधान हो अथवा चरित्र-प्रधान, उसमें पात्रगत विशेषताएं अवश्य प्रकाश में आयेंगी और उनके द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण होगा।

कहानी में आकर्षण तथा स्वाभाविकता का समावेश भी तभी हो सकता है जब पात्रों के व्यक्तित्व का मनोविज्ञान-सम्मत एवं स्वाभाविक विश्लेषण सहज गति से होता चले। मनोरंजन-प्रधान कथा-साहित्य के पाश्चात्य-लेखक क्यू. पैट्रिक के मतानुसार 'सजीव व्यक्तित्व के विश्लेषण से रहित कथानक प्रभावहीन एवं निरुद्देश्य सिद्ध होता है।' पात्रों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व की अनिवार्यता मनोरंजनपरक जासूसी कहानियों में भी उतनी ही है जितनी घटना-प्रधान अथवा अन्य प्रकार की कहानियों में।

व्यक्तित्व के तत्त्वों का विवेचन

कहानी के प्रत्येक पात्र का अपना व्यक्तित्व होता है और किसी न किसी रूप में उसका विश्लेषण भी कहानीकार द्वारा होता है। यह आवश्यक है कि व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप का विवेचन करने के पूर्व व्यक्तित्व की सामान्य रूप-रेखा का परिचय प्राप्त किया जाय। व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है। इसके स्थूल तथा बहिरंग रूप तक सीमित रहने वाले साधारण विचारक इसको शरीर, प्रभाव और व्यवहार का समन्वित एकनिष्ठ रूप मान लेते हैं। वास्तव में इस प्रकार की धारणा व्यक्तित्व की व्यापकता को ठीक ढंग से न समझने के कारण प्रचलित हो गयी

---

1. A reader is pleasurably mystified only when the author manages to interest him in a clearly presented problem involving characters that have some reality for him ...... If ever the pattern becomes blurred or the characters take on no individuality, masked figures can prowl around haunted houses, detectives can make cryptic decisions, shots can whiz past the heroines ears—all in vain.
   —Q. Patrick—**The Naughty Child of Fiction**, Writers Handbook, p. 246.

है। मनोवैज्ञानिक विवेचन एवं प्रमाणिक शोध ने व्यक्तित्व को सही तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का मार्ग प्रशस्त किया है।

सामान्य प्रसंगों में व्यक्तित्व का अर्थ बाह्य प्रभाव तक ही सीमित रहता है। मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की परिस्थिति के रूप में भी व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया जाता है। पाश्चात्य मनोविज्ञानवेत्ता केम्फ के मतानुसार, 'व्यक्तित्व अनुकूलता प्राप्त की वह स्वाभाविक वृत्ति है जिसकी सहायता से व्यक्ति अपनी अन्तः प्रेरणाओं तथा वातावरण का समुचित सामञ्जस्य बनाये रखता है।'[1] इससे आगे बढ़कर मनोवैज्ञानिक मार्टिन प्रिन्स ने व्यक्तित्व को प्रकृति, वंश, व्यवहार एवं क्रिया-प्रतिक्रिया का समन्वय मानते हुए लिखा है कि 'व्यक्ति की शारीरिक रचना, मूल-स्वभाव, भावनाओं, वासनाओं, एवं अनुभवों का एकनिष्ठ योग है।'[2] अपने कार्य, विचार तथा योग्यता के आधार पर व्यक्ति पृथक्-पृथक्-युक्त व्यक्तित्व धारण करता है, ऐसा विचार कतिपय मान्य विवेचकों एवं मनोविज्ञान-वेत्ताओं ने व्यक्त किया है। एम० शोन के विचारानुसार, 'व्यक्तित्व मानवीय वृत्तियों, स्वभावगत विशेषताओं तथा संवेगों का वह एकनिष्ठ रूप है, जिसके द्वारा व्यक्ति विशेष अपने वर्ग के किसी भी व्यक्ति से सर्वथा भिन्न हो जाता है।'[3] इस धारणा के अनुसार व्यक्तित्व की स्वतन्त्र-सत्ता तथा भिन्न-रूपता की अनिवार्यता प्रकट होती है। समाज से सम्बद्ध होने के कारण व्यक्ति के कार्य, व्यवहार, चिन्तन तथा अनुभवों का वातावरण से निरन्तर सम्बन्ध बना रहता है। व्यक्तित्व के निर्माण, विकास

---

1. Personality is the habitual mode of adjustment which the organism effects between its own egocentric drives and the exigencies of environment.

   —E. J. Kempf: **The Autonomic Functions and the Personality,** Quoted by Ross Stagner in **Psychology of Personality** on p. 4.

2. Personality is the sum-total of all the biological innate dispositions, impulses, tendencies, appetites and instincts of the individual and acquired dispositions and tendencies acquired by experience.

   —Prince Martin: **The Unconscious** (2nd edition-1924), p. 532.

3. Personality is the organised system, the functioning whole or unity of habits, dispositions and sentiments that mark off any one member of a group as being different from any other member of the same group.

   —M. Schoen: **Human Nature** (1930), p. 397

और गतिशीलता में वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव को स्वीकार करते हुए जी० डब्ल्यू० एलपोर्ट ने उसे अनुकूलता प्राप्ति में सक्षम गत्यात्मक संगठन माना है। उनका कथन है कि 'व्यक्तित्व बाह्य एवं अन्तर्जगत् के सम्बद्ध प्रवृत्तियों का ऐसा गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति को वातावरण के अनुकूल बनने की विलक्षण शक्ति प्रदान करता है।'[1]

उपर्युक्त परिभाषाओं द्वारा यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व की स्वतंत्र स्थिति होती है। समाज से सम्बन्धित होते हुए भी व्यक्तित्व की विलक्षणता अक्षुण्ण बनी रहती है। वातावरण के अनुकूल अपने को ढालने में प्रयत्नशील-व्यक्ति जिन अनेक कार्यों को सहज ही सम्पादित करता है वे व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान देते हैं। यह भी आवश्यक है कि व्यक्तित्व में अनुकूलता-प्राप्ति की क्रिया स्वतः होती रहे। केम्फ महोदय ने तो यहाँ तक कहा है कि 'व्यक्तित्व वह नियोजित व्यवस्था है, जो स्वभाव की भिन्न प्रवृत्तियों को संगठित करती है। उसमें व्यक्ति-विशेष की वातावरण की अनुकूलता प्राप्ति की शक्ति का प्रतिनिधित्व होता है।'[2] तात्पर्य यह है कि समाज से पृथक् हो जाने पर व्यक्तित्व का सन्तुलन नष्ट हो सकता है। अपने चतुर्दिक व्याप्त वातावरण तथा परिस्थितियों से व्यक्ति का प्रतिक्षण व्यक्त एवं अव्यक्त सम्पर्क बना रहता है। ऐसी भी स्थिति आती है जब इस सम्पर्क का आभास नहीं मिलता परन्तु सूक्ष्म रूप में विचार-जगत् में ही सही यह विद्यमान अवश्य रहता है। व्यक्तित्व के विकास तथा गतिशीलता की आधारभूमि का निर्माण भी समाज के द्वारा ही होता है। विविध कार्य-व्यापारों और घटनाओं का सम्मिलित प्रभाव व्यक्तित्व की सुषुप्त सम्भावनाओं को जाग्रत करता और उन्हें व्यावहारिक रूप भी प्रदान करता है। समाज और व्यक्तित्व के इस महत्व-पूर्ण सम्बन्ध के विषय में ई० डब्ल्यू० बर्गेस का कथन विचारणीय है। उनके मतानुसार, 'व्यक्तित्व उन समस्त शक्तियों का एकनिष्ठ रूप है, जो समाज के भीतर व्यक्ति के कार्य तथा स्थान का निर्धारण करती है। अतएव व्यक्तित्व को 'सामाजिक प्रभविष्णुता' की संज्ञा प्रदान की जा सकती है।'[3]

---

1. Personality is the dynamic organisation within the individual of those psycho-physical systems that determine his unique adjustment to his environment.
   —G. W. Allport : **Personality—a Psychological Interpretation** p. 48.
2. Personality is the integration of those systems of habits that represent one individual's characteristic adjustment to his environment.
   —E. J. Kempf : **The Automic Functions and the Personality** p. 28.
3. Personality is the integration of all the traits which deter-

व्यक्तित्व का सामाजिक सम्पर्क उसे नैतिकता तथा वैधानिकता की ओर आकृष्ट करता है। समाज की मान्यताएँ और नैतिक परम्पराएँ व्यक्तित्व में चरित्रगत विशेषताओं के रूप में कतिपय मूल्यों की स्थापना का प्रयास करती हैं। न्यायशास्त्रियों ने व्यक्तित्व का न्यायसंगत-विश्लेषण एक व्यावहारिक स्वतन्त्र सत्ता के रूप में देखा है। व्यक्ति की पूर्णता का सर्वोपरि कारण मानते हुए भी नैतिक तथा वैधानिक मान्यताओं को न्यायवादियों ने व्यक्तित्व के निर्माण में प्रत्यक्ष माना है। यद्यपि मनोविज्ञान की विकसित तथा प्रशस्त शोध एवं परिष्कृत मान्यताओं ने व्यक्तित्व के स्वतन्त्र, प्रभावपूर्ण तथा रूढ़ियों से मुक्त स्वरूप को ही अधिक महत्त्व प्रदान किया है, तथापि नीति और परम्परा को वे पूर्णतया उससे असम्बद्ध नहीं मानते। किसी न किसी रूप में—चाहे विरोध और प्रतिक्रिया के रूप में ही क्यों न हो—व्यक्तित्व के समायोजन में नीति तथा विधि-विधान का अनिवार्य स्वीकार किया ही गया है। व्यक्ति के पृथक् अस्तित्व तथा स्वतन्त्र रूप की व्याख्या करते हुए 'कार्पस' के सुप्रसिद्ध सम्पादक-द्वय मैक तथा किसर ने लिखा है कि 'व्यक्ति एक ऐसी सजीव सत्ता है, जिसमें बुद्धि, इच्छाशक्ति एवं पृथक् अस्तित्व के लक्षण विद्यमान हैं, जिसे बुद्धिरहित जानवरों तथा निर्जीव वस्तुओं से पृथक् किया जा सकता है। वह ऐसा प्राणी है जिसे शरीर और बुद्धि प्राप्त है। चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो या बालक उसमें नैतिकता तथा आत्मचेतना के गुण होने चाहिए, तभी वह पूर्ण मनुष्य हो सकता है।'[1] व्यक्तित्व के मूल तत्त्वों के विवेचन में नीतिपरक विवेक को महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे निर्णयात्मक शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।

रुचि एवं प्रवृत्ति की भिन्नता भी व्यक्तित्व को स्वतन्त्र तथा पृथक् रूप प्रदान करने में सहायिका सिद्ध होती है। विशेष प्रकार की अभिरुचि तथा उसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति को विशिष्ट स्थिति में पहुँचा देती है, जहाँ वह अन्य लोगों से भिन्न प्रतीत होता है। उसके व्यवहार, रुचि तथा प्रवृत्ति की भिन्नता को उसका व्यक्तित्व एकनिष्ठ स्वरूप देकर उसके प्रभाव तथा महत्त्व का परिचायक बन जाता है। इस सम्बन्ध में

---

mine the role and status of the person in society. Personality might, therefore, be defined as social effectiveness.

—E. W. Burgess : **Proclaimation of Second Coloquium on Personality Investigation.** 1930. p. 149

1 (A person or law is)—Anything having life, intelligence, will and separate individual existence, distinguished from an irrational brute and inanimate things, a human being as including body and soul, a man, a woman, a child, a moral agent, a self-conscious being, a whole-man."

—**Corpus Juris,** Edited by W. Mack and D. J. Kiser, Vol. 48, p. 1037.

ज० टा० मैकार्डी का मत उल्लेख्य है। उनकी दृष्टि में व्यक्तित्व विभिन्न प्रवृत्तियों का ऐसा एकात्मक संगठन है, जो व्यक्ति-विशेष के व्यवहार को विलक्षण एवं वैयक्तिक रूप प्रदान करता है।[1] भिन्नता को सँभालकर उसे व्यक्तित्व के एकनिष्ठ रूप में ढालने का प्रयास व्यक्ति निरन्तर करता रहता है। उसका चिन्तन, कार्य, प्रतिक्रिया अर्थात् सम्पूर्ण व्यावहारिक एवं मानसिक जगत् व्यक्तित्व के निर्माण में सतत् संलग्न होता है। म्योरहेड तथा हैदरिंगटन ने व्यक्ति को स्वतन्त्र मस्तिष्क तथा इच्छाशक्ति से समन्वित मान कर उसे विविध शक्तियों तथा प्रवृत्तियों द्वारा सत्यात्मक व्यक्तित्व का सृजनकर्ता बताया है। मूल प्रवृत्तियों और क्रियात्मक शक्ति के गठन को भी उन्होंने व्यक्तित्व के विकास में आवश्यक माना है। उनके मतानुसार, व्यक्तित्व वैयक्तिकता का वह रूप है, जिसका अस्तित्व तभी सम्भव है जब कि व्यक्ति प्रत्येक मस्तिष्क तथा इच्छाशक्ति से सम्पन्न हो। व्यक्तित्व के लिये ऐसी एकता की आवश्यकता होती है, जिसे प्राप्त करने के लिये न तो मूल प्रवृत्तियों का दमन करना पड़े, और न तो स्वभाव या कार्यक्षमता पर प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता हो। इस तथ्य के अनुसार भी एकनिष्ठ आत्म-शक्ति में ही होना अपेक्षित है। इस सुनियोजित एकनिष्ठ शक्ति में ही स्वतंत्रसत्ता की स्थापना सम्भव है, उनसे पृथक् उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।[2] व्यक्तित्व में भिन्न स्वभाव तथा वृत्तियों के एकीकरण तथा समायोजन को आवश्यक बताने वाले विचारकों ने आन्तरिक संघर्ष और उनके परिणामों पर भी दृष्टि डाली है। आजीवन व्यक्ति द्वारा अपने व्यक्तित्व को गतिशील तथा प्रभावपूर्ण बनाने का प्रयास होता रहता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यक्तित्व का सर्वाधिक क्रियाशील रूप दृष्टिगत होता है। सामान्य विवेचन में हम जिनको कठिनाइयों से आकीर्ण और विपत्तियों से ग्रस्त बताते हैं, वास्तव में वे लोग अपने व्यक्तित्व की प्रत्यक्ष तथा परोक्ष शक्तियों के परीक्षण में रत रहकर व्यक्तित्व की अनेकमुखी सम्भावनाओं के द्वार उन्मुक्त

---

1. Personality is an integration of patterns (interests) which gives a peculiar individual trend to the behaviour of organism
—J. T. Marcurdy : **Common Principles in Psychology and Philosophy, P.** 333.

2. (Personality is) that form of individuality—which is rendered possible by possession of mind and will. To be a person is to be one and indivisible, but is a unity that is achieved, not by the suppression of natural instincts, temperament and capacities, but by the permeation of them with a common spirit—the power of finding freedom, not from them but in them.
—Muirhead and Hatherington, Quoted by G. W. Allport in **Personality a Psycholgical Interpretation,** p. 32

करते हैं। संघर्ष और प्रतिकूलता व्यक्तित्व को अधिक प्रभावपूर्ण और प्रकाशमान बनाते हैं।

व्यक्तित्व को विकासशील-तत्व के रूप में मनोविज्ञानवेत्ताओं ने ग्रहण किया है और इसी आधार पर उसकी गत्यात्मकता की व्याख्या की है। दार्शनिक-विवेचन में 'आत्मा' अथवा 'अन्तश्चेतना' को व्यक्ति के चिन्तन, कार्य एवं व्यवहार का प्रेरक माना गया है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में भी आत्मचेतना (Self-consciousness) को प्रधानता देते हुए व्यक्तित्व-संरचना की प्रेरक-शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। मूलतः दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों में इस दृष्टिकोण से कोई विरोध नहीं। डॉ० राधाकृष्णन् के शब्दों में, 'विकास की समस्त क्रिया बाह्य जगत् से सम्बद्ध तो है, परन्तु मन, बुद्धि एवं इन्द्रियशक्ति सब उसी अचेतन प्रकृति की विकसित शक्तियाँ हैं, जो आत्म-तत्त्व पर आधारित हैं और उसी के द्वारा स्थित हैं।'[1] मनुष्य के संवेगात्मक अनुभवों, स्वभावगत एवं नैतिक मूल्यों के एकत्व-सूत्र के रूप में 'आत्म-चेतना' को ग्रहण करते हुए डॉ० रॉस स्टैगनर ने लिखा है, आत्मचेतना एक ऐसा तत्व है जो हमारे संवेग-प्रधान अनुभवों, स्वभावजन्य प्रवृत्तियों, स्मृतियों, वृत्तियों तथा जीवन-मूल्यों को एकत्रित तथा संगठित रूप प्रदान करता है। विशेष परिस्थितियों को छोड़ दिया जाय तो सामान्यतः आत्मचेतना सुषुप्त ही रहती है और जाग्रत होने पर इसमें शरीरतत्व, बुद्धि, स्वभाव, संवेग एवं दूसरों की अपने प्रति कल्पित धारणाओं का समाहार होता है।[2] आत्म-चेतना और उसकी प्रभाव-शक्ति का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि मनुष्य का अन्तःकरण उसको विविध कार्यों की ओर प्रेरित करता है। अन्तःकरण

---

1. The whole drama of evolution belongs to the object world. Intelligence, mind, senses are looked upon as the developments of unconscious prakṛti which is able to bring about this ascent on account of the presence of spirit.
   — Dr. S. Radhakrishnan : **Indian Philosophy**, Vol. I, 1948, p. 535.

2. The self-concept is presented as the unifying factor running through all our emotional experiences, habits, memorise, traits and values. Except under special circumstances, the self is either unconscious or is conscious in the form of self-image, an abstraction of one's perception of his real physique, intellect, habits, and emotions; of his conception of how others see him, and of fantasied qualities and accomplishments.
   —Ross Stagner : **Psychology of Personality** (1961), p. 212-13

असीम सम्भावनाओं का उद्गम केन्द्र ही नहीं सूक्ष्म रूप में प्रत्येक प्रकार के मानवीय-सम्बन्ध का दिशा-निर्देशक भी है। व्यक्तित्व की गतिशीलता, प्रभावात्मकता तथा विलक्षणता अन्तःकरण के द्वारा ही प्राप्त होने वाली विशेषताएँ हैं। योगिराज अरविन्द ने आत्मा को अनुभव एवं विवेक का संग्राहक माना है। पुनर्जन्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा है, 'जीवन में अन्तरात्मा को जो अनुभव प्राप्त होते हैं, उनके सारांश को वह एकत्र कर लेता है, तथा उन्हीं को आगे होने वाले विकास का आधार बना लेता है, जब जीव पुनः जन्म ग्रहण करता है तो इस अनुभूति-सार के आधार पर नया अंतःकरण बनता है, जो इस नयी क्रिया-प्रक्रिया में विकास प्राप्त करता है।'[1] व्यक्तित्व रचना में अन्तःकरण की प्रेरक शक्ति को महत्व देते हुए मनोविज्ञान के तत्व-चिन्तकों ने उसे विकासशील-तत्व के रूप में ग्रहण किया है।

प्रो० रास स्टैगनर ने व्यक्तित्व के विकास में आत्मचेतना के महत्व पर विचार करते कहा है, 'जब मनुष्य अपने और दूसरे में (व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से) अन्तर समझने लगता है तब आत्मचेतना का विकास होता है। वह इसके द्वारा अपने और परिवेश में स्थित अन्य व्यक्तियों की भिन्नता को समझता है। संगठित रूप में वह अपने व्यक्तित्व को पृथक रूप में देखता एवं प्रत्यक्ष शारीरिक अनुभूति द्वारा अपनी सत्ता का ज्ञान प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि आत्मचेतना ही व्यक्तित्व की पृथक सत्ता का बोधक है।'[2] इस व्याख्या से यह स्पष्ट हो गया है कि क्रियात्मक एवं निर्णयात्मक शक्ति के रूप में आत्मचेतना व्यक्तित्व के विकास में निरन्तर सहयोग प्रदान करती है।

व्यक्तित्व के विषय में विभिन्न मतों एवं विचार-सूत्रों का विवेचन करने से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व प्रत्यक्ष एवं अव्यक्त प्रभाव का एकनिष्ठ समन्वय है। वह

---

1. The soul gathers the essential element of its experiences in life and makes that its basis of growth in the evolution; when it returns to birth it takes up with its mental, vital physical sheaths so much of its Karma as is useful to it in the new life for further experience.

   —Sri Aurobindo (Yogiraja)—**Light on Yoga** (Arya Publishing House, Calcutta, 1948, p. 29.)

2. Self-awareness develops gradually as the individual recognizes the distinction between self and not-self, between his body and the remainder of the visible environment. It seems probable that awareness of his body furnishes a common core, about which self-reference becomes organized, although later one can distinguish self from the physical body.

   —Ross Stagner : **Psychology of Personality** (1961), p. 183.

सामाजिक सम्बन्धों का नियामक और उनके लिये दिशा-निर्देशक भी है। अन्तःकरण की अव्यक्त प्रेरणा से व्यक्तित्व को गतिशीलता प्राप्त होती है। अन्तःकरण से ही आत्मचेतना का उद्भव होता है जो व्यक्तित्व को विधि-निषेध के विधान द्वारा पृथक् सत्ता के अनुभव की क्षमता प्रदान करती है। अन्तःकरण स्वयमेव एक विकासशील तत्व है तथा व्यक्तित्व-रचना में अव्यक्त प्रेरणा के केन्द्र-स्थल के समान है। इस प्रकार व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप को समझने की चेष्टा करते हुए हम देखते हैं कि वह समन्वय-युक्त 'अहं', अन्तःकरण, परिवेश एवं विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों का नियामक तथा प्रभावपूर्ण शक्ति है जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के चिन्तन, कार्य, व्यवहार एवं प्रभाव आदि के माध्यम से ही सम्भव है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण द्वारा कहानीकार व्यक्तित्व के उपर्युक्त स्वरूप को कलात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। वह पात्र-विशेष के व्यक्तित्व का विश्लेषण करता हुआ उसकी विशेषताओं तथा स्वभावगत भिन्नता को व्यक्त कर उसे अन्य पात्रों से भिन्न दिखाता है। परन्तु व्यक्तित्व-विश्लेषण का क्षेत्र इस कार्य से आंशिक समाधान ही प्राप्त करता है। पात्रों के स्वभाव तथा चरित्र का उनके कार्य, व्यवहार एवं प्रभाव के आधार पर विश्लेषण करना अत्यावश्यक है, केवल भिन्नता एवं पृथक्-अस्तित्व के विवेचन में व्यक्तित्व का विश्लेषण संभव नहीं है। समाज के परिपार्श्व में व्यक्तित्व की जब प्रतिष्ठा होती है तब उसके ऐसे गुणों और विशेषताओं को भी प्रकाश में लाने का अवसर प्राप्त होता है, जो अन्य पात्रों के व्यक्तित्व में भी उसी रूप में उपलब्ध हैं। इस प्रकार सामाजिक-सम्बन्धों के कारण कतिपय समानताएं विभिन्न पात्रों को एक-दूसरे के निकट लाती हैं। व्यक्तित्व-विश्लेषण के अन्तर्गत इन समानताओं का चित्रण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कुशल कहानीकार मानव-मन तथा चरित्र के मूल में सात्विक एकता और भिन्नताओं में भी विशेष स्थलों पर समानता का दर्शन करता है। उसके सन्तुलित विश्लेषण द्वारा वह व्यक्तित्व की अनेकानेक सम्भावनाओं को सफलतापूर्वक व्यक्त कर पाता है। व्यक्ति के चरित्र को उसके व्यक्तित्व का प्रेरक मानते हुए श्री प्रेमचन्द ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि 'सभी आदमियों के चरित्र में बहुत कुछ समानताएँ होते हुए भी कुछ विभिन्नताएं होती हैं। यही चरित्र सम्बन्धी समानता और विभिन्नता—अभिन्नत्व में भिन्नत्व और भिन्नत्व में अभिन्नत्व—दिखाना उपन्यास का मुख्य कर्तव्य है।'[1] कहानी-रचना के क्षेत्र में भी उपर्युक्त निष्कर्ष पूर्णतः-सत्य प्रमाणित होता है। व्यक्तित्व-विश्लेषण को स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिये आवश्यक है कि कहानीकार इस तथ्य को अपनी दृष्टि से ओझल न होने दे।

१. प्रेमचन्द, 'कुछ विचार' (चतुर्थ संस्करण, १९४०), पृ० ३८।

व्यक्तित्व-चित्रण में स्वाभाविकता एवं सजीवता अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं का सहज-विकास ही उनके व्यक्तित्व-विश्लेषण के सोपानों का निर्माण करता है। इन विशेषताओं के स्वाभाविक चित्रण की आवश्यकता बतलाते हुए एम० एल० रॉबिन्सन ने लिखा है :

'चरित्रचित्रण[1] का अभिप्राय है कहानी में लोगों (पात्रों) के व्यक्तित्व को पर्याप्त मूर्तिमत्ता और स्वाभाविकता के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करना कि वे पाठकों के लिये छाया-मात्र न रहकर पुस्तक के समतल पन्नों से उभर आयें और कुछ समय के लिये तो व्यक्तित्व के गुणों को अवश्य ही ग्रहण कर लें।

कहानी की विभिन्न स्वाभाविक स्थितियों के मध्य ही व्यक्तित्व का सफल और सन्तुलित विश्लेषण सम्भव है। इस प्रकार पात्र सजीव होकर कहानी के दृश्यपट पर उपस्थित होते हैं। उनके कार्य और प्रभाव वास्तविकता के सृजन में तभी सफल हो पाते हैं, जब उनमें सहज गतिशीलता और स्वाभाविक-विकास की विशेषताएँ विद्यमान हों। उत्कृष्ट कहानियों में यह सतर्कता तथा वर्णन-सम्बन्धी यह सावधानी अनिवार्यतः अपेक्षित है।

---

1. The characterisation means briefly the setting people in the story with a sufficient degree of visibility and plausibility so that they may for the readers emerge from the flat page as more than shadowy names, and possess, for the time at least, the rudiments of personality."

—M. L. Robinson : "**Writing for Young People**" (1950), p 11

२

कहानी में व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप एवं अन्य विधाओं से उसका तुलनात्मक अध्ययन

कहानी और काव्य में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्राचीन काल में काव्यत्व सुन्दर, प्रिय एवं भावपूर्ण कथन को स्वीकार माना जाता है। आचार्य भामह, वामन, दण्डी एवं विश्वनाथ की काव्य-सम्बन्धी मान्यताओं में कथानक को प्रमुख स्थान प्राप्त है। पात्रगत विशेषताओं के वर्णन को भी विभिन्न रूपों में महत्व बनाया गया है। काव्य के अन्य रूपों, यथा प्रबन्धकाव्य की अपेक्षा कहानी की प्रकृति एवं विशेषताएं खण्डकाव्य के अधिक निकट हैं। कथानक के अंश-विशेष को प्रधानता देकर उसी के आधार पर खण्डकाव्य की रचना होती है।

खण्डकाव्य में पात्र-विशेष के व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने के लिये जीवन के एक अंश का चित्रण किया जाता है। कहानी में भी पात्र के व्यक्तित्व का निश्चित रूप प्रतिबिम्बित होता है, चित्रित हो जाता है। महाकाव्य एवं प्रबन्ध-काव्य में जीवन की विभिन्न घटनाओं का विस्तृत विवरण और सम्यक्-विवेचन के साथ वर्णन किया जाता है। अतः इस प्रकार विवेचन की सम्पूर्णता प्रबन्ध-रचना में तो सम्भवतः प्राप्त हो सकती है, परन्तु कहानी के सीमित बने हुए आकार में जीवन के एक प्रभाव, एक दृष्टिकोण अथवा उसको स्पष्ट करनेवाली एक घटना के माध्यम से व्यक्तित्व की एक निश्चित झलक ही दृष्टिगत होती है। उसमें प्रासंगिक-वर्णन, क्रमबद्ध घटनाओं के वर्णन अथवा सम्पूर्ण जीवन के विवेचन की न तो गुंजाइश है न आवश्यकता। खण्डकाव्य में एकदेशीयता का विशेष महत्त्व दिया जाता है। उसमें जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश अंकित होता है। इस प्रकार पात्रविशेष के व्यक्तित्व का सामूहिक प्रभाव प्रस्तुत करना उसका लक्ष्य है। कहानी द्वारा भी पात्र के व्यक्तित्व को इसी प्रकार की प्रभविष्णुता

के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। परन्तु खण्डकाव्य की अपेक्षा कहानी में व्यक्तित्व का विश्लेषण अधिक कलात्मक और चमत्कार-प्रधान होता है।

खण्डकाव्य में घटनाक्रम का सीधा वर्णन और चिरपरिचित सहज विस्तार उसके इतिवृत्त को स्पष्ट रूप प्रदान करता है। कहानी में कथानक विविध रूपों में विच्छिन्न होकर और उनके विस्तार में अनपेक्षित मोड़ आते रहते हैं। खण्डकाव्य में व्यक्तित्व अपनी पूर्वनिश्चित दिशा में निर्धारित गति से आगे बढ़ता है जबकि कहानी में व्यक्तित्व का विश्लेषण कभी-कभी एकदम चमत्कृत कर देता है, पूर्व मान्यताओं अथवा धारणाओं से सर्वथा विपरीत व्यक्तित्व का अप्रत्याशित रूप सामने आ जाता है, और अन्त में कहानी का प्रायः आकस्मिक रूप बनता है, जबकि खण्डकाव्य में अन्तिम स्थिति प्रारम्भ में प्रतिपादित काव्य के लक्ष्य के अनुकूल और स्वाभाविक होती है। आकस्मिकता को उसमें स्थान कहाँ? काव्य की संगीतात्मकता निस्संदेह खंडकाव्य का एक प्रमुख तत्त्व है। परन्तु कहानी में उसे कोई स्थान प्राप्त नहीं है। इसमें व्यक्तित्व से सम्बद्ध विश्लेषण तथा विवेचन की प्रधानता होती है। खण्डकाव्य में संगीत-तत्त्व से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है इस विवेचन-विश्लेषण तत्त्व का। क्योंकि व्यक्तित्व के निरूपण का यही आधार है और व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देने का प्रयास खण्डकाव्य में होता है तथा कहानी का तो वह लक्ष्य ही है।

काव्य में कल्पना-तत्त्व के महत्त्व को आलोचकों ने एकमत से मान्यता प्रदान की है। कहानी में भी कल्पना को किसी न किसी रूप में स्थान मिलता है। भाव-पक्ष की महत्ता काव्य में कल्पना की मुक्त उड़ान का द्वार उन्मुक्त कर देती है, परन्तु कहानी में रचनाकार का ध्यान निरन्तर अपनी सीमाओं की ओर आकृष्ट रहता है अतएव वह कल्पना को उतनी ही छूट देना उचित समझता है, जितनी पात्रों के व्यक्तित्व को सहज और विश्वसनीय गति देने के लिये नितान्त अपेक्षित है। काव्य की भाषा ने कहानी की रचना-शैली को दीर्घकाल तक प्रभावित किया है। कालक्रम पर विचार किया जाय तो काव्य कहानी का अग्रज है ही। ऐतिहासिक विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि काव्य में निहित कथातत्व के कलात्मक विकास ने ही आधुनिक युग तक आते-आते कहानी का स्वतंत्र-सत्तायुक्त समर्थ रूप ग्रहण कर लिया है। जहाँ तक भाषा की रमणीयता और आकर्षक भाव-प्रवण शब्दावली के प्रयोग का प्रश्न है, उसका सम्बन्ध कहानी से अब भी किसी न किसी रूप में है। सभी प्रगतिशील देशों के कहानी-साहित्य में प्रारम्भिक रचनाओं में काव्यात्मकता का यह मोह विद्यमान है। इसे व्यक्तित्व के निरूपण का एक साधन भी माना गया है। परन्तु जीवन की यथार्थता तथा परिवर्तनशील विचार-पद्धति ने कहानीकार को भाषा के इस मोहक रूप से मुक्त होने की प्रेरणा दी है। कहानीकार भावुकता के क्षणिक प्रभाव में कहीं-कहीं काव्य को

भाषा के कतिपय छींटे दे दे तो कोई हर्ज नहीं, परन्तु काव्य की भाषा की रंगीनी के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण वह ईमानदारी और सफलतापूर्वक कर ही नहीं सकता।

काव्य और कहानी के व्यक्तित्व-विश्लेषण में एक तात्विक अन्तर और है। काव्य में सद्गुणों का विवेचन, आदर्शों की स्थापना, जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों की उदात्त अभिव्यंजना तथा उत्कृष्ट लक्ष्य की सिद्धि को प्रायः सर्वत्र ही मान्यता प्राप्त है। जीवन का समुज्ज्वल पार्श्व ही प्रकाशित होता है काव्य के अंक में। परन्तु कहानी यथार्थ के अति निकट रहने के लिये सदैव प्रयास करती है। व्यक्तित्व का कोई भी स्वरूप कहानी में विश्लेषित होता है। जीवन के अंश-मात्र को प्रस्तुत करनेवाली कहानी आदर्शों के बन्धन में पात्रों के व्यक्तित्व को बाँधने का अनावश्यक प्रयत्न कभी नहीं करती। आदर्श हो या यथार्थ, सत्व हो या तम, पावनता हो या कालुष्य वह सब का समान अभिरुचि से चित्रण करती है। जिस किसी के माध्यम से व्यक्तित्व का सहज, सन्तुलित, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हो, वही कहानी का वरेण्य तत्व है। उसी के आधार पर उसके स्वरूप की प्रतिष्ठा होती है। काव्य में व्यक्तित्व का वह स्थिर और महत्वपूर्ण रूप प्रकाशित होता है जिसमें अपरिवर्तनीय शाश्वत गुणों का समावेश हो। प्रत्येक युग में मानव के जिन विशिष्ट गुणों और आदर्शों को काव्य की वर्ण्य-वस्तु के रूप में स्वीकार किया गया है, वे अपरिवर्तनीय हैं। कहानी-रचना में परिवर्तनशील वृत्तियों के चित्रण द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण को प्राधान्य प्राप्त है।

काव्य-रचना में परम्पराओं तथा शास्त्रीय निर्देशों को ध्यान में रख कर निश्चित विधि से पात्रों के व्यक्तित्व का वर्णन किया जाता है। कहानी में जीवन के किसी भी अंश को पात्र-विशेष के व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिये लिया जा सकता है। किसी पूर्वनिर्धारित लक्ष्य पर पहुँचना भी कहानीकार के लिये आवश्यक नहीं होता। काव्य के पात्र किसी वर्ग के प्रतिनिधि होते हैं। परन्तु कहानी में इसकी अनिवार्यता नहीं। किसी भी प्रकार के पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण कहानीकार द्वारा हो सकता है, चाहे वह किसी वर्ग का प्रतीक हो अथवा स्वतंत्र जीवन-दृष्टि से अनुप्राणित व्यक्तित्व से संयुक्त हो।

कहानी और नाटक में व्यक्तित्व-विश्लेषण

व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से कहानी और नाटक में कतिपय समान विशेषतायें हैं जो प्रस्तुत प्रसंग में विचारणीय हैं। नाटक का सम्बन्ध रंगमंच से है, और उसी के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व का परिचय उपलब्ध होता है। पात्रों का अभिनय जिस चरित्र को प्रस्तुत करने के लिये—जिस चरित्र की भूमिका में—मंच पर प्रदर्शित

होता है, उससे पूर्ण तादात्म्य कर लेना और उसके व्यक्तित्व को प्रभावशाली रूप देना उनका प्रमुख कार्य होता है। विभिन्न कार्यों द्वारा अभिनयकर्ता व्यक्तित्व-विशेष का कलात्मक ढंग से उपस्थित करने और उसका स्वाभाविक गति से विश्लेषण भी कर देते हैं। नाटककार पात्रों के बाह्य रूप और प्रत्यक्ष-व्यवहार को विविध माध्यमों से अंकित करता है। कथोपकथन उसका सर्वाधिक विश्वसनीय एवं उपयोगी साधन है। रंग-संकेतों द्वारा वह व्यक्तित्व का सांकेतिक विश्लेषण करता है।

व्यक्तित्व-विहीन पात्र की कल्पना भी रंगमंच पर सम्भव नहीं है। जीवन के किसी भी क्षेत्र से पात्रों का चुनाव करते समय नाटककार उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अपनी विश्लेषणात्मक दृष्टि का उपयोग करता है। किसी भी दृश्य-काव्य में अविस्मरणीय पात्रों का महत्व प्रत्येक युग में अक्षुण्ण बना रहता है। रंगमंच पर प्रस्तुत प्रत्येक कार्य व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रक्रिया को गति देने की शक्ति प्रदान करता है। व्यक्तित्व-विश्लेषण का सबसे अधिक प्रभावपूर्ण साधन है पात्रों के चरित्र का यथार्थ और मर्मस्पर्शी निरूपण। पाश्चात्य-विचारक लाजोस एग्री ने चरित्र-चित्रण की इस महत्वपूर्ण क्रिया को नाटक-रचना का मुख्य उद्देश्य मानते हुए उत्कृष्ट नाटककारों की कृतियों के सम्बन्ध में लिखा है :

'श्रेष्ठ नाटक उन कलाकारों की देन है, जो रचना के क्षेत्र में असीम धैर्यशाली थे।[1] सम्भवतः उन्होंने अपने नाटकों का सनारम्भ गलत सिरे से किया, परन्तु वे पग-पग पर संघर्ष करते रहे और तब तक पीछे हटते रहे, जब तक कि उन्होंने अपनी रचना का आधार चरित्र (पात्र-विशेष के व्यक्तित्व) को नहीं बना लिया। यह भी सम्भव है कि वे चरित्र के महत्व को इस रूप में न समझ पाये हों कि वह एक ऐसा तत्व है जो नाटक-रचना की नींव बन सकता है।'

अभिनय से सम्बन्धित होने के कारण नाटक को दृश्य-काव्य कहा गया है। यद्यपि वर्तमान युग में सभी नाटक अभिनेयता के गुण से समन्वित नहीं है, तथापि उनकी रचना में रंगमंच के कतिपय आवश्यक विधि-निषेधों का ध्यान रखा जाता है। पाठ्य नाटकों में भी यह आवश्यक समझा जाता है कि दृश्यों का आयोजन इस कुशलता से किया जाय कि पाठक-वर्ग उनके मंच पर अभिनीत होने की कल्पना सुविधापूर्वक

1. The great plays came to us from men who had unlimited patience for work. Perhaps they started their plays at the wrong end but they fought themselves back inch by inch, until they made character the foundation of their work, although they may not have been objectively conscious that character is the only element that could serve as the foundation.
—Lajoi Egri : **Plot or Characters,** p. 163.

कर सके । नाटककार का प्रत्येक शब्द पात्रों के व्यक्तित्व की ओर किसी न किसी रूप में संकेत देता है । कहानीकार की स्थिति इससे किंचित भिन्न है । उसे अभिनय और मंच के उपकरण प्राप्त नहीं हैं । नाटक-रचना में शब्द और अभिनेयता का समन्वय होना अनिवार्य है । कहानीकार को केवल शब्दों का आश्रय लेकर ही पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण करना पड़ता है । रंग-संकेतों द्वारा नाटककार पात्रों की वेशभूषा का जो निर्देश प्रस्तुत करता है, उसका अनुगमन कर अभिनेता मंच पर दृश्य उपस्थित करते हैं । भाव-भंगिमाओं और विविध कार्यकलापों में भी व्यक्तित्व के तत्त्व विश्लेषित हो जाते हैं । कथोपकथन द्वारा भी घटनाक्रम तथा चरित्र की अन्य विशेषताओं के साथ पात्रों के व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता है ।

कहानीकार के पास केवल शब्द-भंडार है । उसी के समुचित उपयोग द्वारा उसे व्यक्तित्व का सहज, सन्तुलित और विश्वसनीय विश्लेषण करना पड़ता है । उसे सीमित शब्दों में पात्रों के आकार-प्रकार, वेश-भूषा, कार्य-व्यवहार और मनःस्थिति का वर्णन कर, उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करना होता है । इतना अवश्य है कि रंगमंच की सीमाओं और निर्देशों से सर्वथा मुक्त होने के कारण कहानीकार अपनी रुचि तथा कल्पना के अनुसार व्यक्तित्व-निरूपण तथा उसके विभिन्न पक्षों के विवेचन में पूर्ण स्वतंत्र होता है । जहाँ नाटककार के लिये यह अनिवार्य है कि वह अपनी रचना के प्रत्येक दृश्य में हमारे वस्तुजगत् के पात्रों से सम्बन्ध स्थापित कराये, वहाँ कहानीकार को यह छूट है कि वह अलौकिक, काल्पनिक, एकदम अपरिचित और चौंका देने वाले पात्रों को अपनी रचना में स्थान दे । कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व की व्याख्या अपनी ओर से करने को भी स्वतंत्र है, परन्तु नाटककार पात्रों के स्वगत, कथोपकथन एवं कार्य द्वारा ही उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में संकेत प्रस्तुत कर सकता है । आवश्यक होने पर कहानीकार स्वयं पात्र के रूप में अन्य पात्रों के व्यक्तित्व का सांकेतिक विश्लेषण कर सकता है ।

संक्षिप्तता और आकर्षण को महत्त्व देते हुए कहानीकार नाटक के कुछ उपयोगी तत्त्वों का प्रयोग अपनी रचना में करता है । घटना-वैचित्र्य, कथोपकथन, मर्मस्पर्शी दृश्यों का अंकन, नाटक के आकस्मिक आरम्भ और अन्तिम नाटकीय परिणति ऐसे प्रमुख तत्त्व हैं, जो व्यक्तित्व-विश्लेषण में न्यूनाधिक सहायक सिद्ध होते हैं । व्यक्तित्व का सहज, स्वाभाविक रूप इनके द्वारा अभिव्यक्त होता है तथा कहानी में सरसता एवं स्वाभाविकता के गुण भी आ जाते हैं । नाटक में मुख्य कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं का समन्वय भी होता है, कहानीकार केवल मुख्य घटना पर ही अपनी दृष्टि केन्द्रित रखता है । सीमित शब्दों में वह मुख्य घटना के उतने ही अंश को प्राथमिकता दे पाता है जिसका सम्बन्ध पात्रों के व्यक्तित्व से किसी न किसी रूप में अवश्य हो । इस दृष्टि-

कोण से घटना-वैचित्र्य के उपयोग से दोनों विधाओं के मात्रा और अनुपात का तात्विक अन्तर परिलक्षित होता है।

अपनी विशेषताओं, उपलब्धियों और शिल्पविधि की दृष्टि से 'एकांकी' और 'कहानी', एक दूसरे के अधिक निकट हैं। नाटक में विस्तार, मुख्य कथा के साथ प्रासं-गिक घटनाओं के समाहार तथा अनेक प्रकार के दृश्यों के विधान का आग्रह होता है, जो रचना की प्रकृति को देखते हुए आवश्यक भी है, परन्तु एकांकी में एक ही, किसी न किसी मुख्य प्रसंग का ही चित्रण किया जाता है, जो कहानी के रचना-विधान में सम्भव भी है। दोनों रचनाओं में ही अभिव्यक्तिगत संवेदना की दृष्टि से एकाग्र-भाव का लक्ष्य होता है, जो कहानीकार का भी मुख्य धर्म है। अन्त में कुछ, अब विशेष आवश्यक पात्रों के व्यक्तित्व का मनोविज्ञानी विश्लेषण एकांकीकार द्वारा होता है और कहानीकार भी इसी विधि से व्यक्तित्व का विश्लेषण करता है। अभिनय तत्व की प्रधानता एकांकी को कहानी से भिन्न सिद्ध करती है क्योंकि कहानी में कथा-तत्व की प्रमुखता एकांकी के अभिनय का महत्वपूर्ण स्थान ले लेती है। तात्विक विवेचन से यही ज्ञात होता है कि नाटक की अपेक्षा एकांकी कहानी के अधिक निकट, समकक्ष और समानधर्मा है। नाटक को उपन्यास के समकक्ष तथा एकांकी को कहानी की प्रकृति के समीप इसलिए मानना उचित है कि इनमें उद्देश्य तथा विस्तार की एकरूपता प्राप्त होती है। अपेक्षाकृत बहुत कम समय में सुगठित कथानक के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने में उपन्यास की तुलना में कहानी को अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई है। इसी प्रकार अनेक अंकों से युक्त विस्तृत नाटक की अपेक्षा एकांकी को वर्तमान युग में अधिक प्रसार-क्षेत्र और समर्थन प्राप्त हुआ है। समय एवं साधन की बचत की ओर ध्यान देने वाला आधुनिक-युग का कार्य व्यस्त मानव एकांकी और कहानी द्वारा अपने मन तथा मस्तिष्क को सन्तुष्ट करना अधिक सुगम समझता है। विशद उपन्यासों को पढ़ने और दीर्घकाय नाटकों को देखने अथवा सुनने-पढ़ने का अवकाश ही उसे कहाँ मिल पाता है? कहानी और एकांकी में कथ्य की समानता भी उपलब्ध होती है। एक ही विषय को लेकर कहानीकार अपनी रचना को अग्रसर करता है तथा एकांकी-लेखक भी एक ही विषय को अपनी कृति का आधार बनाता है। अनेक विषयों, प्रसंगों अथवा जीवन के विविध दृश्यों को कहानी अथवा एकांकी में स्थान देना न तो सम्भव है और न उचित।

एकांकी में कुछ प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व को ही प्रकाश में आने का अवसर उपलब्ध होता है। कहानी में भी कतिपय मुख्य पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण सम्भव है। एकांकी की रचना में भी लेखक को सधी हुई शब्दावली का प्रयोग करते हुए पात्रों के जीवन के किसी विशेष अंश का चित्रण करना पड़ता है वैसे ही कहानी

[illegible] कलात्मक शैली द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण के निमित्त आवश्यक और उप-युक्त शब्दों का ही प्रयोग करना है। जिस प्रकार कहानीकार अन्तिम प्रभाव को [illegible] का प्रयत्न करता है, वैसे ही एकांकी लेखक चरम-परिणति को प्रभावपूर्ण तथा [illegible] बनाने का प्रयत्न करता है। कहानीकार का लक्ष्य [illegible] संवेदना के सृजन पर केन्द्रित होता है, विविध उद्देश्यों की सिद्धि [illegible] नहीं है। इसी प्रकार एकांकी का रचनाकार एक ही [illegible] एक ही संवेदना के सृजन तक अपने को सीमित रखता है। [illegible] दोनों का लक्ष्य एक ही है और उसकी सिद्धि की शैली [illegible] है। [illegible] के स्वरूप का शास्त्रीय विवेचन यह निर्णय देता [illegible] श्रव्य-काव्य के अन्तर्गत है और एकांकी दृश्य-काव्य के अन्तर्गत। रंगमंच [illegible] के लिये नितान्त आवश्यक है। कहानीकार को [illegible] प्राप्त है, रंगमंच जैसा कोई बन्धन उसके साथ नहीं। परन्तु अपने [illegible] और [illegible]-विशेषताओं के कलात्मक विश्लेषण के बाहर जाना उसके लिये भी उचित नहीं है। कहानीकार अपनी ओर से भी कुछ कहने के लिये स्वतन्त्र होता है; जब पात्रों के कथन और कार्य ही एकांकीकार के लिये व्यक्तित्व-विश्लेषण के साधन बनते हैं; परन्तु कहानीकार अपने विचार-संकेत अथवा स्वतन्त्र व्यक्तित्व [illegible] द्वारा भी पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करता रहता है। वर्णन और विश्लेषण की छूट तो कहानीकार को ही प्राप्त है, एकांकी में अभिनय द्वारा ही पात्रों का [illegible] व्यक्तित्व-विश्लेषण हो सकता है, वही एकांकी लेखक की सुनिश्चित सीमा है।

एकांकीकार के लिये मंच की सीमायें बन्धन अवश्य बनती हैं, परन्तु उससे पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण में कुछ सहायता भी प्राप्त होती है। शारीरिक प्रदर्शन तथा [illegible] मुद्राओं का अभिनय मंच पर उपस्थित पात्रों के व्यक्तित्व को कलात्मक और प्रभावपूर्ण विधि से अभिव्यक्त करता है। कहानीकार के पास केवल शब्द-समूह ही है। इसी के माध्यम से उसे पात्रों के व्यक्तित्व की अवतारणा कर उसका कलात्मक विश्लेषण भी करना है। मंच पर वातावरण और परिस्थितियों के प्रत्यक्ष प्रदर्शन की जो सुविधा एकांकी लेखक को है, वह कहानीकार के लिये अप्राप्य है। उसे दृश्यों, वातावरण अथवा समुचित परिस्थितियों के युक्तिसंगत चित्रण के लिये शब्दों का ही आश्रय लेना पड़ता है। अपनी रचना के सीमित सुसंगठित रूप की मर्यादा की रक्षा करता हुआ वह आवश्यक दृश्यों, वातावरण तथा परिस्थितियों का सतर्कता से अंकन करता है। उतना ही अंश वह प्रस्तुत करता है जो पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के लिये नितान्त अनुकूल हो। पात्रों के व्यक्तित्व का बाह्य-चित्रण भी उपयुक्त परिवेश के

भीतर ही करना आवश्यक समझता है। आन्तरिक वृत्तियों के अंकन में तो इसे और भी सतर्क रहने की आवश्यकता का अनुभव होता है।

कहानी और उपन्यास में व्यक्तित्व-विश्लेषण

कहानी और उपन्यास दोनों ही कथा-साहित्य के अन्तर्गत निश्चित विधाओं के रूप में मान्य हैं। रचनागत विशेषताओं तथा मूल तत्वों के समान होने के कारण प्रारम्भ में इन दोनों में भेद नहीं माना जाता था। केवल आकार-भेद से इनकी संज्ञा निर्धारित की जाती थी। कहानी का आकार बड़ा हो जाने पर उसे उपन्यास कहा जाता था तथा आकार-सीमित होने पर उपन्यास कहानी के नाम से लिया जाता था, इस भ्रान्ति मूलक धारणा का निवारण तब सम्भव हुआ जब कहानी [illegible] स्वतन्त्र, विकसित एवं स्व-तन्त्र युक्त हो गया। कहानी के वर्तमान रूप ने अब इस भ्रम को दूर कर दिया है कि कहानी उपन्यास का लघु रूप और उपन्यास कहानी का विस्तृत रूप है। कहानी की शिल्प-विधि अथवा रूपविधान की मर्यादाएं और सीमाएं उपन्यास रचना से सर्वथा पृथक हैं।

उपन्यास के विस्तृत पट पर अनेक पात्रों का जीवन अपनी समग्र विविधता के साथ अंकित होता है, परन्तु कहानी में पात्र-विशेष के जीवन का एक प्रभावपूर्ण मर्मस्पर्शी अंश ही अभिव्यक्त हो पाता है। उपन्यासकार को पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण की जो सुविधा, विस्तार के कारण, प्राप्त है, वह कहानीकार के लिये सम्भव ही नहीं है। इसलिए कहानीकार के कार्य का अधिक सतर्कतायुक्त, कलात्मक और प्रभावपूर्ण होना अनिवार्य बन जाता है। व्यक्तित्व के प्रमुख तत्व का सूक्ष्मपूर्ण विश्लेषण कर वह पात्र को पाठक के समक्ष स्थिति-विशेष प्रस्तुत करता है। सम्पूर्ण जीवन के अंकन के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण जितना मार्मिक और प्रभावपूर्ण हो सकता है, उतना ही प्रभावयुक्त एवं मर्मस्पर्शी रूप वह कहानी के सीमित दृश्य पट पर अंकित करने का प्रयास करता है। संक्षिप्तता यदि एक सीमा है तो कलात्मक अभिव्यक्ति की कसौटी भी है।

कहानी में व्यक्तित्व-विश्लेषण का आधार कथ्य या मुख्य घटना ही होती है। प्रासंगिक कथाओं में भटकने का न तो उसे अवकाश होता है, न उसके रूप-विधान में इसकी अपेक्षा होती है। उपन्यासकार अनेक प्रसंगों के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व का विशद निरूपण करता है, परन्तु कहानीकार सर्वाधिक प्रभावपूर्ण स्थिति की कलात्मक पकड़ को ही महत्व देता तथा व्यक्तित्व के एक ही रूप को व्यक्त करता है। पाठक की पूर्ण सन्तुष्टि यदि उपन्यासकार का लक्ष्य है तो उसे एक मार्मिक प्रेरणा देकर जागृत कर देना कहानीकार का उद्देश्य है। पाश्चात्य विचारक बेरीपेन के शब्दों

है, 'उपन्यास एक सन्तुष्टि है और कहानी एक प्रेरणा ।'[1] कहानीकार व्याख्या की विशदता में प्रवेश कर पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं करता, यह कार्य उपन्यासकार का है। वह तो एक ऐसी सशक्त और अमिट प्रेरणा का रचयिता है जो पाठकों के [illegible] मन पर स्थायी रूप से अंकित कर सके ।

उपन्यासकार के लिये कथा के क्रमिक विकास और उसके विभिन्न सूत्रों को संयुक्त करने की अनिवार्यता का पालन करना आवश्यक है। कहानीकार कथानक की इस विवशता से मुक्त है। किसी एक भाव या सत्य की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति कहानी का आधार हो सकती है। एक संवेदना अथवा प्रभावान्विति के सृजन के लिये आधार कहीं से भी—कथानक के सुनियोजित विकास के बन्धन को माने बिना भी—प्राप्त किया जा सकता है। कहानी के अधुनातन स्वरूप में कथानकत्व की महत्ता कम होती जा रही है। उसके स्थान पर पात्रों के व्यक्तित्व का मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण अधिक महत्व प्राप्त करता जा रहा है। घटना-चक्र अथवा कथानक की इस स्थिति का विवेचन करते हुए बाबू गुलाबराय ने लिखा है 'बिल्कुल आधुनिक कहानी में घटनाचक्र का महत्व घटता जा रहा है। घटनाएं भाव और विचारों को आश्रय देने के लिये खूंटी (अर्गनी) का सा काम देती हैं, और कहीं-कहीं तो एक बिन्दु की खूंटी मात्र रह जाती है। जीवन के सर्वांगपूर्ण चित्रण का आग्रह कहानी में नहीं होता। इसलिये उसे सुसम्बद्ध कथानक की आवश्यकता नहीं होती। व्यक्तित्व के विशिष्ट रूप को विश्लेषित करने के लिये कहानीकार किसी घटना, दृश्य, अनुभूति अथवा भावोत्तेजक प्रश्न को ग्रहण कर सकता है।'[2]

बाह्य एवं आन्तरिक वृत्तियों के विश्लेषण की खुली छूट उपन्यासकार को प्राप्त है, अतएव विविध मनोवृत्तियों, जटिल अन्तर्द्वन्द्वों तथा प्रतिक्रियाओं का वह विस्तार से वर्णन करता है। कहानीकार सांकेतिक रूप से ही पात्रों के बाह्य व्यक्तित्व का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करता है। मनोवृत्तियों के विस्तृत-विवेचन की ओर अग्रसर होना वह अनावश्यक समझता है। आन्तर-व्यक्तित्व की झलक मात्र ही प्रस्तुत करना उसका उद्देश्य होता है। इस सम्बन्ध में डा० श्रीपति शर्मा का विचार दृष्टव्य है—'कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव जीवन का सम्पूर्ण

1. The novel is a satisfaction, the short story is a stimulus.
—Berry Pain : **The Short Story:** P. 45
2. गुलाब राय—सिद्धान्त और अध्ययन, पृ० २०७ ।

तथा वृहद् रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता, न इसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का सम्मिश्रण होता है। वह विशाल रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल, बूटे सजे हुये हैं, बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।[1] यह सत्य तथ्य है कि कहानीकार का उद्देश्य विशद चरित्र-चित्रण नहीं वरन् पात्रों के व्यक्तित्व का संक्षिप्त कलात्मक विश्लेषण है।

वातावरण के सृजन में उपन्यासकार तथा कहानीकार के दृष्टिकोण में विशेष अन्तर दृष्टिगत होता है। उपन्यासकार पात्रों के सम्पूर्ण जीवन का अंकन करता है अतएव सुविस्तृत पृष्ठभूमि की उसे आवश्यकता होती है। वातावरण के अनेक परिवर्तनशील रूपों को वह विविध प्रसंगों में चरित्र-चित्रण के निमित्त अंकित करता है। परन्तु कहानीकार वातावरण को अपने में ही न प्रधान मानता है, न उसके स्वतन्त्र वर्णन की ओर झुकता है। वातावरण का उतना ही सोद्देश्य वर्णन उसके लिये समीचीन है, जितना व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिये अनिवार्यतः अपेक्षित है। वातावरण-प्रधान कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व से ही वातावरण का सघन सम्बन्ध बना रहता है। व्यक्तित्व को उत्कर्ष प्रदान करने अथवा उनकी विशेषताओं को मार्मिक बनाने में वाता-वरण की उपयोगिता अक्षुण्ण है। कहानीकला के विकास के साथ ही वातावरण के वर्णन की संक्षिप्तता और व्यक्तित्व को स्वाभाविक रूप देने में उसकी सार्थकता को स्वीकार करने का आग्रह बढ़ता गया है।

उद्देश्य की भिन्नता के कारण उपन्यास और कहानी की रचनाशैली में भी भिन्नता प्राप्त होती है। जीवन का विस्तारयुक्त चित्रण करनेवाला उपन्यास सामान्यतः वर्णन-प्रधान होता है, जबकि पात्रों के व्यक्तित्व की मार्मिक अभिव्यक्ति को महत्त्व देने वाली कहानी में व्यंजनात्मक शैली को ही स्थान प्राप्त होता है। कम से कम शब्दों का उपयोग कर अधिकतम प्रभाव की सृष्टि करना कहानी का लक्ष्य है जिसकी पूर्ति व्यंज-नात्मक शैली से ही सम्भव है। पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषण द्वारा प्रस्तुत करने के लिये कहानीकार जिस शैली का प्रयोग करता है, वह कसी हुई, ठोस और अनिवार्यतः अपेक्षित शब्दावली के द्वारा ही विनिर्मित होती है। कहानी की एकध्येयता रचनाकार को एक क्षण के लिये भी मुख्य उद्देश्य से भटकने नहीं देती, परन्तु उपन्यासकार विविध प्रसंगों और वर्णनों के महाजाल में भटकने के लिये स्वतंत्र है। किसी भी तथ्य या कथ्य को वह विस्तार से रखने का प्रयास करता है, अतएव उसकी रचनाशैली में वर्णनात्म-कता की विशेषता स्वाभाविक और अनिवार्य है।

कहानीकार और उपन्यासकार दोनों अपने पात्रों के व्यक्तित्व के सृष्टा और

---

१. डॉ० श्रीपति शर्मा, 'कहानीकला और प्रेमचन्द', पृ० १३।

[illegible] होते हैं। विभिन्न परिस्थितियों, प्रसंगों और परिवर्तनों के मध्य व्यक्तित्व का [illegible] चित्रण उपन्यासकार द्वारा होता है। कहानीकार तो व्यक्तित्व की एक मोहक और प्रभावपूर्ण झलक ही प्रस्तुत करता है। पात्रों के बाह्य एवं आन्तरिक रूप तथा प्रवृत्तियों के चित्रण के माध्यम से दोनों ही उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं। कथोपकथन तथा वार्तालाप के द्वारा दोनों प्रकार की रचनाओं में नाटकीयता का गुण भी [illegible] रहता है। उपन्यास की भाँति कहानी में भी वर्णन और संवाद के तत्व [illegible] हैं, परन्तु उपन्यासकार की भाँति विस्तृत वर्णनों के जंजाल में ले जाने और [illegible] के [illegible] के उद्घाटन करने के लिये पाठकों को विवश करने का कार्य कहानीकार के [illegible] नहीं है अपितु [illegible], मनोवैज्ञानिक तथा संक्षिप्त विश्लेषण द्वारा [illegible] चरित्र-विश्लेषण करना है। अपने पात्रों के जीवन की [illegible] विशेषताओं पर दृष्टि केन्द्रित रखने वाला कुशल कहानीकार पाठक-वर्ग को विस्तृत वर्णन के [illegible] में उलझा कर व्यस्त नहीं हो जाता, वरन् सतत प्रयत्न करता है कि वह विश्लेषण के 'सागर' को अपनी व्यंजना-प्रधान शैली के 'गागर' में भरकर पात्रों के व्यक्तित्व का अमिट प्रभाव प्रदान कर सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यासकार पात्रों के व्यक्तित्व के विशद् विवेचन का [illegible] विविध प्रसंगों की पृष्ठभूमि निर्मित करता है, व्यक्तित्व के सुविस्तृत विश्लेषण की ओर उसका सहज आकर्षण बना रहता है। कहानीकार मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की सूक्ष्मता का अवलम्बन लेकर सांकेतिक और कलात्मक रूप में ही पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का उद्देश्य सम्पन्न करता है।

कहानी और संस्मरण : व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से

कहानी और संस्मरण व्यक्ति के जीवन के एक अंश को व्यक्त करने के उद्देश्य से [illegible] समानधर्मी विधाएँ हैं। व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से उनमें एक महत्वपूर्ण अन्तर है। कहानी कल्पना-प्रधान घटना अथवा कथ्य के आधार पर व्यक्तित्व को विश्लेषित करती है, जबकि संस्मरण वास्तविक घटनाओं और सुनिश्चित तथ्यों पर आधारित होता है। व्यक्तित्व-विश्लेषण में संस्मरण-लेखक केवल टिप्पणियों या आलोचनात्मक संकेतों द्वारा अपने विचार उपयुक्त स्थलों पर व्यक्त कर सकता है। कल्पना द्वारा वर्ण्य विषय अथवा घटना को मोड़ कर पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की छूट तो केवल कहानीकार को ही प्राप्त है।

संस्मरण-लेखक अपने द्वारा प्रस्तुत व्यक्तियों चरित्र की तथ्यपूर्ण विवेचना के सहारे उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण करने का प्रयास करता है, परन्तु उसकी मर्यादाएँ और सीमाएँ उसकी गति को अवरुद्ध करती हैं तथा विश्लेषण सहज ही तथ्यपरक हो

कर आकर्षण-रहित बन जाता है। कहानीकार की कल्पना अवांछित अंश के पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण में योग प्रदान करती है। विगत काल से घटित घटना तथा व्यक्तित्व से उपलब्ध प्रभाव के आधार पर ही संस्मरण-लेखक अपनी रचना को स्थापित करता है। वास्तविक घटना का आधार लेने पर भी कहानीकार उसे कल्पना द्वारा अलंकृत करता तथा आवश्यकतानुरूप उपयुक्त परिवर्तन भी कर लेता है। इस प्रकार व्यक्तित्व-विश्लेषण में उसे अधिक मुक्त क्षेत्र प्राप्त होता है। संस्मरण-लेखक अपने पात्रों के व्यक्तित्व को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करता है और निरपेक्ष भाव से उसका विश्लेषण कर देता है। कहानीकार अपने पात्रों के व्यक्तित्व का स्रष्टा भी होता है, केवल कलाकार ही नहीं। विभिन्न कार्यों द्वारा कहानी-लेखक पात्रों के व्यक्तित्व को जितने कलात्मक रूप में प्रतिष्ठित करता है, उतनी स्वतन्त्रता यथार्थ-वर्णन की सीमाओं में बंधित संस्मरण-लेखक को प्राप्त हो नहीं हो सकती।

इस प्रसंग में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि कहानीकार यथार्थ की उपेक्षा नहीं करता वरन् व्यक्त यथार्थ के स्थान पर अव्यक्त यथार्थ को प्रकाश में लाना ही उसका मुख्य उद्देश्य होता है। यद्यपि नाम स्थान और देशकाल की कल्पना करने को कहानीकार स्वतंत्र है, तथापि उसकी कल्पना की सीप में यथार्थ का मौक्तिक ही जन्म लेता और वह पात्रों के व्यक्तित्व को ऐसी आभा प्रदान करता है जो चमत्कृति नहीं विश्वसनीयता को विकसित करती है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते समय कहानीकार प्रसंगानुकूल परिवर्तनों का संकेत भी देता है। ऐसे परिवर्तन ठोस कारणों पर आधारित होते हैं। संस्मरण-लेखक बीती हुई घटनाओं की सीमा में ऐसा आबद्ध होता है कि वह पात्रों के व्यक्तित्व के विकास-क्रम की आलोचना कर ही नहीं सकता है।

संस्मरण-लेखक बाह्य रूप से जो कुछ देखने, सुनने और समझने के साधन उपयोग में लाता है वे व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष की तथा आकस्मिक परिवर्तनों की व्याख्या करने में समर्थ नहीं होते। मानव-स्वभाव के विश्लेषण में भी संस्मरण-लेखक को उतनी स्वतंत्रता नहीं होती जितनी कहानीकार को। प्रत्यक्ष और वर्त्तमान पर आधारित वर्णन द्वारा ही संस्मरण-लेखक व्यक्ति-विशेष के विभिन्न क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं तथा व्यवहार द्वारा उसके व्यक्तित्व का परिचय देता है, परन्तु कहानीकार विगत जीवन के मार्मिक संकेत तथा भावी परिणामों के महत्वपूर्ण उल्लेख द्वारा व्यक्तित्व की सम्पूर्णता की झलक प्रस्तुत करता है। पात्रों के व्यक्तित्व की कल्पना करते समय कहानीकार किसी निश्चित सीमा में बंधा नहीं रहता, वह किसी प्रसंग, विवरण, घटना, देश-काल और परिस्थिति से प्रेरणा ग्रहण कर अथवा उनमें से कई एक के सम्मिलित प्रयोग द्वारा अपेक्षित पात्र के व्यक्तित्व का निरूपण कर सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक कार्य उसके व्यक्तित्व से सम्बद्ध और उद्देश्ययुक्त होता है। कुशल कहानीकार की लेखनी से सृजित कोई भी पात्र अनावश्यक और निरुद्देश्य भाव से कोई कार्य नहीं करता। तात्पर्य यह कि संस्मरण-लेखक वर्णित पात्र के व्यक्तित्व का विवेचन परिस्थितियों की सीमाओं से आबद्ध होकर करता है जबकि कहानीकार पात्र विशेष के व्यक्तित्व को अपनी कल्पना तथा लक्ष्य के अनुकूल ढालने को स्वतंत्र होता है।

[illegible]

कहानी के पात्र और उनका व्यक्तित्व—कहानी में पात्र और उनके व्यक्तित्व का सर्वोपरि महत्त्व है। किसी भी घटना, कथ्य, भाव अथवा वातावरण के सृजन में पात्र का अस्तित्व अनिवार्य होता है। उनके अभाव में कहानी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। कहानी की घटनाओं का संचालन पात्रों पर निर्भर होता है तथा वातावरण के प्रभाव को सजीव बनाने में भी उन्हीं का सहयोग अनिवार्यतः अपेक्षित होता है। घटना का सम्बन्ध परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी पात्र के व्यक्तित्व से होता ही है। वस्तुजगत् में हम देखते हैं कि अनेक ऐसी भी घटनाएँ घटित होती हैं, जिनका सम्बन्ध मानव व्यक्तित्व से किसी भी रूप में दृष्टिगत नहीं होता, परन्तु कहानी की सृष्टि में कोई ऐसी घटना घटित नहीं होती जिसका सम्बन्ध किसी पात्र के व्यक्तित्व से न हो। घटनाओं के विकास द्वारा पात्रों का व्यक्तित्व विश्लेषित होता तथा व्यक्तित्व-विश्लेषण के माध्यम से घटनाओं के सहज विकास में महत्त्वपूर्ण योग प्राप्त होता है। इस प्रकार कहानी में वर्णित घटना और पात्र के व्यक्तित्व का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है।

कभी-कभी कहानी में मानवेतर प्राणियों को स्थान दिया जाता है। व्यक्तित्व विवेचन के दृष्टिकोण से उनमें पूर्ण तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब कभी मानवेतर प्राणी, जैसे पशु-पक्षी आदि की कहानी में अवतारणा की जाती है, तथा उनके प्रभावपूर्ण सशक्त रूप को व्यक्त किया जाता है, तब उन्हें मानवोचित संवेदना दी जाती है। मानव व्यक्तित्व के मूल तत्वों की उनमें प्रतिष्ठा की जाती है। उनकी क्रिया-प्रतिक्रिया को उसी विधि से अभिव्यक्त किया जाता है, जिस विधि से मानव-व्यक्तित्व के विश्लेषण का प्रयास होता है। इस प्रकार पशु-पक्षी, कीट-पतंग इत्यादि मानव व्यक्तित्व की विशेषताओं से समन्वित होकर कहानी के दृश्य-पट पर महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेते हैं। कभी-कभी मानवीय भाषा का कल्पित प्रयोग भी उनको अधिक संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से उनके द्वारा कराया जाता

है। तात्पर्य यह कि इस प्रकार का सम्पूर्ण प्रयत्न मानव-व्यक्तित्व के आधारभूत तत्वों पर ही आश्रित होता है।

कहानीकार पात्रों का चयन करता और उनके व्यक्तित्व का कहानी के विषय के साथ विशेषतः सम्बन्ध स्थापित करता है। वस्तु-जगत के मानव-व्यक्तित्व से कहानीकार द्वारा प्रस्तुत कल्पित पात्रों का व्यक्तित्व भिन्न अवश्य होता है, परन्तु दोनों प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व में कोई भेद या अन्तर्विरोध नहीं होता। तात्पर्य यह है कि कहानीकार की कल्पना का आधार शून्य नहीं होता वरन् वस्तु-जगत की मान्यताओं और विविध स्थितियों का कलात्मक चयन ही उसे कल्पना का आधार प्रदान करता तथा कल्पित पात्रों का व्यक्तित्व भी विश्वसनीय, परिचित और सहृदयग्राह्य बन जाता है। किसी एक अथवा अनेक पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं की प्रतिष्ठा कर कहानीकार अपने पात्र के व्यक्तित्व को संगठित करता तथा उसकी चित्त वृत्तियों, भावों तथा चित्त-प्रवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। यह निश्चित है कि वस्तुजगत के पात्रों से भिन्न अथवा विपरीत पात्रों की कल्पना कहानीकार के लिये न तो युक्ति-संगत है न अपेक्षित। कहानी का उद्देश्य पात्रों के व्यक्तित्व के माध्यम से यथार्थ जगत की विविध स्थितियों और समस्याओं का कलात्मक अंकन ही होता है, ऐसी स्थिति में वस्तुजगत से सर्वथा विच्छिन्न पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण कोई अर्थ नहीं रखता।

कहानीकार वस्तुजगत के पात्रों के व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करता, उनकी संगति को ध्यान में रखते हुये अपने कल्पित पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करता है परन्तु अन्धवत् अनुकरण में उसका विश्वास नहीं होता। ज्यों का त्यों किसी व्यक्ति को कहानी में प्रस्तुत करना कलात्मकता के लिये बाधक सिद्ध होता है। हम कह सकते हैं कि वस्तुजगत के पात्रों के व्यक्तित्व से कहानीकार प्रेरणा ग्रहण करने को स्वतंत्र है, परन्तु जीवनी-लेखक के समान वह किसी जीवित व्यक्ति का यथातथ्य ब्यौरा नहीं लिखता है, वरन् अपनी कला, कल्पना, विवेचना तथा विश्लेषण शक्ति का उपयोग कर अपनी स्वतंत्र तथा समर्थ सृष्टि के रूप में विशिष्ट पात्रों के व्यक्तित्व की रचना करता है। सीमित संख्या में पात्रों के सतर्क चयन की महत्ता उत्कृष्ट कहानीकार की निरीक्षण और परीक्षण शक्ति को विकसित करती रहती है। उपन्यासकार अथवा जीवनी-लेखक की भाँति विशद विवेचनयुक्त विवरण प्रस्तुत करता हुआ वह बहुसंख्यक पात्रों के व्यक्तित्व का समावेश अपनी रचना में नहीं कर सकता। अतएव वह वस्तु-जगत के पात्रों से कतिपय आवश्यक तथ्यों को ही ग्रहण करता है। व्यक्तित्व-विश्लेषण में वह किसी व्यक्ति से आकार-प्रकार और किसी से भाव-व्यवहार ग्रहण कर अपने कल्पित पात्र को कथा के पट पर प्रस्तुत करता है। गुण-अवगुण, शौर्य-उत्साह, दुख-निराशा आदि अनेक भावों और वृत्तियों को एक या अनेक व्यक्तियों से ग्रहण कर

कहानीकार अपने द्वारा कल्पित पात्र के व्यक्तित्व की केवल रचना ही नहीं करता वरन् विभिन्न प्रसंगों द्वारा स्थितियों में उसका कलात्मक विश्लेषण भी करता है।

प्रेरणा और पृष्ठभूमि

कहानीकार व्यक्ति-जगत और कल्पना-जगत को प्रेरणा[3] का स्रोत मानकर विभिन्न प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व की रचना तथा विश्लेषण किया करता है। पृष्ठभूमि के रूप में सुविस्तृत सामाजिक एवं व्यावहारिक कार्यों के विविध क्षेत्र उसे प्राप्त हैं। अपनी प्रवृत्ति, रुचि तथा शक्ति के अनुसार कहानीकार जीवन और जगत के विभिन्न क्षेत्रों से कथा-वस्तु ग्रहण करता है। उनकी कलात्मक तथा सजीव अवतारणा में विशिष्ट पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण करता है। कतिपय श्रेष्ठ कहानीकारों ने सीमित क्षेत्र में ही सफल प्रयोग कर अनेक अविस्मरणीय पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण कर डाला है। दूसरी ओर प्रेमचन्द, व्यापक-दृष्टि-सम्पन्न कहानीकार हैं, जिन्होंने समाज के विविध पक्षों पर अन्तर्भेदिनी दृष्टि डाली है और विशिष्ट पात्रों के व्यक्तित्व के माध्यम से अनेकानेक समस्याओं का विश्लेषण किया है।

कहानीकार अपनी रचना की शिल्पगत सीमाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। अतएव वह समाज अथवा व्यक्ति के सम्पूर्ण चित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं करता है। वरन् उसके एक अंग को ही अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार किसी एक समस्या, घटना अथवा प्रतिक्रिया को अभिव्यंजित करना ही कहानीकार का उद्देश्य होता है। कुछ कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन की विविध स्थितियों और समस्याओं का चित्रण करते हुये वर्ग-विशेष के पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है, तो कुछ ने नगर-जीवन के विविध रूपों को अंकित करते हुये शहरी पात्रों के व्यक्तित्व की व्याख्या की है। आर्थिक और नैतिक समस्याओं को ही अपना वर्णन-क्षेत्र बनाने वाले कतिपय कहानीकारों ने इस सीमित पृष्ठभूमि में ही व्यक्तित्व विश्लेषण की कुशलता का परिचय दिया है। समाज के विभिन्न स्तरों—उच्च, मध्यम, निम्न—के पारस्परिक सम्पर्क से सम्बद्ध विविध समस्याओं के आलोक में भी कहानीकारों ने मानव व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। ऐसे भी कुशल कहानीकार बड़ी संख्या में हैं जिन्होंने मानव-मन के विश्लेषण को अपनी रचना का आधार माना है तथा मनोवैज्ञानिक विवेचन द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व की गहराई में प्रवेश करने का प्रयत्न किया है।

इस प्रकार देखने में आता है कि कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण को सीमित और विस्तृत वर्णन-क्षेत्र में प्रस्तुत करने के लिये स्वतंत्र है। परन्तु विश्लेषण का स्वरूप तथा उसकी प्रभविष्णुता प्रत्येक कलाकार की सभी रचनाओं में एक समान नहीं रहती। सीमित क्षेत्र में व्यक्तित्व-विश्लेषण करने वाले कहानीकार इस प्रयास में

कुछ सफल भी हो सकते हैं कि उनके विश्लेषण का स्वरूप और प्रभाव अधिकांश रचनाओं में एक जैसा ही है, लेकिन विस्तृत क्षेत्र को कहानी का आधार बनाने वाले लेखक के लिये न तो यह सम्भव है न समीचीन कि वह एक ही प्रकार से तथा समान प्रभाव का सृजन करते हुये अपनी प्रत्येक कहानी में एक ही रूप में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करे। एक ही क्षेत्र को अपनाने वाले दो अथवा अधिक कहानी-लेखकों की रचनाओं में व्यक्तित्व-विश्लेषण के रूप तथा प्रभाव की भिन्नता देखी जा सकती है। एक ही घटना के माध्यम से व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाले दो कहानीकारों की पकड़ तथा प्रस्तुतीकरण की विधि में विशेष अन्तर हो सकता है।

वर्णन की आधारभूमि के दृष्टिकोण से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि विभिन्न वर्गों के कलाकारों ने हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेरणा के रूप में विविध क्षेत्रों से पात्रों के व्यक्तित्व-रत्न प्राप्त किये हैं। प्रारम्भिक कहानियों में नीति, उपदेश और मनोरंजन तक ही कहानीकारों की दृष्टि सीमित है। अतएव इन उद्देश्य को पूरा करने वाले पात्रों का चयन अपेक्षाकृत बहुत कम विस्तृत क्षेत्र से किया गया है। राष्ट्रीय जागरण के साथ ही देशभक्ति, स्वराज्य-आन्दोलन, शान्ति, अहिंसा, सत्याग्रह आदि सामयिक व्यापक विषयों का समाहार कहानी-रचना के क्षेत्र में किया गया और इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये अनेकानेक पात्रों के व्यक्तित्व को इस वर्ण्य-वस्तु के आलोक में प्रस्तुत किया गया। समाज की आर्थिक और सामाजिक मान्यताओं के तीव्र-गामी परिवर्तनों ने किसान, मजदूर, दलित और उपेक्षित वर्ग की बहुमुखी समस्याओं को विचारशील कहानीकारों के समक्ष प्रस्तुत किया। अनेक हिन्दी कहानीकारों ने इस क्षेत्र से पात्रों का चयन कर उनके व्यक्तित्व का सजीव और प्रभावपूर्ण विश्लेषण किया। मनोवैज्ञानिक विचार-पद्धति तथा विश्लेषण की प्रधानता ने जब पाश्चात्य कथासाहित्य को विशेष रूप से प्रभावित किया तो उसका प्रभाव हिन्दी कहानी साहित्य पर भी पड़ा। अनेक यशस्वी हिन्दी कहानीकारों ने मनोविश्लेषण को ही अपना वर्णन-क्षेत्र बनाया और मानव-व्यक्तित्व के स्वरूप तथा रहस्यों का विश्लेषण किया। वर्तमान समाज और जीवन की विविध समस्याओं को कहानी के माध्यम से विश्लेषित करने वाला कहानी-लेखक आज अनेक दिशाओं से पात्रों का संचय करता और उनके व्यक्तित्व का तथ्यपरक तथा सहज विश्वसनीय विश्लेषण करता है।

व्यक्तित्व के प्रकार

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है, विशेष रूप से उन पात्रों की संख्या जिनके व्यक्तित्व के विश्लेषण की ओर कहानीकार की सतर्क दृष्टि केन्द्रित रहती है। सापेक्षिक महत्व के दृष्टिकोण से कहानी के पात्रों के व्यक्तित्व के दो प्रकार देखने में आते हैं :

१. प्रमुख पात्र अर्थात् नायक और नायिका का व्यक्तित्व।

२. सहायक अथवा गौण पात्रों के व्यक्तित्व।

प्रधान पात्र के व्यक्तित्व पर ही सम्पूर्ण कहानी का विकास और अन्तिम प्रभाव आधारित रहता है। कहानी के लघु चित्र-फलक पर प्रधान पात्र का व्यक्तित्व ही पाठकों के लिये अभिलषित प्रभाव का सृजन करता है। इससे ही कथानक को गति प्राप्त होती है। उपन्यासकार अथवा नाटककार की भाँति कहानी-लेखक विस्तृत भूमिका तथा अवान्तर का आश्रय न लेकर प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व को केन्द्रीय [illegible] और उसी के आधार पर अपनी रचना का विकास करता है। सहायक पात्र तो [illegible] विशेष स्थलों पर कथानक के विकास के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं। [illegible] अथवा कहानी के लक्ष्य का उनके व्यक्तित्व से सीधा सम्बन्ध नहीं होता, कथानक को स्वाभाविक गति देने में वे सहायक सिद्ध होते हैं। प्रधान पात्र के व्यक्तित्व-विश्लेषण में भी उनसे सहायता प्राप्त होती है। कहानीकार स्वतंत्र रूप से विवेचन के विस्तार में न जाकर, कभी-कभी अपेक्षित आलोचना गौण पात्रों के माध्यम से ही कर लेता है। कहानीकार की ओर से यही प्रयास होता है कि केवल आवश्यक और सीमित मात्रा में ही सहायक पात्रों के व्यक्तित्व का समावेश और विश्लेषण किया जाय।

प्रधान-पात्र और उसका व्यक्तित्व

भारतीय काव्यशास्त्रकारों ने कथा-साहित्य में नायक के व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्व दिया है। नाट्य-साहित्य के प्रसंग में तो नायक के गुण-धर्म का विस्तृत विवेचन सभी प्रमुख आचार्यों ने किया है। कथा और कहानी के सिद्धान्त-निरूपण के प्रसंग में देखा जा सकता है कि नायक के व्यक्तित्व के बाह्य पक्ष को महत्व देते हुये भी उसके विजय, विक्रम, उदारता और वैभव को कथा-साहित्य में प्रारंभ में विशेष मान्यता दी गयी है। नायक के गुणों और चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर उनको कई श्रेणियों में विभाजित किया गया है। आधुनिक कहानी तक आते-आते इस मान्यता और श्रेणी विभाजन का महत्व समाप्त हो गया है। प्राचीन कथाओं में जहाँ एक ओर नायक के आभिजात्य गुणों पर विशेष बल दिया गया है, वहाँ उसके विजय, सफलता तथा फलागमयुक्त सिद्धि को अनिवार्य रूप से ग्रहण कर विविध परिस्थितियों में उसके व्यक्तित्व का उत्कर्ष दिखाया गया है। आधुनिक कहानी-साहित्य में प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का महत्व तो कम नहीं हुआ है, परन्तु उसे उपर्युक्त अनिवार्यताओं से मुक्ति अवश्य मिली है। यह देखा जाता है कि कहानी का प्रमुख पात्र अब भी किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण रचना पर छाया रहता है। यदि वह कहानी के किसी एक

ही स्थल पर अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ आता है तब भी सर्वाधिक प्रभाव का सृजन उसके व्यक्तित्व में होता है। उसी के अनुरूप कहानी के मर्म तत्त्व सन्नि-लीन रहते हैं।

आज के मानव का व्यक्तित्व विविध सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं मनो-वैज्ञानिक समस्याओं से सम्बद्ध है जिनमें निहित इन समस्याओं के अनेक रूप कहानी-लेखक की लेखनी से सहज उभरते रहते हैं। इस प्रकार कहानी के प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व को किसी निश्चित आदर्श की मर्यादा में बाँधना सम्भव नहीं रह गया है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि व्यक्तित्व का गठन विविध गुणों और अवगुणों, भावों-वृत्तियों, क्रियाओं तथा आचरणों पर आधारित है। किसी विशेष वर्ग, जाति, समाज अथवा क्षेत्र से कहानी के प्रमुख पात्रों का चुनाव करने की मान्यता का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है।

प्रमुख पात्र के रूप में पुरुष अथवा नारी किसी के व्यक्तित्व का ग्रहण किया जा सकता है। कथा-वस्तु के अनुसार प्रमुख पात्र का चयन युक्तिसंगत माना जाता है। व्यक्तित्व की बाह्य तथा प्रत्यक्ष वृत्तियों के प्रकाश में पुरुष पात्र को तथा अन्तर्मुखी वृत्तियों के आलोक में नारी पात्र को प्रमुख स्थान दिया जा सकता है। परन्तु इस सूत्र को कठोर नियम के रूप में स्वीकृति देना कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विभाजन में पुरुष अथवा स्त्री किसी भी ओर जाने को स्वतंत्र है। सामान्य प्रवृत्ति की बात और है विशेष स्थिति में कोई स्थूल विभाजन इस दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता। पुरुष पात्रों के समान ही नारी पात्र के व्यक्तित्व को भी प्रमुख स्थान देकर हिन्दी-कहानीकारों ने मानव व्यक्तित्व के विश्लेषण का सन्तुलित प्रयत्न किया है। नगर, ग्राम, कार्यालय, होटल, क्लब, मनोरंजन-गृह तथा विविध स्थलों से नारी पात्रों का कहानी की नायिकाओं के रूप में चयन किया गया है तथा उनके व्यक्तित्व के माध्यम से अनेक सामाजिक, नैतिक, आर्थिक एवं अन्तर्द्वन्द्व से सम्बद्ध समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। कथावस्तु के मध्य प्रमुख स्थान पर नायिका के व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने की परम्परा प्राचीन कथा-साहित्य में भी विद्यमान है। संस्कृत-काव्यशास्त्रियों ने नायिकाओं के गुण-धर्म का सुविस्तृत विवेचन किया है। परन्तु आधुनिक कहानी में उसका प्रभाव किसी भी रूप में अवशिष्ट नहीं है।

प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार कतिपय ऐसे पात्रों को विशेष स्थल पर उपस्थित करता है जो प्रमुख पात्र के विरोध में विपरीत कार्य करने वाले होते हैं। व्यक्तित्व की गुत्थियों और रहस्यों को प्रेरणा बन कर वे सहज ही कहानी में अपना स्थान बना लेते हैं। अन्तर्द्वन्द्व या मानसिक संघर्ष के विश्लेषण में इस प्रकार के पात्रों का महत्व स्पष्ट होता है। प्रमुखपात्र के समानान्तर ही प्रतिनायक

१. प्रमुख पात्र अर्थात् नायक और नायिका का व्यक्तित्व ।

२. सहायक अथवा गौण पात्रों के व्यक्तित्व ।

प्रधान पात्र के व्यक्तित्व पर ही सम्पूर्ण कहानी का विकास और अन्तिम प्रभाव अवलम्बित होता है। कहानी के लघु चित्र-फलक पर प्रधान पात्र का व्यक्तित्व ही पाठकों के लिये आकर्षणीय प्रभाव का सृजन करता है। इससे ही कथानक को गति और शक्ति प्राप्त होती है। उपन्यासकार अथवा नाटककार की भाँति कहानी-लेखक विस्तृत भूमिका तथा प्रसंगान्तर का आश्रय न लेकर प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व को केन्द्रीय शक्ति के रूप में ग्रहण करता और उसी के आधार पर अपनी रचना का विकास करता है। सहायक अथवा गौण पात्र विशेष स्थलों पर कथानक के विकास के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं। चरमपरिणति अथवा कहानी के लक्ष्य का उनके व्यक्तित्व से सीधा सम्बन्ध नहीं होता। कथानक को स्वाभाविक गति देने में वे सहायक सिद्ध होते हैं। प्रधान पात्र के व्यक्तित्व-विश्लेषण में भी उनसे सहायता प्राप्त होती है। कहानीकार स्वतंत्र रूप से विवेचन के विस्तार में न जाकर कभी-कभी अपेक्षित आलोचना गौण पात्रों के माध्यम से ही कर लेता है। कहानीकार की ओर से यही प्रयास होता है कि केवल आवश्यक और सीमित संख्या में ही सहायक पात्रों के व्यक्तित्व का समावेश और विश्लेषण किया जाय।

प्रधान-पात्र और उसका व्यक्तित्व

भारतीय काव्यशास्त्रकारों ने कथा-साहित्य में नायक के व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्व दिया है। काव्य-साहित्य के प्रसंग में तो नायक के गुण-धर्म का विस्तृत विवेचन सभी प्रमुख आचार्यों ने किया है। कथा और कहानी के सिद्धान्त-निरूपण के प्रसंग में कहा जा सकता है कि नायक के व्यक्तित्व के बाह्य पक्ष को महत्व देते हुये भी उसके शौर्य, विनय, उदारता और वैभव को कथा-साहित्य में प्रारंभ से विशेष मान्यता दी गयी है। नायक के गुणों और चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर उनको कई श्रेणियों में विभाजित किया गया है। आधुनिक कहानी तक आते-आते इस मान्यता और श्रेणी विभाजन का महत्व समाप्त हो गया है। प्राचीन कथाओं में जहाँ एक ओर नायक के [illegible] गुणों पर विशेष बल दिया गया है, वहाँ उसके विजय, सफलता [illegible] को अनिवार्य [illegible] कर विविध परिस्थितियों में उसके [illegible]। आधुनिक कहानी-साहित्य में प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का महत्व भी कम नहीं हुआ है, परन्तु उन उपर्युक्त अनिवार्यताओं से [illegible] है। यह देखा जाता है कि कहानी का प्रमुख पात्र अब भी किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण कथा पर छाया रहता है। यदि वह कहानी के किसी एक

ही स्थल पर अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ आता है तब भी सर्वाधिक प्रभाव का सृजन उसके व्यक्तित्व से होता है। उसी के अनुकूल कहानी के सभी तत्त्व गतिशील रहते हैं।

आज के मानव का व्यक्तित्व विविध सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से सम्बद्ध है। दिन प्रतिदिन इन समस्याओं के अनेक रूप कहानी-लेखक की लेखनी के सहारे उभरते रहते हैं। इस प्रकार कहानी के प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व को किसी निश्चित आदर्श और मर्यादा में बाँधना सम्भव नहीं रह गया है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि व्यक्तित्व का गठन विविध गुणों और अवगुणों, भावों-वृत्तियों, क्रियाओं तथा अन्तःप्रेरणाओं पर आधारित है। किसी विशेष वर्ग, जाति, समाज अथवा क्षेत्र से कहानी के प्रमुख पात्रों का चुनाव करने की बाध्यता का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है।

प्रमुख पात्र के रूप में पुरुष अथवा स्त्री किसी के व्यक्तित्व को ग्रहण किया जा सकता है। वर्ण्य-वस्तु के अनुसार प्रमुख पात्र का चयन युक्तिसंगत माना जाता है। व्यक्तित्व की बाह्य तथा प्रत्यक्ष वृत्तियों के प्रकाश में पुरुष पात्र को तथा अन्तर्मुखी वृत्तियों के आलोक में नारी पात्र को प्रमुख स्थान दिया जा सकता है। परन्तु इस सूत्र को कठोर नियम के रूप में स्वीकृति देना कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विभाजन में पुरुष अथवा स्त्री किसी भी ओर जाने को स्वतंत्र है। सामान्य प्रवृत्ति की बात और है विशेष स्थिति में कोई स्थूल विभाजन इस दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता। पुरुष पात्रों के समान ही नारी पात्र के व्यक्तित्व को भी प्रमुख स्थान देकर हिन्दी-कहानीकारों ने मानव व्यक्तित्व के विश्लेषण का सन्तुलित प्रयत्न किया है। नगर, ग्राम, कार्यालय, होटल, क्लब, मनोरंजन-गृह तथा विविध स्थलों से नारी पात्रों का कहानी की नायिकाओं के रूप में चयन किया गया है तथा उनके व्यक्तित्व के माध्यम से अनेक सामाजिक, नैतिक, आर्थिक एवं अन्तर्द्वन्द्व से सम्बद्ध समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। कथावस्तु के मध्य प्रमुख स्थान पर नायिका के व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने की परम्परा प्राचीन कथा-साहित्य में भी विद्यमान है। संस्कृत-काव्यशास्त्रियों ने नायिकाओं के गुण-धर्म का सुविस्तृत विवेचन किया है। परन्तु आधुनिक कहानी में उसका प्रभाव किसी भी रूप में अवशिष्ट नहीं है।

प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार कतिपय ऐसे पात्रों को विशेष स्थल पर उपस्थित करता है जो प्रमुख पात्र के विरोध में विपरीत कार्य करने वाले होते हैं। व्यक्तित्व की गुत्थियों और रहस्यों की प्रेरणा बन कर ये प्रायः ही कहानी में अपना स्थान बना बैठे हैं। [illegible]

या प्रतिनायक का व्यक्तित्व भी विश्लेषित होता रहता है। प्रमुख पात्र के विशिष्ट गुणों और प्रवृत्तियों की स्पष्ट अभिव्यंजना के लिये भी इस प्रकार के पात्र की अवतारणा आवश्यक बन जाती है। प्राचीन मान्यता के अनुसार कथा में प्रतिनायक का [illegible] उद्दण्ड, विद्वेषपूर्ण तथा क्रूर व्यक्तित्व से युक्त चित्रित किया जाता था। परन्तु आधुनिक कहानी में इस अनिवार्यता को कोई स्थान नहीं है। प्रतिनायक कहानी के प्रमुख पात्र के विशिष्ट गुणों के विकास की भूमिका का निर्माण करने वाला भी हो सकता है। विशेषतः व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रक्रिया में कहानीकार के कथ्य को अधिक मार्मिक बनाने में उससे प्राप्त सहयोग मनोवैज्ञानिक विवेचन के दृष्टिकोण से और भी मूल्यवान माना जाता है।

विपरीत परिस्थितियों के क्रोड़ में प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व की विशेषताएँ सहज रूप से विश्लेषित होती रहती हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों के सृजन में प्रतिनायक का महत्त्व सर्वाधिक होता है। उसके व्यक्तित्व में प्रायः उन्हीं विशेषताओं का समन्वय दृष्टिगत होता है, जिनका आधिक्य नायक के व्यक्तित्व में होता है। विरोध की शक्ति और क्षमता उसमें अनिवार्य रूप से विद्यमान होती है। उसके सभी कार्य किसी न किसी रूप में नायक के व्यक्तित्व को गतिशील और क्रियाशील बनाते हैं। जिन कहानियों में प्रतिनायक अपनी शक्तिमत्ता का परिचय देता हुआ नायक को अधिकाधिक संकटग्रस्त करता है उनमें स्वभावतः नायक के व्यक्तित्व की विलक्षणताओं और कर्त्तव्य-शक्ति का अधिक सार्थक विश्लेषण सम्भव होता है। संघर्ष, चाहे वह बाह्य हो या आन्तरिक, व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयोगी तत्त्व है, और समर्थ तथा कार्य-कुशल प्रतिनायक संघर्ष की स्थिति को उत्पन्न करने का सतत् प्रयास करता रहता है।

यद्यपि कहानी की आकार-विस्तार सम्बन्धी सीमा और एकनिष्ठ लक्ष्य के कारण उसमें अधिक संख्या में पात्रों का समावेश न तो सम्भव है न उचित, तथापि प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व को विकसित और विश्लेषित करने के उद्देश्य से कतिपय सहायक पात्रों की अवतारणा विभिन्न स्थलों पर कहानी के स्वरूप की रक्षा करते हुये की जाती है। प्रमुख पात्र को प्रोत्साहित करने, उसके गुणों की प्रशंसा करने तथा अनुकूल वातावरण के सृजन का कार्य इस वर्ग के पात्रों द्वारा सम्पन्न होता है। कहानीकार ऐसे पात्रों के व्यक्तित्व का सांकेतिक चित्रण और आवश्यकतानुसार संक्षिप्त विश्लेषण ही करता है। [illegible] कोई स्वतन्त्र और पृथक् लक्ष्य नहीं होता, परन्तु कहानी के प्रमुख पात्र के [illegible] और [illegible] के पश्चात् कहानी [illegible] हो जाता है।

पात्र अपने व्यक्तित्व द्वारा रचना को आकर्षण, गति तथा स्वाभाविक विस्तार प्रदान करते हैं। इन्हें सहायक पात्र कहा जाता है। प्रमुख पात्र की तुलना में इनका महत्व कम होता है, परन्तु कहानी के कलात्मक विकास के लिये इनका सन्तुलित समायोजन अनिवार्य होता है। इनके व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएं ही सांकेतिक ढंग से प्रकाश में लायी जाती हैं। कहानी में इनका उपयोग जिस कार्य के लिये होता है, वहीं तक इनका प्रभाव सीमित होता है। इनके द्वारा जिन उद्देश्यों की पूर्ति होती है वे इस प्रकार हैं :

(१) कथावस्तु को विकसित करना—कथानक के कलात्मक विकास के लिये सहायक पात्र ऐसी स्थिति उत्पन्न करने में सहायता प्रदान करते हैं, जो कहानी के उद्देश्य के अनुकूल और नितान्त स्वाभाविक हो। कभी-कभी सर्वथा नये सन्दर्भ को प्रस्तुत कर वे कथावस्तु को अपूर्व आकर्षण से भर देते हैं, और कभी पूर्वघटित घटना के संकेत द्वारा उसे मार्मिक स्वरूप प्रदान करते हैं। कहानीकार जब कथावस्तु को नये मोड़ के निकट लाने का प्रयास करता है तो सहायक पात्र सहज-प्रेरित शक्ति द्वारा उसके कार्य को सरल बना देते हैं। श्री गुलेरी की सुप्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' का बजीरा सिंह कथावस्तु को अभिनव प्रेरणा ही नहीं प्रदान करता वरन् कहानी के प्रमुख पात्र लहना सिंह के साथ ही अविस्मरणीय व्यक्तित्व प्राप्त करने में सफल होता है। कहानी की कथावस्तु का सपाट विकास उसे सौन्दर्यहीन बना देता है। उसके कलात्मक मोड़ और भावपूर्ण सन्दर्भ उसे सौन्दर्ययुक्त बनाते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक पात्रों के व्यक्तित्व की योजना अनिवार्यतः अनुपेक्षणीय है।

(२) वातावरण की रचना तथा उसमें परिवर्तन करना—प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व के विश्लेषण अथवा कहानी के लक्ष्य की सिद्धि के लिये उपयुक्त वातावरण के सृजन की आवश्यकता होती है। कहानीकार कतिपय सहायक पात्रों की अवतारणा द्वारा उपयुक्त वातावरण की रचना करता है। कभी-कभी ऐसे पात्र आगे के प्रसंगों में भी दिखाई पड़ते हैं और कभी तो केवल एक बार वातावरण रचना के निमित्त दृष्टिपथ में आकर वे सदा के लिये कहानी के दृश्यपट से नेपथ्य में चले जाते हैं। ऐसे पात्रों के व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता का परिचय कहानी में नहीं मिलता। प्रमुख पात्र की व्यक्तिगत विशेषताओं को उभारने के लिए सृजित वातावरण की पृष्ठभूमि में ही ये पात्र रह जाते हैं।

वातावरण की एकरसता और गम्भीरता को दूर कर उसे सरसता प्रदान करने के उद्देश्य से भी सहायक पात्रों का समावेश किया जाता है। अन्तर्द्वन्द्व या मनोविश्लेषण में रत पात्रों द्वारा उत्पन्न [illegible] की गम्भीरता तथा [illegible]

[illegible]

में इस प्रकार के परिवर्तन का उल्लेख कर दिया जाता है। सहायक पात्रों के व्यक्तित्व का अपेक्षाकृत सरल और सुपरिचित रूप ही ऐसे स्थलों पर समाविष्ट होता है।

(३) अन्य पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण में सहायता देना—कहानी के अन्य पात्रों—प्रमुख अतिरिक्त पात्रों—के व्यक्तित्व को निरूपित करने के उद्देश्य से भी सहायक पात्रों का समायोजन कहानी के अन्तर्गत होता है। अन्य पात्रों के व्यक्तिगत गुणों और अवगुणों को अपने कार्यों द्वारा सहायक पात्र अधिक स्पष्ट, आकर्षक तथा ग्राह्य रूप देते हैं। कहानीकार कभी संवाद और कभी वर्णन द्वारा सहायक पात्रों को इस उद्देश्य की पूर्ति का अवसर प्रदान करता है। अन्य पात्रों के भाव-परिवर्तन तथा साहसिकता के वर्णन में सहायक पात्र कभी-कभी महत्वपूर्ण सहयोग देते हैं। इस प्रसंग में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि सहायक पात्रों के व्यक्तित्व को साहाय्य-प्राप्ति के उद्देश्य से ही कहानी में समाविष्ट करना समीचीन है। कहानी में यदि सहायक पात्रों के व्यक्तित्व को ही प्रधानता दे दी गयी तो प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का अपेक्षित विश्लेषण न हो सकेगा और न तो कहानी अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल होगी। उपन्यासकार अपनी कृति में किसी सहायक पात्र के व्यक्तित्व को स्वतंत्र गति और सत्ता प्रदान कर सकता है लेकिन कहानीकार द्वारा समायोजित सहायक पात्र सहायता प्राप्ति के साधन मात्र ही होते हैं, साध्य न वे हो सकते हैं और न उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण।

पात्रों के भेद : व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से

व्यक्तित्व-विश्लेषण की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कहानीकार जिन पात्रों की सृष्टि करता है, उनकी स्वाभाविक प्रभावशालीनता तथा अविस्मरणीय महत्ता को वह पाठक-वर्ग के मन-मस्तिष्क पर सदा के लिए अंकित करने का प्रयास करता है। सामान्यतः ऐसे पात्र दो प्रकार के होते हैं। अपरिवर्तनशील व्यक्तित्व से युक्त पात्र और गत्यात्मक व्यक्तित्व से युक्त पात्र। कहानी के प्रारम्भ से अन्त तक जिन पात्रों का व्यक्तित्व एक प्रकार की विशेषताओं से युक्त चित्रित किया जाता है और कहीं भी परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता वे अपरिवर्तनशील अथवा स्थिर व्यक्तित्व-सम्पन्न पात्र कहे जाते हैं। दूसरे वर्ग में ऐसे पात्र आते हैं जिन पर वातावरण और परिस्थितियों का प्रभाव परिलक्षित होता है तथा जिनके व्यक्तित्व का विकास भी किसी न किसी रूप में दृष्टिगत होता है। ऐसे पात्रों का व्यक्तित्व गत्यात्मक या विकसनशील कहा

१. [illegible] और उनका [illegible]

[illegible] के रूप में विद्यमान रहते हैं, [illegible]

होता है, परन्तु कथावस्तु के साथ उन विशेषताओं में विकास या परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता। अन्य पात्रों अथवा समस्या के प्रति उनका दृष्टिकोण आद्यन्त एक जैसा ही बना रहता है। उनके सम्बन्ध में प्राप्त होनेवाली सूचनाओं से पाठकों के विचार उनके प्रति अवश्य परिवर्तित होते रहते हैं, तथा उनके व्यक्तित्व का रहस्य भी धीरे-धीरे पाठक-वर्ग को ज्ञात होता रहता है, परन्तु किसी प्रकार का कोई परिवर्तन उनकी मान्यताओं चिन्तनपद्धति तथा क्रियात्मक विधि में—कहानी के किसी स्थल पर—दिखाई नहीं पड़ता। यद्यपि इस प्रकार के पात्रों का व्यक्तित्व सुनिश्चित साँचे में ढला होने के कारण एकरूप और स्थिर होता है, तथापि कुशल कहानीकार इनके व्यक्तित्व का उद्घाटन क्रमबद्ध गति से करता है। समस्त विशेषताओं का परिचय देकर वह पाठक की उत्सुकता का एकबारगी शमन नहीं करता, वह कहानी के विकास-क्रम के साथ एक-एक कर आवश्यक विशेषताओं को प्रकाश में आने देता है।

जैसे-जैसे कथावस्तु विकसित होकर कहानी को उसके लक्ष्यबिन्दु की ओर अग्रसरित होने की प्रेरणा देती है वैसे-वैसे इन पात्रों का सम्बन्ध कहानी के अन्य पात्रों तथा वातावरण से बढ़ता जाता है। इनके व्यक्तित्व का अज्ञात पक्ष क्रमशः प्रकाश में आता है। इस प्रकार इनके व्यक्तित्व के तत्व क्रमशः स्पष्ट होते हैं, परन्तु उनमें कोई अन्तर या परिवर्तन नहीं होता। प्रारम्भ में कहानीकार जिस रूपरेखा का निर्धारण कर लेता है उसी के अनुकूल इन पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण होता चलता है। ऐसे पात्र जिन व्यक्तित्वों से प्रारम्भ में अनुरक्ति, विरक्ति या विरोध व्यक्त करते हैं, अन्त तक उनसे इसी प्रकार का व्यवहार बनाये रखते हैं। जिन व्यक्तियों के प्रति वे उदार और सहानुभूतियुक्त होते हैं, उनके प्रति अन्त तक वैसा ही भाव बनाये रखते हैं। जिनके प्रति घृणा अथवा शत्रुत्व का भाव प्रारम्भ में दिखाई देता है, अन्त तक उनके प्रति वे वैसा ही आचरण करते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रारम्भ में अनिश्चित मान्यताओं और सीमाओं में आबद्ध होने के कारण इनका प्रत्येक कार्य आद्यन्त एक ही प्रकार के वैशिष्ट्य से संयुक्त होता है। सीमाओं को तोड़ना तो ये जानते ही नहीं। इन पात्रों के व्यक्तित्व में किसी एक गुण या भाव का प्राधान्य दिखाया जाता है। विभिन्न प्रसंगों, सन्दर्भों तथा घटनाक्रम के विकास के साथ उस विशिष्ट गुण या भाव का विश्लेषण होता रहता है। उसके आधार पर ही उनके व्यक्तित्व का गठन होता तथा उनकी प्रभावात्मकता भी उसी पर प्रतिष्ठित होती है।

कुशल कहानीकार प्रारम्भ में ही ऐसी परिस्थितियों का सृजन करता है जो अपरिवर्तनशील व्यक्तित्व वाले पात्रों की असामान्य प्रवृत्ति या शक्ति का परिचय देती हैं। धीरे-धीरे ऐसे पात्रों के कार्य और व्यवहार उनके व्यक्तित्व के विशिष्ट गुण का उद्घाटन करने लगते हैं। प्रारम्भ की उनकी धारणा की सत्यता पुष्ट होने लगती है।

कथानक-क्रम के साथ ही इनके व्यक्तित्व के अनुकूल परिस्थितियों का जाल बिछ जाता है, अथवा इनके वे गुण-अवगुण प्रकाश में आते हैं, जिनका आभास या प्रारम्भिक परिचय कहानी के प्रथम अंश में प्राप्त होता है। इनके स्वभाव अथवा रुचि से परिचित हो जाने के कारण विभिन्न स्थितियों में इनकी क्रिया-प्रतिक्रिया का अनुमान भी किया जा सकता है। इस प्रकार के पात्र कहानी में एक निश्चित लक्ष्य की ओर अपरिवर्तित रूप से अग्रसर होते हैं। इनका प्रभाव पाठक-वर्ग पर स्थायी रूप से अंकित हो जाता है। विशिष्ट कहानीकारों की कृतियों के इस प्रकार के पात्र अपने अपरिवर्तनशील स्थिर व्यक्तित्व के कारण स्मृति में स्थायी स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

२. विकासशील पात्र और उनका व्यक्तित्व

व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से कहानी में पात्रों का एक ऐसा वर्ग दृष्टिगत होता है जिनके कार्य, व्यवहार, प्रतिक्रिया एवं चिन्तन-पद्धति में परिवर्तन होते रहते हैं। वातावरण और परिस्थितियों से उनका व्यक्तित्व प्रभावित ही नहीं होता, वरन् उनके मूलभूत तत्वों में भी परिवर्तन तथा विकास के लक्षण दिखाई देते हैं। कथानक के विकास के साथ ही उनके स्वभाव तथा आचरण के नये रूप सामने आते हैं। अपरिवर्तनशील व्यक्तित्व वाले पात्रों के सम्बन्ध में जिस प्रकार निश्चित धारणाएँ बन जाती हैं तथा आद्यन्त उनमें एकरूपता विद्यमान रहती है, वैसी स्थिति इनके साथ नहीं होती। कभी-कभी तो इनके सम्बन्ध में प्रारम्भ में बनी हुई धारणा सर्वथा निराधार सिद्ध होती तथा कहानी के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते उसका पूर्णतः खंडन हो जाता है। स्थिरता और अपरिवर्तन-शीलता की विशेषताएँ इनमें नहीं होतीं। नयी स्थिति इनके व्यक्तित्व को नया मोड़ देती है। इनके विकास की कोई निश्चित गति या सीमा नहीं होती। यह भी आवश्यक नहीं कि वातावरण या परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ ही इनके व्यक्तित्व में परिवर्तन या विकास उपस्थित होता हो, विभिन्न पात्रों के पारस्परिक संघर्ष तथा क्रिया-प्रतिक्रिया से भी इनका विकास होता रहता है। कहानी के आकर्षण की अभिवृद्धि में इस प्रकार के पात्रों द्वारा विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

कहानी के कलात्मक रूप-विधान और मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण को दृष्टिकोण में रखकर ही कहानीकार विकासशील पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन करता है। [illegible] अनुसरण के मध्य वह इस प्रकार के पात्रों के [illegible] रहस्यों को उद्घाटित करता है। ऐसे

तथा आन्तरिक विवेचन दोनों दिशाओं में विकासशील पात्रों के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है। कहानीकार विकास, परिवर्तन और संभावना के विपरीत आचरण को सकारण तथा मनोविज्ञान-समर्थित स्वरूप प्रदान करता है। विकासशील पात्रों के व्यक्तित्व की रचना तथा कहानी में उनके उपयोग के सम्बन्ध में ऐसी सतर्कता अनिवार्य है।

२

व्यक्तित्व के तत्व और उनके विश्लेषण की प्रणालियाँ

व्यक्तित्व के बाह्य तत्व का विश्लेषण

(१) नामकरण द्वारा व्यक्तित्व का संकेत : व्यक्तित्व का आधार व्यक्ति ही होता है और उसे किसी न किसी नाम से सम्बोधित किया जाता है। वैसे तो नामकरण वस्तु-जगत में भी उतना ही अनिवार्य है जितना कहानीकार के कल्पना-जगत में। परन्तु इन दोनों में एक विचारणीय अन्तर भी है। वस्तुजगत मे नामकरण सामान्यत. शैशवावस्था मे होता है तथा शिशु के भावी विकास, आचरण अथवा उपलब्धियो से उसका सम्बन्ध जुड़ नहीं पाता है। कहानीकार पात्र-विशेष की विलक्षणता, रुझान, लक्ष्य तथा जीवन-दर्शन को ध्यान में रखकर उसे उचित संज्ञा प्रदान करता है। इस अन्तर का स्पष्टीकरण करते हुये डा० रणवीर रांग्रा ने लिखा है :

'''उस नाम का (वस्तुजगत के) सम्बन्ध उस शिशु के चरित्र से तनिक भी नहीं होता, क्योंकि नामकरण के समय तक उसके चरित्र का कोई भी पक्ष प्रकाश में नहीं आया होता। वस्तु-जगत के व्यक्ति का चरित्र-विकास उसके नाम की अपेक्षा नही रखता : व्यक्ति के नाम तथा चरित्र में अनुरूपता अथवा अननुरूपता अनिवार्य न मानी जाकर संयोगवश ही मानी जा सकती है, क्योंकि नामकरण तो इच्छा-मात्र से हो जाता है, जबकि चरित्र विकास कोरी इच्छा से संचालित नहीं होता'।[1]

अधिकांश पात्रों के व्यक्तिगत जीवन-दर्शन और चरित्रगत विशेषताओं का आभास उनके नाम द्वारा देने का प्रयत्न कहानीकार द्वारा होता है। कहानीकार के मन में अपने पात्रों के प्रति जो धारणा होती है उनका प्रभाव नामकरण पर भी लक्षित होता है। पात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर दृष्टि रखते हुए कहानीकार उनको ऐसा नाम प्रदान करता है जो उनकी विशेषताओं का विश्वसनीय संकेत दे सके। इस उद्देश्य से कहानीकार अपना ध्यान उसी सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य पर केन्द्रित करता है जो पात्र के व्यक्तित्व को आकर्षक, प्रभावयुक्त और स्पष्टतया व्यक्त रूप प्रदान करता हो। इस प्रकार

---

1 डा० रणवीर रांग्रा—'हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास' पृ० ६५।

नामकरण द्वारा वह गुण या अवगुण सहज ही ध्वनित हो जाता है जो पात्र के व्यक्तित्व में केन्द्रीय शक्ति के रूप में विद्यमान रहता है।

कहानी-कला का विवेचन करने वाले समीक्षकों का विचार है कि व्यक्तित्व-विश्लेषण की यह प्रणाली इतनी सहज तथा कलात्मक-अभिव्यक्ति की विशेषता से रहित है कि इसको आधार बनाकर व्यक्ति के चरित्र अथवा स्वभाव को व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसके दो प्रमुख कारण हैं, प्रथम तो कहानीकार के द्वारा संकेतित गुण-अवगुण विशेष को निश्चित तथ्य के रूप में ग्रहण कर पाठक वर्ग पात्रों के नाम के साथ ही इतना सन्तुष्ट हो जाता है कि आगे की घटना अथवा कलात्मक अभिव्यंजना में उसे न तो आकर्षण दिखाई देता है, न रस की उपलब्धि होती है और न तो उत्सुकता ही बनी रहती है। द्वितीय कारण व्यक्तित्व-विश्लेषण की अस्वाभाविक अभिव्यक्ति से सम्बद्ध है। अपनी धारणा अथवा इच्छा का आरोपण कर कहानीकार पाठक-वर्ग को सीमा में बाँध देता है। बार-बार उद्देश्य-जनित नामकरण का आग्रह व्यक्तित्व निरूपण को अस्वाभाविक बना देता है। हिन्दी कहानी के विकास-क्रम पर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भिक कहानियों में पात्रों के नामकरण द्वारा उनके व्यक्तित्व का परिचय देने की प्रवृत्ति अधिक व्यापक रही है। घटना अथवा कथानक को प्रधानता देनेवाले कहानीकारों ने चुन-चुन कर ऐसे नामों से पात्रों को विभूषित किया है जो उनके स्वभाव अथवा रुचि का विश्वसनीय परिचय देते हैं। कहानी में मनो-विश्लेषण के महत्व ने इस प्रवृत्ति का निराकरण कर दिया है। नाम और व्यक्तित्व में अनिवार्य साम्य तथा सह-सम्बन्ध को अत्याधुनिक कहानियों में कोई महत्व प्राप्त नहीं है।

२. **पात्रों का प्रथम परिचय एवं उनका व्यक्तित्व**—कहानीकार सतर्क कलाकार के रूप में उतने ही पात्रों को अपनी रचना में स्थान देता है, जितने अनिवार्यतः अपेक्षित होते हैं। दैनिक जीवन में अनेक व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आते हैं, परन्तु हम प्रथम भेंट में सबसे प्रभावित नहीं होते। कई व्यक्ति तो अनेक बार मिलने पर भी प्रभावित नहीं कर पाते। परन्तु कहानीकार जिन पात्रों से हमारा प्रथम परिचय कहानी के प्रारम्भ में करवाता है, उन्हें हम किसी भी प्रकार विस्मृत नहीं कर पाते। कहानी का कोई भी पात्र स्थानपूर्ति या विदूषक के समान केवल मनोरंजन को उद्देश्य बना कर कहानी में अविस्मरणीय स्थान नहीं प्राप्त कर सकता। कहानीकार प्रथम परिचय में ही पात्रों के सशक्त व्यक्तित्व की छाप डालना अत्यावश्यक समझता है। उसके लिये न तो यह सम्भव है न उचित कि वह केवल परिचय देने के लिये पात्रों को प्रस्तुत करे। उसे प्रत्येक पात्र को महत्वपूर्ण भूमिका देनी पड़ती है। चाहे वह भूमिका व्यापक हो या संक्षिप्त। सोद्देश्य तो उसे होना ही चाहिये। कुशल कहानीकार केवल प्रदर्शन के

लिये किसी पात्र को कहानी के दृश्य-पट पर उपस्थित नहीं करता। यशस्वी कहानीकार प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियों में यह विशेषता विद्यमान है।

कहानी के पात्र जब प्रथम बार मिलते हैं तब एक दूसरे को सामान्य रूप से प्रभावित करते हैं। एक दूसरे के सम्बन्ध मे धारणाओं का बनना भी इस स्थिति में आरम्भ हो जाता है। विचारों का आदान-प्रदान भी उनको निकट लाता तथा पारस्परिक सम्बन्ध को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह आवश्यक नहीं कि कहानी के अन्त तक ऐसी धारणा अथवा ऐसा सम्बन्ध एक रूप में अपरिवर्तित गति से चलता रहे। आगे के घटना-क्रम में ऐसी धारणा सर्वथा परिवर्तित भी हो सकती है। व्यक्तित्व की जो छाप प्रारम्भ में मानस मन पर पड़ती है, उसका विशिष्ट महत्व होता है, चाहे उसमें बाद में परिवर्तन ही क्यों न करना पड़े। परिवर्तन का कारण मानव-मन की वह चंचलता है जो अन्य व्यक्ति के सम्बन्ध में शीघ्रता से कोई विचार या धारणा बनाने के लिये मनुष्य को अधीर बना देती है और वातावरण अथवा परिस्थिति के बदलते ही उसे प्रेरित करती है कि वह अपनी पूर्व धारणा अथवा विचार को भी परिवर्तित कर दे। वस्तुजगत मे भी हम प्रथम भेंट मे शीघ्रता से किसी भी व्यक्ति के सम्बन्ध मे अपनी धारणा बना लेते और कोई कारण उपस्थित होते ही उसमे संशोधन कर लेते हैं। कहानीकार भी अपने पात्रों को यह मनोवैज्ञानिक सुविधा प्रदान करता है। उसे अपने पात्रों के अतिरिक्त पाठक-वर्ग की मनःस्थिति पर भी ध्यान देना पड़ता है।

कहानीकार प्रयास करता है कि पात्रों के प्रथम परिचय में स्वाभाविकता और सहज आकर्षण बना रहे, पात्रों के व्यक्तित्व का वह सृष्टा ही नहीं होता उनकी प्रत्येक विशेषता से सुपरिचित भी होता है। उसे यह भी निश्चित करना होता है कि उसके पात्र कैसा आचरण और व्यवहार करें। परिणामतः प्रथम परिचय में वह अपने उद्देश्य के अनुकूल ही पात्रों की प्रमुख विशेषताओं का आभास देना आवश्यक समझता है। यद्यपि घटनाक्रम के विकास में कभी-कभी पात्रों के सम्बन्ध में धारणाएँ परिवर्तित करनी पड़ती हैं तथापि प्रथम परिचय का प्रभाव आद्यन्त बना रहता है। कहानीकार जब पात्रों के व्यक्तित्व का विवेचन करने के लिये विवरण देने लगता है और स्वयं वक्ता बन जाता है तब प्रथम परिचय का प्रयास अस्वाभाविक और नीरस सा हो जाता है। कुशल कहानीकार पात्रों के आकार-प्रकार, व्यवहार, स्वभाव और क्रिया-प्रतिक्रिया का घटना, संवाद अथवा स्थिति अंकन द्वारा परिचय देता है। स्वयं उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का विवरण नहीं देता। जो कहानीकार अपनी आलोचना अथवा टिप्पणी का आश्रय लेकर पात्रों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित किसी गुण अथवा अवगुण को व्यक्त करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते, वे पाठकों की जिज्ञासा की सक्रियता विनष्ट कर देते हैं। यन्त्रचालित पात्रों का अस्तित्व कहानी

का स्वाभाविक-गति के लिये बाधक सिद्ध होता है। ऐसी स्थिति में अनिवार्य हो जाता है कि पाठक वर्ग कहानीकार के पूर्वाग्रह को मान ही ले। प्रथम परिचय का प्रभाव प्रायः स्थायी और दीर्घकालीन होता है। विशेष रूप से कहानी के संक्षिप्त स्वरूप में उनके परिवर्तित होने की संभावना अत्यल्प रहती है। प्रसाद जी की अनेक उत्कृष्ट कहानियों में पात्रों के प्रथम परिचय का स्वाभाविक आकर्षण उन्हें अविस्मरणीय रूप प्रदान करता है। 'गुण्डा', 'देवरथ', 'ममता', 'इन्द्रजाल' एवं 'सालवती' में यह विशेषता अपूर्व सौन्दर्य के साथ विद्यमान है।

२. *आकृति तथा वेश-भूषा के वर्णन द्वारा व्यक्तित्व का परिचय*---व्यक्तित्व-विश्लेषण के आधारभूत तत्वों में बाह्य-आकृति अथवा शरीर-तत्व (Physical Traits) को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में हमारी प्रारम्भिक धारणा उसके शरीर की रचना के आधार पर बनती है। ऐसा भी सम्भव है कि हमें बाह्य स्वरूप के आधार पर निर्मित धारणा में संशोधन ही नहीं आमूल परिवर्तन भी करना पड़े, फिर भी स्वभावतः शरीर की बनावट और चाल-ढाल से हम प्रभावित अवश्य होते हैं। विभिन्न गुण-अवगुणों का प्रत्यक्ष और बाह्य स्वरूप शरीर में सन्निहित रहता है। पात्रों के प्रथम परिचय में हमारी दृष्टि उनकी आकृति पर ही केन्द्रित होती है। वेश-भूषा की विभिन्नता भी पात्रों के व्यक्तित्व का बाह्य परिचय प्रस्तुत करती है। सामाजिक स्थिति और वातावरण के अनुकूल वेश-भूषा धारण करने वाले पात्रों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ अनुमान द्वारा समझा जा सकता है।

समाज की तीव्रगति से परिवर्तित होने वाली धारणाओं और मान्यताओं ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि हम किसी व्यक्तित्व को उसकी वेश-भूषा से समझने में पूर्णतः सफल नहीं हो सकते। उसके स्वभाव, चरित्र अथवा व्यवहार के सर्वथा विपरीत उसकी वेश-भूषा हो सकती है। परन्तु सामान्यतः देखा यही जाता है कि हम किसी भी व्यक्ति को उसकी वेश-भूषा के आधार पर जानने समझने का प्रयास जाने-अनजाने करते ही रहते हैं। जबतक किसी पात्र के कार्य अथवा विचार को जानने का हमें अवसर प्राप्त नहीं होता तब तक हमारी जिज्ञासा के प्रशमन का साधन बाह्य आकृति और वेश-भूषा ही तो है। कहानीकार अपनी रचना में पात्र का प्रथम परिचय देते समय उसके रूप-रंग, आकार-प्रकार तथा वेश-भूषा का संकेत प्रस्तुत करता है। सामान्य रूप से उसका यही प्रयास रहता है कि उसके द्वारा प्रस्तुत बाह्य रूप-वर्णन के अनुकूल ही उसके पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण हो सके। प्रेमचन्द की 'आत्माराम', 'कप्तान साहब', 'ज्वालामुखी', 'नशा' आदि कहानियों में यह विशेषता प्रमुख रूप से व्यक्त है। मानसिक स्थिति और उसके साथ ही अन्य परिवर्तनों को

स्पष्ट करते हुये कहानीकार पात्रों की आकृति तथा वेश-भूषा के परिवर्तनों का वर्णन घटना-क्रम के अन्य अंशों में करता रहता है। पात्रों के व्यक्तित्व को प्रेरित तथा परिचालित करने वाले तत्त्व बाह्य रूप-वर्णन द्वारा अभिव्यक्ति का मार्ग प्राप्त करते है।

हिन्दी कहानी-साहित्य के प्रारम्भिक युग की प्रवृत्तियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उस समय पात्रों के स्वरूप व वेशभूषा के विस्तृत तथा आकर्षक चित्रण को प्रारम्भ में ही प्रस्तुत करना आवश्यक समझा जाता था। कहानी के मनोवैज्ञानिक विकास की ओर लेखकों का ध्यान नहीं था। अतएव इस प्रकार के वर्णन कलात्मक विवरण से परिपूर्ण होते थे और उनके द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण में कोई महत्त्वपूर्ण सहायता भी उपलब्ध नहीं होती थी। पात्रों के व्यक्तित्व की सजीवता का अभाव कहानी की गति को शिथिल और उनके प्रभाव को सीमित बना देता था। पं० किशोरीलाल गोस्वामी के 'गुलबहार' संकलन की कहानियों में तथा गोपालराम गहमरी की [illegible] एवं मनोरंजक कहानियों में यह प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। एक ही प्रकार की वेश-भूषा का प्रयोग प्रत्येक स्थिति में दिखाने का आग्रह भी कहानी को अस्वाभाविक बना देता था। जीवन की विभिन्न परिस्थितियाँ और परिवर्तन पात्रों के बाह्य रूप में परिवर्तन भी उपस्थित कर सकते हैं, इस तथ्य की ओर अधिकांश कहानीकारों का ध्यान इस युग में आकृष्ट न हो सका।

व्यक्तित्व की विलक्षणता तथा प्रभविष्णुता का वहन करने वाली कहानी का पात्र पूर्व-निश्चित वर्णन के चौखटे में बांधा नहीं जा सकता। उसके गतिशील और प्रभावपूर्ण गुणावगुणों को बाह्य स्वरूप की तुला पर तौलना उसके प्रति अन्याय होगा। इस प्रकार की विचार-पद्धति ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को प्रधानता देने वाले कहानीकारों को बाह्य-वर्णन के प्रति उदासीन बना दिया है। किसी भी स्त्री अथवा पुरुष के शारीरिक-गठन और वेश-भूषा का उसके स्वभाव और चरित्र से संबंध होगा ही ऐसा वे नहीं मानते। व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जो मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष अनेक प्रयोगों के परिणामस्वरूप प्राप्त किये गये हैं, वे प्रमाणित करते हैं कि बाह्य स्वरूप के नितान्त विपरीत मनुष्य का स्वभाव और आचरण हो सकता है। वाह्य रूप के वर्णन को महत्त्व न देकर वह आन्तरिक प्रवृत्तियों और धारणाओं का संकेत देता है। कहानीकार व्यक्तित्व के अन्तर-पक्ष का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके बाह्य रूप की कल्पना के लिये पाठक-वर्ग को स्वतंत्र छोड़ देता है। व्यक्तित्व को मानसिक वृत्तियों द्वारा परिचालित मानकर उसके आन्तरिक विश्लेषण को ही मनोवैज्ञानिक कहानियों में प्रधानता दी जाती है। इस प्रकार की कहानियों में पात्रों के बाह्य आवरण को महत्व न देकर उनके अन्तर के रहस्यों का मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण किया जाता है, और इसी के आधार पर वे सशक्त और विलक्षण व्यक्तित्व प्राप्त करते हैं। श्री अज्ञेय के 'जय-

ढोल' शीर्षक कहानी-संकलन की सभी कहानियों में विश्लेषण की यह उत्कृष्टता प्राप्त होती है।

(४) विभिन्न स्थितियों और कार्यों के वर्णन द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण: मनुष्य के विविध कार्य उसके व्यक्तित्व के रहस्य को व्यक्त करते रहते हैं। व्यक्त चरित्र हमारे उस अनुमान का आधार होता है जिसके माध्यम से हम किसी के व्यक्तित्व की गहराई में उतरने का प्रयास करते हैं। परन्तु यह अनुमान भ्रमपूर्ण और असत्य भी हो सकता है यदि हमें उन स्थितियों का ज्ञान नहीं है, जिनके मध्य पात्र-विशेष का कार्य सम्पन्न हुए हैं। सम्भव है कि दूसरी प्रकार की स्थिति आने पर उस पात्र का कार्य अन्य प्रकार के अथवा वर्तमान कार्य के एकदम विपरीत हुए होंगे। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की 'उबाल' तथा अज्ञेय की 'वे दूसरे' शीर्षक कहानियों में परिस्थितियों के अंकन की कुशलता दृष्टव्य है। तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व-विश्लेषण के लिये जब हम प्रत्यक्ष कार्यों के विवेचन की सरणि अपनाते तो आवश्यक रूप में उन स्थितियों का अध्ययन कर लें जिनके अंक में पात्रों के प्रस्तुत कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। कहानीकार स्थितियों के इस मूल्य पर विचार करता हुआ उनका इतना प्रभावपूर्ण और यथार्थ वर्णन करता है कि उनके द्वारा पात्रों की कार्यशक्ति, आचरण, रुचि, विवशता अथवा कर्मठता और गुण-दोष का ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण के अन्तर में प्रवेश करते हुये जी० डब्ल्यू० एलपोर्ट ने संकेत दिया है कि प्रथम परिचय में हम व्यक्ति के सम्बन्ध में जो धारणा बनाते हैं, उसमें संशोधन या परिवर्तन करने की आवश्यकता भी आ सकती है। कारण यह है कि कुछ विशेषताएँ व्यक्तित्व में अव्यक्त रूप में अन्तर्भुक्त रहती हैं। विशेष रूप से व्यक्तित्व की असामाजिक वृत्तियों को प्रथम परिचय में विश्वसनीय रूप से समझ लेना सरल नहीं है।[1] विभिन्न स्थितियों में व्यक्तित्व के आवरण खुलते और पात्रों का परिचय नये रूप में प्राप्त होता है। व्यक्तित्व की सुषुप्त शक्ति और प्रभावशाली स्वरूप का आभास कठिन एवं संघर्षपूर्ण स्थितियों के मध्य प्राप्त होता है। ज्यों-ज्यों स्थिति परिवर्तित होती है, व्यक्ति निस्संकोच होकर अपनी रुचि-अरुचि, योग्यता-अयोग्यता, समर्थन-विरोध अर्थात् सम्पूर्ण क्रिया-प्रतिक्रिया को प्रकाश में आने का अवसर देता है। प्रथम परिचय में कृत्रिम शिष्टाचार भी व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति में बाधक बनता है। परन्तु क्रमशः उसका आवरण हटता जाता है तथा घनिष्ठता के कारण पात्र एक दूसरे की वास्तविक स्थिति को समझने लगते हैं। कहानीकार स्थिति-अंकन में क्रमिक विकास को विशेष महत्व देता है। एकबारगी ही वह पात्रों को अनेकानेक

---

1 'In the brief period of first meeting, there is little chance for contradictons to appear or for the judge to ascertain which

स्थितियों में उलझा कर इतना रहस्यपूर्ण बनाना भी उचित नहीं समझता कि उनके व्यक्तित्व के स्वाभाविक निरूपण का मूल्य ही समाप्त हो जाय। जिस प्रकार कुशल नाटककार की संतुलित कृति के आधार पर एक-एक कर रंगमंच पर विभिन्न दृश्य आते तथा पात्रों के व्यक्तित्व का क्रमबद्ध उद्घाटन तथा विश्लेषण होता है, उसी प्रकार उत्कृष्ट कहानीकार की रचना में स्थितियों के क्रमबद्ध अंकन द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का कलात्मक विश्लेषण होता है। इतना अवश्य है कि उसके पास केवल शब्द ही साधन हैं, जिनका सतर्क और व्यवस्थित प्रयोग ही उसे लक्ष्य तक पहुँचाने में में समर्थ होता है।

पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिये यह अनिवार्य है कि उनकी शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक क्रिया-प्रतिक्रिया को विभिन्न स्थितियों के मध्य सन्तुलित न्याय-बुद्धि के साथ देखा जाय। मनोविज्ञान-विशारद रास स्टैगनर ने इस तथ्य की स्थापना की है कि जीवन की विविध वास्तविक स्थितियों के मध्य ही व्यक्ति के व्यवहार का परीक्षण किया जाना उचित है और इसी प्रकार उसके व्यक्तित्व को समझने के लिये हमें बहुपयोगी सामग्री उपलब्ध हो सकती है।[1] जब कहानीकार व्यक्तित्व के स्वरूप को उचित परिपार्श्व में प्रस्तुत करता और निरपेक्ष-भाव से उसका विश्लेषण विभिन्न स्थितियों के मध्य होने देता है, तब उसकी रचना स्वाभाविक, मनोविज्ञान-सम्मत और आकर्षण-युक्त बन पाती है।

कहानीकार के लिये यह आवश्यक है कि वह विभिन्न स्थितियों और पात्रों के व्यक्तित्व को कार्य-सूत्र में जोड़ता चले और इतनी सतर्कता से यह कार्य करे कि उसमें कहीं अस्वाभाविकता अथवा बोझिल प्रयत्नशीलता का आभास भी न मिले। प्रत्येक स्थिति और कार्य को सकारण प्रस्तुत करना भी कुशल कहानीकार के लिये

---

traits are central and which are incidental in the personality. Some features are hidden entirely, especially those that are a social, the 'persona' is not easy penetrate at first meeting."

—G. W. Allport—'**Personality : A Psychological Interpretation**' (Constable & Company,; 1951, P, 500.

1. "A precise statment of the behaviour of an individual in a wide variety of real life situations might well be the most valuable of all materials for the study of personality

Ross S[illegible]

आवश्यक है। कार्य और कारण का सम्बन्ध तो जीवन और जगत में प्रतिक्षण देखा जाता है। स्थिति-अंकन में भी कारण के औचित्य को एक क्षण के लिये भी विस्मृत नहीं किया जाता। अकारण उत्पन्न होनेवाली स्थिति भी किसी न किसी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कारण पर होती है भले ही वह बाह्य रूप से कारण-विहीन दृष्टिगत होती हो। मानव-मन के रहस्यों के विश्लेषण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रत्येक स्थिति के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता। कुशल कहानीकार स्थिति और कार्य के साथ कारण का सम्बन्ध इतनी कुशलता से जोड़ता है कि पाठक वर्ग पात्रों के व्यक्तित्व की सजीवता का सरलता से अनुभव करने लगता है। कहानीकार, पाठक और पात्र के व्यक्तित्व का एकाकार हो जाना, प्रत्येक स्थिति और कार्य में उनका आद्यन्त सामञ्जस्य-सूत्र में बंधा रहना कहानीकार की उत्कृष्ट सफलता का द्योतक है।

५. अनुभावों के चित्रण द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण—मानसिक स्थिति के परिवर्तन के साथ व्यक्ति के शरीर पर विभिन्न विकार दृष्टिगत होते हैं। साहित्य-शास्त्रियों ने इन विकारों को अनुभाव की संज्ञा दी है। इनको देखकर पात्रों के मन की स्थिति का अनुमान लगाना दर्शक-वृन्द के लिये सरल हो जाता है। अतएव दृश्य-काव्यों में इनके भेदाभिभेद की विस्तृत समीक्षा की गई है। रसपरिपाक की प्रक्रिया में इन्हें महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मनोविज्ञानवेत्ताओं ने भी अनुभावों के माध्यम से वैयक्तिक के रहस्य तक पहुँचने का प्रयास किया है। कहानीकार अनुभावों के वर्णन द्वारा व्यक्तित्व विश्लेषण के कार्य को स्वाभाविक और गतिशील बनाता है। सामान्यतः देखा यही जाता है कि पात्रों के व्यक्तित्व का रहस्य उनके कार्य और प्रतिक्रिया द्वारा बाद में व्यक्त होता है, पहले उनके शरीर पर लक्षित होने वाले अनुभाव ही प्रकट हो जाते हैं। विभिन्न स्थितियों में अनुभावों का रूप परिवर्तित होता रहता है। कहानीकार पात्रों की प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति को आकर्षक और स्वाभाविक बनाने के लिए अनुभावों का सांकेतिक वर्णन करता है। उपन्यासकार अथवा नाटककार की भाँति न तो वह लम्बे विवरण प्रस्तुत कर सकता है, न रंग-संकेत द्वारा ही अनुभावों के सम्बन्ध में निर्देश दे सकता है। उसे कहानी विकास-क्रम के साथ विविध स्थितियों में संक्षिप्त संकेत देने की सुविधा ही प्राप्त है। जब तक पात्र संवाद, कार्य अथवा प्रतिक्रिया द्वारा अपने मनोभावों को व्यक्त नहीं करते तब तक उनके अनुभावों द्वारा ही उनके व्यक्तित्व को समझने की अनिवार्यता बनी रहती है।

विभिन्न स्थितियों में पात्रों के मुख तथा शरीर के अन्य अंगों पर उन्माद-शिथिलता, हर्ष-विमर्ष, स्वेद-अश्रु, रोष-प्रसन्नता आदि की अभिव्यक्ति होती रहती है। अंग-संचालन तथा आवेग द्वारा भी मन की स्थिति की प्रतिच्छाया दृष्टिगत होती है। अनुभावों में स्थिति-परिवर्तन में व्यतिक्रम भी हुआ करता है। उत्कृष्ट कहानीकार

इन सभी को वह तत्कालीन अभिव्यक्ति के साँचे में ढालता रहता है। दर्शन के सन्तुलन और कहानी के व्यवस्थित विकास—क्रम को ध्यान में रखते हुये कहानी-लेखक सूक्ष्म परिवर्तनों पर भी अपनी दृष्टि डालता है। भावप्रधान आदर्श पात्रों के के व्यक्तित्व के निरूपण में श्री जयशंकर प्रसाद, राजा राधिकारमण सिंह, रामकृष्ण-दास ने अपनी अधिकांश कहानियों में अनुभावों का चित्रण मनोयोग-पूर्वक किया है। व्यक्तित्व के अन्तर-पक्ष का बाह्य प्रतीकों के माध्यम से विश्लेषण करने में कहानी का गौरव और आकर्षण बढ़ता है।

कहानीकार की रचना विस्तृत न होकर सीमित और सन्तुलित होती है, अतएव आवश्यक विश्लेषण की सीमा का उल्लंघन कर विशद विवरण के क्षेत्र में वह प्रवेश नहीं कर सकता। कतिपय कहानीकार इस सीमा से इतने आतंकित होते हैं कि वे अनुभावों का संकेत तक देना अनावश्यक समझते हैं, परन्तु वे भूल जाते हैं कि इस प्रकार वे पात्रों के व्यक्तित्व के साथ स्पष्टतः अन्याय करते हैं। विभिन्न स्थितियों में पात्रों के अनुभाव उनके व्यक्तित्व को सक्रियता और सशक्तता प्रदान करते हैं। अनुभाव के संकेत तक न पाने वाले व्यक्तित्व का संचालन यदि कहानीकार अपनी इच्छानुसार करने लगता है तो उसमें सप्राणता तथा प्रभावपूर्णता का सर्वथा लोप हो जाता है। घटना-वैचित्र्य को महत्व देने वाले और पात्रों के व्यक्तित्व का अपनी इच्छा तथा आग्रह के अनुसार संचालन करने वाले कहानीकारों की रचनाओं में इस प्रकार की प्रवृत्ति सामान्य रूप से देखी जाती है। हिन्दी कहानी-साहित्य के आरम्भिक युग में अनुभाव-चित्रण का अभाव अधिकांश रचनाओं में पाया जाता है।

व्यवहार-कुशल व्यक्ति अपने-अपने मनोभावों को गुप्त रखने के उद्देश्य से जब अनुभावों को प्रकट नहीं होने देता, तब उसका व्यक्तित्व समस्यामूलक बन जाता है। सामान्यतः हम मनोभावों की प्रतिच्छाया मुख या शरीर के अन्य अंगों पर पाते ही हैं, परन्तु संसार-क्षेत्र में ऐसे भी पात्र मिलते हैं जो अनुभावों को दबाने में कुशल होते हैं। कहानीकार उनके प्रयास एवं कृत्रिम व्यवहार पर सतर्क दृष्टि रखता है। कई बार ऐसा भी होता है कि स्थितियों की चोट से आकर इस प्रकार के व्यक्ति अपना सन्तुलन अनजाने ही खो देते हैं और उनके कृत्रिम प्रयास का आभास मिल जाता है। अकस्मात् व्यक्त हो जाने वाला अनुभाव एक क्षण में ही उनके व्यक्तित्व के रहस्य का उद्घाटन कर देता है।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले पात्रों के अनुभावों को व्यक्त करना कहानीकार के लिये सरल होता है। उनकी वाणी, कार्य, चरित्र तथा प्रतिक्रिया का सीधा सम्बन्ध विभिन्न अनुभावों से जुड़ता चला जाता है। परन्तु अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले पात्र अपनी प्रतिक्रिया को सरलता से व्यक्त नहीं होने देते। अपनी समस्त व्यथा को अन्तर

में संजोकर वे आत्मकेन्द्रित बनने की चेष्टा में लीन रहते हैं। उनके कार्य तथा व्यवहार से उनके मनोभावों का सम्बन्ध-सूत्र जुड़ नहीं पाता। अतएव इनके व्यक्तित्व को समझने के लिये अनुभावों का आश्रय अनिवार्य रूप से लेना पड़ता है। अपनी मनोदशा को गुप्त और स्वकेन्द्रित रखने का चाहे वे कितना ही प्रयास करें, उनके अनुभाव रहस्य का उद्घाटन कर ही देते हैं। कहानी में मनोविश्लेषण के महत्त्व की अभिवृद्धि के साथ ही अनुभाव-चित्रण की ओर कहानीकारों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ है। अनुभावों के सूक्ष्म परिवर्तनों को दृष्टिपथ में रखते हुए वर्तमान युग का कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से करता है। श्री जैनेन्द्रकुमार, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, एवं यशपाल की अनेक उत्कृष्ट कहानियों में अनुभाव का उत्तम चित्रण प्राप्त होता है, जिसके द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का सांकेतिक विश्लेषण संभव है।

व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण

१. अन्तः-प्रेरणाओं के वर्णन द्वारा : मनुष्य के व्यक्तित्व को उसके बाह्य रूप से ही पूर्ण रूपेण समझ लेना सम्भव नहीं है। उसके आन्तरिक स्वरूप को विविध साधनों से विश्वसनीय रूप से समझना व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से अत्यावश्यक है। कार्य और व्यवहार द्वारा व्यक्ति के प्रत्यक्ष रूप को देखा और परखा जा सकता है। परन्तु उसके व्यक्तित्व का परोक्ष रूप इतना रहस्यपूर्ण होता है कि वहाँ तक पहुँचने के लिये मनो-विश्लेषक का सहारा लेना अनिवार्य हो जाता है। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कार्य तो प्रत्यक्ष हो जाता है परन्तु अधिकांश स्थितियों में कारण गुप्त ही रह जाता है। कहानीकार के लिये यह आवश्यक है कि बाह्य स्वरूप के विश्लेषण में अधिक न उलझ कर वह आन्तरिक स्वरूप के विश्लेषण को महत्त्व दे तथा व्यक्तित्व के अव्यक्त अंश को उपलब्ध साधनों द्वारा विश्लेषित करे।

अन्त: प्रेरणाओं के वर्णन द्वारा व्यक्तित्व के अव्यक्त तथा रहस्यपूर्ण अंश को समझने में पर्याप्त सहायता उपलब्ध होती है। अन्त: प्रेरणा उस शक्ति को कहते हैं जो व्यक्ति को कार्यविशेष के लिये प्रेरित और गतिशील बनाती है। अन्तः प्रेरणा के अभाव में कोई भी कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर नहीं होता है। केवल समझ लेने, विचार कर लेने अथवा देख लेने से कोई प्रयत्न अन्तःप्रेरणा से परिचालित नहीं माना जा सकता, उसमें आवश्यकता पूर्ति की क्रियाशीलता तथा उद्योगशीलता भी अनिवार्यतः होनी चाहिए।[1] अन्तःप्रेरणा का सतर्कता से वर्णन करने वाला कहानी-

[1] "Acognitive act, whether sensory perception, image or idea, is not precisely a motive until it serves as a stimulating force to our appetitive powers."

—James E. Royce, "Man And His Nature", P.60-71.
Pub McGraw Hill-Company New York, 1961

कार इस तथ्य से सुपरिचित होता है। व्यक्ति का दृष्टिकोण, आचरण तथा उसकी क्रियाशीलता अन्तःप्रेरणा द्वारा परिचालित होती है। विभिन्न स्थितियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते समय वह अन्तःप्रेरणा के वास्तविक रूप को ग्रहण कर कार्य-कारण की यथोचित व्याख्या कर देता है। व्यवहार सम्बन्धी क्रियाओं का विश्लेषण करते हुए उनके बाह्य रूप तक सीमित रहना व्यक्तित्व-विश्लेषण के प्रति न्याय-युक्त प्रयास नहीं कहा जा सकता। बाह्य स्थिति-विशेष में व्यक्ति के व्यवहार के अध्ययन को पूर्ण न समझ कर हमें उससे अधिक कुछ और जानने की आवश्यकता पड़ती है। उस आन्तरिक स्थिति को जानना अनिवार्य होता है जिसकी प्रेरणा से व्यक्ति विशिष्ट कार्यों को सम्पादित करता है।[1]

कहानीकार अन्तःप्रेरणाओं के सन्तुलन-युक्त वर्णन द्वारा व्यक्तित्व के अन्तर पक्ष का क्रमिक उद्घाटन करता है। कहानी की कथावस्तु की गतिविधि तथा सहन-शक्ति का अनुमान कर वह मुख्य पात्रों के महत्वपूर्ण कार्यों की अन्तः प्रेरणाओं का वर्णन मार्मिक ढंग से करता है। कहानी की कलात्मकता तथा रूप-विधान को अक्षुण्ण रखते हुए वह परस्पर-विरोधी प्रतीत होने वाले कार्यों की युक्तियुक्तता को अन्तःप्रेरणाओं के वर्णन द्वारा समर्थन प्रदान करता है। जिन विचित्रताओं और व्यवहारगत असंगतियों को समझने में सामान्य पाठक असमर्थ होता है, वह उनका विश्वसनीय विश्लेषण अन्तःप्रेरणाओं के आधार पर कर देता है। पात्रों के व्यक्तित्व की रहस्यमयता के उद्घाटन का अचूक साधन बना कर वह अव्यक्त अन्तःप्रेरणाओं को विविध प्रश्नों के समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है।

बाह्य कार्य तथा आचरण द्वारा व्यक्तित्व की जो व्याख्या होती है उससे स्वाभाविक रूप से व्यक्तित्व-विश्लेषण नहीं हो पाता। जब इन कार्यों की प्रेरक शक्तियों का चित्रण होता है तब इनका औचित्य-बोध होता है और उनकी विविधता को एक आधार देने तथा परस्पर संयुक्त करने का अवसर कहानीकार को प्राप्त होता है। यह देखा जाता है कि एक ही व्यक्ति के कार्य और व्यवहार विभिन्न स्थितियों में सर्वथा भिन्न हो जाते हैं तथा विभिन्न प्रकृति के लोगों के कार्य परिस्थिति-विशेष में एक ही जैसे होते

---

1 "To understand why a person behaves as he does in any particular situation, you must know what external situation he is in—but you must know more than that. You must also understand his internal situation, which plays an extremely important role in arousing and detecting his behaviour."

—Ruch—"**Psychology of Life**", P.123.

है। इस भिन्नता के पीछे अन्तःप्रेरणाओं की उद्दाम प्रेरक शक्ति निहित रहती है। उन्हीं से अभिप्रेरित होकर पात्रों के व्यक्तित्व की विविधरूपता प्रकाश में आती है तथा उस विविधता में भी औचित्य तथा संगति का विधान पूर्ण होता रहता है।

कहानीकार के लिये यह आवश्यक है कि पात्रों के व्यक्तित्व को निरन्तर प्रेरित करने वाली मुख्य अन्तःप्रेरणा पर अपनी दृष्टि स्थिर रखे और व्यक्तित्व-विश्लेषण में कहीं अनौचित्य और अन्तर्विरोध न आने दे। अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए तद्नुकूल आचरण तथा अन्तःप्रेरणा के संयोग द्वारा उसे स्वनिर्मित पात्रों के व्यक्तित्व की रचना करनी चाहिए। अपनी मूल-प्रकृति के विरुद्ध यदि कोई पात्र आचरण करता है तो उसकी सकारण व्याख्या करते हुये प्रेरक-शक्ति का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। वातावरण तथा परिस्थितियों की परिवर्तनशीलता को सतर्क दृष्टि से देखने वाला कहानीकार व्यक्तित्व की रहस्यपूर्ण ग्रन्थियों में स्वयं उलझता नहीं वरन् अन्तःप्रेरणाओं की सकारण-व्याख्या द्वारा उन्हें स्वाभाविक रूप में सुलझाने का प्रयास करता है। व्यवहार-गत भिन्नता के होते हुए भी सामाजिक परिप्रेक्ष्य से जब व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है तब व्यक्तिगत और सामाजिक अभिप्रेरणा एक दूसरे को समर्थन देने लगती हैं।[1] विचारक मन (Munn) के मतानुसार सामाजिक साहचर्य की भावना का मूल कारण सामाजिक अभिप्रेरणा ही है जो अधिकांश व्यक्तियों में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है। जब व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर व्यक्ति को समाज से पृथक् किया जाता है तब उसमें (समाज में) अत्यधिक व्यतिक्रम की सम्भावना उत्पन्न होती है।' प्रसाद जी की आकर्षक कहानियाँ जैसे 'ममता', 'मधूलिका', 'आकाशदीप', 'बनजारा' और 'विसाती' के सभी पात्रों के व्यक्तित्व के पीछे अन्तःप्रेरणाओं का हाथ है तथा उनके विविध कार्य-कलाप उन्हीं पर अवलम्बित हैं।

---

1 "The social motives found in most. if not in all, normal human beings are well exempeifieed by desire to associate with others. All organisms that are long dependent upon others for survival, become greatly disturbed when isolated.'

—Norman L. Munn—'**Psychology**'—(The Fundamentals of Human Adjustment)—(Pub. George G. Harrap & Co. Ltd., London. 1958). P. 101.

२. अन्तर्द्वन्द्व के विश्लेषण द्वारा : कहानीकार पात्र की उस मनःस्थिति को सावधानी से समझता और विश्लेषित करता है जिसमें वह अनिश्चय के कारण द्वन्द्व में पड़ा रहता है। किसी निश्चित मार्ग अथवा कार्य-पद्धति को अपना कर अपने उद्देश्य को पूरा करने में उसे उलझन होती तथा वह निरन्तर उद्विग्न रहता है। व्यक्तित्व में इस स्थिति के कारण विरोधी वृत्तियों का आभास मिलने लगता है और कहानीकार को अधिक सतर्कता से पात्र के मानसिक-जगत का निरीक्षण करना पड़ता है। अपने सही कर्त्तव्य-पथ का बोध प्राप्त करने में अन्तर्द्वन्द्व के कारण जब व्यक्ति असमर्थ हो जाता है तब उसके व्यक्तित्व में संघर्ष और विरोध की मात्रा बढ़ जाती है। अनिश्चय की मनोदशा व्यक्ति को पीड़ित, प्रताड़ित करती रहती है। अपने कार्य और क्षमता पर उसे आस्था नहीं रह जाती है। उसके कार्य परस्पर विरोधी-प्रतीत होते हैं और उसमें आत्मबल तथा इच्छा-शक्ति का अभाव दृष्टिगत होता है। कहानीकार पात्रों की इस मनस्थिति के विश्लेषण द्वारा उनकी क्रिया-प्रतिक्रिया की कारण सहित व्याख्या करता है तथा पाठक वर्ग ऐसे पात्रों को सही दृष्टि से देखने में तथा उनके आचरण के रहस्य को समझने में समर्थ बन जाता है।

अपनी भूल को स्वीकार न करने वाले मनोव्यथा में निमग्न पात्र आत्मपीड़न का मार्ग अपनाते हैं। कभी-कभी आत्माभिमान भी अन्तर्द्वन्द्व का स्रष्टा बन जाता है[1]। निरन्तर आत्म-पीड़न और आत्मवंचना की स्थिति व्यक्तित्व को समस्या प्रधान बना देती है। अन्तर्द्वन्द्व की यह व्यथा ऐसे ही पात्रों के मन में उत्पन्न होती है जो समुचित विचार-सरणि को अपना कर वस्तुस्थिति को ठीक-ठीक समझ नहीं पाते। एक ही साधन अथवा कार्य-पद्धति पर उनका विश्वास दृढ़ नहीं हो पाता। फलतः वे विविध प्रयोगों में भटकने लगते हैं। निराशा, असफलता, वंचना और भावुकता के कारण अन्तर्द्वन्द्व अधिक गम्भीर तथा रहस्यमय रूप धारण करने लगता है। पात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर अन्तर्द्वन्द्व की प्रतिच्छाया व्यक्त होने लगती है। कहानीकार कुशलता से इन परिवर्तनों और परिणामों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। जिन व्यक्तियों में आत्मशक्ति तथा इच्छा-शक्ति की प्रबलता होती है, वे अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित नहीं होते।

1. 'Persistence in denying oneself what has been rejected through sheer agony of conflict may of course arise from pride—unwillingness to admit error—or from self-punishment.'

— Gardner Murphy, **'Personality'**—A Bio-Social Approach to Organism and Structure'—(Pub. Harper & Bros., London, 1947), P. 314.

उनके कार्य तथा आचरण की गति नीति, समाज और व्यवस्था-क्रम की रूढ़ियों द्वारा सुनियोजित होती है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने कर्त्तव्य-पथ का निश्चय सरलता से कर लेते और उस पर दृढ़ता से जमे रहते हैं। परिस्थितियों की प्रतिकूलता तथा संघर्षों की कठोरता जिन पात्रों को विचलित नहीं कर पाती वे ही अन्तर्द्वन्द्व की व्यथा तथा उलझन से मुक्त रहते हैं।

हिन्दी कहानी के प्रारम्भिक युग में परम्परानुसार ऐसे ही पात्रों की प्रधानता दी जाती थी, जिनके समस्त जीवन और व्यापार के व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्य नितान्त स्पष्ट हों और जो अपने सुनिश्चित कार्य की आवश्यकता, हिंसक और अन्तर्द्वन्द्व के बढ़ने की गति से स्वतन्त्र हों। अनिश्चय की स्थिति में रहने की कोई सम्भावना उनके समक्ष आती ही नहीं थी। हिन्दी कहानी-साहित्य में मनोविश्लेषण की परम्परा ने अन्तर्द्वन्द्व के विश्लेषण की ओर लेखकों को प्रेरित किया। मन के रहस्यों के उद्घाटन की ओर जब वे सतर्कता से प्रवृत्त हुए तब अन्तर्द्वन्द्व के विवेचन का महत्व उन्हें ज्ञात हुआ। जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द्र जोशी, पहाड़ी, मन्मथनाथ गुप्त, अज्ञेय प्रभृति कहानीकारों ने समस्यामूलक व्यक्तित्व के अन्तर्द्वन्द्व का उत्कृष्ट चित्रण किया है।

अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण के दो प्रमुख रूप कहानी-साहित्य में उपलब्ध होते हैं। प्रथम रूप वह है, जिसमें पात्र को अपने आन्तरिक संघर्ष के कारण ज्ञात होते हैं और कथाकार उनकी संगति बैठाता हुआ उन्हें पात्र के व्यक्तित्व के साथ स्वाभाविक रूप से संयुक्त कर देता है, और द्वितीय रूप वह है, जिसमें पात्र को अपने आन्तरिक संघर्ष का कारण ज्ञात नहीं होता और कहानीकार द्वन्द्व-कारणों को समझकर उनके सम्बन्ध सूत्र को अन्तर्वेदना से व्यथित पात्र के व्यथित पात्र के साथ जोड़ता चलता है।

३. मूल प्रवृत्तियों के विश्लेषण द्वारा—कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न तत्वों का निरूपण करते हुये मूल-प्रवृत्तियों (Instincts) को यथास्थान विवेचित करता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि मनुष्य का मस्तिष्क प्रारम्भ से ही एक निश्चित पथ की ओर गतिशील होता है। जन्म लेते ही बालक की प्रत्येक क्रिया सप्रयोजन और सकारण बनने लगती है। मूल-प्रवृत्तियाँ आरम्भ से ही मनुष्य को विविध कार्यों की प्रेरणा देती रहती हैं। प्रत्येक मनुष्य में मूल-प्रवृत्तियाँ किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान होती हैं। यह भी निश्चित है कि सभी प्रवृत्तियाँ एक साथ न तो व्यक्त होती हैं और न उनका विकास ही एक साथ होता है। प्रत्येक का उदय काल निश्चित होता है। उनकी प्रेरणा से ही मनुष्य विशेष पदार्थों की ओर आकृष्ट होता तथा सुनियोजित उद्योग में निरत होता है।

कहानीकार के लिये यह समझना आवश्यक होता है कि पात्र-विशेष किन मुख्य मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक कार्यों की ओर प्रवृत्त

हुआ है। मनोवैज्ञानिकों ने विविध परीक्षणों से यह तो प्रमाणित ही कर दिया है कि मूल-प्रवृत्तियों से छुटकारा पाना अथवा उन्हें विनष्ट कर देना असम्भव है। मनुष्य जाने अनजाने उनके इंगित पर चलने के लिये विवश होता है। संस्कृति, धर्म, ज्ञान तथा नागरिकता की भावना ने मूल प्रवृत्तियों में संशोधन, विकास, परिवर्तन और मार्गान्तरीकरण आदि के माध्यम से सुधार और उपयोगिता की विशेषताएं भले ही भर दी हों पर उनके उन्मूलन का प्रयास किसी युग में सफल नहीं हुआ है। मूलप्रवृत्ति के कारण ही इन्हीं के द्वारा व्यक्ति कार्य-विशेष की ओर प्रवृत्त होता है। यह सहज क्रिया प्रत्येक व्यक्ति में अनिवार्य रूप से होती रहती है। कहानीकार मुख्य मूल-प्रवृत्ति को अच्छी प्रकार समझकर उसके विश्लेषण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को समुचित परि-वेश में प्रस्तुत करता है।

यह बहुत ही आवश्यक है कि कहानी-लेखक मूल-प्रवृत्ति और आदत के अन्तर को समझ कर उसका विश्लेषण करे। यद्यपि इन दोनों में प्रत्यक्षतः बहुत कुछ समानता होती है परन्तु एक विशेष अन्तर इन दोनों को पृथक् कर देता है। अन्तर यह है कि आदतों का लोप हो जाना सम्भव और स्वाभाविक है, परन्तु मूल-प्रवृत्तियाँ आजीवन किसी न किसी रूप में मानव-व्यक्तित्व में विद्यमान रहती हैं। मूल-प्रवृत्तियों के रूप में ज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा क्रियात्मक अंगों का तथ्यपूर्ण ज्ञान कहानीकार को होना चाहिये। यह देखा जाता है कि संवेग की जागृति के लिये विशेष प्रेरणा की आवश्यकता होती है। मूल-प्रवृत्ति के आधार पर पात्र की क्रियाशीलता को संवेग द्वारा ही गति और शक्ति प्राप्त होती है।

मूल-प्रवृत्तियों की व्यापकता तथा सक्षमता को समझने वाले मनोवैज्ञानिकों ने उनके स्वरूप, लक्षण तथा प्रभाव की विशद विवेचना की है। कहानीकार के लिये इतना ही आवश्यक है कि वह उन मूल-प्रवृत्तियों को सतर्क दृष्टि से पकड़ सके तथा उनकी तथ्यपूर्ण व्याख्या कर सके जो पात्र-विशेष के व्यक्तित्व का परिचालन करती हैं। मूल-प्रवृत्तियों के प्रमुख व्याख्याता मैग्डूगल ने इनको व्यक्तित्व की क्रियात्मक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। परिभाषा निश्चित करते हुए उन्होंने मूल-प्रवृत्ति के विषय में कहा है, 'मूल-प्रवृत्ति एक प्रकृति-दत्त शक्ति है। इसके कारण प्राणी किसी वस्तु-विशेष को देखकर उस ओर स्वभावतः आकर्षित होता है। इस आकर्षण के फलस्वरूप वह एक विशेष प्रकार के भावों और क्रियात्मक प्रवृत्ति का अनुभव करता है। इस अनुभूति के परिणाम स्वरूप वह उपस्थित वस्तु से सम्बन्धित एक विशेष प्रकार की क्रिया में संलग्न हो जाता है।' इस प्रकार मैग्डूगल ने मूल प्रवृति में ज्ञान, संवेग और क्रिया तीनों का अस्तित्व अनिवार्य माना है।

कहानीकार व्यक्तित्व की प्रेरक मूल-प्रवृत्तियों की गतिविधि को स्वाभाविक

चित्रण द्वारा कलात्मक स्वरूप प्रदान करता है। मूल-प्रवृत्तियों के साथ ही उनसे सम्बन्धित संवेग-विशेष के स्वरूप और प्रभाव को समझना भी आवश्यक होता है। मैग्डूगल के मतानुसार मूल-प्रवृत्तियाँ कुल चौदह हैं। इन्हीं के अन्तर्गत सभी प्रेरणात्मक शक्तियों का समाहार हो जाता है। कर्कपैट्रिक तथा वुडवर्थ प्रभृति मनोवैज्ञानिकों ने मूल-प्रवृत्तियों का विभाजन भिन्न आधारों को ग्रहण कर किया है। परन्तु मैग्डूगल का विभाजन अधिक युक्तिसंगत और वैज्ञानिक प्रतीत होता है। कहानी-लेखक को भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि संवेगों और मूल-प्रवृत्ति का मिश्रित रूप व्यक्तित्व की केन्द्रीय प्रेरणात्मक शक्ति है और प्रत्येक कार्य का सम्बन्ध-सूत्र इनसे जुड़ा होता है।

मैग्डूगल का वर्गीकरण

मूल-प्रवृत्ति	सम्बन्धित संवेग
१. पलायन (Escape)	भय (Fear)
२. युयुत्सा (Combat, Pugnacity)	क्रोध (Anger)
३. निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)
४. पुत्र-कामना (Parental)	वात्सल्य, स्नेह (Tender emotion, Love)
५. शरणागति (Appeal)	करुणा, दुख (Distress)
६. काम-प्रवृत्ति (Sex, Mating)	कामुकता (Lust)
७. कौतूहल, जिज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
८. दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative Selffeeling)
९. आत्मगौरव या आत्मप्रदर्शन (Self-assertion or Self-display)	आत्माभिमान (Positive Selffeeling)
१० सामूहिकता (Social instinct or Gregariousness)	एकाकीपन (Loneliness)
११. भोजनान्वेषण (Food-seeking)	भूख (Appetite)
१२. संग्रह वृत्ति (Acquisition, Collection)	अधिकार-भावना (Feeling of ownership)
१३. विधायकता, रचना-प्रवृत्ति (Construction)	कृतिभाव, रचना जात आनन्द (Feeling of creativeness)
१४. हास (Laughter)	आमोद (Amusement)

उपर्युक्त वर्गीकरण को मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिकों ने स्वीकार नहीं किया है। उनका विचार है कि सभ्यता के समानान्तर इनका विकास होता रहा है। सभ्यता के आदिम-युग में सभी मूल-प्रवृत्तियों का एक साथ विकास होना सम्भव नहीं

था। अतएव इनका अधिक विकास ही युक्तिसंगत और वैज्ञानिक प्रतीत होता है। कतिपय प्रमुख मनोविश्लेषणवादी विचारकों ने मैग्डूगल की स्थापना को अस्वीकृत करते हुए केवल प्राणी की समस्त क्रियाओं की उद्गम-शक्ति के रूप में एक ही प्रवृत्ति को स्वीकृति प्रदान की है। व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा साहित्य को अत्यधिक प्रभावित करने वाले विचारक फ्रायड ने इस शक्ति को काम-शक्ति (Sex) की संज्ञा दी है। युंग ने इसे जीवनशक्ति (Libido) के नाम से सम्बोधित किया है। शोपनहॉवर इसे जीने की इच्छा (Will to live) मानते हैं। बर्गसन ने इसे प्राणशक्ति (Elan vital) के रूप में स्वीकृति दी है। इन विद्वानों का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति में जीवित रहने की इच्छा विद्यमान रहती है। विभिन्न दृष्टिगत होने वाली मूल-प्रवृत्तियाँ इनके विचारानुसार एक दूसरे से सम्बन्धित ही नहीं होतीं वरन् एक ही शक्ति की पृथक शाखायें हैं। यह स्पष्ट है कि जब परिस्थितिवश किसी मूल-प्रवृत्ति में अन्तर उपस्थित होता है तो उसमें निर्बलता और प्रभाव-न्यूनता के लक्षण आ जाते हैं, परन्तु वह नष्ट नहीं होती है।

मनोविश्लेषण की व्यापकता तथा सफलता ने साहित्य-जगत को अप्रत्याशित मात्रा में प्रभावित किया है। फ्रायड के सिद्धान्तों और परीक्षणों ने तो कथा-साहित्य में एक नवीन युग का सूत्रपात ही किया है। व्यक्तित्व-विश्लेषण के क्षेत्र में युंग, एडलर जैसे विद्वानों के तथ्यपूर्ण निष्कर्षों ने विचार और परीक्षण की नवीन दृष्टि प्रदान की है। कहानीकार के लिये व्यक्तित्व से सम्बद्ध इन विविध तथ्यों का ज्ञान विशेष उपादेय है। मनोविश्लेषणवादी विचारधारा ने मूल-प्रवृत्तियों के स्वच्छन्द प्रकाशन को व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास के लिये आवश्यक माना है। इस स्थापना ने कथा-साहित्य में वासना-व्यापारों के मुक्त और सर्वथा निरंकुश वर्णन को प्रोत्साहित ही नहीं किया है वरन् उसका समर्थन भी कर दिया है। सामाजिक-प्रवृत्ति तथा नैतिक जीवन की अनिवार्यता को महत्व देने वाले विचारकों ने इस स्वच्छन्द-वृत्ति के प्रति गम्भीर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। कहानीकार को व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश करने के पूर्व मूल-प्रवृत्तियों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। हिन्दी कहानी-साहित्य के प्रेम-चन्दोत्तर-युग में मनोविश्लेषणवादी परम्परा की प्रेरणा से मूल-प्रवृत्तियों की स्वच्छन्द क्रियाशीलता का भावोत्तेजक वर्णन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। श्री इलाचन्द्र जोशी की 'मेरी डायरी के दो नीरस पृष्ठ', 'एक शराबी की आत्मकथा,' 'चौथे विवाह की पत्नी' तथा श्री यशपाल की 'औरत,' 'शम्बूक,' 'भावुक', 'वो दुनिया' शीर्षक कहानियाँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं विचारणीय हैं।

व्यक्तित्व के सन्तुलन तथा समुचित विकास के निमित्त मनोवैज्ञानिकों ने मूल प्रवृत्तियों के परिवर्तन को आवश्यक माना है। मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक विकसित

और सुसंस्कृत माना जाता है अतएव उनकी उद्दाम तथा असामाजिक-प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है। मनोविश्लेषण-वादियों ने भी परिशोधन के महत्व को स्वीकार किया है तथा सामाजिक उपयोगिता के दृष्टिकोण से कतिपय मूल प्रवृत्तियों में शोधन को अनिवार्य माना है। यद्यपि वे सहज एवं स्वाभाविक रूप में मूल प्रवृत्तियों के प्रकाशन को उपयोगी मानते हैं तथापि समस्यामूलक व्यक्तित्व में परिशोधन की आवश्यकता का उन्होंने समर्थन किया है। स्वयं फ्रायड के अनेक प्रयोग मूल-प्रवृत्तियों को नियंत्रित तथा परिशोधन करने के उद्देश्य में सम्पन्न हुए हैं।

मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन अथवा संशोधन प्रस्तुत करने की जो बहुप्रचलित परीक्षण-समर्थित विधियाँ हैं उनमें प्रमुख हैं :

(१) अवदमन (Repression)—मूल-प्रवृत्तियों के अवदमन के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों ने अनेक परीक्षण किये हैं। जैसा कि हम विचार कर चुके हैं, मूल-प्रवृत्तियों का सर्वथा निष्कासन या विनाश किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है। इनके अवदमन की जब बलपूर्वक चेष्टा की जाती है तब व्यक्तित्व में अन्तर्विरोध तथा विश्रृंखलन उत्पन्न होने लगता है। इस दुष्परिणाम को प्रधानता देते हुये मनोविश्लेषण-वादियों ने अवदमन के प्रयास को हानिकर घोषित किया है। जब कठोर नियन्त्रण द्वारा मूल-प्रवृत्यात्मक क्रिया में बाधा उत्पन्न की जाती है, तब व्यक्ति द्वारा उनका प्रत्यक्ष और परोक्ष विरोध होता है। व्यक्तित्व के विकास में भी इससे दुर्निवार कठिनाईं उत्पन्न हो जाती है। यदि व्यक्ति में दृढ़ता और आग्रह की मात्रा अधिक हुई तो कठोर नियंत्रण होते ही उसकी मूल-प्रवृत्ति अन्य किसी मार्ग द्वारा अधिक अवांछित रूप से व्यक्त होने लगेगी। यह देखा गया है कि असामाजिक उद्दाम मूल प्रवृत्तियों के अवदमन की चेष्टा जब-जब कड़े नियंत्रण द्वारा की गयी है, तब तब उसका विस्फोट भयंकर परिणामों के साथ व्यक्त हुआ है। यदि व्यक्ति अपनी असमर्थता तथा परिस्थितिजन्य विवशता के कारण अवदमन के समक्ष नतशिर हो गया तो उसमें भावना-ग्रन्थियाँ बनेंगी और वह एकदम असहाय हो जायगा। इस प्रकार उसका व्यक्तित्व पंगु, निष्क्रिय और प्रभावहीन हो सकता है।

अवदमन की उपयोगिता को मनोविश्लेषणवादियों ने मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में अपनाने की आवश्यकता बतायी है। फ्रायड का कथन है कि मूल-प्रवृत्तियों के अवांछित स्वरूप का निष्कासन बाल्यावस्था में किया जा सकता है। व्यक्ति को प्रेरित किया जा सकता है कि वह आत्म-नियंत्रण शक्ति के उपयोग द्वारा हानिकर मूल प्रवृत्ति का क्रमिक अवदमन करे। बाह्य नियंत्रण के स्थान पर स्वप्रेरित आत्मशक्ति का उपयोग न केवल उपयोगी है वरन् उसका प्रभाव भी स्थायी होता है। कहानीकार को इस

प्रक्रिया का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास में मनोविज्ञान-सम्मत अवदमन का महत्त्व कथा-साहित्य में व्यापक-रूप से स्वीकार किया गया है। अनेक ऐसे पात्रों की मूल प्रवृत्तियों का अवदमन कुशलता से चित्रित किया गया है जो अपनी दुर्दम असामाजिकता तथा अवांछित आचरण को त्यागकर लोककल्याण की ओर पूर्ण सफलता के साथ अग्रसर हुए हैं। संग्रह-मूल-प्रवृत्ति को अवदमन द्वारा नियन्त्रित कर पात्रों ने लोभी, स्वार्थी तथा चोर होने से अपने को बचाया है। काम-प्रवृत्ति के सन्तुलित तथा मनोविज्ञान-सम्मत अवदमन ने अनेक पात्रों को उत्कृष्ट कहानियों के पृष्ठ-पट पर चिरस्मरणीय महत्ता प्रदान की है। युयुत्सा का क्रमिक अवदमन व्यक्ति को हिंसक तथा क्रूर बनने से रोकना तथा उसके सवेग 'क्रोध' द्वारा उसे परोपकार, अन्याय के दमन तथा आत्म-रक्षा की प्रेरणा प्राप्त होती है। कहानीकार को व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से इन परिवर्तनों के चित्रण के प्रति सतर्कता बरतनी चाहिए।

(२) विलयन (Inhibition)—मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन उपस्थित करने का दूसरा मनोवैज्ञानिक साधन विलयन है। इसके दो रूप हैं (१) निरोध (२) विरोध। निरोध द्वारा प्रवृत्तियों के उत्तेजित होने तथा सक्रियता प्राप्त करने के साधन तथा कारण नष्ट किये जाते हैं। वातावरण या परिस्थितियाँ इस प्रकार निर्मित की जाती हैं कि मूल-प्रवृत्ति को प्रकाशन का अवसर ही न मिले। इस प्रकार उनकी क्षमता तथा प्रभाव-शक्ति निर्बल पड़ जाती है। काम-प्रवृत्ति तथा युयुत्सा के निरोध का चित्रण कहानी-साहित्य के विभिन्न युगों में होता रहा है। विरोध का अर्थ है ऐसी दो पारस्परिक विरोधी मूल प्रवृत्तियों को एक साथ जाग्रत और सक्रिय होने का अवसर देना जो एक दूसरे से टकरा कर प्रभावहीन तथा व्यर्थ हो जाती हैं। उदाहरण के लिये काम-प्रवृत्ति के उत्तेजित होने की स्थिति में भय अथवा क्रोध उत्पन्न कर दिया जाय तो अन्य मूल प्रवृत्ति की सक्रियता द्वारा काम-भावना का प्रशमन हो जायगा। त्याग-भावना को उत्पन्न कर संग्रह-प्रवृत्ति के शमन की चेष्टा अनेक अवसरों पर की गयी है और उसका सुपरिणाम भी देखा गया है। कहानीकार को पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के निमित्त यह समझना आवश्यक होता है कि निरोध की अपेक्षा विरोध अधिक उपयोगी और स्वाभाविक प्रक्रिया है। निरोध में अतृप्ति और कुण्ठाओं का प्रवेश अनायास ही हो जाता है। उसकी अपेक्षा विरोध द्वारा मूल प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना व्यक्तित्व-संगठन की दृष्टि से अधिक उपयोगी है। श्री प्रेमचन्द की आदर्शोन्मुख कहानियों में यह प्रवृत्ति विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

३. मार्गान्तरीकरण (Redirection)—मूल प्रवृत्ति की शक्ति को जब अन्य दिशा में आयोजित कर दिया जाता है, तब उसकी असमाजिकता का निवारण हो जाता है और लोकहितकारक प्रवृत्ति का प्रशंसनीय विकास होता है। इस विधि से

केवल उसकी प्रकाशन-पद्धति में परिवर्तन उत्पन्न किया जाता है। इसकी उपयोगिता को दो उदाहरणों से समझना उपादेय होगा। युयुत्सा की प्रवृत्ति का उद्दाम रूप अत्यन्त घातक होता है। यदि इसका मार्गान्तरीकरण देश-रक्षा, अन्याय-निर्मूलन और संकट-निवारण की ओर कर दिया जाय तो निस्सन्देह इसका सराहनीय प्रतिफल देखने को मिलेगा। संग्रह-प्रवृत्ति प्रायः सभी लोगों में विद्यमान होती है। इसकी प्रबलता व्यक्तित्व को कृपणता, स्वार्थपरता और लोभ से ग्रस्त करती है। यदि इसका मार्गान्तरीकरण सतर्कता से किया जाय तो कला, संस्कृति और ज्ञान के विविध साधनों के एकत्र करने और संचय करने का महान कार्य सम्पन्न हो सकता है। कहानीकार को पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के क्रम में उसकी मूल-प्रवृत्तियों के मार्गान्तरीकरण की ओर ध्यान देना चाहिए। वह कल्पना-जगत में अपने पात्रों का स्रष्टा और संचालक स्वयं ही होता है। अतएव इस प्रक्रिया के चित्रण द्वारा उसे व्यक्तित्व-संगठन के प्रयास को मनोविज्ञान-समर्थित रूप प्रदान करना चाहिए।

४. शोधन (Sublimation)—इस प्रक्रिया द्वारा मूल प्रवृत्ति को उच्चतर लक्ष्य की ओर प्रेरित किया जाता है। इससे व्यक्तित्व में प्रबल कर्तृत्व-शक्ति और उत्साह का समावेश होता है। धर्म, विज्ञान, राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में स्तुत्य कार्य करने वाले व्यक्तियों की मूल प्रवृत्तियों के शोधन ने ही उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचने की प्रेरणा दी है। मूल प्रवृत्तियों की पाशविकता और असंस्कृतत्व का निवारण इस विधि से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। फ्रायड ने काम प्रवृत्ति के शोधन के परिणामों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कर मनोविज्ञान-विशारदों का ध्यान इस प्रक्रिया की ओर आकृष्ट किया था। परवर्ती परीक्षणों से यह प्रमाणित हो गया है कि प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का शोधन सम्भव है। महान वैज्ञानिकों, देशभक्तों, कलाकारों और प्रशासकों के व्यक्तित्व-विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उनकी उद्दाम मूल-प्रवृत्तियों के शोधन ने उन्हें लक्ष्य तक पहुँचने की शक्ति प्रदान की है। कहानीकार को पात्रों के विशिष्ट व्यक्तित्व का विश्लेषण करते समय इस प्रक्रिया के चित्रण को समुचित महत्व देना चाहिए। उसे यह भी समझ लेना है कि शोधन की भी एक सीमा होती है। व्यक्ति की शक्ति तथा रुचि का ध्यान रखते हुए सतर्कता से उसकी प्रवृत्ति के शोधन को सन्तुलित रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

कहानीकार की अपनी सीमाएं भी होती हैं। वह साहित्य-प्रणेता है और व्यक्तित्व-विश्लेषणकर्ता के रूप में मानव मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों से सुपरिचित भी। परन्तु कहानी का अल्प-विस्तार, एकनिष्ठ-लक्ष्य और कसी हुई वर्णन-पद्धति उसे विश्लेषण के विस्तार में जाने से रोकती है। सधी हुई शब्दावली में वह मानव

व्यक्तित्व का रचनात्मक विधि से विश्लेषण करना और उसके अन्तर में निहित मूल-प्रवृत्तियों का चित्रण उपर्युक्त विधि से करना है।

४. संवेग (Emotion) चित्रण—मूल-प्रवृत्तियों के प्रकरण में हमने संवेग की महत्ता को समझने का प्रयास किया है। मूल प्रवृत्ति को परिचालित और प्रबल बनाने में इसके अनिवार्य योग को निर्विरोध रूप से मनोवैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है। संवेग का प्रभाव वैयक्तिक होता है और मानव व्यक्तित्व से उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। एक ही स्थिति में दो व्यक्तियों के संवेग में भिन्नता हो सकती है। आन्तरिक स्थिति तथा मनोभावों पर संवेग आधारित होते हैं। यह निश्चित है कि संवेग क्रियाशीलता की ओर व्यक्ति को प्रेरित करेगा। संवेग के अन्तर्गत भाव (feeling) और संवेगात्मक-प्रवृत्तियाँ (Emotional Impulses) का समाहार हो जाता है। व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर इसकी सक्रियता की मात्रा में परिवर्तन भी होता रहता है। अनुभव और प्रौढ़ता के साथ संवेग का बाह्य प्रभाव कम होता जाता है। प्रायः यह देखा गया है कि स्त्रियों और बालकों में संवेग का अनुभव शीघ्रता से होता है और उसका प्रतिफल भी शीघ्रतर अभिव्यक्ति पा लेता है। शिक्षा, उत्तरदायित्व और सहनशीलता भी संवेगों के नियंत्रण की क्षमता प्रदान करने वाले साधन हैं।

संवेग का सम्बन्ध किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से होता है। इसका स्थानान्तरण भी सहज गति से होता रहता है। उदाहरण के लिये क्रोध के संवेग को लें। हम किसी व्यक्ति के अप्रिय तथा अनुचित कार्य पर क्रुद्ध हो जाते हैं। उसी समय किसी अन्य व्यक्ति के हस्तक्षेप के कारण हम उसके प्रति ही अपने क्रोध को व्यक्त कर अनजाने इस संवेग का स्थानान्तरण कर देते हैं। कार्यालय का लिपिक अपने क्रोध को अधिकारी के पास से स्थानान्तरित कर अपने घर पर पहुँचा देता है। संवेग का स्वरूप साधारण और असाधारण दो प्रकार का होता है। भय, क्रोध, सुख, दुख, प्यार और घृणा को साधारण संवेगों की कोटि में रखा जाता है। व्यक्तित्व से प्रथमतः इनका सम्बन्ध होता है, और इनसे ही असाधारण संवेगों की सृष्टि होती है। ईर्ष्या, श्रद्धा, असंतोष तथा प्रतिवाद असाधारण संवेग हैं। इनका प्रभाव स्थायी नहीं होता। परिस्थिति के परिवर्तित होते ही संवेगों की प्रबलता और सक्रियता समाप्त हो जाती है। एक संवेग का स्थान दूसरा ले लेता है और हमारे मनोभाव अपने परिवर्तन के द्वारा इनके साथ निरन्तर क्रीडा किया करते हैं। मनोभावों के परिवर्तन के कारण संवेग अस्थिर होते हैं। यह अस्थिरता व्यक्तित्व के लिये अत्युपयोगी है। यदि संवेग व्यक्तित्व में स्थायी स्थान प्राप्त करते तो जीवन विकृत और क्लेशपूर्ण हो जाता। दुख, क्रोध, भय, घृणा इत्यादि संवेग यदि स्थायी रूप ग्रहण कर लें तो व्यक्तित्व असन्तुलित और ———— बन जायेगा।

कहानी के पात्रों को प्रस्तुत करते समय लेखक को उनकी संवेगात्मक स्थितियों का ध्यान रखना चाहिए। एक ही पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों में निरन्तर परिवर्तनशील संवेगों की गतिविधि को पहचानना तथा उनके माध्यम से व्यक्तित्व का विश्लेषण करना कहानीकार के लिये आवश्यक है। मनोविश्लेषणवादी परम्परा ने संवेगों के मनोवैज्ञानिक चित्रण की ओर कथाकारों का ध्यान आकृष्ट किया है। संवेगों के शोधन (Sublimation) एवं रेचन (Catharsis) क्रिया द्वारा व्यक्तित्व के सन्तुलन का चित्रण अनेक उत्कृष्ट कहानियों में हुआ है। इन क्रियाओं द्वारा संवेगों की दिशा में परिवर्तन कर उन्हें उपयोगी और समाजकल्याण का साधन बनाना कहानीकार के लिये श्रेयस्कर है। पात्रों के व्यक्तित्व का सृजन करते हुए जब वह संवेगात्मक-प्रभाव और उसके परिणाम का समुचित चित्रण करता है तब उसकी रचना में आकर्षण, युक्तिसंगति और स्पन्दन की विशेषताएं स्वतः आ जाती हैं।

५. स्थायीभाव और भावना ग्रन्थियों का विश्लेषण (Sentiments and Complexes)—स्थायीभाव संवेग-जनित मनःस्थिति का नाम है। यह भाव स्वाभाविक नहीं होता, वरन् वातावरण के संघर्ष-स्वरूप हमारे मन में उत्पन्न होता है। जहां संवेग और तज्जनित प्रभाव अस्थिर और परिवर्तनशील होता है वहां स्थायी भाव हमारे अन्तर्जगत के अपरिवर्तनशील स्थायी अंग होते हैं। एक प्रकार के संवेग से एक ही स्थायी-भाव की उत्पत्ति होती है। परन्तु एक स्थायीभाव विभिन्न स्थितियों में कई संवेगों को जन्म देता है। जब मूल प्रवृत्तियों का शुद्ध और उदात्त रूप व्यक्तित्व की केन्द्रीय-शक्ति बन जाता है तब उनसे ही स्थायी भाव निर्मित होते हैं। मूल-प्रवृत्ति को क्रियात्मक रूप देने के लिये किसी न किसी प्रेरणा की आवश्यकता होती है, परन्तु स्थायी भाव के लिये किसी बाह्य अथवा अन्तःप्रेरणा की अनिवार्यता नहीं होती। मूल प्रवृत्ति पर आधारित क्रिया में आवेश की प्रधानता होती है, परन्तु स्थायी भाव से प्रेरित कार्य का सम्पादन विवेकपूर्वक विधिवत् किया जाता है। विश्व के विशाल रंगमंच पर धर्म, विज्ञान, राजनीति और समाज-सुधार के महान् कार्यों की अवतारणा की प्रेरणा स्थायी-भाव ने ही सभी युगों में दी है।

समाज के विकास ने मनुष्य के स्थायी-भावों की उपयोगिता और सुपरिणाम को निरन्तर प्रकाश में आने की शक्ति दी है। मानवीय अनुभवों का क्षेत्र ज्यों-ज्यों विस्तृत होता गया है, त्यों त्यों स्थायी-भाव नैतिक आदर्शों और महान् कार्यों की पृष्ठ-भूमि निर्मित करते गये हैं। देश-भक्ति और आत्म-गौरव के स्थायी-भावों ने विश्व-संस्कृति के स्वर्णिम अध्यायों के सृजन का महत्वपूर्ण कार्य किया है और उनकी प्रकाश-परिधि में अनेक स्मरणीय व्यक्तित्व-रत्न विभिन्न युगों में आते रहे हैं। कहानीकार

व्यक्तित्व-विश्लेषण की ओर अग्रसर होते हुए स्थायी-भाव को प्रेरक शक्ति के रूप में चित्रित करते हैं। पात्रों के चरित्र-विकास का तो इसे आधार ही समझना चाहिये। श्री प्रसाद की कहानियाँ जैसे 'बन्धन', 'गुंडा', 'सालवती', 'मधुलिका' एवं 'ममता' इस विशेषता का वहन करती हैं।

जीवन और जगत के विविध कार्य-व्यापारों की जटिलता ने मानव-व्यक्तित्व को अनेक समस्याओं से सम्बद्ध कर दिया है। सामाजिक नियमों, मान्यताओं, आदर्शों और निषेधों के साथ संगति न बैठने पर व्यक्तित्व में भावना-ग्रन्थि स्थान बनाने लगती है। मूल-प्रवृत्तियों के अवदमन के निमित्त जब कठोर नियंत्रण को एक मात्र आधार मान लिया जाता है तब भी भावना-ग्रंथियाँ उत्पन्न होती हैं। मनुष्य की तात्कालिक इच्छाएँ पूर्ण नहीं हो पातीं, और उनकी पूर्ति न होने से अतृप्ति का संचार होता है। व्यक्तित्व में इस अतृप्ति द्वारा अज्ञात रूप से भावना-ग्रन्थि निर्मित होने लगती और व्यक्ति को अन्तर्द्वन्द्व के पाश में जकड़ने लगती है। धीरे-धीरे भावना-ग्रन्थि स्थायी विकृत-भाव का रूप ग्रहण कर लेती है। मनोविश्लेषकों ने भावना-ग्रन्थि को व्यक्तित्व के असन्तुलन और विकृति का मुख्य कारण मान कर इसके सम्बन्ध में अनेक उपयोगी और तथ्य-समर्थित परीक्षण किये हैं। समाज में प्रधान रूप से चार भावना-ग्रन्थियों का व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है :

(१) आत्मगौरव की भावना-ग्रन्थि (Self-assertion Complex)
(२) हीनता की भावना-ग्रन्थि (Inferiority Complex)
(३) काम-सम्बन्धी भावना-ग्रन्थि (Sex Complex)
(४) प्रभुत्व की भावना-ग्रंथि (Authority Complex)

मानव मनोविज्ञान के निरन्तर बढ़ते हुए महत्व ने कथाकारों को भावना-ग्रन्थि के विश्लेषण की ओर प्रेरित किया है। विभिन्न क्षेत्रों में समस्यामूलक व्यक्तित्व के अन्तर में भावना-ग्रन्थियों के अस्तित्व को स्वीकार कर उत्कृष्ट मनोविश्लेषण प्रधान कहानियों में उनका तर्कसंगत चित्रण किया गया है। श्री पहाड़ी की कहानियाँ इस दृष्टिकोण से विशेष रूप से विचारणीय हैं— मुख्यतः 'मीनू और मीला', 'रज्जो', 'कुसुम की बात', और 'यदि मैं जानती'। फ्रायड और उसके परवर्ती मनोविश्लेषकों ने भावना-ग्रन्थियों का सप्रमाण विश्लेषण कर उन्हें व्यक्तित्व-संगठन में अत्यधिक प्रभाव-पूर्ण तथ्य के रूप में स्वीकृति दी है। पाश्चात्य और भारतीय साहित्य पर उनके विवेचन-विश्लेषण का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। हिन्दी कहानी-साहित्य में भी भावना-ग्रन्थियों के विश्लेषण को आधार मान कर अनेक उत्कृष्ट रचनायें प्रस्तुत की गयी हैं।

(६) संकल्प-शक्ति का विश्लेषण (Will-power) —मनुष्य की निर्णय करने की शक्ति का नाम ही 'संकल्प-शक्ति' है। स्वभावतः उसके मन में विभिन्न इच्छाएँ उत्पन्न होती रहती हैं, और अनेक वस्तुओं के उपभोग की कामनाएँ जन्म लेती रहती हैं। कभी-कभी इच्छायें परस्पर विरोधी भी होती हैं। इनको तृप्ति के प्रयत्न में पूर्व मनुष्य के मन में अन्तर्द्वन्द्व उठता है। इस अन्तर्द्वन्द्व का निवारण कर निश्चित निर्णय पर पहुँचने का मार्ग 'संकल्प-शक्ति' प्रदान करती है। अवांछनीय इच्छा की तृप्ति न करने की प्रेरणा भी संकल्प-शक्ति से प्राप्त होती है। संकल्प-शक्ति की दृढ़ता और प्रबलता ही मनुष्य की सफलता का आधार है। मनुष्य के संस्कारों के अनुसार ही संकल्प-शक्ति प्रबल या निर्बल होती है। जिस व्यक्ति में संकल्प-शक्ति प्रबल होती है वह अपने लक्ष्य की पूर्ति कम समय में और उत्कृष्ट विधि से करता है। संसार में बहुत से व्यक्ति उच्च आदर्शों की रचना तो कर लेते हैं, उनसे सम्बन्धित योजनाएँ भी बना लेते हैं, परन्तु संकल्प-शक्ति प्रबल न होने के कारण उन्हें क्रियात्मक रूप दे ही नहीं पाते।

व्यक्तित्व-विश्लेषण करते हुए कहानीकार यह समझने का प्रयास करता है कि उसके द्वारा सृजित पात्र में संकल्पशक्ति प्रबल है या निर्बल। अपनी कल्पनानुसार वह कथावस्तु के अनुकूल संकल्प-शक्ति के स्वरूप का निर्धारण करता है। जिस व्यक्ति में वह दृढ़ संकल्प-शक्ति की स्थापना करता है उसे इतना सहिष्णु और कर्मठ बनाता है कि वह विषम स्थितियों में भी दीर्घकाल तक अविचलित रह कर अपने लक्ष्य की पूर्ति में संलग्न रहता है। प्रेमचन्द की 'पंच-परमेश्वर', नमक का दारोगा और 'शतरंज' शीर्षक कहानियों में मूल प्रवृत्तियों के विश्लेषण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषित किया गया है। ऐसे पात्र जो संकल्प-शक्ति की निर्बलता के कारण किसी भी कार्य को पूर्ण निष्ठा तथा लगन के साथ सम्पन्न नहीं कर सकते, व्यक्ति की शक्तिहीनता का परिचय देते हैं। उनमें निर्णयात्मक प्रतिभा और दृढ़ता का अभाव होता है। जिन स्थितियों में उनकी इस प्रकार की दुर्बलता प्रकट होती है उनका भी समान कुशलता से चित्रण कहानीकार के लिये वांछनीय है।

मनोविज्ञानवेत्ताओं ने निर्णयशक्ति को संकल्प-शक्ति का परिणाम मानते हुए उसके विविध रूपों की सप्रमाण व्याख्या की है। आधुनिक परीक्षणों से यह प्रमाणित हुआ है कि संकल्प-शक्ति का विकास शिक्षा और अनुभव पर आधारित है। मैक्डूगल ने संकेत किया है कि संकल्प-शक्ति को स्थायी वृत्ति मानना चाहिए। इसमें मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व निहित रहता है। इसी के द्वारा वह निर्णीत तथ्य को ग्रहण करने में सफल होता है। निर्णय शक्ति के पाँच विशिष्ट रूप माने गये हैं :

१. विवेकयुक्त (Rational)

२. आकस्मिक (Accidental)

२. [illegible] ([illegible]on),

४. बाध्य (Forced),

५. पुनर्विचारात्मक (Retrospective).

संकल्प-शक्ति के इन रूपों का विभिन्न स्थितियों में चित्रण होता है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व में संकल्प-शक्ति की प्रबलता का कारण आत्म-संयम की शक्ति और विचार परिपक्वता है जो किसी भी देश-काल-परिस्थिति में समुचित संस्कारों द्वारा ही अर्जित की जा सकती है। आवेग और दुराग्रह संकल्प-शक्ति को क्षीण बनाते हैं। विवेकयुक्त निर्णय संकल्प-शक्ति को सक्षम, प्रभावपूर्ण और साहस-युक्त बनाता है।

६. स्मृति (Memory) का चित्रण :—मनुष्य को अपने संचित और पूर्वार्जित अनुभवों को पुनः स्मरण कर प्रयोग करने की शक्ति 'स्मृति' द्वारा प्राप्त होती है। वर्तमान परिस्थिति में 'स्मृति' मनुष्य को विवेकयुक्त निर्णय के लिये पूर्वप्राप्त अनुभव की सहायता लेने की प्रेरणा देती है। इसके अभाव में मनुष्य पशु के समान आचरण कर सकते हैं। संचित अनुभवों का उपयोगी अंश 'स्मृति' के माध्यम से पुनः प्रकाश में आता है। इसके द्वारा मनुष्य को ज्ञात तथ्यों को याद करने की शक्ति प्राप्त होती है। उत्तम स्मृति में दीर्घकाल तक तथ्यों की धारणा की स्वाभाविक शक्ति होती है। यह भी आवश्यक है कि विवेक का प्रयोग कर अनावश्यक अनुभवों और तथ्यों को स्मृति-पटल पर न आने दिया जाय। स्मृति की उत्कृष्टता धारणा-शक्ति पर ही आधारित होती है। व्यक्तित्व-विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तिगत क्षमता की भिन्नता के कारण स्मृति की शक्ति में भिन्नता होती है। प्रत्येक व्यक्ति का क्रियाशील मस्तिष्क चेतनायुक्त होता है और धारणा-शक्ति के आधार पर स्मृति का उपयोग जीवन के विविध क्षेत्रों में करने की प्रेरणा प्रदान करता है। स्वास्थ्य की उत्तमता, रुचि के परिष्कार और चिन्तन की गम्भीरता पर स्मृति की शक्ति अवलम्बित होती है। रुचि के विकास से भी स्मृति में सबलता आती है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण के उद्देश्य से स्मृति का चित्रण करते हुए कहानीकार को यह समझना चाहिए कि पूर्वज्ञात तथ्य किस प्रकार चेतना में पुनः आते हैं। विचारों अथवा प्रत्ययों के साहचर्य (Association of ideas or concepts) द्वारा स्मृति की सहायता से समान-धर्मा तथ्यों का पुनर्स्मरण होता है। व्यक्तित्व के विकास में सक्रिय स्मृति की कार्य-प्रणाली मुख्य रूप से तीन बातों पर निर्भर होती है : (१) विचारों की समानता, (२) विचारों का वैपरीत्य और (३) सहचारिता। प्रत्यय-सम्बन्धों को पुष्ट करने के लिये व्यक्ति को नवीनता, सक्षमता, अविरलता और रोचकता सम्बन्धी

विशेषताओं का आश्रय लेना पड़ता है। कथाकार को स्मृति के महत्व को समझकर उसे प्रेरक-शक्ति के रूप में ग्रहण करना पड़ता है। व्यक्तित्व के चतुर्दिक प्रसृत विभिन्न कार्य-व्यापार स्मृति की सहायता से प्रसंगानुकूल और औचित्ययुक्त रूप प्राप्त करते हैं। मनोविश्लेषणवादियों ने स्मृति के उपयोग द्वारा भावना-ग्रन्थियों और कुण्ठाओं के निवारण का विशद और सफल प्रयास किया है। मुक्त-आसंग (Free association of ideas) प्रणाली द्वारा व्यक्तित्व की ग्रन्थियों को सुलझाने का जो प्रयास मनोवैज्ञानिकों ने किये हैं, उनका प्रभाव आधुनिक कथा-साहित्य पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। कथाकार अपने पात्रों के चरित्र तथा स्वभाव के मानसिक विश्लेषण में निज इस प्रणाली का उपयोग कलात्मक ढंग से कर सकता है।

(ङ) अवधान (Attention) (मनोयोग) का विश्लेषण : व्यक्तित्व के संगठन में अवधान (मनोयोग) का महत्व सर्वविदित है। किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिये इसकी अनिवार्य अपेक्षा होती है। चेतना को किसी वस्तु पर केन्द्रित करने की क्रिया का नाम अवधान है। वातावरण में उपस्थित अनेक व्यक्ति, वस्तु और दृश्य हमारे ध्यान को आकृष्ट करने की चेष्टा करते हैं। जिस ओर हमारी चेतना केन्द्रित होती है, उस पर हमारा अवधान पड़ता है। इस क्रिया द्वारा हम तथ्य को स्पष्ट और उचित ढंग से समझने में समर्थ होते हैं। मैग्डूगल के विचारानुसार, 'अवधान किसी वस्तु को ज्ञान-प्राप्ति के लिये मन की प्रयोजनात्मक प्रवृत्ति है। जितनी ही दृढ़ता के साथ हम किसी वस्तु को देखना, सुनना या समझना चाहते हैं उतना ही अधिक हम उस वस्तु पर अवधान देते हैं'।[1] अवधान और रुचि का घनिष्ठ सम्बन्ध है। हम स्वाभाविक रूप से उसी वस्तु पर अपनी चेतना केन्द्रित करते हैं, जिसके प्रति हमारे मन में रुचि पहले से विद्यमान रहती है। मनोविश्लेषणवादी एडलर ने रुचि को अवधान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण माना है। "अवधान से भी अधिक गहराई में अन्तर्निहित रुचि का प्रभाव विशेष व्यापक होता है। यह स्वाभाविक ही है कि यदि हमारी रुचि केन्द्रित हुई तो वहाँ हम ध्यान अवश्य देंगे। और जब रुचि पहले से विद्यमान है तो किसी शिक्षक को अवधान के लिये चिन्तित होने की आवश्यकता ही नहीं है"।[2]

---

1. McDougal — **"An Outline of Psychology"**, pp. 271-78.

2. "The most important factor in the awakening of attention is a really deep-rooted interest in the world. Interest lies in a much deeper psychic stratum than attention. If we have interes

कहानीकार के लिये उचित है कि वह अवधान के विशिष्ट गुणों को समझ कर व्यक्ति-रचना में उनका सन्तुलित विकास करे। उद्योगशीलता अवधान का सर्वप्रमुख गुण है। जब हमारा ध्यान वस्तु-विशेष की ओर केन्द्रित होने लगता है तो शरीर और मन दोनों परिश्रम-रत होने लगते हैं। कभी-कभी तो प्रयत्नपूर्वक अवधान की क्रिया सम्पन्न करनी पड़ती है। ऐसे प्रयत्न में मानसिक-शक्ति की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। जब रुचि और उपयोगिता के तत्व सक्रिय होते हैं तब अवधान अधिक प्रभावपूर्ण होता है। इस क्रिया में सप्रयोजनता का महत्व भी विशेष विचारणीय है। उदात्त-चरित्र-युक्त व्यक्तित्व में उच्च लक्ष्य के कारण सप्रयोजनता प्रत्येक स्थिति में विद्यमान रहती है। विवेक द्वारा व्यक्ति जिस निर्णय पर पहुँचता है उसके अनुसार वह कर्त्तव्याकर्त्तव्य को समझ लेता है। अवधान की प्रक्रिया में वह सर्वप्रथम वस्तु-विशेष का ज्ञान विश्लेषण द्वारा प्राप्त करता है और फिर स्मृति की सहायता से द्वितीय स्तर पर सम्पूर्ण ज्ञान का संश्लेषण कर उसे आत्मसात करने की चेष्टा करता है।

कहानीकार को अवधान की प्रक्रिया से व्यक्तित्व का सम्बन्ध जोड़ते समय यह देखना आवश्यक होता है कि अवधान-विशेष के प्रेरक बाह्य और अन्तरंग तत्व कौन से हैं। अवधान को उद्दीप्त करने वाले तत्वों के विश्लेषण द्वारा वह पात्रों के कार्यों का मनोवैज्ञानिक औचित्य प्रस्तुत कर सकता है। नर्वल और विपरीत परिस्थितियों में भी उच्चचरित्रयुक्त व्यक्तित्व में अपने लक्ष्य के प्रति अवधान स्थिर रखने की शक्ति बनी रहती है। पाश्चात्य कथा-साहित्य में मनोविश्लेषकों ने अवधान-क्रिया के विवेचन द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण की विशिष्ट विधियों का द्वार उन्मुक्त किया है।

(ङ) कल्पना का चित्रण : कल्पनाशक्ति की विशिष्ट उपलब्धि के कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न और उच्च स्तर का अधिकारी बन सका है। व्यक्तित्व से सम्बद्ध सभी क्रियाओं के मूल में कल्पनाशक्ति निहित होती है। कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण मानव सभ्यता ही कल्पना की देन है। किसी वस्तु की अनुपस्थिति में उस पर विचार करना कल्पना है। अतीत के अनुभवों के आधार पर इसके द्वारा नई सृष्टि की प्रेरणा प्राप्त होती है। कल्पना सर्वथा नवीन भी हो सकती है। उसके लिये

---

then it is self-understood that we would also pay attention, and where interest exists, an educator need not concern himself with attention."

—Alfred Adler—"Understanding Human Nature" (Pub. Fawcet Publications, Greenwich, 1959), P.84.

पूर्वार्जित अनुभवों की अनिवार्य अपेक्षा नहीं होती। मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य की स्थापना की है कि स्मृति और कल्पना का घनिष्ठ सम्बन्ध है। परन्तु इन दोनों के अंश में एक विचारणीय अन्तर भी है। स्मृति का सम्बन्ध केवल अतीत से होता है जबकि कल्पना अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों से सम्बन्धित होती है। कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व में कल्पना-शक्ति के यथार्थ रूप को पहचानने का प्रयास करता है। कल्पना के विभिन्न रूप व्यक्तित्व को सक्रिय बनाने के लिये साधन-सामग्री जुटाते रहते हैं। इनके आधार पर पात्रों के स्वभाव, चरित्र और प्रभाव की व्याख्या की जाती है।

विभिन्न वर्गों के पात्रों में कल्पनाशक्ति भिन्न प्रकार की होती है। सामान्य बुद्धि-स्तर के व्यक्ति आदानात्मक कल्पना (Receptive) तक ही सीमित रहते हैं। किंचित् उच्चतर वर्ग के व्यक्ति सृजनात्मक (Creative) कल्पना के उपयोग में समर्थ होते हैं। अतीत के अनुभवों पर आधारित होने पर भी कल्पना का यह रूप भविष्य से सम्बन्धित और स्वतन्त्र-सत्तायुक्त होता है। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को सिद्ध करने के लिये व्यक्तित्व में यह प्रेरक-शक्ति का स्थान प्राप्त करती है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणकर्त्ताओं ने इसके दो विशिष्ट स्वरूप बताये हैं :

(१) कार्य-साधक (Pragmatic) कल्पना
(२) रसात्मक (Aesthetic) कल्पना

कार्य साधक कल्पना की प्रेरणा से विश्व के महान् आविष्कारकों ने अनेक महत्वपूर्ण वस्तुओं का आविष्कार किया है। जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति का उद्योग भी इसके आधार पर किया जाता है। इसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दो रूप होते हैं। सिद्धान्तों का आविष्कार भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना व्यावहारिक क्रियाओं का सम्पादन। कार्यसाधक कल्पना इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करती है। रसात्मक कल्पना मस्तिष्क को स्वतंत्र चिन्तन और भाव-प्रकाशन की ओर प्रेरित करती है। कवि, चित्रकार एवं कथाकार इसके उपयोग द्वारा अपनी कृतियों का सृजन करते हैं। स्वच्छन्दता का उपयोग करते हुए भी कलाकार जब अपनी कृतियों में स्वाभाविकता और क्रमबद्धता की विशेषताएँ अक्षुण्ण रहने देता है, तब उसकी रचना कलात्मक और सहज-ग्राह्य होती है। जब वह स्वाभाविकता की सीमा का उल्लंघन कर जाता है, तब उसकी कल्पना मनोविज्ञान के विवेचन के अनुसार तारंगिक (Fantastic) कही जाती है।

कहानीकार पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कल्पना की महत्ता को दृष्टिपथ से हटने नहीं देता। कला की प्रेरणात्मक शक्ति के रूप में वह कल्पना को

ग्रहण करता है। उसकी रचना का आधार भी तो कल्पना ही होती है। अतएव शब्दों में व्यक्तित्व का निरूपण करते हुए कल्पना के परिणाम तथा व्यापक प्रभाव को कैसे विस्मृत कर सकता है? कलाकार, दार्शनिक, साहित्यप्रणेता, शूरवीर और समाज-उन्नायकों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए वह कल्पना के यथार्थ महत्व और प्रभाव का कुशलता से चित्रण करता है।

(१०) चिन्तन और तर्क (Thinking and Reasoning) का विश्लेषण : मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि चिन्तन (Thinking) की शक्ति मनुष्य में ही होती है। पशुओं में सूझ होती है, परन्तु चिन्तन-शक्ति का उनमें अभाव होता है। परिस्थिति पर विचार करने की क्षमता चिन्तन द्वारा ही व्यक्ति को प्राप्त होती है। इसकी सहायता से व्यक्ति अपने को वातावरण के अनुकूल बनाता है। जिसकी चिन्तनशक्ति जितनी ही प्रबल होती है वह उतना ही दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठतर होता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव जीवन की सफलता चिन्तनशक्ति पर ही आधारित होती है। व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये सोद्देश्य चिंतन करता है। अतीत, वर्तमान और भविष्य पर गहन विवेचन कर वह चिन्तन के सोपान से ही निश्चय तक पहुँचता है। नवीन स्थिति भी चिन्तन की ओर प्रेरित करती है। जब हम पूर्व-प्राप्त ज्ञान के आधार पर सूक्ष्म-विश्लेषण द्वारा एक निश्चय पर पहुँचते हैं तो इस क्रिया को प्रत्ययात्मक चिन्तन (*Conceptual thinking*) कहते हैं। व्यक्तित्व-संगठन में इस क्रिया का महत्वपूर्ण स्थान है।

चिन्तन और प्रत्यय का घनिष्ठ सम्बन्ध व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। पदार्थों का ज्ञान प्रत्यय-बोध की प्रथम सीढ़ी है। इसका सूक्ष्मतर रूप गुणों के विश्लेषण से सम्बद्ध होता है। निर्णय और प्रत्यय समान रूप से चिन्तन-क्रिया को पूर्ण करने में सहायता प्रदान करते हैं। निर्णय का स्थान चिन्तन-क्रिया में प्रथम सोपान के रूप में होता है और प्रत्यय का द्वितीय सोपान के रूप में। जिस व्यक्ति में निर्णय तक पहुँचने की अदम्य शक्ति होती है वह चिन्तन का पूर्ण लाभ शीघ्रता से प्राप्त करता है। कहानीकार के लिये व्यक्तित्व विश्लेषण करते हुए चिन्तनशक्ति का समुचित स्थलों पर सन्तुलन के साथ चित्रण करना आवश्यक होता है।

चिन्तन की सर्वोत्कृष्ट क्रिया 'तर्क' में निहित होती है। तर्क में व्यक्ति की रचनात्मक कल्पना (Creative Imagination) क्रियाशील होती है। इसके आधार पर नयी परिस्थितियों के सम्बन्ध में निर्णय तक पहुँचने में सहायता प्राप्त होती है। तर्क द्वारा वर्तमान का निरीक्षण कर अतीत के अनुभव के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। व्यक्तित्व की निर्णयात्मक शक्ति के रूप में 'तर्क' का विश्लेषण करते हुए कहानीकार उसे कार्य-व्यवहार और प्रतिक्रिया का प्रेरक

तत्व मान कर आगे बढ़ता है। अनुभव और ज्ञान की प्रौढ़ता के साथ तर्क-शक्ति विकसित और सक्षम होती चलती है। तर्क के स्वरूप पर विचार किया जाय तो उसके दो प्रमुख प्रकार दृष्टिगत होते हैं :

(१) सिद्धान्तपरक (Deductive)

(२) परिणामपरक (Inductive)

सिद्धान्तपरक तर्क का अनुसरण करते हुए पूर्वार्जित अनुभव और ज्ञान का प्रयोग कर हम सरलता से निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं। परिणामपरक तर्क के अनुसरण में किसी पूर्वज्ञात अनुभव या सिद्धान्त को न मानकर परीक्षण द्वारा निष्कर्ष निकाला जाता है। सिद्धान्त इसे अपने परीक्षण के परिणाम के आधार पर ही निश्चित करना होता है। तर्क एक ऐसी स्वाभाविक क्रिया है जो किसी भी समस्या के उपस्थित होते ही मस्तिष्क में आरम्भ हो जाती है। कथाकार तर्क-शक्ति का उपयोग व्यक्तित्व-विश्लेषण में पात्रों के अन्तर की व्याख्या के लिये करता है।

(१०) बुद्धि (Intelligence) का विश्लेषण—मानव-व्यक्तित्व की महत् शक्ति अथवा प्रधान तत्त्व के रूप में 'बुद्धि' को विशिष्ट और सामान्य योग्यता के रूप में मनोविज्ञानवेत्ताओं ने विवेचन और परीक्षण के क्षेत्र में उतारा है। इसके स्वरूप का निश्चय करते हुए उन्होंने विभिन्न विशेषताओं की ओर संकेत किया है। गाल्टन ने इसे 'पहचानने और चुनने की शक्ति' बताया है। स्टाउट के मतानुसार 'अवधान की शक्ति' ही बुद्धि है। स्टर्न का कथन है कि नई परिस्थितियों में अपने को सुव्यवस्थित कर लेने की सामान्य शक्ति को बुद्धि कहा जा सकता है। बुद्धि-स्तर के विभाजन एवं विश्लेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले मनोवैज्ञानिक टरमैन की स्थापना है कि 'अमूर्त वस्तुओं के विषय में सोचने की शक्ति' ही बुद्धि है। थार्नडाइक ने बुद्धि के स्वरूप का निर्धारण व्यापक परिप्रेक्ष्य में किया है। उनके मतानुसार, 'वस्तु-स्थिति के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षित प्रतिक्रिया की योग्यता बुद्धि है।'

उपर्युक्त मतों और स्थापनाओं पर विचार करते हुए डा० सरयू प्रसाद चौबे ने तर्कसंगत विधि से इनके निष्कर्ष को इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

(१) बुद्धि एक मानसिक सामान्य योग्यता है। इसकी शक्ति के विभिन्न रूप हैं।

(२) ऊँची मानसिक प्रक्रियाओं में निम्न प्रक्रियाओं की अपेक्षा यह अधिक क्रियाशील रहती है।

(३) नवीन परिस्थिति के आने पर बुद्धि का बल अच्छी प्रकार दिखाई देता है।

(९) बुद्धि का कार्य संस्कार को केवल ग्रहण करना ही नहीं, वरन् अनुभव के विभिन्न अंशों की परीक्षा कर उन्हें आवश्यकतानुसार सुव्यवस्थित भी करना है।[1]

कहानीकार पात्रों की बुद्धि के स्तर और उनकी सक्षमता से सुपरिचित होता है। वह अपने पात्रों के व्यक्तित्व की रचना ही नहीं करता उन्हें एक निश्चित लक्ष्य तक भी पहुँचाता है; अतएव उसके लिये अत्यावश्यक है कि वह पात्रों की बौद्धिक उपलब्धि और उसके सन्तुलन को ठीक ढंग से समझ ले। बुद्धि और क्रिया का अनायास ही सम्बन्ध बनता रहता है। इसलिये पात्रों के आचरण का सम्बन्ध उनकी बुद्धि से होता ही है। कहानीकार बुद्धि को एक जन्मजात शक्ति के रूप में ग्रहण कर उसे पात्रों के व्यक्तित्व में योग्यता तथा क्रियाशीलता का आधारभूत-तत्व (Fundamental element) मानता है। बुद्धि-परीक्षा के विविध प्रयोगों द्वारा व्यक्तिगत योग्यता और प्रतिभा का वर्गीकरण भी किया गया है। बिने, टरमन और उडरो प्रभृति मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के निम्न स्तर निश्चित कर मानवजाति का विभाजन किया है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार को वातावरण तथा वंशानुक्रम के प्रभाव का भी बुद्धि के सन्दर्भ में गम्भीरता से अवलोकन करना चाहिए। मनोविश्लेषक एडलर ने वातावरण के प्रभाव को महत्व देते हुए लिखा है कि—सम्पन्न परिवारों के बालक वातावरण से प्राप्त ज्ञान के कारण तीव्र बुद्धि सम्पन्न प्रतीत होते हैं। उसी आयु के निर्धन परिवार के बालक उतने बुद्धिमान प्रमाणित नहीं होते। यद्यपि वास्तविकता यही है कि सम्पन्नता का जन्मजात प्रतिभा से कोई सम्बन्ध नहीं है।[2] कहानीकार के लिये उपयुक्त सन्दर्भ में पात्रगत बौद्धिक विशेषताओं का सतर्कता से चित्रण करना समीचीन है।

(१०) **स्वप्न-विश्लेषण** (Dream-analysis)—कहानी के पात्र स्वप्न द्वारा अपने व्यक्तित्व के परोक्ष स्वरूप का असंगतन् उद्घाटन करते हैं। मनोविश्लेषण के क्षेत्र में

---

१. डा० सरयू प्रसाद चौबे—मनोविज्ञान और शिक्षा (पंचम संस्करण—१९६१), पृ० ५७५-७६।

2. "It is well known that eight to ten-year-old children of well-to-do families are much more quick-witted than poor children of the same age. This does not mean that the children of the wealthy are more talented but that the cause for this difference lies entirely in the circumstances of their previous life."

—Alfred Adler—**Understanding Human Nature**". pp. 100-101.

स्वप्न और उसके विश्लेषण को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। स्वप्न विश्लेषण के वैज्ञानिक प्रयोगों और परीक्षणों का विधिवत् समारम्भ फ्रायड ने किया, और परवर्ती मनोविश्लेषकों ने उससे प्रेरणा ग्रहण कर स्वतंत्र प्रयोगों की परम्परा आरम्भ कर दी। उसके सिद्धान्तों का अनुगमन करने वाले मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि प्रत्येक स्वप्न का एक अर्थ होता है। जिस स्वप्न का कोई अर्थ सामान्य मनुष्य की समझ में नहीं आता, मनोविश्लेषक उसकी युक्तिसंगत व्याख्या कर जानते हैं। पात्रों के अचेतन मस्तिष्क-भाग में विभिन्न प्रभाव एकत्र होते रहते और उन्हीं से स्वप्नों की उत्पत्ति सम्भव होती है। फ्रायडवादी मनोविश्लेषकों ने व्यक्तित्व-विश्लेषण में स्वप्न विवेचन को अत्युपयोगी माना है। उनके विचारानुसार विभिन्न स्तर के पात्रों के अचेतन में संघर्ष और विरोध के अनेक कारण एकत्र होते रहते हैं, वे ही स्वप्नों में अवतरित होते रहते हैं। व्यक्तिगत प्रतिबन्धों के कारण उन कारणों का प्रकाशन जाग्रतावस्था में सम्भव नहीं होता। दुखप्रद, अनैतिक, असामाजिक और अवैधानिक विचार भी स्वप्नों का रूप धारण कर लेते हैं। उनके रूप परिवर्तन करने की क्रिया अनियन्त्रित गति से चलती रहती है। इस क्रिया को स्वप्न-संघटन (Dream Mechanism) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

स्वप्नों की व्याख्या करते हुए फ्रायड ने कुछ उत्कृष्ट भाषण प्रस्तुत किये और उसके विचारों ने दर्शन, मनोविज्ञान और साहित्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया। स्वप्न-संघटन की उसने विधिवत् व्याख्या की है। उसके विचारानुसार पाँच प्रकार के स्वप्न-संघटन हैं :

(१) संघनन (Condensation)
(२) विस्थापन (Displacement)
(३) नाटकीकरण (Dramatization)
(४) प्रतीकीकरण (Symbolization)
(५) द्वितीय-स्तरीय-अभिव्यक्ति (Secondary elaboration)

प्रथम स्वरूप में अनेक कारण स्वप्न में क्रमबद्ध रूप में व्यक्त होते हैं। जब एक व्यक्ति या वस्तु से हटकर किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु में स्वप्न के कारण समाविष्ट हो जाते हैं तो उसे विस्थापन कहते हैं, यह द्वितीय रूप है। जाग्रत-अवस्था में जो भाव और विचार चेतन द्वारा अनुभूत होते हैं, उनका प्रभाव जब स्वप्न पर दृश्यों के रूप में व्यक्त होने लगता है, तब उसे नाटकीकरण कहा जाता है। व्यापक सम्बन्ध को व्यक्त करने वाले प्रतीकों के सहारे जब क्लेशप्रद और सामाजिक अनुभूतियाँ स्वप्न द्वारा प्रकट होती हैं, तब इस स्वप्न-संघटन को प्रतीकीकरण कहते हैं। जिस प्रक्रिया

द्वारा व्यक्ति स्वप्न में देखे दृश्यों को जाग्रत अवस्था में अपने साथ क्रमबद्ध बनाने का प्रयास करता है, उसे द्वितीय स्तरीय अभिव्यक्ति (Secondary elaboration) कहा जाता है। मनोविश्लेषणवादी कहानीकारों जैसे जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय एवं पहाड़ी की कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित एवं विश्लेषित करने के लिये स्वप्न-विश्लेषण का प्रयास विभिन्न प्रसंगों में किया गया है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण की अन्य मनोवैज्ञानिक प्रणालियाँ

व्यक्तित्व के स्वरूप और प्रभाव की विविधता के आधार पर उसके विश्लेषण और परीक्षण की कई पद्धतियों का प्रयोग मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है। मानसिक रोगों से प्रभावित व्यक्तित्व की रहस्यमयता को व्यक्त करने के लिये निराधार-प्रत्यक्षीकरण के विश्लेषण (Hallucination Analysis) का उपयोग मनोविश्लेषकों द्वारा किया जाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति के अचेतन में होने वाले द्वन्द्व को जागृतावस्था में ही व्यक्त होने का अवसर प्राप्त होता है। कहानीकार भ्रान्तिग्रस्त पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण इस प्रणाली द्वारा सफलता से करता है। विकृति अथवा दुख के कारण को प्रत्यक्ष न देख कर भी इस प्रकार के पात्र कल्पित दुख और चिन्ता से संत्रस्त रहते है। इनके व्यक्तित्व के असन्तुलन का चित्रण प्रभावपूर्ण ढंग से उपर्युक्त प्रणाली के प्रयोग द्वारा किया जा सकता है।

सम्मोह-विश्लेषण (Hypna-Analysis) एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रणाली है, जिसके माध्यम से पात्रों के विगत जीवन की घटनाओं और अनुभूतियों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। सम्मोहन द्वारा व्यक्ति को सम्मोह-निद्रा की अवस्था में पहुंचा कर उसे अचेतन में पड़ी अनुभूतियों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता दी जाती है। कुशल कहानीकार रहस्यमय व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिये इस प्रणाली का प्रयोग करते है। पात्रों के चरित्र, स्वभाव एवं कार्यों की संगति बैठाने के लिये उसकी सम्मोहित-दशा का चित्रण सतर्कता और कलात्मक ढंग से करना ही समीचीन है।

प्रत्यवलोकन-विश्लेषण (Analysis of Recollection) द्वारा व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन की अनुभूतियों के आलोक में उसके व्यक्तित्व से सम्बद्ध सभी क्रियाओं का परीक्षण किया जाता है। मनोविश्लेषक एडलर का कथन है कि पांच वर्ष की आयु तक जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण बन जाता है, वह आजीवन व्यक्तित्व को प्रभावित किया करता है[1]। उसके प्रत्यवलोकन द्वारा व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र का

---

१. Alfred Adler—**"Science of Living"** (Green Berg, New York, 1920), P. 118.

विश्वसनीय विश्लेषण किया जा सकता है। मनोविश्लेषण से प्रभावित कहानीकारों ने इस प्रणाली का उपयोग कर अपनी रचनाओं में पात्रों के व्यक्तित्व को उनकी स्मृति द्वारा प्रस्तुत प्रत्यवलोकन के आधार पर विश्लेषित किया है। विगत जीवन के प्रत्यवलोकन में लीन पात्रों द्वारा सहज ही उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण होता चलता है।

मनोविज्ञानवेत्ताओं ने पूर्ववृत्तात्मक-प्रणाली (Case-History Method) को व्यक्तित्व-विश्लेषण के लिए अत्यधिक उपयोगी और विश्वसनीय माना है। पात्र की मानसिक स्थिति और उसके कारणों को ज्ञात करने के लिये उसकी अतीत की अनुभूतियों को एकत्र किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन के लिये कहानीकार पात्रों की वर्त्तमान मानसिक अवस्था का यथार्थपरक विश्लेषण करता हुआ उनके पूर्वविकास-क्रम तक पहुँचता है। अतीत और वर्त्तमान के सामंजस्य द्वारा यह उनकी भावी प्रवृत्तियों का भी संकेत देता है। इस प्रकार का संकेत प्राप्त निष्कर्षों और अनुभवों पर आधारित होता है। कहानीकार के लिये इस प्रणाली का अनुगमन करते हुए कुछ सावधानियों को अपनाना आवश्यक है। उसे कुण्ठाग्रस्त, अन्तर्मुखी और समस्यामूलक पात्रों के पूर्ववृत्त का संचय अधिक सतर्कता से करना चाहिए। व्यक्तित्व-विश्लेषण के प्रति ईमानदार रहने वाले कहानी-लेखक के लिये पूर्वग्रहों और पक्षपातपूर्ण विवरण से भ्रम में न पड़ना भी आवश्यक है। पूर्ववृत्त-संचय के लिये जिन साधनों का उपयोग किया जाय उनकी सत्यता और विश्वसनीयता की परीक्षा भी कर लेनी चाहिए।

४

हिन्दी कहानी साहित्य प्रारंभिक काल
प्रारंभ से सन् १९०० तक
(व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से)

हिन्दी कहानी-साहित्य : प्रारम्भिक स्वरूप

हिन्दी कहानी-साहित्य अपने आधुनिक स्वरूप में खड़ी बोली के गद्य के साथ विकसित और प्रसृत हुआ है। इसकी पूर्व परम्परा पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इसका सम्बन्ध भारत के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य से भी आन्तरिक दृष्टि से किसी न किसी रूप में बना रहा है। यद्यपि प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य में काव्य की ही प्रधानता रही और गद्य के विकास तथा विस्तार को समुचित प्रश्रय प्राप्त न हो सका, तथापि कहानी के दो प्रमुख तत्व—कथावस्तु एवं पात्रों के व्यक्तित्व का विवेचन—नित-नवीन अभिव्यक्ति का वरदान पाते रहे। हिन्दी कहानी की प्रेरणा-भूमि मूलतः भारतीय साहित्य की विशाल पीठिका ही है। काव्य-रचना में कहानी के जो तत्व जाने-अनजाने विकसित होते रहे है; वे आधुनिक कहानी को मौलिक और सशक्त रूप देने वाले विश्वसनीय-साधन प्रमाणित हुए हैं। कतिपय उपदेशात्मक एव स्फुट मुक्तक रचनाओं को अपवाद रूप में देखा जाय तो यही ज्ञात होता है कि प्रबन्ध, खण्ड तथा चरित-काव्यों मे पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य एवं आन्तरिक स्वरूप का विशद विश्लेषण किया गया है। कथा-तत्व की प्रमुखता के साथ पात्रों के विशिष्ट व्यक्तिगत गुणों के विकास की भूमिका भी मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत की गयी है। संस्कृत-साहित्य के महाकाव्यों, पौराणिक आख्यानों, लोकप्रचलित तथा ऐतिहासिक कथानकों को आधार मान कर हिन्दी में जिन प्रबन्धकाव्यों की रचना हुई अथवा जो प्रेमाख्यानक काव्य लिखे गये उनमें भी कथा तथा व्यक्तित्व-निरूपण-विश्लेषण को प्रधानता दी गयी।

इस दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो कविवर चन्दवरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' में 'पृथ्वीराज' के शौर्यपूर्ण व्यक्तित्व तथा उनके जीवन से सम्बद्ध कहानी ही

प्रमुख है। इसी प्रकार गायक कवि जगनिक के लोकप्रिय काव्य 'आल्हाखण्ड' में 'आल्हा', 'ऊदल' तथा अन्य पराक्रमी पुरुषों तथा विशिष्ट नारी-पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण विद्यमान है। जायसी के प्रेमाख्यानक काव्य 'पद्मावत' में लोककथा से सचित और इतिहास-प्रसिद्ध पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन समान अभिरुचि के साथ किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में श्रीराम तथा अन्य रामायणकालीन पात्रों के लोकविश्रुत व्यक्तित्व का भावमूलक और भक्तिपरक विश्लेषण है। सूदन कवि के 'सुजानचरित्र' में भी विभिन्न प्रसगों में पात्रों के चरित्र के विश्लेषण का प्रयास किया गया है। प्राचीन एवं मध्यकालीन खण्डकाव्यों में वर्णित कथानक तथा चरित्र एव व्यक्तित्व का अकन कहानी की प्रकृति के अधिक निकट है। इस विवेचन का तात्पर्य केवल इतना ही है कि इन रचनाओं में पात्रो की चरित्रगत विशेषताओं को उनके व्यक्तित्व के आलोक मे देखा गया है तथा कथानक के आवरण में उन्हें प्रस्तुत किया गया है। पात्रों के व्यक्तित्व अंकन और विश्लेषण की यह परम्परा विकसित, स्पष्ट और स्वतंत्र रूप मे हिन्दी कहानी-साहित्य में विद्यमान है।

हिन्दी कहानी-साहित्य के विकास-क्रम पर विचार करते हुए हम देखते हैं कि मध्यकालीन ब्रजभाषा-साहित्य में 'वार्ताओं' मे कहानियो के स्वरूप का कुछ आभास प्राप्त होता है। सन्तो के चरित्र के विविध कथानक उनके व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं का परिचय देते हैं। ब्रजभाषा के अतिरिक्त राजस्थानी में भी गद्यात्मक कथानक प्राप्त होते हैं, जिनमे पात्रो के व्यक्तित्व का बाह्य किन्तु आकर्षक विश्लेषण हुआ है। उदाहरणार्थ 'साई कर रहबो है तेरी बात', 'कुतुब की साहिजादीरी बात', 'बीझरे अहीर की बात', 'आठ कहानियाँ' तथा 'पलक दरियाव री कथा' शीर्षक संकलन द्रष्टव्य है। खड़ी बोली मे गद्य के विकास ने हिन्दी कथा-साहित्य के विकास का द्वार उन्मुक्त किया और विभिन्न क्षेत्रों से पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की आधार-सामग्री का सचय होने लगा। खड़ी बोली गद्य के विकास से हिन्दी कहानी के आरम्भिक रूप का सम्बन्ध दिखाते हुये डा० लक्ष्मी नारायण लाल ने उसके ऐतिहासिक क्रम का विवेचन इस प्रकार किया है :

'ऐतिहासिक दृष्टि से ब्रजभाषा, राजस्थानी और खड़ी बोली गद्य तीनों की स्फुट साहित्यिक परम्पराएँ हमें पहले से मिली थीं लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे इन तीनों परम्पराओं से खड़ी बोली गद्य को एक नूतनतम पथ मिला और यह ब्रजभाषा और राजस्थानी की परम्पराओं को छोड़कर स्वयं प्रकाश में आ गयी, तथा यहाँ से इसके गद्य-साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास मिलने लगा, जिसमें कथा शृंखला सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध हुई क्योंकि उन्नीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध ही आधुनिक हिन्दी

कहानियो की पूर्व-पीठिका है" ।[1]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से पूर्व हिन्दी कहानी-साहित्य की जो पूर्वपीठिका विद्यमान है उसमे लोककथाओं और पौराणिक वृत्तों की प्रधानता है। लेखकों की भाव-प्रधान कल्पना की प्रमुखता उनकी रचनाओं को सर्वत्र आच्छन्न किये हुये है। भारतेन्दु से पूर्व उल्लेखनीय कृतियों के रूप मे तीन कथा-ग्रन्थ उपलब्ध है, जिनका कहानी के वर्तमान स्वरूप से ऐतिहासिक सम्बन्ध है :

१. लल्लूलाल का 'प्रेमसागर'—
 रचनाकाल- १८०३ ई० से १८०६ ई० तक।

२. सदल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान'—
 रचनाकाल १८०३ ई०

३. सैयद इंशा अल्ला खाँ की रचना—'रानी केतकी की कहानी'—
 रचनाकाल १८०० ई० से १८१० ई० के मध्य।

१. 'प्रेमसागर'[2] :—श्रीमद्भागवत् में वर्णित श्रीकृष्ण के चरित्र को आधार मान कर लल्लूलाल ने इस गद्यात्मक कथा-ग्रन्थ की रचना की है। श्रीकृष्ण के जन्म से आरम्भ कर कंस-वध का वर्णन करते हुये उनके तथा अर्जुन के मिलन तक की कथा इस ग्रन्थ में सम्मिलित की गयी है। पुराण रचना की शैली का अनुगमन कर लेखक ने वर्णन को रोचक और मौलिक बनाने का भी प्रयास किया है। परन्तु व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रयत्नशीलता का इसमें अभाव है। श्रीकृष्ण के लोकोत्तर चरित्र का निरूपण करते हुए उनके कार्य प्रभाव और महत्ता को पौराणिक शैली में निरूपित किया गया है। विभिन्न स्थितियों में व्यक्तित्व को देखने का अवसर उपलब्ध होते हुए भी लेखक का ध्यान उधर नहीं गया है। अन्य पात्रों के व्यक्तित्व का भी बाह्य चित्रण कहीं-कहीं सुरुचिपूर्णता के साथ हुआ है, परन्तु आभ्यंतरिक वृत्तियों के चित्रण को स्थान प्राप्त न हो सका है। यद्यपि कथावस्तु के आकर्षण और प्रवाह की ओर लेखक का ध्यान गया है, तथापि पात्रों के व्यक्तित्व के सन्तुलित विश्लेषण के अभाव ने इसे कहानी की सप्राणता तथा प्रभविष्णुता से वंचित कर दिया है। अनेक प्रसंगों और विभिन्न कथ्यों ने इसे कहानी से भिन्न बना दिया है।

---

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल—'हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास' पृ० ३४।

२. श्री लल्लूलाल—'प्रेमसागर' (सम्पादक पं० योगाधन मिश्र, फोर्ट विलियम कालेज, १८४२ ई०)।

२. नासिकेतोपाख्यान[1] : यह रचना संस्कृत में उपलब्ध 'नासिकेतोपाख्यान' पर आधारित है। कठोपनिषद में नासिकेत के साहस तथा अद्भुत कार्य का प्रेरणाप्रद वर्णन है। पुराणों में भी इस कथा को भिन्न रूपों में अंकित किया गया है। पंडित सदल मिश्र की इस कृति मे दो कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। एक कथा चन्द्रावती की है और दूसरी नासिकेत की। उपदेशात्मक पौराणिक कहानी के रूप में इसे गद्य-रचना का एक साहसयुक्त प्रयोग कहा जा सकता है। इस प्रयोग मे स्पष्टतः आदर्श तथा कर्त्तव्य-निष्ठा के सिद्धान्त का लोक-भाषा में प्रचार करने का उद्देश्य समन्वित है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से नासिकेत की कर्त्तव्यपरायणता, निष्ठा, धैर्य, जिज्ञासा प्रभृति उत्कृष्ट विशेषताओं को उपयुक्त स्थलों पर प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि स्वरूप, उद्देश्य और वर्णन शैली के आधार पर इस रचना को आरंभिक और अविकसित कहना ही समीचीन है तथापि पात्रों के चरित्र की विशेषताओं के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का प्रयास स्पष्टतः देखा जा सकता है।

३. रानी केतकी की कहानी[2] : इंशा अल्ला खां ने रानी केतकी की कहानी की रचना में अपनी कल्पना तथा मौलिक कथा-चिन्तन की शक्ति का परिचय दिया। यद्यपि उनका उद्देश्य था कि प्रचलित 'हिन्दी' भाषा मे वे एक लोक-रंजक और शिक्षाप्रद कथा की रचना कर सकें, जैसा कि उन्होंने लिखा है, 'हिन्दी छुट और किसी बोली की पुट न मिले और हिन्दवीपन भी न निकल और भाखापन भी न हो',[3] तथापि रचना-सौष्ठव एवं मौलिकता के कारण यह रचना से उपर्युक्त दोनों कृतियों की अपेक्षा अधिक पुष्ट और विकसित है।

हिन्दी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को कलात्मक तथा प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने की परम्परा की शृंखला में इंशा अल्ला खां की यह रचना एक प्रारम्भिक किन्तु सशक्त कड़ी है। उसके स्वरूप, उद्देश्य तथा महत्व का मूल्यांकन करते हुए डा० ब्रह्मदत्त शर्मा ने लिखा है :

'रानी केतकी की कहानी हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी है। इसमे कहानी की मौलिक परम्परा का पालन अधिक हुआ है। इसकी भाषा चमत्कारपूर्ण और वर्णनशैली आकर्षक है। तात्विक दृष्टि से इसमें वर्त्तमान कहानी के सब तत्व नही

---

१ श्री सदल मिश्र—"नासिकेतोपाख्यान", सम्पादक श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, १९२५।

२ सैयद इंशा अल्ला खाँ—'रानी केतकी की कहानी', परिमल प्रकाशन प्रतिष्ठान दिल्ली—१९५२।

३ वही, पृ० २०।

मिलते। इसकी प्रतिपादन शैली कृत्रिम है। इसकी कथावस्तु में जिन घटनाओं को ग्रहण किया गया है वे काल्पनिक, अमानुषिक तथा अतिमानुषिक हैं। इसका 'आरम्भ' तथा 'अन्त' दोनों कृत्रिम तथा प्रभाव-शून्य है। यह शिक्षात्मक कहानी है। इसकी रचना साहित्य के एक रूप 'कहानी' का विकास करने के दृष्टिकोण से न होकर, हिन्दवी भाषा का नमूना उपस्थित करने के विचार से हुई है। वस्तुतः इशा अल्ला खाँ ने कहानी कला का सूत्रपात ही किया। 'कहानी का कोई निश्चित रूप उनके द्वारा निर्धारित न हो सका'।[1]

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि यह रचना एक विशिष्ट प्रयोग है। आरंभिक रचना होने के कारण इसमें पूर्ण विकास, सुगठन और कलात्मकता के सम्यक् अभिनिवेश की आशा भी नहीं की जा सकती। व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टि-कोण से विचार करने पर यह लक्षित होता है कि कहानीकार ने नायक 'उदेभान' और नायिका रानी 'केतकी' के व्यक्तित्व को घनिष्ठ प्रेम के आधार पर प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया है। हिन्दी प्रेमाख्यानकों मे वर्णित प्रेमसाधना का प्रभाव इस रचना पर विद्यमान है। विरह की उत्कट स्थिति, व्याकुलता और प्रेमी की प्राप्ति के लिये साहसयुक्त प्रयास का वर्णन इस रचना के पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का आधार है। इसमें सत् और असत् पात्रों के पारस्परिक संघर्ष का वर्णन है। सत् पात्रों के व्यथापूर्ण जीवन और कठिनाइयों को रोमांचक स्थितियों के मध्य उपस्थित किया गया है। कहानी के अन्त में असत् पात्रों की पराजय और सत् पात्रों की विजय को अंकित किया गया है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण भारतीय सुखान्त की परम्परा के अनुकूल ही हुआ है।

कहानी में सबसे अधिक प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उदेभान और रानी केतकी का है। इन दोनों में प्रेम होता और क्रमशः इतना दृढ़ और अडिग हो जाता है कि अनेक-असह्य बाधायें भी उसे कम नहीं कर पातीं। नायिका के माता और पिता इन प्रेमो-पासक पात्रों के मार्ग में बाधक बन जाते हैं। विरह की उत्कृष्टता से आकुल होकर नायक 'उदेभान' नायिका 'केतकी' को पत्र लिखता और यह विचार उपस्थित करता है कि वे दोनों किसी अन्य देश को भाग चलें। कुल की मर्यादा और माता-पिता के सम्मान को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानने वाली भारतीय नारी के व्यक्तित्व का परिचय नायिका के उत्तर में सन्निहित है। अपने प्रेमी को उत्तर देते हुए उसने लिखा, "पर बात यह भाग चलने की अच्छी नहीं। इसमें एक बाप-दादे को चिट लग जाती

---

१ डा० ब्रह्मदत्त शर्मा—'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन', पृ० ८१।

है, और जब तक माँ-बाप, जैसा कुछ होता चला आता है, उसी डौल से, बेटी-बेटी को किसी पर पटक न मारें और सिर से किसी के चपेक न दें, तब तक एक जीव तो क्या, जो करोड़ जी जाते रहें, तो कोई बात हमें रुचती नहीं।[1]

कहानीकार ने स्थिति-अंकन की कुशलता द्वारा नायिका के व्यक्तित्व का विकास आकर्षक ढंग से अंकित किया है। जब नायिका को यह तथ्य ज्ञात होता है कि उसके पिता ने उसके प्रेमी को हिरन बना दिया है और वह जंगलों में भटक रहा है तो उसमें तीव्र प्रतिक्रिया का आवेग उदित होता है। वह लोक-मर्यादा, पारिवारिक-प्रतिष्ठा और माता-पिता के विरोध को तनिक भी महत्व न देकर अपने प्रेमी को ढूंढने निकल जाती है। इस प्रकार उसके व्यक्तित्व में मर्यादा-पालन और प्रेम-निर्वाह की प्रवृत्तियों का संघर्ष अंकित किया गया है। इस प्रारम्भिक रचना में भी व्यक्तित्व-विश्लेषण का यह साहस लेखक की रचना-शक्ति का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त तीनों रचनाओं के प्रकाश में आने के पश्चात् कई वर्षों तक हिन्दी कथा-साहित्य में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। काव्य की प्रधानता ने गद्य-साहित्य के विकास में कई दशकों तक निरन्तर व्यवधान प्रस्तुत किया। साथ ही भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति ने भी भारतीय साहित्य के विकास में बाधा पहुँचायी। हिन्दी का गद्य-साहित्य भी उपेक्षित पड़ा रहा। सन् अठारह सौ सत्तावन के प्रथम स्वातंत्र्य आन्दोलन के पश्चात् कुछ देशभक्त और कर्मठ साहित्यकारों ने गद्य-रचना के क्षेत्र में साहसपूर्ण प्रयास किया। जिन साहित्यकारों ने कहानी-रचना के महत्व को समझकर उसे विकसित किया और सफलता से उसका उपयोग किया उनमें राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सन् १८५२ से १८६२ के मध्य उन्होंने कुछ उपदेशप्रद कहानियों की रचना की। उनकी कहानियों में 'राजा भोज का सपना', 'वीरसिंह का वृत्तान्त', 'आलसियों को कोड़ा', 'सैंडफोर्ड और मरटन' तथा 'वामा मन-रंजन' प्रसिद्ध और पठनीय हैं। सन् १८७६ ई० में प्रकाशित लड़कों की कहानी'[2] शीर्षक संग्रह में बालोपयोगी शिक्षाप्रद कहानियाँ संकलित हैं। आदर्श, नीति, सिद्धान्त एवं लोक-मर्यादा की रक्षा करने वाले पात्रों को इन कहानियों का नायक बनाया गया है और उन्हीं के माध्यम से लड़कों को नैतिक शिक्षाएं प्रदान की गयी हैं। काल्पनिक घटनाओं के आधार पर इन कहानियों की रचना हुई है।

---

१ इंशा अल्ला खाँ—"रानी केतकी की कहानी, परिमल प्रतिष्ठान, दिल्ली, १९५२ पृ० २८।

२ 'लड़कों की कहानी', मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, १८७६ ई०।

सर्वत्र उपदेशात्मकता की प्रधानता विद्यमान है। लेखक के अंगुलि-निर्देश पर ही पात्रों के व्यक्तित्व का सचालन हुआ है।

राजा साहब की उपर्युक्त रचनाओं में घटनाओं के चमत्कार को अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। कौतूहल-वृद्धि का प्रयास भी इन कहानियों में किया गया है। परन्तु पात्रों के व्यक्तित्व का सजीव और सशक्त अंकन इनमें नहीं हो पाया है। पात्रों के सवाद और कार्य भी उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने मे सहायक सिद्ध नहीं होते। प्राचीन परम्परा का अनुगमन करते हुए राजा साहब ने कहानियों को विविध प्रसगों द्वारा विस्तृत बनाने की चेष्टा की है। कहानी के अन्त में उपदेश की प्रतिष्ठा तथा आशीर्वाद के वर्णन की प्रवृत्ति कतिपय रचनाओं में विद्यमान है। 'राजा भोज का सपना' एक नवीन शैली का परिचायक अवश्य है और आत्मविश्लेषण का समुचित अवसर भी पात्रों को प्राप्त होता है, परन्तु राजा साहब की उपदेशात्मक-प्रवृत्ति ने पात्रों के व्यक्तित्व को निर्बल और पराश्रित बना दिया है।

भारतेन्दु-युग और कहानी-साहित्य

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की बहुमुखी प्रतिभा ने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के स्वतन्त्र विकास में अभूतपूर्व सहायता प्रदान कर गद्य के विस्तार तथा प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया। विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों ने तत्कालीन भारतीय समाज को प्रभावित किया। साहित्य-रचना के क्षेत्र में भी इन परिस्थितियों के व्यापक प्रभाव ने नवीन विचारों की अभिव्यक्ति और नवीन विधाओं के प्रयोग की ओर साहित्यकारों को अग्रसरित होने की प्रेरणा दी। कहानी-साहित्य के विकास और विस्तार पर भी राष्ट्रीय स्थितियों का प्रभाव पड़ा, जो विभिन्न प्रकार के पात्रों के समन्वय के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ। प्रस्तुत प्रसंग में इन परिस्थितियों पर विचार करना आवश्यक और समीचीन है।

समाज के विविध क्षेत्रों मे व्याप्त कुरीतियो, बाह्य-आडम्बरों, कुसंस्कारों, घातक कुप्रथाओं और अनर्गल परम्पराओं का खण्डन और विरोध 'आर्यसमाज' जैसी सशक्त संस्था ने आरम्भ किया। धर्म, नीति तथा सदाचार के तर्क-सम्मत ज्ञान को प्रश्रय प्राप्त होने लगा। इस सत्प्रयत्न का प्रयास इस युग के साहित्य पर पड़ना आवश्यक था। अमेरिका में थियोसोफिकल सोसायटी के प्रवर्तक कर्नल अल्काट तथा मैडम ब्लैटवस्की ने भारत में उदारतावादी धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया। श्रीमती एनीबीसेन्ट ने भारत में इस मत का व्यापक प्रचार किया। पाश्चात्य-दर्शन के स्वतंत्र, उदार तथा लोककल्याणपरक सिद्धान्तों को आधार मान कर इस मत द्वारा धार्मिक वैषम्य तथा सामाजिक भेदभाव को दूर करने का प्रयास किया जाने लगा। राष्ट्रीय जागरण

तथा समाज के पुनरुत्थान में भारतीय जनता को इससे प्रेरणा प्राप्त हुई। इसी युग में भारतीय वेदान्त को व्यापक-प्रसार और लोकहितकारी रूप प्रदान करने वाले महान् भारतीय विचारकों जैसे, राजा राममोहन राय, परमहंस रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ ने अपने आजीवन अध्यात्म-साधना-व्रत द्वारा समाज में धर्म के विशुद्ध रूप की प्रतिष्ठा की। साहित्य-जगत् पर इन विचारों का व्यापक और गम्भीर प्रभाव पड़ा। विचार, चिन्तन और लेखन की नयी दिशाएँ साहित्यकारों को उपलब्ध हुईं।

पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव

भारत के राजनीतिक क्षितिज पर सन् १८५७ ई० में प्रथम स्वातंत्र्य आन्दोलन द्वारा एक नये प्रकाश का अवतरण हुआ और जनजीवन ने विचार तथा आत्म-परीक्षा का अवसर प्राप्त किया। स्वातंत्र्य आन्दोलन का दमन कर अंग्रेज-शासकों ने शान्ति की साँस ली, परन्तु राष्ट्रीय जाग्रति और अपनी पराधीन स्थिति के चिन्तन की प्रवृत्ति दिन-दिन भारतीय-जनता में — विशेष रूप से शिक्षित वर्ग में—स्पष्ट और प्रबल होती गयी। भारतीय प्रबुद्ध एवं सुशिक्षित समाज ने अनुभव किया कि अंग्रेज शासकों द्वारा प्रदत्त सुशासन, सुविधाएँ, सुरक्षा तथा वैज्ञानिक साधनों के पीछे उनकी कुटिल नीति का घातक स्वरूप निहित है। सुविधाओं और व्यवस्था के लिये उन्हें स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय चरित्र और जातिगत प्रतिष्ठा की बहुमूल्य सम्पदा का त्याग करना पड़ा।[1] देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक एकता के विस्तार में रेल, तार, डाक आदि की उन्नत व्यवस्था ने महत्वपूर्ण योग प्रदान किया। पाश्चात्य जगत के अनेक प्रमुख देशों की राजनीति, समाज-व्यवस्था, साहित्य और संस्कृति से भारतीय सुशिक्षित वर्ग का सम्पर्क बढ़ने लगा। इन देशों में इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रान्स, जर्मनी, रूस और इटली प्रमुख थे। अमेरिकी स्वातन्त्र्य आन्दोलन ने भी भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। पाश्चात्य जगत की राज्य-क्रांतियों और

1. "The strength of the British Government enables it to put down every rebellion, to repel every foreign invasion and to give its subjects a degree of protection which those of no Native Power enjoy. Its laws and institutions also afford them security from domestic oppression unknown in Native States, but these advantages are dearly bought. They are purchased by the sacrifice of independence, of national character and whatever renders a people respectable." (Munro).

—Griffiths—**"The British Impact on India"**(Pub. Macdonald, London, 1952), p. 231-32.

औद्योगिक परिवर्तन ने राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण भारतीय विचारकों और नेताओं को देश की यथार्थ स्थिति का परिचय प्राप्त करने और उसके सुधार के लिये सत्प्रयत्न करने का प्रोत्साहन प्रदान किया।

अंग्रेजों के प्रति सन् १८५७ ई० में भारतीय जननायकों ने जो प्रचण्ड विरोध और क्रोध प्रदर्शित किया, उसके प्रभाव को आकर्षक भाषा, मोहक-सुधार, अनुकूल व्यवस्था और कूटनीतिक प्रचार द्वारा समाप्त करने की चेष्टा अंग्रेज शासकों ने की। परन्तु अन्तर में सुलगती विरोधाग्नि को वे किसी भी प्रयत्न से पूर्णतः और समूल नष्ट न कर सके। उनकी कूटनीतिक चालों का पर्दाफाश होने लगा और उनके प्रति घृणा तथा अविश्वास का मनोभाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।[1] भारतीय जनता अपने विरोध को व्यक्त करने का साधन और समुचित मार्ग प्राप्त करने के लिये व्यग्र हो उठी। प्रतापी अंग्रेज महाप्रभुओं के शिकन्जे जितने ही कड़े और दमनपूर्ण होते गये, उतने ही वेग से असन्तोष और विरोध की भावना बढ़ती गयी। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से लोगों में अपनी वास्तविक स्थिति को समझने तथा स्वतन्त्रता की ओर बढ़ने की भावना जाग्रत हुई। विश्व के अन्य देशों की प्रगति के ज्ञान ने भारतीय शिक्षित वर्ग के मन और मस्तिष्क से अंग्रेजो की सर्वप्रमुखता तथा एकाधिकार के व्यामोह को दूर कर दिया। भारतवर्ष में इडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना ने राष्ट्रीय समस्याओं की ओर जनता तथा शिक्षित वर्ग का ध्यान आकर्षित किया।

सन् १८८३ ई० में श्री ए० ओ० ह्यूम ने भारतीय जनता के हितों की रक्षा तथा राष्ट्रीय जाग्रति के पुनीत विचारों से प्रेरित होकर एक प्रभावपूर्ण वक्तव्य प्रकाशित किया[2]। उनके शब्दों में प्रेरणा और उत्साह की उद्दाम धारा प्रवाहित हो रही थी, जिससे देश के विभिन्न प्रदेशों के शीर्षस्थ नेताओं को एकत्र होकर कार्य करने का अवसर

---

1. 'The mutinies have produced too much hatred and ill-feeling between the two races to render any mere change of name of the rulers as a remedy for the evils which affect India, .. many years must elapse are the evil passions excited by these disturbances expire, 'perhaps confidence will never be restored' —Russel—'**My Diary in India**', ii, P. 259.

2 'Whether in the individual or the nation, all vital progress must spring from within, and it is to you, her most cultured and enlightened minds, her most favoured sons, that your country must look for the initiative. In vain many aliens, like myself, love India and her children ..but they lack the essential nationality, and the real work must ever be done by the people of the country themsel-

प्राप्त हुआ। इस सत्प्रयत्न के परिणामस्वरूप 'इंडियन नेशनल यूनियन' की स्थापना सन् १८७४ ई० में हुई। सन् १८७५ ई० में इसके नाम में परिवर्तन कर इसे 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' की संज्ञा प्रदान की गयी। श्री ए० ओ० ह्यूम भारत की सामाजिक परम्पराओं में सुधार के आकांक्षी थे। राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करना भी वे आवश्यक समझते थे। परन्तु धीरे-धीरे राजनैतिक सुधारों और आन्दोलनों ने कांग्रेस के कार्यक्रमों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। प्रारम्भ में अंग्रेज-शासकों के द्वारा इस संस्था को संरक्षण और प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा, परन्तु ज्यों-ज्यों शासन-व्यवस्था की आलोचना का स्वर तीव्रतर होता गया, त्यों-त्यों अंग्रेज शासक-वर्ग इसका विरोधी होता गया। भाषणों और प्रस्तावों से सन्तुष्ट न होकर ठोस क्रियात्मक आन्दोलन और कार्यक्रम की ओर कांग्रेस का झुकाव बढ़ता ही गया। इसी समय यूरोप के कतिपय महान् विचारकों जैसे हाजसन और मैक्समूलर आदि ने भारतीय संस्कृति, साहित्य और विचार-पद्धति की उत्कृष्टता को न केवल स्वीकार किया वरन् उसके महत्व का प्रतिपादन भी समर्थ शैली में किया। भारत के चिन्तनशील लेखकों, समाज-सुधारकों और देशभक्तों ने अपने पूर्वजों के ज्ञान साधना और विचार-पद्धति को वैज्ञानिक ढंग से समझना और उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करना आवश्यक माना[1]। तत्कालीन साहित्य पर इन विचारों और प्रतिक्रियाओं का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

उपर्युक्त परिस्थितियों और परिवर्तनों से भारतेन्दु-युग के लेखक, कवि, नाटककार तथा कथाकार प्रभावित हुए। नाटकों और निबन्धों के माध्यम से पौराणिकवृत्तों तथा ऐतिहासिक आख्यानों के आधार पर प्रेरणाप्रद कथानक प्रस्तुत किये गये। कहानी-कला के विकास की ओर इस युग के लेखकों तथा स्वयं भारतेन्दु का ध्यान इसलिए आकृष्ट न हो सका कि अभी भारतीय वाङ्मय में कहानी के स्वतंत्र रूप

---

ves... As I said before, you are the salt of the land And if amongst even you, the elite, fifty men cannot be found with sufficient power of self-sacrifice sufficient love for and price in their country, sufficient genuine and unselfish heart felt patriotism to take the initiative, and if needs be, devote the rest of their lives to the cause—then there is no hope for India'

—Griffiths—**'The British Impact on India'**, P, 279.

1 'The Indian work is, first of all, the revival, strengthening and uplifting of the ancient religions. This has brought with it a new self-respect, a pride in the past, a belief in the future.'

—Majumdar—**'An Anvanced History of India'** (Mrs. Ann e Besant) P 886

की—वर्तमान कहानी-कला के दृष्टिकोण से—प्रतिष्ठा न हो सकी थी। यद्यपि प्रहसन एव अभिनय प्रधान रचनाएँ उन सभी समस्याओं से सम्बद्ध थी, जो हिन्दी कहानी-साहित्य के आरम्भिक युग में वर्ण्यवस्तु के रूप में ग्रहण की गयीं, तथापि कहानी के स्वतत्र रूप के विकास की कोई उल्लेखनीय चेष्टा इस युग में दृष्टिगत नहीं होती। स्वय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहानी को साहित्यिक विधा की मान्यता देकर उसके स्वतत्र उन्नयन की आवश्यकता का अनुभव नहीं किया। इतना अवश्य है कि कहानी के भावी विकास की पृष्ठभूमि का निर्माण उनकी रचनाओं तथा उनकी प्रेरणा से प्रकाश में आने वाली अन्य साहित्यकारों की रचनाओं द्वारा अविच्छिन्न रूप से होता रहा। इस तथ्य को व्यक्त करते हुए डा० ब्रह्मदत्त शर्मा ने लिखा है :

'इस काल के रचनाकार अपने सत्प्रयास द्वारा ऐसी परिस्थियाँ उत्पन्न कर रहे थे जिनके परिणामस्वरूप आगे चलकर हिन्दी की आधुनिक 'कहानी' का जन्म हुआ। कहानी के सब तत्वों के विकास की ओर कहानीकारों का ध्यान अभी नही गया था। हाँ, इस दिशा में उसकी प्राणशक्ति के संचय का प्रयत्न अवश्य हो रहा था। अब साहित्य का एक ऐसा रूप सामने आता जा रहा था जो प्राचीन कथा-आख्यायिका तथा नाटक से भिन्न था तथा जो शीघ्र ही 'उपन्यास' से भी स्वतंत्र हो गया'।[1]

तात्पर्य यह है कि कहानी के आधारभूत तत्वों को सुसगठित रूप मे प्रकाश में आने का अवसर इस युग में प्राप्त न हो सका। पात्रों के सजीव व्यक्तित्व की अवतारणा और उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर लेखकों का ध्यान ही नही गया। समाज-सुधार, व्यंग्य-विनोद और मनोरंजन के उद्देश्य से जिन पात्रों को कथावस्तु में स्थान प्राप्त होता था वे लेखक के सकेत पर ही कार्य करते थे, उनके स्वतंत्र अस्तित्व का कोई प्रश्न ही नहीं था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कहानियाँ और उनके पात्र

भारतेन्दु की कतिपय रचनाएं कहानी की प्रकृति के निकट है और स्पष्टत: कहानी की संज्ञा न प्राप्त करके भी वे हिन्दी कहानी के आरम्भिक प्रयास का महत्व प्राप्त करने योग्य हैं। 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जगबीती' तथा 'एक अद्भुत स्वप्न' शीर्षक रचनाओं में कथा-तत्व विद्यमान है तथा पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं को व्यंजित करने का प्रयास किया गया है। भारतेन्दु ने अपने अनुभवों को कथा-सूत्र मे ग्रथित कर उसे कहानी में प्राप्य सौन्दर्य के साथ 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' में प्रस्तुत किया है। इस रचना में परिस्थितियों के अंकन के साथ ही मनोगत

1. डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा—'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन' पृ० ८९।

भावों का वर्णन व्यक्तित्व का बाह्य परिचय देने के साथ चारित्रिक प्रवृत्तियों का संकेत भी देता है। निम्न उदाहरण द्रष्टव्य है :

'सम्वत् १९३० में मैं जब तेईस बरस का था, एक दिन खिड़की पर बैठा था, वसन्त ऋतु, हवा ठण्डी चलती थी, साँझ फूली हुई, आकाश में एक ओर चन्द्रमा दूसरी ओर सूर्य, पर दोनो लाल, अजब समा बँधा हुआ, कसेरू, गंडेरी और फूल बेचनेवाले सडक पर पुकार रहे थे। मैं भी जवानी की उमंगों में चूर, जमाने के ऊंच-नीच से बेखबर अपने रसिकाई के नशे में मस्त दुनिया के मुफ्तखोरे सिफारशियों से घिरा हुआ अपनी तारीफ सुन रहा था। पर इस छोटी अवस्था में भी प्रेम भलीभाँति पहिचानता था'।[1]

'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' में भारतेन्दु ने व्यंग्य और वाग्विदग्धता के अपूर्व संयोजन की कुशलता का परिचय दिया है। शिक्षा-व्यवस्था और उनसे समन्वित प्रबन्धकों तथा अध्यापकों की स्वार्थलिप्सा का पर्दाफाश करते हुए उन्होंने एक काल्पनिक कथा का मनोरंजक वर्णन किया है। पात्रों का नामकरण उनकी चारित्रिक विशेषताओं को लक्ष्य बना कर हुआ है। 'प्राणान्तक प्रसाद वैद्य', 'लुप्तलोचन ज्योतिषाभरक्ष', 'मुग्धमणि' नाम ही पात्रों के व्यक्तित्व का सांकेतिक परिचय दे देते हैं। यद्यपि कहानी का पुष्ट रूप इस रचना में उपलब्ध नहीं होता, तथापि पात्रों के चारित्रिक वैशिष्टय् के प्रकाश में उनके व्यक्तित्व की व्यंजना का प्रयास भारतेन्दु की मौलिक रचना-शक्ति तथा चिन्तन-प्रवृत्ति का प्रमाण प्रस्तुत करता है। उनकी अन्य कथा-प्रधान रचनाएँ जैसे 'हमीर-हठ' 'राजसिंह', 'मदालसा' और 'सीलवती' में भी पात्रो के चरित्रगत विशेषताओं को विभिन्न प्रसंगों मे कुशलता से व्यक्त किया गया है। यह सत्य है कि उनमें सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का अभाव है तथा पात्रों के व्यक्तित्व के सन्तुलित विश्लेषण की ओर लेखक का ध्यान नहीं गया है तथापि आरम्भिक प्रयास के रूप में इनका अस्तित्व इस दृष्टिकोण से विचारणीय है कि इनके द्वारा व्यक्तित्व निरूपण एवं विश्लेषण की परम्परा का समारम्भ हुआ।

भारतेन्दु युग के अन्य कहानीकार

भारतेन्दु की प्रेरणा से हिन्दी गद्य साहित्य को विकसित और प्रसृत करने का सत्प्रयत्न करने वाले कुछ विशिष्ट लेखक १९वीं शती के अन्तिम चरण मे कहानी-रचना की ओर प्रवृत्त हुए। पंडित गौरीदत्त शर्मा ने देवनागरी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से उपदेश-प्रधान कहानियों की रचना की। इनकी दो कहानियाँ पात्रगत विशेषताओं और व्यक्तित्व-निरूपण के दृष्टिकोण से विशेष उल्लेखनीय है। प्रथम 'कहानी

---

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती'।

टका कमानी"[1] और द्वितीय 'देवरानी और जेठानी की कहानी।'[2] स्त्रियों की धैर्य-शीलता, कर्मठता और दृढ़-इच्छा-शक्ति का वर्णन करते हुए उनके चरित्र का आकर्षक विवेचन 'कहानी टका कमानी' में किया गया है। स्त्रियोचित भावों का उपयुक्त वर्णन कई प्रसंगों में कुशलता के साथ किया गया है। नारी-व्यक्तित्व के विश्लेषण में साहसिकता को स्थान देकर उसके सम्यक् निर्वाह की चेष्टा करना लेखक के साहसपूर्ण कर्तृत्व का परिचायक है। 'देवरानी जेठानी की कहानी' में शिक्षा के महत्व को स्थापित करते हुए लेखक ने नारी व्यक्तित्व का निरूपण परस्पर विरोधी तत्वों द्वारा किया है। शिक्षिता नारी की कुशलता, धैर्य, कर्मठता और सहनशीलता को उसके व्यक्तित्व-रचना का आधार बनाया गया है। दूसरी ओर शिक्षा-विहीना नारी की मूढ़ता, अज्ञानता और कुरुचि को उसके असन्तुलित व्यक्तित्व के परिचालक तत्वों के रूप में अंकित किया गया है। कहानी-रचना का लक्ष्य उपदेश और नीति के प्रचार द्वारा स्त्री-जीवन को सुखी बनाने का मार्ग दिखाना है। लेखक ने इसका संकेत स्वयं इस प्रकार किया है :

'जो स्त्रियाँ इसको पढेंगी या ध्यान देकर सुनेंगी वह सुशील होकर अपनी सन्तान का पालन-पोषण अच्छी रीति से करेंगी और कुरीतियों से बचकर गृहस्थी के प्रबन्ध में उनकी रुचि होगी, पति की सेवा और विद्या की तरफ उनका स्नेह बढ़ेगा और ये ही उनके सुखभोगों का कारण होगा'।[3]

इस उपदेशात्मकता ने पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व को सशक्त तथा स्वयं गतिशील होने का अवसर ही नहीं दिया है।

प्रेम और रोमांच को केन्द्रीय वस्तु मान कर उर्दू में किस्सा लिखने की शैली को इस युग के कुछ कुशल लेखकों ने हिन्दी कहानी में अवतरित करने की चेष्टा की। इन रचनाओं में प्रेम की तड़प, साहसपूर्ण अद्भुत कार्य और अन्त में प्रेमी-प्रेमिका के मिलन का वर्णन ही प्रमुख है। सामाजिक आदर्शों को लेकर जो 'किस्से' लिखे गये हैं उनमें पात्रों का व्यक्तित्व प्रेमपरक आख्यानों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और प्रभावपूर्ण है। मुंशी शादीलाल ने 'किस्सा शाहरूम' शीर्षक पद्यबद्ध रचना में प्रेमी और प्रेमिका के चरित्र तथा व्यक्तित्व का अंकन किया है, जो फारसी की प्रेमाख्यानक परम्परागत शैली का अनुकरण मात्र है। 'कुलीन कन्या', 'किस्सा गुलाब-केवड़ा', 'ठग-लीला', 'किस्सा मर्द औरत का' शीर्षक रचनाएँ प्रेम, सदाचार, नीति और स्त्री-पुरुष

---

१. 'कहानी टका कमानी' विद्यादर्पण यन्त्रालय, मेरठ (देवनागरी गजट मेरठ, १८८८ ई०।

२. 'देवरानी जेठानी की कहानी', हरदेव सहाय ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ।

३. पं० गौरीदत्त शर्मा 'देवरानी जेठानी की कहानी' पृ० २८

की स्वभावसिद्ध प्रवृत्तियों के विवेचन पर आधारित है। इनमें पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की ओर लेखकों का ध्यान नहीं गया है। काल्पनिक प्रसंगों के आधार पर विचित्र घटनाओं का समावेश भी इनमें हुआ है। इन रचनाओं का इतना ही महत्व है कि कथा-साहित्य की ओर सामान्य जनता का ध्यान इनके द्वारा आकृष्ट हुआ। कहानी-रचना के स्वतन्त्र विकास में इन प्रेमपरक तथा उपदेश-प्रधान रचनाओं का महत्वपूर्ण सहयोग उपयोगी प्रयोगों के रूप में ही है।

भारतेन्दु-युग की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विपुल सामग्री में ऐसी रचनायें उपलब्ध हैं, जिनसे कहानी-रचना की प्रेरणा प्राप्त हुई। पात्रों के व्यक्तित्व को धीरे-धीरे उभरने का अवसर प्राप्त होने लगा। यद्यपि उपदेशात्मकता, कथानक की विचित्रता तथा मनोरंजन की प्रधानता ने व्यक्तित्व-विश्लेषण का मार्ग अवरुद्ध रखा, तथापि जाने अनजाने पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व की महत्ता इन व्यवधानों को तोड़ कर ऊपर आने की चेष्टा करने लगी। व्यक्तित्व अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग प्राप्त करने लगा। जिन प्रमुख पत्रों में भावोत्तेजक काल्पनिक प्रसंगों, संक्षिप्त व्यंग्यात्मक कथानकों, स्फुटचित्रों, हास्यचित्रों और व्यंग्य-रूपकों का प्रकाशन हुआ वे हैं, 'कविवचन-सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'हिन्दी-प्रदीप'' 'ब्राह्मण', 'सारसुधा-निधि', 'क्षत्रिय पत्रिका' और 'भारतमित्र'। इनमें प्रकाशित उपर्युक्त प्रकार की सामग्री में समाज की विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर विचार, व्यंग्य, सुधार एवं समाधान के संकेत तथा उत्तेजनात्मक निष्कर्ष विद्यमान हैं। किसी व्यक्ति को लक्ष्य बनाकर जिन रचनाओं में प्रसंग-विशेष की कल्पना की गयी है वहाँ उसके व्यक्तित्व के एक अंग को पूरी संवेदना के साथ उपस्थित करने की चेष्टा भी की गयी है। कहीं कहीं प्रभाव की एक अन्विति पात्र विशेष के व्यक्तित्व को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना देती है। कहानी के इन अविकसित प्रयोग-प्रधान रूपों में भी यदा-कदा व्यक्तित्व-विश्लेषण का उत्कृष्ट रूप देखने में आता है। कहानी का कथातत्व इनमें बहुत क्षीण है। व्यक्ति-विशेष को लक्ष्य बनाकर छोटे-छोटे काल्पनिक कथानक प्रकाशित किये गये, जिनमें व्यंग्य तथा विनोद की प्रधानता थी। व्यक्ति के चरित्र का एक अंश, उसके व्यक्तित्व की एक झलक इन व्यंग्य-रूपकों में उपलब्ध है। 'हिन्दी-प्रदीप' नामक पत्र में 'चीज़' और 'गपाष्टक' के नाम से संक्षिप्त तीव्र व्यंजनात्मक भावचित्र प्रस्तुत किये गये। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इनमें व्यंग्यात्मक-संकेत की प्रधानता है और किसी व्यवहारगत विकलांगता को लक्ष्य कर व्यक्तित्व के असन्तुलित रूप का चित्रण किया गया है।

हिन्दी कहानी के आरंभिक युग की उपर्युक्त प्रवृत्तियों पर विचार करते हुए हमें ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से कुछ उपयोगी निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। जिनके

आधार पर हिन्दी कहानी में व्यक्तित्व-विश्लेषण के विकास की परम्परा का अध्ययन समीचीन है। वे निष्कर्ष संक्षेप में इस प्रकार है—

(१) भारतेन्दु युग तक कहानी का स्वतंत्र अस्तित्व दृष्टिगत नहीं होता। मनोरंजन के उद्देश्य से प्रेरित होकर रोचक आख्यान प्राचीन शैली में लिखे गये। इन रचनाओं में काव्यात्मकता, विशद-चित्रण तथा अनुप्रासमयी शब्दावली का बाहुल्य है। जादू, अलौकिक, साहस और रोमांचक प्रेम को ही कहानी का वर्ण्य-विषय माना गया है। पात्रों के व्यक्तित्व की सजीव अवतारणा और सशक्त निरूपण की ओर लेखकों का ध्यान नहीं गया।

(२) उपदेशात्मक कहानियों की रचना पौराणिक कथाओं और नीति-परक कहानियों के आधार पर हुई। इनमें पात्रों के व्यक्तित्व को कहानी के लक्ष्य के अनुकूल बनाया गया है। इस प्रयास के कारण पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व निर्जीव तथा कृत्रिम प्रतीत होते हैं। कहानी के अन्त में उपदेश का स्पष्ट कथन पात्रों की स्वतंत्र सत्ता के लिए बहुत घातक सिद्ध होता है। कहानीकार पात्रों को निर्देश देने के लिए बार-बार नीति और आदर्श का विवेचन करता है।

(३) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने 'स्वप्न' नामक जिस शैली का प्रयोग किया, वह कहानी की प्रवृत्ति के अधिक निकट है। परन्तु इनमें कथा तत्व का समुचित नियोजन तथा पात्रों के व्यक्तित्व का सन्तुलित विश्लेषण नहीं पाया जाता। इनमें पात्रों के दम्भ तथा पाखण्ड की वृत्तियों का मनोयोगपूर्वक वर्णन किया गया है तथा व्यंग्य और विनोद को व्यक्तित्व-निरूपण का साधन बनाया गया है। इनमें वर्णित व्यंग्य-प्रधान विषय-वस्तु से प्रेरणा प्राप्त कर आगे चलकर हिन्दी कहानीकारों ने व्यंग्य-प्रधान कहानियों की रचना की।

(४) इस युग में लोककथाओं और ऐतिहासिक कथानकों को भी कहानियों के रूप में लिखने का प्रयास किया गया। लोक-कथाओं में उपदेश और आदर्श की प्रधानता है और रचनाकारों ने अपने उद्देश्य का वर्णन आरम्भ तथा अन्त में कर दिया है। वार्ता अथवा 'वात' के नाम से ऐतिहासिक कथानक प्रस्तुत किये गये हैं, जिनमें इतिहास-प्रसिद्ध पात्रों के व्यक्तित्व को मनोरंजन तथा उपदेश के दृष्टिकोण से लिया किया गया है। जटमल रचित 'गोरा बादल दी बात' शीर्षक रचना इसी शैली का एक विशिष्ट उदाहरण है। पात्रों के चित्रण में उनकी कार्य-क्षमता तथा दृढ़ निश्चय का आन्तरिक प्रभाव भी कुशलता के साथ संयुक्त किया गया है प्रेम के विविध रूपों के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व के करुण-कोमल स्वरूप के साथ ही पौरुष-कठोर कर्त्तव्य-निष्ठ पक्ष का भी भावपूर्ण चित्रण किया गया है। इस प्रकार लोक-गाथाओं और

ऐतिहासिक वृत्तों पर आधारित कहानियों में व्यक्तित्व के बाह्य और आन्तरिक पक्ष का ऐसा विश्लेषण उपलब्ध होता है जो पात्रों को अन्य प्रकार की रचनाओं की अपेक्षा सप्राणता तथा प्रभविष्णुता प्रदान करता है।

(५) फारसी कथाओं से प्रभावित होकर कतिपय कल्पनाशील लेखकों ने प्रेमपरक कहानियों की रचना की। कहानी के क्षेत्र में एक नया प्रयोग 'किस्सा' के रूप में किया गया है। प्रेमपरक कथा के आधार पर ही किसी समाजिक या नैतिक समस्या को उनमें उपस्थित किया जाता था और मुख्य कथा के साथ कई अन्तंकथाओं का ताना-बाना बुनकर एक मनोरंजक ढाचा खड़ा किया जाता था। इन लम्बी कहानियों में मनोरंजन और विचित्रता को आवश्यक रूप से सम्मिलत कर लिया जाता था। उदाहरण के रूप 'किस्सा चार दरवेश', किस्सा सौदागर बच्चा', 'किस्सा निहाल दे' आदि पर विचार किया जा सकता है। इन रचनाओं में भावुक पात्रों के व्यक्तित्व का कल्पनापूर्ण और कृत्रिम रूप अंकित किया गया है। लेखक के संकेतानुसार पात्र एक से एक विचित्र कार्य सम्पादित करने में सक्षम हैं, जो यथार्थतः उनके दुर्बल और निष्क्रिय व्यक्तित्व का प्रमाण है। यह कहना उपयुक्त होगा कि इन रचनाओं के पात्र अपने सृजनकर्ता अर्थात लेखकों के हाथ की कठपुतली मात्र हैं, भले ही वे आकाश में उड़ने, समुद्र तैरने, दैत्य को पकड़ने और अमूल्य रत्न लाने के अभिनय में सफल चित्रित किये गये हों।

उपर्युक्त निष्कर्ष यह संकेत देते है कि १६वी शताब्दी के अन्त तक हिन्दी-कहानी का रूप निश्चित और स्वतंत्र-सत्तायुक्त नहीं बन पाया था। विशेष रूप से पात्रो के व्यक्तित्व के सफल अंकन, तथ्यपूर्ण निरूपण तथा समुचित विश्लेषण की ओर लेखक अधिकांशतः ध्यान न दे सके। मनोरंजन, उपदेश, आकस्मिक सयोग और विचित्र वर्णनों की भरमार ने आकस्मिक हिन्दी कहानियों के सहज रूप को विकसित न होने दिया। पात्रों के सक्षम व्यक्तित्व को प्रकाश में आने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। कुछ सामाजिक कहानियों और व्यंग्य-चित्रो में कलात्मक ढंग से व्यक्तित्व-विश्लेषण अपवाद के रूप में प्राप्त होता है। यद्यपि समाज, धर्म, नीति एवं राष्ट्रीय आदर्शों के विविध चित्र प्रकाश में आये, कल्पना और भावुकता की अभिव्यंजना का व्यापक प्रयास भी हुआ, तथापि कहानी का प्रमुख आधारभूत तत्व अर्थात पात्रों का व्यक्तित्व न तो उचित विश्लेषण प्राप्त कर सका और न उसकी समग्र विशेषताएँ प्रकाश में आ सकी।

५

हिन्दी कहानियों का प्रथम युग—प्रयोगकाल
(सन् १९०१ से सन् १९१० तक)

व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप

बीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक हिन्दी कहानियों के क्षेत्र में विभिन्न प्रयोगों एवं प्रयत्नों का युग कहा जा सकता है। इसमें हिन्दी की दो विशिष्ट साहित्यिक पत्रिकाओं—'सरस्वती' तथा 'सुदर्शन'—द्वारा हिन्दी कहानियों के क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित प्रकाशन का उल्लेखनीय कार्य आरम्भ हुआ। इस दशक में दो स्रोतों से हिन्दी कहानी-साहित्य का भाण्डार परिपूर्ण होने लगा—अनुवाद और मौलिक रचना। कालक्रम से अनूदित कहानियों का स्थान पहले है और कुछ ही अन्तर से उसका अनुगमन मौलिक कहानियों ने किया है। अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला साहित्य से उत्कृष्ट कहानियों का चयन कर उनका अनुवाद हिन्दी में किया गया। इस अनुवाद-कार्य के साहसपूर्ण अनुष्ठान में जिन लेखकों का सराहनीय योग उपलब्ध हुआ उन्होंने मौलिक हिन्दी कहानी-परम्परा के विकास को परोक्ष-रूप से महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान की। अनूदित कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया, उसका प्रभाव मौलिक हिन्दी कहानियों पर भी पड़ा। अन्य भाषाओं की कहानियों को अनुवाद के माध्यम से पढ़कर हिन्दी कहानीकारों ने पात्रों के व्यक्तित्व के विविध रूपों का परिचय प्राप्त किया और हिन्दी कहानी-साहित्य में व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वयं ही स्थान बनता गया।

अनूदित कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही उत्कृष्ट अनूदित कहानियाँ प्रकाश में आने लगीं। अकेली इस पत्रिका ने ही हिन्दी कहानियों की परम्परा को प्रारंभ से प्रौढ़ता की सीमा तक पहुँचा दिया। हिन्दी कहानी को स्वतंत्र-सत्तायुक्त रूप प्रदान करने तथा उसके कोष की निरन्तर पूर्ति करने में 'सरस्वती' पत्रिका ने अग्रदूत का कार्य किया। डा० लक्ष्मीनारायण लाल के शब्दों में :

इसके (सरस्वती के) का सबसे महान और प्रयत्न था

हिन्दी कहानी का प्रारम्भ । इस तरह अगर हम 'सरस्वती' का प्रकाशन बीसवीं शताब्दी हिन्दी-साहित्य के इतिहास की सबमें महान् घटना कहे तो अत्युक्ति न होगी' ।[१]

'सरस्वती' पत्रिका में अनुवाद के रूप में जो कहानियाँ प्रकाशित हुई, उनमे भारतीय वातावरण, चारित्रिक वैशिष्ट्य और सामाजिक परम्पराओ को भी कल्पना के माध्यम से समन्वित करने का प्रयास कतिपय कुशल लेखकों द्वारा हुआ । अनूदित कहानियों मे पात्रों के व्यक्तित्व के सशक्त निरूपण एवं सन्तुलित विश्लेषण का अभाव है तथापि पात्रों को एकदम निरुपाय और लेखक के हाथ की कठपुतली नहीं बनाया गया है ।

१. अंग्रेजी की अनूदित कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

अंग्रेजी की उत्कृष्ट और भावपूर्ण कहानियो का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत करने का श्रेय जिन सुप्रसिद्ध लेखको को प्राप्त है उनमे श्री राधाकृष्णदास का नाम विशेष उल्लेखनीय है । श्री पार्वतीनन्दन के अनुवादों में मौलिकता का स्वारस्य भी संपुटित है ।

(१) **राधाकृष्णदास की अनूदित कहानियाँ :** राधाकृष्णदास ने अंग्रेजी साहित्य की सुप्रसिद्ध कथाओं का हिन्दी अनुवाद किया और उनका प्रकाशन 'सरस्वती' जैसी विशिष्ट पत्रिका मे हुआ । इनकी प्रसिद्ध अनूदित कहानियों में 'सिम्बेलिन', 'एथेन्सवासी टाइमन', 'पेरेक्लिस', तथा 'कौतुकमय मिलन' विशेष रूप से उल्लेख्य है । 'सिम्बेलिन'[२] कहानी मे एक घटना-प्रधान कथानक को प्रस्तत किया गया है और सयोगवशात् घटित होने वाले कथा-सूत्रों को जोड़कर नियति के विधान की प्रबलता वर्णित की गयी है । पात्रों का व्यक्तित्व भाग्यवाद के हवाले कर दिया गया है। परन्तु अनुवादक ने कहीं-कहीं पात्रो के हृदयगत भावों का सहज और भाव-प्रधान विश्लेषण कलात्मक ढंग से किया है । 'एथेन्सवासी टाइमन'[३] में भी नियति-चक्र की प्रबलता का वर्णन है । कहानी का नायक अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण प्रभावपूर्ण स्थिति प्राप्त कर सका है । बाह्य स्थिति के अंकन के साथ ही अन्तर्जगत की दशा का सन्तुलित वर्णन इस कहानी की प्रमुख विशेषता है । 'परेक्लिस'[४] शीर्षक कहानी में उपदेश की प्रधानता है। धर्म की विजय तथा अनीति के पराजय को नैतिक दृष्टिकोण से उपस्थित किया गया है । पात्रो के स्वतंत्र व्यक्तित्व का समायोजन इस रचना मे नहीं हो सका

---

१. डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल—हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृष्ठ १७१

२. 'सरस्वती', सन् १९००, भाग १, संख्या १, पृ० ८-१८ ।

३. 'सरस्वती' सन् १९००, भाग १, संख्या १, पृ० ४४-५३ ।

४. वही, संख्या ३, पृ० ८१-८८ ।

है। शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'ट्वेल्थ नाइट' के कथानक को आधार मान कर 'कौतुकमय मिलन'[१] शीर्षक कहानी की रचना हुई है। अनुवादक की सीमा का ध्यान रखकर राधाकृष्णदास ने अपनी मौलिक रचनाशक्ति का भी विभिन्न प्रसंगो मे उपयोग किया है। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित करने का भी कही-कही प्रयास हुआ है जो व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से विशेष महत्वपूर्ण है।

अनुवादक की सीमाओं मे रहते हुए राधाकृष्णदास ने पात्रगत विशेषताओं को यथाशक्य प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया है। मूल कहानी के प्रति ईमानदार और सतर्क रहते हुए उन्होंने पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन किया है। हिन्दी कहानियों के इस प्रारंभिक युग मे भी पात्रों के व्यक्तित्व को सतर्कता और कुशलता से प्रस्तुत करने की चेष्टा उनके अनुवादों में विद्यमान है। पात्रों के भावों और प्रतिक्रिया-जन्य व्यवहारो को व्यक्त करने के लिये उन्होंने भाव-प्रवण शैली का आश्रय लिया है। यथा :

'मैं अहर्निश ओलिविया, ओलिविया नाम की झड़ी बाँध देता। निस्तब्ध रात्रि की निस्तब्धता को ओलिविया की झंकार से तोड़ देता, ओलिविया-संगीत-सुधा से चारो दिशाओ को प्लावित कर देता, पर्वत-पर्वत से ओलिविया की प्रतिध्वनि ध्वनित होती, फिर-फिर पुकारता और फिर-फिर गाता'।[२]

अँग्रेजी की आकर्षक कहानियो के सफल अनुवादक होने के साथ ही राधाकृष्ण दास ने पात्र-प्रधान कहानियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट करने वाले सचेतक का गौरव भी प्राप्त किया।

(२) **गिरिजाकुमार घोष की अनूदित कहानियाँ**—पार्वतीनन्दन के उपनाम से गिरिजाकुमार ने अनेक श्रेष्ठ कहानियों का आकर्षक अनुवाद किया। अँग्रेजी के अतिरिक्त जर्मन एवं अमेरिकन साहित्य की उत्तम कहानियों को भी उन्होंने अनुवाद द्वारा हिन्दी-जगत् के रसास्वादन के लिए प्रस्तुत किया। उनके अनुवाद में भाषा की सरसता और मनोरंजन की प्रधानता है। घटना के आकर्षण के साथ ही पात्रो की चरित्रगत विशेषताओं के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को अंकित करने का किंचित प्रयास इनके अनुवादों में प्राप्त होता है। इनकी अनूदित कहानियों में 'बिजुली'[३] और 'मेरी चम्पा'[४] उल्लखनीय हैं। 'बिजुली' की रचना एक अमेरिकन कहानी के आधार पर हुई है। टामस कार्लाइल द्वारा अनूदित एक जर्मन कथा का हिन्दी अनुवाद 'मेरी चम्पा' है।

---

१. 'सरस्वती' संख्या ६, पृ० २७४-३१३।

२. वही, सन् १६००, भाग १, संख्या ६, पृ० २७८।

३. वही, जनवरी १६०५, भाग ६, संख्या १, पृ० २३-२६।

४ वही अप्रैल १६०५ भाग ६ संख्या ४ पृ० १३२।

'बिजुली' में प्रेम की प्रधानता वर्णित है और उपदेश तथा नैतिक सिद्धान्तों को स्थापित करने का प्रयास भी किया गया है। कहीं-कहीं पात्रों की मनःस्थिति की ओर तथ्यपूर्ण संकेत भी दे दिये गये है, जैसे :

'इतने दिन जिस ठौर निर्द्वन्द्व सुख से बीत चुके थे, उस शान्तिकुंज को, उस निर्मल प्रेम के मन्दिर की राह आज की भाँति पहले कभी इतनी दूर नहीं जान पडी थी। अहा ! मन में भय की कराल छाया से अँधेरा रहने पर भी बिजुली जब भी अपने पहाड़ी घर में सुख का सपना देख रहा था'।[1]

आगामी विषम स्थिति से सर्वथा अनभिज्ञ पात्र की मन स्थिति के विवेचन की ओर अनुवादक का ध्यान इस प्रसंग में आकृष्ट हुआ है। 'मेरी चम्पा' शीर्षक कहानी मे भी प्रेम की महत्ता प्रतिपादित की गयी है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण इस कहानी में नहीं हो पाया है, क्योंकि कहानीकार बार-बार अपनी विवेचना और टीकाटिप्पणी के साथ कहानी के विभिन्न प्रसंगों में उपस्थित हो जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व को स्वतंत्र गति देने की चेष्टा नही की गयी है। 'नरक गुलजार'[2] भी इनकी एक अनूदित कहानी है, जिसमें व्यंग्य की प्रधानता है। इस कहानी में भी पात्रो का व्यक्तित्व विश्लेषण स्पष्ट और सुनियोजित नहीं है और न तो उनके बाह्य या अन्तर पक्ष का कलात्मक अंकन ही हो पाया है।

अन्य उल्लेख्य अनुवादक

पाश्चात्य कथाकारों और नाट्यकारों की कृतियों से प्रेरणा लेकर उनके भावानुवाद, छायानुवाद या मूलानुसारी अनुवाद के रूप मे कहानी रचना करने वाले अन्य उल्लेख्य लेखकों में पृथ्वीपाल सिंह प्रमुख हैं। उन्होने 'वाशिंगटन इरविंग' की प्रसिद्ध कृति 'टेल्स आव ए ट्रेवलर'[3] का हिन्दी अनुवाद किया। सूर्य-नारायण दीक्षित ने शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'हैमलेट' के कथानक का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया। कुन्दन लाल ने कतिपय अंगरेजी कहानियों का अनुवाद इसी दशक में किया। शिवनारायण शुक्ल ने 'फाक टेल्स आव हिन्दुस्तान' का अनुवाद 'सात सुनार'[4] के रूप में किया। फ्रान्सीसी कहानी 'नेकलेस' के आधार पर सत्यदेव ने 'माला' नाम की कहानी

---

१ सरस्वती, जनवरी १९०५, भाग ६, संख्या १, पृ॰ २६।

२ वही, सितम्बर १९०५, भाग ६, संख्या ९, पृ॰ ३३८।

३ वही, सन् १९०६, भाग ७, संख्या ६, पृ॰ २३८-२४६।

४ वही, सन् १९०९, भाग १०, संख्या ५, पृ॰ २०२।

लिखी। रूपनारायण पाण्डेय की 'भाग्यचक्र' शीर्षक कहानी भी एक उत्कृष्ट अनूदित रचना है।

पाश्चात्य साहित्य के उत्कृष्ट कथानक हिन्दी में अनूदित कहानियों के रूप में जब प्रकाशित हुए तब उनके रचना-कौशल और व्यक्तित्व-विश्लेषण का प्रभाव हिन्दी कहानीकारों की रचनाओं पर पड़ना स्वाभाविक था। यद्यपि नाटकों, उपन्यासों और लम्बी कहानियों में प्राप्त सभी कथानकों में पात्रों के व्यक्तित्व का सन्तुलित और कलात्मक अंकन उपलब्ध न था, तथापि व्यक्तित्व के बाह्य-स्वरूप का विश्लेषण पाश्चात्य लेखकों की रचनाओं में स्पष्टतर और अधिक प्रभावयुक्त रूप में विद्यमान था। हास्य और मनोरंजन के संयोजन द्वारा भी पात्रों के व्यक्तित्व को सजीव तथा स्वाभाविक रूप देने की चेष्टा इन लेखकों द्वारा हुई थी। इन रचनाओं के प्रभाव से पात्रों के सहजगति से विकसनशील चरित्र का महत्व स्पष्ट होने लगा। पात्रों के भाव-विश्लेषण, अन्तर्द्वन्द्व एवं क्रियाशील सक्षम व्यक्तित्व को कहानी में आवश्यक तत्व के रूप में ग्रहण करने की ओर हिन्दी कहानीकारों का ध्यान आकृष्ट हुआ।

संस्कृत से अनूदित कहानियाँ

संस्कृत-साहित्य के सुप्रसिद्ध काव्यों, नाटकों और गद्य-रचनाओं के आधार पर इस दशक के कुछ कुशल अनुवादकों ने कहानी-रचना का महत्वपूर्ण कार्य किया। पाश्चात्य कहानियों और नाटक, उपन्यास आदि के कथानकों के अनुवादों के समानान्तर ही ये रचनाएँ भी प्रकाश में आयी। गदाधर सिंह ने बाणभट्ट की विख्यात गद्य-रचना 'कादम्बरी' की कथा को आधार बनाकर लम्बी कहानी लिखने का प्रयास किया। इस रचना में पात्रों के व्यक्तित्व का भाव-विह्वल स्वरूप मनोयोगपूर्वक अंकित किया गया है। मूलकथा को अनुवादक ने विभिन्न स्थलों पर किंचित परिवर्तन के साथ प्रस्तुत किया है। जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी ने संस्कृत के सुप्रसिद्ध नाटकों और काव्यों के कथानक के आधार पर 'हर्षचरित'[1], 'रत्नावली', 'मालविका' और 'अग्निमित्र'[2] तथा 'मुक्ति के उपाय'[3] शीर्षक कहानियों की रचना की। इन अनुवादों में लेखक ने अपनी मौलिक रचना-शक्ति और सूझ-बूझ का परिचय भी दिया है। पुरुष और नारी पात्रों के जीवन की विविध स्थितियों के चित्रण द्वारा उनके व्यक्तित्व का भावपूर्ण विश्लेषण मूल रचनाओं में हुआ है। अनुवादक ने भी पात्रों के भाव, विचार और

---

१ 'सरस्वती', जनवरी १९०१, भाग २, सं० १, पृ० २६-५४।

२ वही, जून १९०४, भाग ५, सं० ६, पृ० १८३-१८८।

३ वही, जून १९०१, भाग २, सं० ६, पृ० २०७।

कार्य का सहज-स्वाभाविक वर्णन कर उनके चरित्र तथा व्यक्तित्व को उभरने का अवसर दिया है।

पं० सूर्यनारायण दीक्षित ने 'चन्द्रहास' का 'अद्भुत आख्यान'[१] शीर्षक कहानी की रचना की। इसका कथानक जैमिनी-पुराण से लिया गया है। इसमें मनोरंजन तथा घटना-वैचित्र्य को प्रधानता दी गई है। भाग्यवाद का प्रतिपादन ही इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है। चन्द्रहास का शौर्य, सौन्दर्य, वाक्कौशल और नीतिमत्ता सब कुछ भाग्य के चक्र पर अवलम्बित है। यद्यपि इस कहानी में पात्रों के सूक्ष्म और प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व-विश्लेषण के लिये पर्याप्त स्थान है, तथापि अनुवादक का ध्यान इस ओर नही के बराबर है। संस्कृत साहित्य से प्राप्त कथानकों पर आधारित इन कहानियों मे पर्याप्त मनोरंजन और कौतूहल के गुण विद्यमान है। परन्तु सशक्त व्यक्तित्व के अंकन को महत्व प्राप्त नही हो सका है। चरित्र की गहराई मे प्रवेश कर व्यक्ति की प्रवृत्तियों, प्रतिक्रियाओ और हृदय-स्थित गूढ़ मनोभावो के विश्लेषण के अवसर का उपयोग नही किया गया है। लेखक की टिप्पणियाँ और उपदेशात्मक-कथन रचना को शिथिल और कृत्रिम बनाते हैं।

(३) बंगला से अनूदित कहानियाँ

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक मे ही बंग-भाषा की प्रसिद्ध और उत्कृष्ट कहानियों के अनुवाद 'सरस्वती' जैसी लोकप्रिय एवं मान्य साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशित हुए। कालक्रम के दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो यह प्रमाणित होता है कि बंगला कथा-साहित्य अबतक विकास के पथ पर अग्रसर ही नही किसी सीमा तक समृद्ध भी हो चला था। अतएव कतिपय उत्साही अनुवादकों ने कहानी-रचना की प्रेरणा तथा आदर्श की प्राप्ति के उद्देश्य से बंगला से अनुवाद कर हिन्दी कहानी-साहित्य की श्रीवृद्धि में विशेष रुचि प्रदर्शित की। प्रथम दशक के पश्चात् भी कई वर्षों तक मौलिक हिन्दी कहानियों के समानान्तर अनूदित बंगला कहानियों का प्रकाशन होता रहा। इस क्षेत्र मे दो व्यक्तियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं :

(१) बंग-महिला और (२) भट्टाचार्य

बंग-महिला की कहानियाँ—इन्होंने बंगला-भाषा की ऐसी श्रेष्ठ कहानियो का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जिसमे कथा-वस्तु के सम्यक् संयोजन के साथ पात्रो के व्यक्तित्व एवं चरित्र का निरूपण भी व्यवस्थित ढंग से किया गया है। 'सरस्वती' मे इनके द्वारा अनूदित कहानियों का अनेक वर्षो तक प्रकाशन होता रहा।' 'कुंभ में

---

१. सरस्वती, मार्च १९०६, भाग ७, सं० ३, पृ० १०४-१०।

छोटी बहू'' इनकी प्रथम अनूदित कहानी है। श्रीमती नीरदवासिनी घोष की बंगला गल्प का यह सरस और मूलापेक्षी अनुवाद है। मूल कथावस्तु की सतर्कता से रक्षा करके भी अनुवादिका ने अनेक स्थलों पर अपनी मौलिक रचना-शक्ति का प्रमाण दिया है। सशक्त और भावपूर्ण शैली मे नारी-व्यक्तित्व के आकर्षक और कर्त्तव्यनिष्ठ रूप को अंकित किया गया है। आन्तरिक भावों के विश्लेषण की दृष्टि से नारी के दृढ़-निश्चय का सप्रयोजन-समायोजन इस कहानी की एक मुख्य विशेषता है। पात्रों की मनःस्थिति के अनुकूल वातावरण का चित्रण कर अनुवादिका ने उनके कार्य और विचार का सन्तुलन ठीक रखा है।

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की जिन कहानियों का अनुवाद बंग-महिला ने सतर्कता और कुशलता से किया है, उनमें 'दान प्रतिदान'[१] और 'दालिया'[२] शीर्षक कहानियाँ विशेष प्रसिद्ध है। इन दोनों कहानियों में टैगोर की मर्मस्पर्शी व्यंजना का प्रभाव विद्यमान है। पात्रों के व्यक्तित्व के चतुर्दिक कथावस्तु को कुशलता से विन्यस्त किया गया है। व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष के उद्घाटन और विश्लेषण का सामान्य प्रभाव भी इन रचनाओं में उपलब्ध है। 'पुतला'[३] और 'मन की दृढ़ता'[४] इनकी अन्य दो प्रसिद्ध अनूदित कहानियाँ है। चरित्रगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए पात्रों की भावुकता और कर्मठता का समन्वय मूल रचनाओं में हुआ है। अनुवाद में लेखिका ने कुछ ऐसी परिस्थितियों का कल्पना के आधार पर आयोजन कर दिया है जो पात्रों के सक्षम व्यक्तित्व के निर्माण मे सहायता प्रदान करती है। यद्यपि व्यक्तित्व-विश्लेषण के सम्यक् सन्तुलन, कुशल कलात्मक संयोजन और मनोविश्लेषणयुक्त विवेचन का उत्कृष्ट और प्रौढ़ रूप इनमें न आ पाया है, तथापि प्रारम्भिक प्रयास के रूप में इन रचनाओं का विशेष महत्व है, क्योंकि स्वस्थ एवं समर्थ मौलिक हिन्दी कहानी परम्परा मे पात्रों के व्यक्तित्व की महत्ता, उसके सशक्त स्वरूप के अंकन तथा विविध पक्षों के विश्लेषण की ओर लेखकों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय इन्हें प्राप्त है।

भट्टाचार्य की कहानियाँ—बंगला भाषा के प्रमुख पत्रों में प्रकाशित श्रेष्ठ कहानियों का हिन्दी अनुवाद करने का साहसपूर्ण-कार्य भट्टाचार्य ने भी किया। हिन्दी की प्रकृति का ध्यान रखते हुए तथा प्राप्त गद्य-शैली का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए

---

१ 'सरस्वती', सन् १९०६, भाग ७, सं० ९, पृ० ३४२-४७।
२. 'सरस्वती', अप्रैल १९०८, भाग ७, सं० ४।
३. 'सरस्वती', सन् १९०९, भाग १०, सं० २६।
४. 'सरस्वती' सन् १९०८, भाग ९, संख्या १, पृ० १९।
५. सरस्वती, सन् १९१५, भाग १६, संख्या ५, पृ० २७५।

इन्होने बंगला निबन्धों के आधार पर भी कहानियाँ लिखी है। ऐतिहासिक घटनाओ को वर्ण्यवस्तु के रूप में ग्रहण कर इन्होंने ऐसी कहानियो का सृजन किया है जिनमे व्यक्तित्व के स्वतन्त्र अस्तित्व की कहीं-कहीं झलक मिलती है। उदाहरण के लिये इनकी 'राजपूतनी'[१] शीर्षक कहानी विचारणीय है। सुप्रसिद्ध बंगला लेखक श्री सुधीन्द्रनाथ ठाकुर के लेख के आधार पर इस कहानी की रचना हुई है। राजपूत-रमणी के दृढ़-निश्चय तथा कर्तव्यपालन की उदात्त भावना का इस कहानी मे भावपूर्ण चित्रण हुआ है। उसके व्यक्तित्व का केन्द्रीय तत्व उसका महान त्याग है। अपने प्रेमी के प्रति यथार्थ कृतज्ञता को स्वीकार करती हुई वह अविवाहिता रहने का अविचल व्रत धारण करती है। इस कहानी में व्यक्तित्व के चतुर्दिक कथा-तत्व का विस्तार किया गया है। व्यक्तित्व की आन्तरिक विशेषताओं का विश्लेषण करने का प्रयास इस रचना को सामान्य घटना-प्रधान कहानियों से पृथक् करता है। व्यक्तित्व विश्लेषण के दृष्टिकोण से इनकी 'पत्नीव्रत'[२] कहानी भी उल्लेखनीय है। इस रचना का आधार भी बंगला मासिक पत्र 'प्रवासी' में प्रकाशित एक भावपूर्ण लेख है। इसके लेखक विख्यात बंगला-निबन्धकार बाबू चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय हैं। कहानी का रूप देकर भट्टाचार्य ने वन्द्योपाध्याय के उद्देश्य को आकर्षक बनाने का प्रयत्न किया है। पुरुष-वर्ग के समक्ष 'पत्नीव्रत' का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। ऐसे पात्र की कल्पना की गयी है जो भारतीय पातिव्रत-धर्म के समानान्तर पत्नीव्रत-धर्म का निर्वाह कर समाज को नवीन आदर्श की ओर प्रेरित कर सके। मूलतः 'पत्नीव्रत' की कल्पना को सर्वथा नवीन नही कहा जा सकता। भारतीय पुरुषों के अनुकरण एव अनुसरण के लिये लोकनायक श्रीराम का 'एकपत्नीव्रत' इस देश के वाङ्मय में सुदीर्घ काल से विद्यमान है। कहानी के दृश्य-पट पर उसी आदर्श को नवीन रूप मे अंकित करने का प्रयास किया गया है।

अनुवादो के माध्यम से बंगला गल्प-साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ हिन्दी-पाठक वर्ग को उपलब्ध हुईं और साथ ही हिन्दी कहानी-लेखकों को कहानी-रचना के निमित्त प्रेरणा-सामग्री भी प्राप्त हुई। नवीन परिस्थितियों तथा वर्णन की अनेकरूपता द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व के अनेक रूप प्रकाश में लाये गये। इन रचनाओ के पूर्व मनोरंजन एवं कौतूहल-प्रशमन ही कहानी-रचना के उद्देश्य थे। इसलिये पात्रो के चरित्र और व्यक्तित्व को कोई महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त न था। तिलिस्म, जादू तथा चमत्कार को आधार-रूप में ग्रहण कर जो कहानियाँ लिखी गयी उनमे घटनावैचित्र्य एवं मनोरंजन की ही प्रधानता थी। अनुवाद के माध्यम से आने वाली कहानियो

---

१ 'सरस्वती', सन् १९०६, भाग ७, संख्या ५।

२ वही, नवम्बर १९०५, भाग ६, संख्या ११।

में रचनाकार की कल्पना जीवन के यथार्थ को संस्पर्श करती हुई देखी गयी। हिन्दी कहानियों का प्रारम्भिक स्वरूप इस प्रवृत्ति से प्रभावित हुआ।

मौलिक कहानी-परम्परा एवं व्यक्तित्व-विश्लेषण

(वर्ष १९०० से १९१० तक)

हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी : 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से आधुनिक हिन्दी साहित्य में मौलिक कहानियों की परम्परा का शुभारम्भ हुआ। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती'[१] इस परम्परा की प्रथम कड़ी है। इसके रचनागत वैशिष्ट्य ने कहानी-रचना का नवीन एवं अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। भारतीय वातावरण में कथावस्तु का व्यवस्थित आयोजन, पात्रों के व्यक्तित्व का सन्तुलनयुक्त विश्लेषण तथा प्रभावपूर्ण कलात्मक अन्तिम परिणति इस रचना की अपूर्व विशेषताएँ हैं। इस कहानी की मौलिकता के सम्बन्ध में आलोचकों में मतभेद भी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसकी समीक्षा करते हुए लिखा है :

'यदि मार्मिकता की दृष्टि से भाव-प्रधान कहानियों को चुनें तो तीन मिलती है—'इन्दुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाईवाली'। यदि 'इन्दुमती' किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती है। इसके बाद 'ग्यारह वर्ष का समय' और फिर 'दुलाईवाली' का नम्बर आता है'।[२]

इस कहानी पर विलियम शेक्सपीयर के विख्यात नाटक 'टेम्पेस्ट' की छाया मानकर कुछ आलोचकों ने इसकी मौलिकता को सन्देह की दृष्टि से देखा है। डा० श्रीकृष्णलाल का कथन है :

'यह (इन्दुमती) पूर्णतया मौलिक कृति नहीं कही जा सकती, क्योंकि इस पर शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'टेम्पेस्ट' की छाप बहुत ही स्पष्ट है'।[३]

इस सन्देह का निराकरण करते हुए अपने शोध-प्रबन्ध में डा० ब्रह्मदत्त शर्मा ने लिखा है :

'"'इसमें एक राजपूत की जिस शान और आन का वर्णन किया गया है, वह

---

१. 'सरस्वती', जनवरी सन् १९००, भाग १, संख्या १, पृ० १७८।

२. आ० रामचन्द्र शुक्ल—'हिन्दी साहित्य का इतिहास', नवीन संस्करण पृ० ६०३।

३. डा० श्रीकृष्ण लाल—'हिन्दी कहानियाँ', (भूमिका भाग), साहित्य भवन (प्रा०) लि० प्रयाग।

भारतीय वातावरण के अधिक अनुकूल है। सम्भवतः 'टेम्पेस्ट' की छाया लेकर किसी बंगला कहानी की रचना की गयी हो और फिर उसके (बंगला कहानी) आधार पर इस कहानी को लिखा गया हो। इस प्रकार इस कहानी में भारतीय वातावरण उत्पन्न करने का श्रेय या तो किसी बंगला कहानीकार को है अथवा स्वयं इसी कहानीकार को। यदि हिन्दी कहानियों में विदेशी अथवा देशी कथानक की छाया की खोज की जाय तो सम्भवतः पूर्णतया मौलिक कहानियाँ बहुत कम निकलेंगी। यह कहानी कथा-वस्तु, पात्र तथा वातावरण की दृष्टि से मौलिक कहानी कही जायगी'।[1]

पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण जिस कुशलता से किया गया है उस पर विचार किया जाय तो 'इन्दुमती' उत्कृष्ट मौलिक कहानी प्रमाणित होगी। न केवल बाह्य स्वरूप तथा स्थितियो के वर्णन तक कहानीकार की दृष्टि सीमित है वरन् वह व्यक्तित्व-विश्लेषण की गहराई में उतरने का प्रयास करता हुआ पात्रों की आन्तरिक स्थिति का अवलोकन भी करता है। इस कहानी में तीन प्रमुख पात्र हैं। इन्दुमती कहानी की नायिका है और चन्द्रशेखर नायक। इन्दुमती के पिता राजपूत सरदार का चरित्र भी विशेष रूप से उल्लेख्य है।

'इन्दुमती' नागरिक जीवन से दूर एकान्त वन-प्रान्तर में निवास करने वाली यौवन तथा जगत की हलचलो से अपरिचित सरल-हृदया षोडशी है। वृक्ष के नीचे विश्राम में लीन 'चन्द्रशेखर' से संयोगवशात् उसका साक्षात्कार हो जाता है। 'इन्दुमती' 'चन्द्रशेखर' के साथ अपने पिता के पास निवास-स्थान पर आती है। इन दोनो के मन में सहज गति से तथा स्वाभाविक रूप से सहानुभूति, साहचर्य और प्रेम के भाव जागृत होते तथा विभिन्न अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों मे परिपुष्ट होते है। मन में निहित भाव को प्रकट न कर बाह्य कठोरता का प्रदर्शन करते हुए 'इन्दुमती' के पिता दोनों के प्रति निष्ठुर व्यवहार करते है। उनको ज्ञात हो जाता है कि 'चन्द्रशेखर' अजयगढ़ का यशस्वी राजकुमार है। उसने ही उनके परम शत्रु इब्राहीम लोदी का वध करने में सफलता प्राप्त की है। इस रहस्य का उद्घाटन कर वे 'इन्दुमती' तथा 'चन्द्रशेखर' को वात्सल्यपूर्ण वरदान देते हैं। अपने विश्वस्त अनुचरो के समक्ष वे दोनों का परिणय संस्कार सम्पन्न करते हैं।

इस कहानी में 'इन्दुमती' के व्यक्तित्व में सौन्दर्य के साथ धैर्य, सत्साहस और दृढ़-निश्चय के सद्गुणों का स्वाभाविक विकास दिखाया गया है। पराक्रमी राजकुमार 'चन्द्रशेखर' के चरित्र में शौर्य, मर्यादा-रक्षण, अदम्य प्रेम तथा कर्त्तव्यपालन के आदर्श

---

१. डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, 'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन', पृ० ११२।

गुणों का समन्वय किया गया है। राजपूत सरदार के दुहरे व्यक्तित्व का चित्रण भी लेखक ने कुशलतापूर्वक किया है। यद्यपि संयोग और आकस्मिकता को ही कथावस्तु के विकास का आधार बनाया गया है और कहानी में सपाट गति को अपना लिया गया है तथापि पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की ओर लेखक विशेष सतर्क है। वह उन्हें नियति और संयोग के हाथों में छोड़ नहीं देता, वरन् प्रतिकूल परिस्थितियों में उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं को उभरने का अवसर देता है।

प्रथम दशक के प्रमुख कहानीकार और उनकी कृतियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

(१) **पंडित किशोरी लाल गोस्वामी :** कई भाषाओं के विद्वान और साहित्य-संवर्द्धन में आजीवन प्रयत्नशील रहने वाले पंडित किशोरीलाल नाटक, उपन्यास और कहानियों के प्रणेता थे। उनकी मौलिक कहानी 'इन्दुमती' हिन्दी कहानी-साहित्य में ऐतिहासिक महत्व से गौरवान्वित है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से उसकी क्या महत्ता है, इस पर विचार किया जा चुका है। 'चन्द्रिका'[1] शीर्षक कहानी-संग्रह में उनकी चमत्कारपूर्ण, विस्मयजनक कहानियों का संकलित रूप उपलब्ध है। यद्यपि कथावस्तु के चमत्कार और वैचित्र्य की ओर कहानीकार विशेष सतर्क है और इसी को अपनी रचना की आधारभूमि मानता है, तथापि विविध प्रसंगों में पात्रों की बुद्धिमत्ता, सूत्रों के सहारे तथ्यों को ज्ञात करने का विवेक तथा उनके धैर्य एवं परिश्रम का वर्णन आकर्षक रूप में किया गया है। 'गुलबहार'[2] उनकी भाव-प्रधान कहानियों का संकलन है। मध्यकालीन फारसी आख्यानों की पद्धति पर इन कहानियों में प्रेमप्रधान भावों एवं प्रवृत्तियों की व्यंजना विशेष रुचि के साथ की गयी है। कहानीकार की दृष्टि सामान्य विवेचन तथा बाह्य व्यवहार तक सीमित है। पात्रों के व्यक्तित्व के सन्तुलित, तात्विक एवं मर्मस्पर्शी विश्लेषण तक कहानीकार पहुँच नहीं पाया है। नारी पात्रों की अभिव्यक्ति के लिये भावुकतापूर्ण उद्गारों का आश्रय लिया गया है। त्याग तथा दृढ़ निश्चय की प्रवृत्ति का संकेत देने वाले स्वगत-कथन पात्रों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते है। जैसे :

'प्यारे शौहर ! अब यह लौंडी रुखसत होती है। और दिल गवाही देता है कि बिहिश्त में जरूर हम दोनों की वह मुलाकात होगी, जिसमें कभी जुदाई की आग में

---

१ ले० पं० किशोरीलाल गोस्वामी—'चन्द्रिका', सन् १९०४, बनारस कल्पतरु प्रेस।

२. ले० पं० किशोरीलाल गोस्वामी—'गुलबहार', सन् १९०६, काशी हितचिन्तक प्रेस।

जलना ही नहीं होगा। आह अफसोस! सद अफसोस! यहाँ पर मैं तुम्हारी खिदमत जी जान से भरपूर न कर सकी। लिहाजा लौंडी के गुनाहों को माफ करो'।[1]

स्वर्ग की स्थिति में सहज विश्वास रखने वाली भावुकता से उद्वेलिता नारी के प्रेम का विश्लेषण उसके स्वगत कथन द्वारा इस प्रसंग में सहज गति से हुआ है।

पं० किशोरीलाल ने प्रेमव्यंजक जासूसी, चमत्कार प्रधान तथा मनोरंजक कहानियों की रचना की। इनकी प्रेम प्रधान कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विकास आदर्शों तथा मर्यादा-रक्षण की प्रवृत्तियों के आधार पर हुआ है। त्याग और उदारता की सद्वृत्तियों का कहानियों के नायक तथा नायिकाओं में अनिवार्य रूप से समन्वय किया गया है। जासूसी कहानियों मे घटना-वैचित्र्य की प्रधानता के कारण पात्रो के व्यक्तित्व का न तो सहज विकास हुआ है और न कहानीकार ने उसके विश्लेषण की ओर ध्यान दिया है। उनकी अन्वेषक प्रवृत्ति तथा विवेकपूर्ण बुद्धिमता का उपयोग अवश्य ही किया गया है। मनोरंजन-प्रधान कहानियों मे रोचक कथावस्तु तथा कौतूहल उत्पन्न करने वाले प्रसंगों को ही प्रधानता दी गयी है।

(२) **पं० रामचन्द्र शुक्ल :** आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने मौलिक कहानी-सृजन परम्परा में अपनी एक विशिष्ट कहानी द्वारा स्तुत्य सहयोग प्रदान किया। इस कहानी का शीर्षक है 'ग्यारह वर्ष का समय'[2]। पात्रों के व्यक्तित्व के निरूपण तथा विश्लेषण के दृष्टिकोण से यह रचना विशेष महत्वपूर्ण है। कथावस्तु के कलात्मक संयोजन का प्रयास भी इन कहानी की प्रमुख विशेषता है। सन्तुलित, सुनियोजित कथावस्तु के विकास ने पात्रों के व्यक्तित्व को उभरने का अवसर दिया है। कथानक संक्षेप में इस प्रकार है :

'कहानी-लेखक अपने एक मित्र के साथ भ्रमण करते हुए रात्रि में एक उजड़े हुए गाँव के खण्डहर में पहुँच जाता है। दोनों व्यक्ति वहाँ एक स्त्री को देखते है। उस एकान्त निर्जन उपेक्षित खण्डहर मे स्त्री को देखकर उसके प्रति उनके मन में उत्सुकता तथा जिज्ञासा के भाव उत्पन्न होते हैं। वे उस स्त्री का पीछा करने लगते हैं। उसके परिचय को प्राप्त करने का जब वे आग्रह करते हैं, तो वह बताती है कि वह काशी की रहने वाली है। ग्यारह वर्ष की अवस्था में उसका विवाह इसी खण्डहर वाले गाँव में एक वैभव सम्पन्न परिवार में हुआ था। उसी वर्ष भयंकर बाढ़ आई और वह गाँव नष्ट हो गया। दैव की इस प्रतिकूलता के कारण उस स्त्री को, जो उस

---

१. ले० पं० किशोरीलाल गोस्वामी—'गुलबहार', 'गुलबहार' शीर्षक कहानी से।

२. 'सरस्वती', सितम्बर १९०३, भाग ४, संख्या ६, पृ० ३०६-३१७।

समय अबोध बालिका थी, अपने पति के परिवार का सम्पर्क प्राप्त न हो सका। तब से वह काशी में अपने पिता-माता के संरक्षण में रहने लगी। जब वह तरुण अवस्था में पहुँच गयी तब उसे विविध प्रकार के ताने तथा व्यंग्यपूर्ण उक्तियों का आघात सहना पड़ा। दुखित-हृदय से उसने इस खण्डहर में रहने का निर्णय किया। भटकती हुई वह खण्डहर तक पहुँच गयी। तब से वह वहीं जीवन-यापन कर रही है।

'कहानी-लेखक का मित्र ही वास्तव में उस स्त्री का पति है। गाँव में बाढ़ आने पर वह भयंकर जलप्रवाह में बह जाता है तथा एक व्यापारी की किश्ती का आश्रय लेकर किसी प्रकार कलकत्ता पहुँच जाता है। वहाँ एक विवाह समारोह को देखकर वह अपनी पत्नी की स्मृति से आकुल हो जाता है। इसी स्थिति में वह इस क्षेत्र की ओर चल पड़ता है। स्त्री उस पुरुष (लेखक के मित्र) के हाथ में तिल देखकर निश्चय कर लेती है कि वही उसका पति है। इस प्रकार ग्यारह वर्ष के पश्चात् दैव-योग से उस खण्डहर में पति-पत्नी एक दूसरे को पा लेते है।'

इस कहानी में रोचकता लाने के उद्देश्य से भावपूर्ण कथनों का समावेश किया गया है जो पात्रों की मनःस्थिति पर प्रकाश डालते है। इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं—'कहानी लेखक', 'स्त्री' एवं 'कहानी-लेखक का मित्र तथा उस स्त्री का पति।' 'कहानी-लेखक' में मित्र के प्रति सहृदयता, संवेदना तथा सहयोग के भाव विद्यमान है। विभिन्न अवसरों पर कहानी-लेखक के व्यक्तित्व में विवेचक की कुशलता भी उभर आती है जिसमें उसकी निरीक्षण-शक्ति तथा विवेक का परिचय प्राप्त होता है। यद्यपि कहानीकार की आलोचना तथा स्थितियों के विवेचन का विस्तार पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण को कृत्रिम, बोझिल और सन्तुलनहीन बना देता है, तथापि अपनी आलोचक वृत्ति का संवरण न कर पाने के कारण लेखक ने कई स्थलों पर अपनी ओर से व्याख्या और टिप्पणी जोड़ने की आवश्यकता का अनुभव किया है। जैसे :

'इस आख्यायिका में यही ज्ञात होना शेष है कि चन्द्रशेखर मिश्र के पुत्र की क्या दशा हुई। हमारे कतिपय पाठक इस पर दोषारोपण करेंगे कि हैं! न कभी साक्षात् हुआ, न वार्तालाप हुआ, न लम्बी-लम्बी कोर्टशिप हुई, यह प्रेम कैसा! महाशय रुष्ट न हूजिए। इस अदृष्ट प्रेम का धर्म और कर्त्तव्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसकी उत्पत्ति केवल सदाशय और निःस्वार्थ हृदय में ही हो सकती है। इसकी जड़ संसार के और प्रकार के प्रचलित प्रेमों से दृढ़तर और प्रशस्त है'।'

इस प्रकार जिस भाव अथवा मनोवृत्ति का अनुभव पाठक-वर्ग को करना चाहिए

---

१. पं० रामचन्द्र शुक्ल—'सरस्वती' (सितम्बर १९०३), पृ० ३१५-१६ पर 'ग्यारह वर्ष का समय' 'शीर्षक कहानी।

उसे लेखक ने अपनी ओर कह कर उसकी सहज संवेदनशीलता का प्रभाव कम कर दिया है।

'मित्र' अथवा 'स्त्री के पति' का व्यक्तित्व गम्भीर, आदर्श गुणों से युक्त तथा प्रसंशनीय धैर्यशीलता से अलंकृत है। विपत्तियों का आघात उसे मौन, गंभीर तथा उदासीनबना देता है, परन्तु उसके चरित्र और व्यवहार मे कोई असंगति अथवा विकृति नही आ पाती। सामान्य परिस्थितियों में उसके अन्तर के संताप को पहचानना तो दूर उसका आभास तक पाना कठिन है। भावना का प्रबल आघात तथा स्मृति का तीव्र वेग उसे स्थान त्याग करने और कलकत्ता से चलने के लिये प्रेरित करता है। आदर्श किन्तु सहृदय एवं भावुक पात्र के रूप मे लेखक ने उसके व्यक्तित्व का कुशलता से विश्लेषण किया है।

'स्त्री' का प्रेम और अविचल निष्ठा उसकी पति-भक्ति के प्रेरक तत्व है। अपने कार्य, व्यवहार तथा आचरण के द्वारा वह भारतीय सती नारी का आदर्श प्रस्तुत करती है। व्यग्र एवं संकेतपूर्ण तिरस्कार उसके अहं को उत्तेजित करते है। प्रतिकूल परिस्थितियों मे उसके धैर्य की परीक्षा होती है। उसमें साहस भी पर्याप्त मात्रा मे है। इन गुणों के उत्कर्ष के लिये लेखक ने समुचित परिस्थितियो का सृजन किया है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने नियति की प्रबलता को कहानी के परिचालक तत्व के रूप में ग्रहण किया है। संयोग द्वारा ही कथानक के विभिन्न सूत्र जोड़े गये है। यही कारण है कि कहानी मे स्वाभाविक गतिशीलता का अभाव है, तथा पात्रों के व्यक्तित्व का सहज विकास नही हो पाया है। विभिन्न स्थलों पर कहानीकार वक्ता बन बैठता है और पात्र उसके संकेत पर चलने के लिये विवश से प्रतीत होते हैं। इसकी ओर संकेत करते हुये डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने लिखा है :

'पात्र और चरित्र-चित्रण की प्रतिष्ठा की दृष्टि से (यह) कहानी साधारण है। केवल पात्र-चरित्रों के रूप मे, 'कहानी में पिरोए गये है, उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण का सर्वथा अभाव है'।[1]

इसमें संदेह नहीं कि पं० रामचन्द्र शुक्ल की यह कृति मौलिक कहानी-रचना को प्रेरणा देने वाली तथा स्वस्थ परम्परा को विकसित करने वाली है तथा इसका ऐतिहासिक महत्व भी है, तथापि इसमें पात्रों के व्यक्तित्व का सन्तुलित, सहज और मनोविज्ञानसम्मत यथार्थ विश्लेषण नही हो पाया है।

(३) **श्री गिरिजादत्त वाजपेयी** : प्रथम दशक के मौलिक कहानी-लेखकों मे

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल, 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, पृ० ५८।

श्री गिरिजादत्त वाजपेयी का नाम उनकी मनोरंजक शैली के कारण विशेष उल्लेख्य है। सामान्य घटनाओं पर आधारित उनकी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को सहज गति से उभरने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनकी 'पंडित और पंडितानी'[1] शीर्षक कहानी प्रभावपूर्ण वर्णन तथा अन्तर्द्वन्द्व के उत्कृष्ट विश्लेषण के कारण महत्वपूर्ण एवं विचारणीय है। यह प्रेमप्रधान मनोरंजक कहानी है। इसमें एक पंडित का व्यक्तित्व विश्लेषित है जिनकी आयु प्रायः ४५ वर्ष है और दूसरी प्रमुख पात्रा 'पंडितानी' की आयु २० वर्ष है। दोनों के स्वभाव में विरोध है। पंडित जी गम्भीर, अल्पभाषी और अपने कार्य में लीन रहने वाले हैं, पंडितानी चंचला, मुखरा और विविध दिशाओं में मन को दौड़ाने वाली है। फिर भी दोनों में दाम्पत्य-आकर्षण और पारस्परिक प्रेम तथा विश्वास है। कहानी का संवेद्य इस प्रकार है कि एक दिन पंडित जी अध्ययन-रत थे और किसी कवि-समीक्षा की पूर्ति करना चाहते थे। थोड़ी ही दूर पर पंडितानी एक पत्र पढ़ रही थीं। पंडितानी ने उनको आकर्षित करने के लिये खाँसना आरम्भ किया। परन्तु पंडित जी पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा। वे गम्भीरतापूर्वक मौन धारण किये रहे। पंडितानी ने अपनी बात आरम्भ की। उन्होंने अपनी कामना प्रकट की कि वे एक तोता पालना चाहती हैं। पंडित जी के अध्ययन एवं लेखन में यह बाधा उपस्थित हुई। वे यह भी नहीं चाहते थे कि तोता पालकर अपनी असुविधाओं और कठिनाइयों को बढ़ाया जाय। इसलिये वे पंडितानी को तोता न पालने की राय देने लगे। परन्तु पंडितानी का आग्रह बढ़ता ही गया। उनके तर्कों, आग्रह तथा स्नेहपूर्ण साहसिकता के आगे पंडित जी को झुकना पड़ा। उन्होंने मान लिया कि उनके लिए तोता आ जायगा। दोनों में प्रेमपूर्ण संधि हो गयी। पंडित जी ने एक नहीं छः तोते मंगा देने का वचन दिया। पंडितानी अत्यधिक प्रसन्न हुईं और पंडित जी ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी समीक्षा पूर्ण कर ली।

सामान्य दैनिक जीवन-चर्या पर आधारित इस कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व को सहज रूप में अंकित किया है। यद्यपि घटनाक्रम सीधा और साधारण है तथापि पात्रों के स्वभाव, विचार एवं तर्क द्वारा उनके व्यक्तित्व का सन्तुलित विश्लेषण हुआ है। प्रेम, निष्ठा और अन्तर्द्वन्द्व की विभिन्न स्थितियों का विश्लेषण सफलतापूर्वक किया गया है।

(४) **लाला पार्वती नन्दन :** श्री गिरिजाकुमार घोष ने इसी उपनाम से कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियाँ विविध विषयों पर आधारित हैं। 'गल्प-

---

१. सरस्वती', सन् १९०३, भाग ४, संख्या १२, पृ० ४१९-२३।

लहरी'' इनकी कहानियों का संकलन है, जिसके द्वारा इनकी मौलिक कहानी-रचना-शक्ति के विविध रूपों का परिचय प्राप्त होता है। प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' मे भी इनकी कहानियां प्रकाशित हुई थीं। जिन कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विकास एवं विश्लेषण स्पष्ट और मनोविज्ञान—सम्मत है, उनमें से निम्नलिलिखित विचारणीय है :

'उमा भवानी', 'करम-रेख', 'कन्नौज-सुन्दरी', 'मुहम्मदगोरी का अन्त', 'मोतियों की माला', 'दलिद्दर दूर', तारबीबी'' 'अनोखा स्वयंवर,' 'चम्पी की विबिया' 'मानवी या दानवी', 'काठ का घोड़ा', 'शिजिता' और 'नागनारी'। (गल्प-लहरी में संकलित) 'रामलोचन साह'[२], 'एक के दो दो'[३], मेरा पुनर्जन्म'[४], 'प्रेम का फुहारा'[५] एवं 'भूतो की हवेली'[६]। ('सरस्वती' में प्रकाशित)

इनकी सभी कहानियों में कल्पना का चमत्कार विद्यमान है और मनोरंजन-प्रधान कथावस्तु की ओर इनकी विशेष रुचि दृष्टिगत होती है। जीवन की गहराई मे प्रवेश कर उसके तात्विक-विश्लेषण की ओर प्रवृत्त होने का उद्देश्य इनके समक्ष नही था। 'गल्पलहरी' की प्रायः सभी कहानियों मे यही प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। 'उमा-भवानी' शीर्षक कहानी में एक 'डाकिनी' का चित्रण किया गया है। उसकी साहसिकता तथा धैर्य को व्यक्त करने के लिये समुचित परिस्थितियो की रचना की गयी है। भाग्यवाद पर आधारित 'कर्म-रेख' शीर्षक कहानी मे पात्रो के व्यक्तित्व को नियति के नियंत्रण मे चित्रित किया गया है। 'तार की बीवी' और 'चम्पी की विबिया' शुद्ध मनोरंजन पर आधारित कहानियाँ है। इनमें पात्रों के व्यक्तित्व को कोई महत्व नहीं दिया गया है। 'मुहम्मद गोरी का अन्त' ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित कहानी है जिसमें तथ्य एवं कल्पना के समन्वय द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को इतिहास-विश्रुत घटनाओ के आलोक में प्रस्तुत किया गया है। 'अनोखा स्वयंवर' मे अंगरेजी-समाज का ऐसा चित्रण किया गया है जिसमें वैचित्र्य, मनोरंजन एवं व्यंग्य का प्राधान्य है। पात्रो के

---

१. 'गल्पलहरी', साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, प्रयाग, सवत् १९७७।
२. 'सरस्वती', सन् १९०४, भाग ५, संख्या ५, पृ० १५१।
३. वही, सन् १९०६, भाग ७, संख्या ७, पृ० २६५।
४. वही, सन् १९०६, भाग ७, संख्या २, पृ० ५६।
५. वही, सन् १९०१, भाग २, संख्या ५, पृ० १६६।
६. वही, सन् १९०३, भाग ४, संख्या ५, पृ० १६२।

व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का प्रयास नहीं किया गया है। 'एक-एक के दो-दो' शीर्षक कहानी मे मनोरंजन को मुख्य स्थान दिया गया है और इनमें बालकों के मनोविज्ञान का आधार लेकर बीजगणित के सिद्धान्त को कहानी का रूप दिया गया है। 'प्रेम का फुहारा' सामाजिक कहानी है जिसमें पात्रों के मनोभावों का कुशलता से चित्रण किया गया है। अलौकिक और कौतूहल-वर्द्धक कथावस्तु को आधार बनाकर इन्होंने 'भूतों की हवेली' शीर्षक कहानी लिखी है।

पार्वतीनन्दन की कहानियों में विविधता है और जीवन के अनेक अंगों पर उन्होंने कहानी द्वारा अपने विचार एवं निष्कर्षों को व्यक्त करने का प्रयास किया है परन्तु कल्पना और मनोरंजन ही उनकी कहानियों मे प्रधान-तत्व बन गये हैं। अतएव विचार और विवेचन का पक्ष उभर नही पाया है। प्रेम की विभिन्न स्थितियों और रूपों को चित्रित करने में पात्रों के व्यक्तित्व को कही-कहीं स्वाभाविक गति और विकास की भूमि प्राप्त हो गयी है। परन्तु लेखक इस प्रकार की विवेचन-कुशलता के महत्व को प्राथमिकता न देकर मनोरंजन एवं वैचित्र्य-वर्णन की ओर विशेष आकृष्ट हो जाता है। मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक गति से विकसित विश्लेषण का उनकी रचनाओं मे अभाव है। व्यक्तित्व को जहाँ भी विश्लेषित होने का अवसर प्राप्त हुआ है वहाँ व्यक्तित्व-विश्लेषण का एक ही परम्परागत साधन इनकी कहानियों में प्रयुक्त हुआ है वह है लेखक द्वारा विभिन्न स्थितियों का वर्णन। पात्रों के कार्य और व्यवहार द्वारा उनके व्यक्तित्व को समझने का अवसर नहीं दिया गया है।

(५) **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी :** सरस्वती सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित मौलिक कहानियों की रचना की जो 'सरस्वती' में समय-समय पर प्रकाशित होती रही। उनका विचार था कि कहानी का आधार 'यथार्थ' अथवा 'तथ्य' ही होना चाहिए। ऐतिहासिक कहानियों में वे प्रामाणिकता की अनिवार्यता को प्रथम स्थान देने के पक्ष में थे। अपने दृष्टिकोण को एक विशेष प्रसंग में उन्होंने स्पष्ट किया है :

"ये आख्यायिकाएँ मन की गढ़न्त नहीं हैं, सर्वथा सत्य हैं। औरंगजेब ने एक लम्बा उत्तर भेज कर उत्तराधिकार के नियम (रसम) को जारी रखने में होने वाले अन्याय का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है। उसने इस पत्र में इन दोनों आख्यायिकाओं का भी निदर्शन किया है।"[1]

आचार्य द्विवेदी के उपर्युक्त दृष्टिकोण को उनकी ऐतिहासिक कहानियों की

---

१. 'सरस्वती', जून १९०५, पृ० २४२।

वर्णनशैली का आधार मानना उपयुक्त है। पात्रों के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निरूपण तथा विश्लेषण करते हुए तत्कालीन परिस्थितियों को उन्होंने सतर्कता से चित्रित किया है। उनकी प्रसिद्ध एवं उल्लेख्य आख्यायिकाओं में 'स्वर्ग की एक झलक'[१] एवं अन्य मुगलकालीन कहानियाँ हैं। अब्दुर्रहीम खानखाना की उदारता को लक्ष्य कर द्विवेदी जी ने 'खानखाना और सुमेरु पर्वत'[२], 'मिर्जा अब्दुर्रहीम खानखाना की उदारता'[३] शीर्षक कहानियों की रचना की। इनमें खानखाना के स्वभाव, चरित्र एवं आभिजात्य गुणों के साथ उनकी जन्मजात उदारता का प्रभावयुक्त वर्णन हुआ है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इनमें मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म विवेचना तथा स्वाभाविक विकास की स्थिति का अभाव है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इन्होंने अबूतालिब के काव्य-प्रेम की महत्ता का वर्णन किया है। 'शायरों के शाहिनशाह अबूतालिब'[४] शीर्षक कहानी में अबूतालिब के व्यक्तित्व के इस पार्श्व का विश्लेषण हुआ है। यद्यपि वर्णन-शैली तथ्यपरक एवं विवरण प्रधान है तथापि प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व के अंकन में कोई असंगति अथवा सन्तुलनहीनता नहीं है। 'शाहजहाँ'[५] शीर्षक कहानी मुगल-सम्राट के व्यक्तित्व का आकर्षक रूप प्रस्तुत करती है। आचार्य द्विवेदी की इन कहानियों में मनोविज्ञान-सम्मत सूक्ष्म विवेचन का अभाव है। परन्तु मौलिक कहानियों के प्रथम दशक में ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा के सृजन एवं विकास में इनका महत्वपूर्ण योग है। व्यक्तित्व-विश्लेषण के क्षेत्र में इनकी महत्ता इसलिए है कि इनके द्वारा यथार्थ को प्राथमिकता प्राप्त हुई तथा कल्पना का स्थान गौण हुआ। ऐतिहासिक कहानियों की रचना तथा उनके प्रकाशन ने कहानी-सृजन की नवीन दिशा को आलोकित किया है।

(६) **वृन्दावनलाल वर्मा :** 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से वृन्दावनलाल वर्मा की प्रारम्भिक ऐतिहासिक कहानियाँ प्रथम दशक में ही प्रकाश में आने लगीं। इस काल की उनकी तीन कहानियाँ व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। 'राखीबन्द भाई'[६] राजपूत-कुल की नारी के विश्वास तथा निष्ठा को ऐतिहासिक घटनाचक्र के माध्यम से प्रस्तुत करने वाली उत्तम कहानी है। इसमें वचन-रक्षा तथा

---

१. सरस्वती, सन् १९०४, भाग ५, संख्या ३, पृ० ८२।
२ वही, सन् १९११, भाग १२।
३. वही।
४. वही, वर्ष १९११, भाग १२।
५. वही।
६. वही, सन् १९०९, भाग १०, संख्या ९।

कर्त्तव्य-पालन में तत्पर उच्च चारित्र्य-युक्त मुसलमान के व्यक्तित्व का मर्मस्पर्शी अंकन हुआ है। लेखक ने राखी स्वीकार कर भाई के कर्त्तव्य-निर्वाह में तत्पर विजातीय व्यक्ति के सद्भावों का विश्लेषण कर व्यक्तित्व के सन्तुलित एवं सहज निरूपण में सफलता प्राप्त कर ली है।

'तातार और एक वीर राजपूत'[१] वृन्दावनलाल वर्मा की दूसरी ऐसी उल्लेख्य रचना है जिसमें दो अन्य धर्मावलम्बी पात्रों के भाव-संघर्ष की विभिन्न स्थितियों का वर्णन है। इनमें परम्परागत विशेषताओं के साथ ही व्यक्तिगत विलक्षणता तथा उदात्त गुणों का चित्रण हुआ है। 'सफ्रेजिस्ट की पत्नी'[२] इनकी तीसरी विचारणीय कहानी है। इसकी रचना का उद्देश्य नारी-अधिकारों का विश्लेषण है। कहानीकार ने यह व्यक्त करने की चेष्टा की है कि नारी जीवन में सन्तुलन तथा विवेक का महत्वपूर्ण स्थान है। पुरुष वर्ग से समान अधिकारों को हठपूर्वक प्राप्त करने पर भी नारी को सन्तोष एवं सुख की उपलब्धि नही हो सकती। वर्मा जी की कहानियों में विचार तथा वर्णन की कुशलता विद्यमान है, परन्तु पात्रों के व्यक्तित्व के कलात्मक चित्रण एवं सूक्ष्म-विश्लेषण का अभाव है। ऐतिहासिक कहानी-रचना की परम्परा के प्रवर्त्तन तथा विकास में उनकी रचनाओं को गौरवपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

(७) मास्टर भगवानदास, बी० ए० : प्रथम दशक के सामाजिक संस्कारों और परम्पराओं का विश्लेषण प्रस्तुत करने वाली कहानियों के कतिपय उल्लेखनीय लेखकों में मास्टर भगवानदास बी० ए० का प्रमुख स्थान है। इनकी 'प्लेग की-चुड़ैल'[३] शीर्षक कहानी पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से विचारणीय है। इस रचना में आकस्मिक घटना-चक्र के आधार पर त्यागमयी, धैर्यशीला एवं पतिपरायणा नारी के व्यक्तित्व को निरूपित किया गया है। सामाजिक सम्बन्धों के विविध रूप अंकित कर पात्रों के अन्तर की व्याख्या की गयी है। प्लेग से पीड़िता पत्नी का त्याग करने में आशंकाग्रस्त पति को संकोच नहीं होता। पति तथा पुत्र से वियुक्ता और परिस्थितियों के आघात से व्यथिता नारी के मन में विद्वेष का सृजन नहीं होता। वह श्मशान भूमि से चलकर अपने गाँव के निकट पहुँच जाती है। श्वेतवस्त्रावृता नारी को चुड़ैल समझ कर पतिदेव उस पर तमचे का प्रयोग करते है। पुत्र के प्रति माता के वात्सल्य तथा पुत्र का माता के प्रति नैसर्गिक आकर्षण इस स्थल पर कुशलता से अंकित

१. सरस्वती', सन् १९१०, भाग ११, संख्या १०, पृ० ४५७।
२. वही, सन् १९१४, भाग १५, संख्या ५, पृ० ६१४ ६२२।
३. वही, सितम्बर सन् १९०२ भाग ३, संख्या ९, पृ० २०७-२७९।

किया गया है। पति के तमंचे का वार खाली जाता है और साध्वी नारी एक बार नियति के प्रकोप से पुनः बच जाती है।

इस रचना में पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण तथा उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं का विश्लेषण आश्चर्यजनक आकस्मिकता के आधार पर किया गया है। लेखक ने पात्रों के स्वतंत्र अस्तित्व तथा विकास पर अपनी कल्पना तथा घटना-वर्णन की रुचि का अंकुश रखा है अतएव व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वस्थ एवं सन्तुलित रूप इसमें उपलब्ध नहीं है। स्त्रियोचित सद्गुणों और आदर्शों का विभिन्न स्थलों पर समावेश हुआ है और उन्हीं के द्वारा प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व का यत्किंचित विश्लेषण सम्भव हुआ है। कहानीकार ने कहीं-कहीं भावुकतापूर्ण उद्‌गारों को भी प्रस्तुत किया है। व्यक्तित्व के विश्लेषण में वे भी किंचित सहायता प्रदान करते हैं।

(८) **उदयनारायण वाजपेयी :** देश-प्रेम पर आधारित 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' शीर्षक कहानी की रचना कर उदयनारायण वाजपेयी ने एक महत्व-पूर्ण विषय को कहानी रचना के क्षेत्र में प्रतिष्ठित किया।[1] परन्तु पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण अथवा विश्लेषण उनके द्वारा समुचित ढंग से न हो सका। मनोरंजन और घटना-वैचित्र्य का समावेश इस कहानी में भले ही हो गया हो, पात्रों के सजीव एवं सशक्त व्यक्तित्व की अवतारणा की ओर लेखक का ध्यान नहीं गया है। उपदेशात्मकता की प्रधानता ने कहानी की संवेदनशीलता को संकुचित बना दिया है।

(९) **विद्यानाथ शर्मा :** पद्यबद्ध कहानी-रचना की जिस पद्धति का प्रवर्त्तन कवि-वर मैथिलीशरण गुप्त ने किया उसी का अनुकरण विद्यानाथ शर्मा ने अपनी रचनाओं में किया। इनकी दो कहानियाँ 'विद्याविहार'[2] तथा 'कुलीनाथ पाण्डेय'[3] पात्रों की चारित्रगत विशेषताओं के निरूपण के दृष्टिकोण से विचारणीय है। इन कहानियों में उपदेश की प्रधानता है तथा आदर्शों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। 'विद्या-विहार' में अनुभव का महत्व बताया गया है तथा शास्त्रीय ज्ञान को जीवन की सफलता के लिए अपूर्ण सिद्ध किया गया है। विद्वान भी यदि अनुभव-सम्पन्न न हो तो उससे सासारिक कार्य सफलता के साथ सम्पन्न नहीं होंगे यही तथ्य इसमें प्रमाणित किया गया है। गोंडवाना के राजा की असफलता और कठिनाइयाँ उसके व्यक्तित्व के एकांगी-विकास का विश्लेषण करती हैं। यद्यपि इस कहानी में लेखक का ध्यान मुख्य रूप से घटना

---

१. डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, 'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन,' पृ० १३१।

२. 'सरस्वती', मार्च १९०९।

३. वही, मई १९०९।

चक्र के आकर्षण पर ही केन्द्रित है तथापि अनजाने ही कहानी के प्रमुख पात्र का व्यक्तित्व विश्लेषित हो गया है और उसके चरित्रगत गुणावगुण सहज ही प्रकाश में आ गये हैं।

'कुलीनाथ पाण्डे' में कुलीनाथ के दैनिक जीवन का चित्रण किया गया है। तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों के मध्य प्रमुख पात्र की स्वार्थपरता तथा खुशामदी प्रवृत्ति का अंकन किया गया है। खुशामद के बल पर एक सामान्य कुली की स्थिति से उठकर वह राजा के आसन तक पहुँच जाता है। यद्यपि इस रचना में कहानीकार का उद्देश्य पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं है तथापि मुख्य पात्र के व्यक्तित्व की ओर कहानी के विविध प्रसंगों द्वारा महत्वपूर्ण संकेत प्राप्त होते हैं। विद्यानाथ शर्मा की कहानियों का ऐतिहासिक विकासक्रम में प्रारम्भिक प्रयास के रूप में ही उल्लेख करना समीचीन है। पद्यबद्ध कहानियों की परम्परा का विकास एवं प्रसार जिन कारणों से सम्भव न हो सका उनपर विचार किया जा चुका है। विद्यानाथ शर्मा की कहानियों मे कहानी की परम्परागत आदर्शवादी वृत्ति का ही प्राधान्य है।

प्रथम दशक में व्यक्तित्व-विश्लेषण की सामान्य प्रवृत्तियाँ

इस काल की रचनाओं का विवेचन पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से किए जाने पर यह ज्ञात होता है कि 'कहानी' के इस महत्वपूर्ण तत्व को अपेक्षित मान्यता इन कहानियों में प्राप्त न हो सकी। हिन्दी कहानी-साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम का अध्ययन यह संकेत प्रस्तुत करता है कि मौलिक कहानी-रचना के क्षेत्र में इस दशक मे विभिन्न प्रयोग और प्रयत्न होते रहे। घटना अथवा कथानक को आकर्षक बनाने की ओर कहानी-लेखकों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट था। पात्रों के सक्षम व्यक्तित्व की अवतारणा की महत्ता को वे प्रतिष्ठित न कर सके। परिणामतः इस काल की कहानियों में विविधता होते हुए भी पात्रों के व्यक्तित्व का मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण सामान्यतः किसी प्रकार की कहानी मे न हो सका। यद्यपि कहानी-कारों का ध्यान काल्पनिक घटनाओं से हट कर यथार्थ जगत की ओर केन्द्रित हो रहा था और इस काल की कहानियों मे समाज तथा परिवार की विभिन्न समस्याएँ भी अभिव्यक्ति प्राप्त कर रही थी, तथापि पात्रों के स्व-सत्तायुक्त व्यक्तित्व रचना के प्रति वे उदासीन ही बने रहे।

काल्पनिक कथानक का मोह त्याग कर जब कहानीकारो ने अपने चतुर्दिक बिखरे विषयो और समस्याओं को कहानी में प्रतिष्ठित करने का साहस दिखाया, तब स्वाभाविक था कि ऐसे पात्र कहानी के दृश्य-पट पर उपस्थित हों जिनका हमारे जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है और हम जिनसे सुपरिचित हैं। यथार्थ-जगत के निकट पहुँचने की

प्रयत्नशीलता इस काल के अधिकांश कहानीकारों में परिलक्षित होती है। समाज एवं परिवार की समस्याओं के साथ ही पात्रगत विशेषताओं का विवेचन उनके व्यक्तित्व को यत्किञ्चित विश्लेषित करने लगा। यद्यपि आदर्शों की स्थापना तथा कथावस्तु के प्रति सर्वाधिक आकर्षण ने कहानीकारों को पात्रों के चरित्र की गहराई में प्रवेश करने और उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का अवसर नहीं दिया, तथापि पात्रों के विश्वसनीय बाह्य स्वरूप वर्णन और प्रत्यक्ष प्रवृत्तियों की व्याख्या में यथार्थता को महत्व देकर इस दशक के कहानीकारों ने पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की आधारभूमि निर्मित कर दी। घटनाओं के साथ भावों और विचारों का समन्वय भी कतिपय कुशल कहानीकारों ने किया। इनकी रचनाओं में हिन्दी कहानी की स्वस्थ एवं सन्तुलित विकास-सम्भावना निहित थी। विभिन्न विषयों के समायोजन की जो प्रवृत्तियाँ इस दशक में दृष्टिगत होती हैं, यदि उसके भिन्न रूपों के आधार पर इस काल की कहानियों का वर्गीकरण किया जाय तो उनका रूप इस प्रकार होगा :

(१) प्रेमप्रधान कहानियाँ और मनोरंजनयुक्त कहानियाँ,
(२) ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित कहानियाँ,
(३) जासूसी साहस-प्रधान कहानियाँ,
(४) सामाजिक एवं पारिवारिक कहानियाँ,
(५) उपदेशप्रद कहानियाँ (पद्यबद्ध)।

(१) प्रेम तथा मनोरंजनयुक्त कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण : इस दशक के कतिपय प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में मुख्य वर्ण्य-वस्तु के रूप में प्रेम और मनोरंजन को मान्यता प्राप्त हुई। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पार्वती नन्दन एवं गिरिजादत्त वाजपेयी की उल्लेखनीय रचनाएँ इसी विशेषता से संयुक्त हैं। इन कहानियों में घटना की रोचकता की ओर लेखकों का ध्यान विशेषत: आकृष्ट है। पात्रों के व्यक्तित्व को सक्षम एवं गतिशील रूप देने के स्थान पर इनमें आदर्शों के चित्रण का आग्रह विद्यमान है। यह प्रवृत्ति कहानीकार को व्यक्तित्व विश्लेषण की गहराई में उतरने और उसे कलात्मक रूप देने का अवसर नहीं देती। संयोग और आकस्मिकता के प्रभाव ने भी पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं के उभरने का अवसर नहीं दिया है। आकस्मिकता का यह मोह आचार्य शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' शीर्षक कहानी में उसी रूप में विद्यमान है जिस रूप में पंडित किशोरी लाल गोस्वामी की रचना 'इन्दुमती' में। सन्तोष की बात इतनी ही है कि इस वर्ग के कहानीकारों ने यथार्थजगत पर अपनी कहानियों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। काल्पनिक और असम्भव कथानक के स्थान पर परिचित, सम्भव, विश्वसनीय कथावस्तु को वरीयता दी गयी है। जहाँ कल्पना और चमत्कार का समन्वय है वहाँ

भी असम्भाव्य स्थितियों से बचने का प्रयास किया गया है। प्रेम प्रधान कहानियो में प्रेम के व्यापक और आदर्श रूप की व्यजना हुई है और सम्बद्ध पात्रों के त्याग तथा कष्ट-सहिष्णुता जैसे उत्कृष्ट गुणों का चित्रण हुआ है। मनोरंजन प्रधान कहानियो में वैचित्र्य तथा विस्मय को प्रधानता प्राप्त है। उदाहरणार्थ पार्वती नन्दन की 'तार की बीबी' और 'चस्पी की बिबिया' शीर्षक कहानियाँ द्रष्टव्य हैं। इनमे पात्रों के व्यक्तित्व का सजीव अंकन अथवा समुचित विश्लेषण नहीं हो सका है।

(२) ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण प्रथम दशक के प्रमुख ऐतिहासिक कहानीकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और वृन्दावन लाल वर्मा है। इनकी कहानियो के विवेचन के प्रसंग में हमने देखा है कि आदर्श रक्षण और उत्सर्ग की भावना को इनकी रचनाओं मे प्रधान स्थान प्राप्त है। आचार्य द्विवेदी की रचनाओ मे इतिहास-विश्रुत पात्रों के चरित्र की उदात्त विशेषताएँ चित्रित हुई है। अब्दुर्रहीम खानखाना की उदारता तथा सौजन्य के साथ ही उनकी अद्‌भुत दानशीलता को भी उनकी 'खानखाना और सुमेरु पर्वत' तथा 'मिर्जा अब्दुर्रहीम खानखाना' शीर्षक कहानियों में वर्ण्यवस्तु के रूप मे ग्रहण किया गया है। वृन्दावनलाल वर्मा की प्रारम्भिक कहानियों का प्रकाशन ऐतिहासिक कहानी-लेखन की स्वस्थ परम्परा का द्योतक है। उनकी कहानियों में पुरुष एवं नारी पात्रो के व्यक्तित्व का अंकन समान अभिरुचि के साथ किया गया है। त्याग, शौर्य, उदारता, कर्त्तव्य-पालन एव वचन-निर्वाह के आदर्श गुणों का चित्रण 'राखीबन्द भाई' तथा 'तातार और एक राजपूत' शीर्षक कहानियो मे हुआ है। यद्यपि कहानीकार ने पात्रो के विशिष्ट गुणो की महत्ता को प्रमुख स्थान देकर उनके विकास की विभिन्न स्थितियाँ कुशलता से निर्मित की है, तथापि पात्रो के व्यक्तित्व को स्वयं गतिशील होने अथवा स्वाभाविक रूप से विश्लेषित होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है। कहानीकार के निर्देश पर पात्र यन्त्रचालित व्यक्ति की भांति कार्य करते है। आदर्शो के पूर्वाग्रह ने पात्रों को निश्चित ढर्रे पर चलने के लिये विवश कर दिया है। इन कहानियों की रचना वर्णनात्मक शैली में हुई है और संवाद-रचना का प्रायः अभाव है। अतएव पात्रों को अपने मनोभावों को व्यक्त करने का अवसर भी प्राप्त न हो सका है। ऐतिहासिक कहानियो की रचना की ओर समकालीन परवर्ती कहानीकारो का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय इस वर्ग के कहानी-लेखकों को अवश्य प्राप्त है।

(३) जासूसी तथा साहस-प्रधान कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण : गोपालराम गहमरी की रचनाओं के क्रमिक विकास के प्रकरण में हमने यह देखा है कि कौतूहल-पूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत कर इन्होंने पाठकों के मनोरंजनार्थ छोटी और बड़ी आकार की जासूसी कहानियों की रचना की है। मनोरंजन के साथ ही उपदेश देने की प्रवृत्ति

इनकी रचनाओं में विद्यमान है। जासूसों के व्यक्तित्व का निरूपण इनकी कहानियों में विस्तारपूर्वक हुआ है। गुप्त अपराधों का पता लगाने में वे अपनी बुद्धि तथा कार्य-कुशलता का परिचय देते हैं और निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य में जुटे रहते हैं। जासूसों के व्यक्तित्व को आदर्शों एवं उदात्त गुणों से संयुक्त करने की प्रवृत्ति इन कहानियों में परिलक्षित होती है। प्रतिद्वन्दी अपराधी-वर्ग से भी ऐसे आततायियों को पात्रों के रूप में ग्रहण किया गया है जिनके व्यक्तित्व का स्वरूप जासूसों से सर्वथा भिन्न है। उनकी शक्ति, योजना तथा गुण-अवगुणों का वर्णन कर कहानीकार ने उनके व्यक्तित्व को निरूपित करने की चेष्टा की है। कहानियों के प्रारंभ में पात्रों का परिचय मनोरंजक एवं कौतूहल-प्रद शैली में दिया गया है। पात्रों की आकृति तथा वेष-भूषा के वर्णन की ओर कहानीकार का कोई आग्रह नहीं प्रतीत होता।

विविध कार्यों के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व से सम्बद्ध गुणावगुणों के चित्रण को स्वाभाविक रूप देने का प्रयास इन रचनाओं में अन्य समकालीन कहानियों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और कलात्मक है। कहीं-कहीं पात्रों के संवाद भी उनके तथा अन्य पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण में सहायक सिद्ध होते हैं। अन्य पात्रों की आलोचनात्मक टिप्पणियों से भी पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित करने में सहायता ली गयी है। 'तीन तहकीकात' की कहानियों में संवाद-तत्व की ये विशेषताएँ विशेष रूप से संपुष्ट हुई है। निजामशाह की साहस-प्रधान कहानियों में तदनुकूल तथ्यों का वर्णन है। पात्रों के साहस, धैर्य तथा तत्काल बुद्धि के विश्लेषण द्वारा उनका व्यक्तित्व निरूपित किया गया है। कल्पना और भावुकता से हट कर यथार्थ के वर्णन द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को विश्वसनीय आधारभूमि पर प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न इस वर्ग की कहानियों की मान्य एवं महत्वपूर्ण विशेषता है। जासूसी कहानियों में विवेक-शक्ति तथा अन्तर्द्वन्द्व के वर्णन का जो आरम्भिक प्रयास है वह कहानी में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का पूर्वाभास प्रस्तुत करता है।

(४) **सामाजिक कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण** : संख्या की दृष्टि से प्रथम दशक में सामाजिक कहानियाँ अधिक नहीं लिखी गयी, परन्तु जो रचनाएँ प्रकाश में आईं उनमें अभिव्यक्ति की कुशलता तथा पात्रों के स्वाभाविक व्यक्तित्व-निरूपण की ओर अपेक्षाकृत अन्य वर्ग की कहानियों के अधिक ध्यान दिया गया है। 'दुलाई वाली' की रचना यथार्थ जीवन पर आधारित एक मनोरंजक प्रसंग पर हुई है। 'प्लेग की चुड़ैल' में भी पात्रों के गुणावगुणों तथा अन्तर्द्वन्द्व की स्थितियों का विश्लेषण कर कहानीकार ने उनके व्यक्तित्व को अंकित करने की चेष्टा की है। परिवार तथा समाज की विभिन्न समस्याओं को आधार रूप में ग्रहण कर जाने-पहचाने पात्रों के चरित्र का अंकन विशेष रुचि के साथ इस प्रकार की कहानियों में किया गया। यद्यपि घटना के वर्णन को

इनमें प्रधानता दी गयी है तथापि पात्रों के चरित्रांकन को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा गया है। 'प्लेग की चुड़ैल' शीर्षक कहानी मे नारी पात्र के व्यक्तित्व का उसके स्वगत कथन द्वारा भावुकतापूर्ण विश्लेषण किया गया है। पात्रो के मनोभावो को व्यक्त करनेवाली सहज स्वाभाविक भाषा का प्रयोग कतिपय कहानियों को रोचक तथा कलात्मक स्वरूप प्रदान करता है। 'दुलाई वाली' शीर्षक कहानी मे मिर्जापुर के समीप बोली जानेवाली लोकभाषा की शब्दावली का प्रयोग पात्रगत विशेषताओं को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होता है। वर्णनात्मक पद्धति को ही इस वर्ग की कहानियो मे अपनाया गया है। अधिकांश स्थलों पर कहानीकार में वक्ता और व्याख्याता होने की प्रवृत्ति से कहानी संरचना में व्याघात उत्पन्न होता है। प्रयोग के रूप मे इन कहानियो का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि इन्हीं का विकसित रूप आगामी दशकों में कहानी-साहित्य में सर्वा- धिक प्रसार और प्रचार पा सका।

(५) **उपदेशात्मक कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण :** प्रथम दशक में गद्य एवं पद्य के माध्यम से उपदेशात्मक कहानियों की रचना की ओर जो प्रमुख कहानी-लेखक एवं साहित्यकार प्रवृत्त हुए उनकी प्रवृत्तियों का विवेचन करते हुए हमने यह देखा है कि उनकी रचनाओं में उपदेश अथवा शिक्षा की प्रतिष्ठा को ही प्रमुख उद्देश्य के रूप में प्राथमिकता दी गयी थी। पद्यबद्ध कहानियों का विशेष प्रसार न हो सका, क्योंकि उनमे सहज एवं कलात्मक कहानी की प्राणवत्ता का अभाव था। साधारण घटनाओं को मनोरंजक रूप देकर उपदेशात्मक कहानियों के आवरण में उपस्थित किया गया, अतएव पात्रों के व्यक्तित्व के सन्तुलनयुक्त कलात्मक विश्लेषण का इनमे प्रश्न ही नहीं उठता। भाषा की कृत्रिमता भी पात्रों के भावो की सहज अभिव्यक्ति मे बाधा उत्पन्न करती है। 'कुलीनाथ पाण्डे' जैसी कहानियों मे जीवन के यथार्थ का उत्कृष्ट विश्लेषण सम्भव था; परन्तु कहानीकार का ध्यान उपदेश में ही अटक गया है और वह व्याख्याता बन गया है। घटना की रोचकता को बनाये रखने की ओर भी इन कहानियो में विशेष आग्रह प्रदर्शित किया गया है, परन्तु पात्रों के व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश करने की क्षमता इनमे दृष्टिगत नहीं होती। पद्यबद्ध कहानियों मे संवाद-योजना अवश्य ही उत्कृष्ट है और उसके द्वारा पात्रों के विभिन्न व्यक्तिगत गुणो पर प्रकाश पड़ता है। परन्तु इस शैली का विकास आगे न हो सका, और केवल ऐतिहासिक प्रयोग के रूप में इसका महत्व सीमित रह गया। वीरता, त्याग और देश-प्रेम को आधार मान कर जिन उपदेशप्रद कहानियों की रचना की गयी उनमें विषय वस्तु का चयन बड़े उत्साह से किया गया, परन्तु उस गृहीत विषय का सम्यक् निर्वाह न हो सका और सम्बन्धित पात्रो का व्यक्तित्व उपदेशात्मकता के दुर्वह आवरण में ऐसा आवृत्त हुआ कि सम्पूर्ण रचना की शिथिलता तथा बोझिलता में दबा ही रह गया।

६

द्वितीय युग : विकास काल १९११ से १९३६ तक

व्यक्तित्व विश्लेषण का स्वरूप

पूर्व विवेचन में हमने देखा है कि बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हिन्दी कहानी का स्वरूप प्रयोग के पथ से अग्रसर हुआ और पात्रों के व्यक्तित्व के निरूपण को विशेष महत्व प्राप्त न हो सका। यद्यपि कतिपय कहानीकारों ने पात्रों के चरित्रगत वैशिष्ट्य को यथार्थ की संवेदना के साथ व्यक्त किया, तथापि व्यक्तित्व के सन्तुलित तथा प्रभविष्णु रूप को प्रस्तुत करने की ओर उनका ध्यान नहीं गया। घटना की विचित्रता अथवा कथानक के सुगठन की ओर वे अवश्य सचेष्ट रहे। 'ग्यारह वर्ष का समय', 'दुलाई वाली' और 'इन्दुमती' निस्सन्देह उत्कृष्ट मौलिक कहानियाँ है और प्रथम दशक की प्रतिनिधि रचनाएँ है, परन्तु व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने की कलात्मक चेष्टा का उनमें अभाव है।

सन् १९११ से हिन्दी कहानियों के विकास का दूसरा युग आरम्भ होता है, जिसका विस्तार सन् १९३६ तक मानना समीचीन है, क्योंकि इस युग के सर्व-प्रमुख कथाकार द्वय सर्वश्री प्रसाद तथा प्रेमचन्द की कहानियाँ सन् १९३६ तक अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित होती रही, और उनकी प्रेरणा से अन्य उल्लेखनीय कहानीकार उन्हीं की रचना-पद्धति का अनुसरण करते रहे। हिन्दी कहानी-साहित्य के सशक्त, भावुक, कल्पनाशील तथा कुशल कहानीकारों की विविध रचनाओं का प्रकाशन इस युग मे हुआ है। कहानी के स्वरूप, कला-विधान, उद्देश्य तथा प्रभाव की दृष्टि से उसके अनेक रूपों की अभिव्यक्ति इस काल में हुई है। प्रसाद और प्रेमचन्द जैसे विशिष्ट कहानी-कारों की अधिकांश रचनाएँ इसी युग मे प्रकाशित हुई। उनकी प्रभाव-सीमा में आने-वाले या स्वतंत्र कहानी-रचना में प्रवृत्ति अनेक उत्कृष्ट कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का प्रकाशन भी इसी समय हुआ। इस काल के प्रमुख कहानीकारों 'प्रेमचन्द', 'प्रसाद' विश्वम्भरनाथ जिज्जा, जी० पी० श्रीवास्तव, राजा राधिकारमण सिंह, विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, ज्वालादत्त शर्मा, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, चतुरसेन शास्त्री, पदुम-लाल पुन्नालाल बख्शी, रायकृष्णदास, चण्डी प्रसाद हृदयेश, गोविन्द बल्लभ पन्त,

सुदर्शन, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', विनोद शंकर व्यास, भगवती प्रसाद वाजपेयी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' एवं उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का नाम अधिक महत्वपूर्ण है।

पात्रों के व्यक्तित्व को उनकी चरित्रगत विशेषताओं के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास इस युग की कहानियों का प्रमुख लक्षण है। यद्यपि प्रत्येक कहानीकार की अपनी स्वतंत्र सत्ता तथा निजी विशेषताएँ हैं, और उन्हें किसी एक प्रवृत्ति या रचना-शैली की सीमा में आबद्ध करना सम्भव नहीं है, तथापि यह सामान्य प्रवृत्ति प्रायः सभी कहानियों में देखी जा सकती है, कि पात्रों के व्यक्तित्व को सजीव बनाने की चेष्टा अधिकांश रचनाओं में विद्यमान है। इस युग मे घटनाओं की प्रधानता को अस्वीकार कर पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व की सशक्त अभिव्यक्ति को अपना उद्देश्य मानने वाले कहानीकार विचित्र और असामान्य घटनाओं के मोह से मुक्त होने का प्रयास करने लगे। उनकी कृतियों की इस विशेष प्रवृत्ति पर विचार करते हुए डा० ब्रह्मदत्त शर्मा ने लिखा है, "विकास-काल की कहानियो में किसी आकर्षक अथवा कुतूहलपूर्ण कथा-वस्तु को उपस्थित न करके मानव चरित्र का भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के बीच उद्घाटन किया गया। मानव चरित्र का यह उद्घाटन पात्रों की वैयक्तिक विशेषताओं के आधार पर तो किया ही गया, साथ ही उसका सम्बन्ध समाज के व्यापक पक्ष से भी लगाया गया। जनता की चित्तवृत्ति का प्रतिविम्ब उतारने वाले कहानीकारों ने सामाजिक जीवन के जिन भिन्न-भिन्न रूपो की पृष्ठभूमि में अपने पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन किया उनका देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा अन्य सब प्रकार की परिस्थितियों से घनिष्ठ सम्बन्ध था।"[1]

इस युग के सामाजिक वातावरण ने कहानीकार को अनेक वर्ग के पात्र प्रदान कर उसकी कृति को यथार्थ पर प्रतिष्ठित होने का अवसर दिया। राजनीतिक जागरण तथा आन्दोलनों ने परम्परागत मान्यताओं तथा शासन के प्रति विद्रोहात्मक चेतना का विस्तार किया। फलतः समाज में सुधार, आन्दोलन, परिवर्तन तथा राष्ट्रीय आदर्शों की प्रेरणा लेकर कहानी-साहित्य में पात्रों का व्यक्तित्व-सम्पन्न रूप प्रतिष्ठित किया जाने लगा। महात्मा गाँधी के राष्ट्र-व्यापी प्रभाव ने देश में जो जागृति प्रसूत की उससे हिन्दी कहानीकारों ने भी प्रेरणा ली। कहानी में असहयोग-आन्दोलन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, विदेशी-अत्याचार का विरोध, अछूतोद्धार, पर्दा-प्रथा-बहिष्कार आदि विषय ग्रहण किये। उनके आधार पर रचित कथावस्तु में पात्रों के प्रतिनिधि, सशक्त तथा प्रभावपूर्ण चरित्र को स्थान दिया गया।

---

१ डा० ब्रह्मदत्त शर्मा—"हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन", पृ० १३८।

समाज की विभिन्न स्थितियों तथा समस्याओं से जिन पात्रों का संबंध कहानियों में वर्णित किया गया, वे अपने स्वभाव, कार्य, व्यवहार, विचार तथा प्रभाव द्वारा तत्कालीन परिवर्तनशील सामाजिक अवस्था का यथार्थ रूप प्रस्तुत करते हैं। प्रतिनिधि पात्रों के रूप में जागृत नवयुवक, उत्साही वृद्ध, चेतना के प्रकाश में आँखें खोलने वाले बालक तथा प्रगति के पथ पर साहस के साथ चरण रखने वाली नारी के व्यक्तित्व को समान अभिरुचि के साथ प्रस्तुत किया गया। अनेक वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र देश-सेवक, राजकीय कर्मचारी, पुलिस अधिकारी, जज, वकील, बैरिस्टर, नेता, डाक्टर, ठेकेदार, इंजीनियर, किसान, मजदूर, महाजन आदि के रूपों में कहानी के दृश्यपट पर उपस्थित हुए। कहानी कला के विकास का अध्ययन करने पर उसके अन्य तत्वों का सम्यक् विकास भी इस युग मे दृष्टिगत होता है, परन्तु चरित्रगत विशेषताओं के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने का प्रयास सबसे अधिक महत्वपूर्ण रूप में इस काल की कहानियों में प्राप्त होता है। व्यक्तित्व का संबंध सामाजिक परिस्थितियों से जोड़ कर इस युग के कहानियों ने उसके प्रभविष्णु रूप को अंकित किया है। प्रथम दशक की कहानियों की तुलना में इस काल के कहानीकारों की रचनाओं में चरित्र के सूक्ष्म विवेचन का प्रयत्न अधिक सप्राण तथा मनोवैज्ञानिक है।

इस युग के कहानीकारों मे अपनी विशिष्ट कहानियों के कारण 'प्रेमचन्द' और 'प्रसाद' विशेष महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। इनके रचना-कौशल ने अन्य कहानीकारों को प्रभावित किया है तथा उनकी कहानियों के स्वरूप, उद्देश्य तथा शैली के निर्धारण में योगदान दिया है। इन दो महान कहानीकारों की कहानी रचना-शैली का अनुकरण, अनुगमन तथा प्रयोग कर अनेक कथाकारों ने कहानी-रचना के माध्यम से यश अर्जित किया है। इस प्रकार इनके प्रभाव-क्षेत्र मे आने-वाले कहानीकारों द्वारा दो संस्थानों का निर्माण हुआ है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से प्रसाद-संस्थान के कहानीकारों मे भावुकता, कल्पना, आदर्श, त्याग तथा कर्त्तव्य-पालन की प्रवृत्तियो के वर्णन की विशेषता सामान्यतः सर्वत्र प्राप्त होती है। प्रेमचन्द-संस्थान के कहानीकार यथार्थ जीवन की कठिन समस्याओं, परिवर्तनशील सामाजिक स्थितियों, पारिवारिक उलझनों तथा राष्ट्रीय जागरण की प्रवृत्तियों के आलोक में पात्रों के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा अपनी कहानियों मे करते हैं।

प्रसाद तथा प्रेमचन्द अपनी भावगत तथा शिल्पगत प्रवृत्तियों के कारण कहानी-रचना के क्षेत्र में एक दूसरे से भिन्न हैं, तथा उनके प्रभाव-क्षेत्र के विस्तार मे भी अन्तर है। प्रसाद की भावुकता, कल्पनाशीलता, काव्यमय शैली तथा उदात्त आदर्शों का अनुकरण कर अनेक कहानीकारों ने उसी ढंग की रचनाओं को प्रस्तुत करने का साहस किया। परन्तु सफलता के साथ उनकी विशेषताओं को आत्मसात

कर उन्हें कहानी-रचना मे प्रयुक्त करने में बहुत कम लेखकों को सिद्धि प्राप्त हुई। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परम्परा के प्रतीक थे। उनकी सहज स्वाभाविक वर्णनशैली, जीवन के प्रेरक प्रश्न, समाज, देश, किसान-मजदूर तथा अन्य प्रत्यक्ष वर्ण्य-विषयों के निरूपण ने कहानी-रचना की ओर बहुसंख्यक लेखकों को प्रेरित किया। प्रसाद-संस्थान की अपेक्षा इस ओर अधिक कहानीकार आकृष्ट हुए। व्यक्तित्व विश्लेषण की दृष्टि से प्रसाद-संस्थान के कहानीकारो की रचनाओं में भावुकता और प्रेम को प्रधानता दी गयी है। इन्ही के आधार पर व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित किया गया तथा इन्हीं को उद्देश्य के रूप में भी ग्रहण किया गया है। पुरुष पात्रों में विवेकशीलता, दृढता तथा त्याग की वृत्ति का प्राधान्य एवं स्त्री पात्रों मे सौन्दर्य अन्तर्द्वन्द्व, बलिदान की भावना तथा मर्यादा-रक्षण की प्रवृत्तियाँ समाविष्ट की गयी हैं। प्रेमचन्द सस्थान के कहानीकारों ने व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष जीवन की भूमि पर प्रतिष्ठित किया तथा उसके विविध पार्श्वों का विवेचन किया है। तत्कालीन समाज से व्यक्तित्व को सम्बद्ध कर उसके सहज-रूप को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

प्रसाद जी ने भावमूलक आदर्शवादी कहानी-रचना का प्रवर्त्तन कर कई कुशल एव भाव प्रवण कहानीकारों का ध्यान इस शैली की ओर आकृष्ट किया। पात्रो के चरित्र को प्रधानता देने वाली इस वर्ग की अधिकांश कहानियों में भाषा तथा संवाद-तत्व को सतर्कता से संयोजित कर उनके सहारे पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों के प्रवर्त्तक यशस्वी कथाकार श्री प्रेमचन्द की प्रभावपरिधि मे कई सुयोग्य एवं सशक्त कहानी लेखक आये। जीवन का यथार्थ अपने नीतिमूलक आधारभूमि पर अधिष्ठित होकर पात्रों के व्यक्तित्व का परिचालक तत्व बन गया। इन दो प्रमुख सस्थानों के अतिरिक्त कतिपय अन्य प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर इस युग में अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ लिखी गयीं। पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से उन रचनाओं का और साथ ही उनसे सम्बद्ध कहानी लेखकों का विशिष्ट महत्व है। अतएव प्रस्तुत प्रकरण में आवश्यक है कि सामान्य प्रवृत्तियों के आधार पर उनको विभिन्न वर्गों में विभाजित कर उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण की स्थिति पर विचार किया जाय। यद्यपि एक ही कहानी-लेखक की कई प्रकार की कहानियों के कारण उन्हे एक ही वर्ग का मान लेने में व्यावहारिक कठिनाई भी है, तथापि प्रधान रचना-प्रवृत्ति एवं विश्लेषण-शैली को ध्यान में रखकर सन् १६११ से सन् १६३० तक की कहानियों एवं सम्बन्धित कहानी-लेखकों का वर्गीकरण इस प्रकार उपयुक्त है :

(१) भावमूलक आदर्शवादी कहानियाँ :

मुख्य कहानीकार—सर्वश्री जयशंकर प्रसाद, राजा राधिकारमण सिंह, विनोदशंकर व्यास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

(२) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियाँ :
मुख्य कहानीकार—सर्वश्री प्रेमचन्द, विश्वम्भरनाथ जिज्जा,, ज्वालादत्त शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सुदर्शन, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', उपेन्द्रनाथ 'अश्क'।

(३) भावमूलक यथार्थवादी कहानियाँ :
मुख्य कहानीकार—सर्वश्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, चतुरसेन शास्त्री।

(४) मनोवैज्ञानिक विश्लेषण-प्रधान यथार्थवादी कहानियाँ :
मुख्य कहानी लेखक—सर्वश्री भगवती प्रसाद बाजपेयी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

(५) प्रतीकवादी कहानियाँ :
मुख्य कहानी-लेखक—सर्वश्री जयशंकर प्रसाद, रायकृष्णदास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', सुदर्शन।

(६) प्राकृतवादी कहानियाँ :
मुख्य कहानी-लेखक—सर्वश्री पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', चतुरसेन शास्त्री, कृष्णाकान्त मालवीय।

(७) चरित्र-विश्लेषण-प्रधान हास्यपरक कहानियाँ :
मुख्य कहानी-लेखक : सर्वश्री जी० पी० श्रीवास्तव, प्रेमचन्द, विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'।

उपर्युक्त वर्गीकरण में इस युग के समस्त कहानीकारों और उनकी कहानियाँ समाविष्ट हो जाती हैं। पात्रों के चरित्र की प्रधानता प्रायः सभी कहानियों में परिलक्षित होती है। उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में पृथक् उद्देश्य को ध्यान में रख कर किया गया है। सामाजिक वातावरण तथा राजनीतिक आन्दोलन का स्पष्ट प्रभाव पात्रों के व्यक्तित्व पर अंकित है। भारतीय जनता जिन राष्ट्रीय आदर्शों से निरन्तर प्रेरणा प्राप्त कर विदेशी शासन के प्रति विद्रोहिणी हो रही थी, उनकी समायोजना द्वारा इस युग की कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व की रचना की गई। साथ ही सामाजिक और नैतिक विषयों से सम्बन्धित नवीन सिद्धान्तों को भी कहानी के माध्यम से व्यक्त किया गया। उपदेश और आदर्शों की ओर उन्मुख होते हुए भी प्रथम दशक की अपेक्षा इस काल के कहानीकारों की रचनाओं में पात्रों के व्यक्तित्व का सशक्त और प्रभावपूर्ण विश्लेषण हुआ है।

कालक्रम को ध्यान में रखकर विवेचन करने पर प्रसाद-संस्थान के भावमूलक आदर्शवादी परम्परा के कहानीकारों की कृतियों एवं उनमें पात्रों के

व्यक्तित्व-विश्लेषण की स्थितियों का विवेचन भी इसी तारतम्य में करना उपयुक्त होगा।

(१) श्री जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण.
'इन्दु' मासिक-पत्र के माध्यम से अपनी मौलिक कहानियों के साथ प्रसाद जी का आगमन हिन्दी कहानियों के क्षेत्र में एक नवीन शैली तथा भावधारा के प्रवर्त्तक के श्रेय के साथ हुआ। सन् १९११ में 'ग्राम' शीर्षक उनकी प्रथम 'कहानी इन्दु' में प्रकाशित हुई। तब से सन् १९३७ तक वे अविच्छिन्न रूप से कहानी-लेखन का कार्य करते रहे। 'इन्दु' के ५ वर्षों के अंकों में प्रसाद की कई एक विशिष्ट प्रारम्भिक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। सन् १९१२ में तब तक की प्रकाशित पाँच कहानियों का संग्रह 'छाया' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसके द्वितीय संस्करण मे—जो सन् १९१८ में प्रकाशित हुआ—छै कहानियाँ और बढ़ा दी गयी। इसके अतिरिक्त प्रसाद की उत्तरकालीन कहानियों के संकलन समय-समय पर प्रकाशित होते रहे। आकाश-दीप, आँधी और इन्द्रजाल इनकी कहानियों के संकलन है। कालक्रम की दृष्टि से इनकी प्रथम कहानी 'ग्राम' तथा अंतिम कहानो 'सालवती' है।

प्रसाद जी की कहानियो की पूर्ण संख्या ६९ है। प्रायः सभी कहानियो मे भावुकता तथा आदर्श की प्रधानता है। पात्रों के व्यक्तित्व को उसके शारीरिक-सौंदर्य, कल्पनागत वैशिष्ट्य, उदात्त विचार, दृढ़निश्चय तथा विभिन्न क्रियाओं द्वारा निरूपित किया गया है। व्यक्तित्व-विश्लेषण के दृष्टिकोण से उनकी कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार होगा :

(१) ऐतिहासिक तथा पौराणिक व्यक्तित्व :
कहानियाँ—आकाशदीप, आँधी, चक्रवर्त्ती का स्तम्भ, दासी, पुरस्कार, ममता, स्वर्ग के खण्डहर में, नूरी, गुंडा, देवरथ, सालवती, चित्रमंदिर।

(२) धार्मिक व्यक्तित्व :
कहानी—देवदासी :

(३) रहस्यमय व्यक्तित्व :
कहानियाँ—उस पार का योगी, खण्डहर की लिपि, प्रलय, कला, ज्योतिष्मती, रमला।

(४) सामाजिकता तथा आदर्शमूलक व्यक्तित्व :
कहानियाँ—अघोरी का मोह, गुदड़ी में लाल, गूदड़ साईं, पाप की पराजय, सहयोग, पत्थर की पुकार, कलावती की शिक्षा, दुखिया, आकाश दीप, भिखारिन, सुनहला साँप, हिमालय का पथिक, प्रतिध्वनि,

समुद्र संतरण, वैरागी, वनजारा, चूड़ीवाली, प्रणयचिन्ह, अप-
राधी, रूप की छाया, इन्द्रजाल।

(२) **प्रसाद की कहानियों का रचनाक्रम एवं उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण :** सन् १९११ से १९२६ तक प्रसाद की कहानी-रचना के प्रथम युग का विस्तार माना जा सकता है। उनकी कहानियों के दो संकलन इस युग मे प्रकाश में आये। सन् १९१२ मे 'छाया' शीर्षक संकलन का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें 'इन्दु' में प्रकाशित पाँच कहानियाँ संग्रहीत हैं। सन् १९१८ में 'छाया' का दूसरा सस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें छः कहानियाँ और जोड़ दी गयी। प्रथम संस्करण मे जो कहानियाँ संग्रहीत थी, उनके शीर्षक हैं, 'तानसेन', 'मन्दा', 'ग्राम', 'रसिया बालम' और 'मदन मृणालिनी'। द्वितीय संस्करण (सन् १९१८) में 'शरणागत', 'सिकन्दर की शपथ', 'अशोक', 'गुलाम', 'जहाँनारा' और 'चितौर-उद्धार' शीर्षक कहानियाँ सम्मिलित की गयी।

सन् १९२६ तक की प्रसाद की कहानियो का दूसरा संस्करण वर्ष सन् १९२६ मे ही 'प्रतिध्वनि' के नाम से प्रकाशित हुआ। 'प्रतिध्वनि' में संकलित कहानियो के शीर्षक हैं— 'प्रसाद', 'गूदड़साईं', 'गूदड़ी में लाल', 'अघोरी का मोह', 'पाप की पराजय', 'सहयोग', 'पत्थर की पुकार', 'उस पार का योगी', 'करुणा की विजय', 'खण्डहर की लिपि', 'कलावती की शिक्षा', 'चक्रवर्ती का स्तम्भ', 'दुखिया', 'प्रतिभा' और 'प्रलय'।

इन कहानियों में समवेदना, चिन्तनशीलता, प्रेम, करुणा, वीरता, प्रतिशोध आदि मानवीय वृत्तियों के आधार पर कथावस्तु की रचना हुई है। व्यक्तित्व निरूपण की प्रवृत्तियो पर विचार करने से ज्ञात होता है कि 'छाया' के प्रथम संस्करण की कहानियो में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का मुख्य आधार प्रेम की अभिव्यंजना ही है। समुचित वातावरण में पात्रों के प्रेम-भाव के विकास के लिये कथावस्तु को भावप्रवण काव्यमय शैली से अलंकृत तथा सरसता-युक्त बनाया गया है। इतिहास-विश्रुत पात्र 'तानसेन' के चरित्र को प्रतिष्ठित कर लेखक ने एक ओर अपनी कल्पनाशक्ति का परिचय दिया है तो दूसरी ओर सरस भावाभिव्यक्ति का भी निदर्शन प्रस्तुत किया है। त्याग, साहस तथा बलिदान की भावना से ओतप्रोत नारी व्यक्तित्व को आधार-रूप में ग्रहण कर 'चन्दा' शीर्षक कहानी की रचना की गयी है। 'ग्राम' प्रसाद की एक बहु-चर्चित कहानी है जिसमें पात्रगत विशेषताओं को प्रभावशाली रूप मे अंकित कर व्य-क्तित्व-निरूपण का प्रयास किया गया है। 'रसिया बालम' भावुकता, कल्पनाशीलता और प्रेम की व्यंजना पर आधारित रचना है, जिसमें वासना तथा सात्विक स्नेह के संघर्ष को पात्रगत विशेषता के रूप में अंकित किया गया है। 'मदन-मृणालिनी' शीर्षक कहानी में प्रेम तथा अन्तर्द्वन्द्व को वर्ण्यवस्तु के रूप में ग्रहण किया गया है।

'मदन' के रूप में एक चिन्तनशील भावुक व्यक्तित्व को प्रसाद ने कहानी के पटल पर प्रस्तुत किया है।

'छाया' के द्वितीय संस्करण में जो कहानियाँ प्रकाशित हुईं, उनमें लेखक की रचना-कुशलता का परिष्कार देखा जा सकता है। 'शरणागत' में भारतीय संस्कृति, पारिवारिक जीवन तथा वेशभूषा के प्रति लेखक का आकर्षण व्यक्त हुआ है और यह विशेषता पात्रों के व्यक्तित्व में ढाल दी गयी है। इतिहास-सम्मत वातावरण की रचना कर लेखक ने उसी के अनुरूप व्यक्तित्व के सहज विश्लेषण की भूमिका निर्मित की है। 'सिकन्दर की विजय' शीर्षक कहानी भारतीय वीरों के आदर्श को प्रतिष्ठित कर उनके व्यक्तित्व की ओर संकेत देती है। 'चित्तौर उद्धार' में राजपूत-जीवन का वर्णन है। राजपूती आन और वीरता के राधार पर आदर्श-प्रेरित पात्रों के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की गयी है। राजकुमार हम्मीर इस कहानी का प्रमुख पात्र है। वह भावुक और वीर युवक है। उसमें कृत्रिम मामाजिक बन्धनों को भंग करने का साहस भी है। लोक-भय से आतंकित होकर वह अपने मार्ग से विचलित नहीं होता। यह समाचार ज्ञात करके भी कि उसकी भावी पत्नी का पूर्व-विवाह हो चुका है तथा वह विधवा है, वह अपने कर्त्तव्य-पालन में संकोच नहीं करता एवं उसे प्रसन्नता के साथ पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है। इस संकलन की शेष तीन कहानियाँ 'जहाँनारा', 'अशोक', और 'गुलाम' इतिहास पर आधारित है। ऐतिहासिक तथ्य तथा मर्यादा की रक्षा करते हुए प्रसाद जी ने इनमें अपनी कल्पना तथा भावप्रवणता का भी परिचय दिया है। पात्र अपनी सहज स्वाभाविक विशेषताओं के साथ प्रेम तथा सौन्दर्य के प्रतीक बन कर आते हैं। इन कहानियों में प्रसाद जी ने प्रतिशोध की वृत्ति से परिचालित पात्रों के व्यक्तित्व को विशेष अभिरुचि के साथ प्रस्तुत किया है। 'चन्दा' शीर्षक कहानी की नायिका चन्दा प्रतिशोध को हत्याओं द्वारा पूर्ण करती है। अन्य कहानियों में जैसे 'अशोक', 'गुलाम कादिर' तथा 'तिष्य-रक्षिता' में भी यही प्रवृति व्यक्त हो गयी है। परन्तु प्रसाद जी ने इन पात्रों के व्यक्तित्व को क्रूर, नृशंस या मानवताशून्य नहीं बना दिया है। मनोवैज्ञानिक ढंग से विविध परिस्थितियों के अन्तर्गत उनकी प्रतिशोध-वृत्ति का सहज विकास अंकित किया गया है। मानवीय मूल प्रवृत्तियों के स्वाभाविक चित्रण की ओर लेखक की सतर्क दृष्टि ने उसे असामाजिक वृत्तियों के सन्तुलित चित्रण का बल प्रदान किया है। 'प्रतिध्वनि' कहानी-संकलन की सभी कहानियों में भावप्रवणता तथा चिन्तनशीलता का प्राधान्य है। जीवन दर्शन की परिपक्वता, विचारों की प्रौढ़ता तथा भावुकतापूर्ण दृष्टिकोण ने कहानीकार 'प्रसाद' को सुकोमल मनोभावों की सुरम्य-भूमि पर प्रतिष्ठित किया है। इस संकलन की कहानियों के प्रायः सभी पात्र विचार-शील, कल्पनाप्रवण तथा भावुक हैं। अपने अन्तर्द्वन्द्व में डूबे, जगत के बाह्य व्यवहार

के प्रति उदासीन, रहस्यमय मनःस्थिति से युक्त पात्रो को ही इन कहानियों में सम्मिलित किया गया है। उनकी इस प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुये आलोचक श्री मार्कण्डेय सिंह ने साभिप्राय लिखा है :

'...वास्तव में प्रतिध्वनि के लेखक ने बाह्य जीवन की घटनाओं, स्थितियों और द्वन्द्वों को छोड़कर मानव के हृदयस्थ घातप्रतिघातों, उनकी रहस्यमय हलचलों और जीवन के निगूढ़ तत्वों के विवेचन को ही प्रतिपाद्य बनाया है। कथांश की अपेक्षा, प्रायः सभी कहानियों में व्यंजना ही अधिक है। जहाँ कही भी, लेखक ने देखा है कि बिना कथांश की सहायता लिये भी भावव्यंजना हो सकेगी, उसने उसे निस्संकोच त्याग दिया है'।[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद की इस प्रवृत्ति ने कहानियों के पात्रों को अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रदान किया है। उनमें जीवन के प्रति मोह और आकर्षण है परन्तु स्थूल-जगत की ओर आकृष्ट न होकर वे सूक्ष्म भाव-जगत् में ही विचरण करते हैं। इस प्रवृत्ति तथा विशिष्ट रचना-पद्धति के कारण में स्वयं प्रसाद के चिन्तनशील भावुक दार्शनिक व्यक्तित्व को देखा जा सकता है। इस संकलन की कहानियो मे भावना तथा मानसिक उद्वेलन की प्रमुखता के कारण काव्यात्मकता तथा विचारगूढ़ता का समावेश हुआ है। उदाहरण में रूप में प्रसाद', 'उस पार का योगी' और 'प्रलय' जैसी कहानियो को देखा जा सकता है। इनमे पात्रो के व्यक्तित्व को भावजगत् की वस्तु मानकर उसके आन्तरिक पक्ष का चित्रण किया गया है। कथातत्व के समुचित विकास, की ओर ध्यान देने का प्रयास कतिपय कहानियों में प्रायः नहीं हुआ है। 'खण्डहर की लिपि' और 'चक्रवर्ती का स्तम्भ' शीर्षक कहानियो को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। ऐतिहासिक वातावरण मे पात्रो के व्यक्तित्व को अंकित करते हुए लेखक ने देशकाल को पात्रों के व्यक्तित्व के अनुसार सुसंयोजित किया है।

समाज की दैन्यपूर्ण स्थिति तथा अर्थाभाव से ग्रस्त उपेक्षित निम्न वर्ग की ओर भी प्रसाद जी का ध्यान गया है। उन्होंने इन समस्याओं के प्रतिनिधि पात्रो का व्यक्तित्व भी 'प्रतिध्वनि' की कुछ कहानियों मे अंकित किया है। 'गूदड़ी का लाल', 'करुणा की विजय', और 'दुखिया' शीर्षक कहानियों में उनकी इस प्रवृत्ति के दर्शन होते है। प्रसाद की उदारता, करुणा, परोपकारवृत्ति तथा संवेदनशीलता का प्रभाव उनके द्वारा चित्रित पात्रों के व्यक्तित्व पर स्पष्टतः परिलक्षित होता है। कहानीकार ने अपने व्यक्तित्व का कलात्मक आरोपण भिन्न-भिन्न स्थितियों मे आंशिक रूप से कई पात्रों पर किया है।

---

१ श्री मार्कण्डेय सिंह, 'प्रसाद की कथा-साहित्य', पृ० १७।

प्रसाद की कहानियों का तीसरा संग्रह 'आकाशदीप' के नाम से सन् १९२९ में प्रकाशित हुआ। 'छाया' और 'प्रतिध्वनि' में लेखक की जो प्रवृत्तियाँ, पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण के सम्बन्ध में देखी गयी थी, उनका समाहार इस संकलन की कहानियों में हो गया है। साथ ही प्रसाद जी को नाट्य-रचना पद्धति का प्रभाव भी इनकी रचना-शैली पर पड़ा है। पात्रों के संवाद तथा अन्तर्द्वन्द्व के विवेचन में प्रसाद ने नाटकीय शैली को प्रश्रय दिया है। भावों की विवृत्ति तथा पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को व्यक्त करने में उनका यह प्रयोग अत्यधिक सफल माना जा सकता है। उदाहरण रूप में 'रमला', 'बनजारा', 'आकाश-दीप' और 'बिसाती' को प्रस्तुत किया जा सकता है। इन कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण आकर्षक ढंग से हुआ है। नाटकीय शैली ने एक-एक कर पात्रगत विशेषताओं को स्वाभाविक गति के साथ प्रकाश में आने का अवसर प्रदान किया है।

'आकाशदीप' की कहानियाँ इस क्रम से है—'आकाशदीप', 'ममता', 'स्वर्ग के खण्डहर में', 'सुनहला साँप', 'हिमालय का पथिक', 'भिखारिन', 'प्रतिध्वनि', 'कला', 'देवदासी', 'समुद्रसंतरण', 'वैरागी', 'बनजारा'; 'चूड़ीवाली', 'अपराधी', 'प्रणय-चिन्ह', 'रूप की छाया', 'ज्योतिष्मती', 'रमला' और 'बिसाती'।

इस संग्रह की कहानियों में पात्रों को समाज के विभिन्न वर्गों से उठाया गया है। उनके व्यक्तित्व को प्रभावपूर्ण रूप में व्यक्त करने का प्रयास सभी कहानियों में किया गया है। इतिहास के पृष्ठों से प्रेरणा प्राप्त कर, अपनी कल्पना का उपयोग कर प्रसाद ने 'आकाश-दीप', 'ममता' और 'स्वर्ग के खण्डहर में' शीर्षक कहानियों में अविस्मरणीय पात्रों का व्यक्तितत्व गुम्फित किया है। समाज के प्रपीडन, शोषण तथा अत्याचार का प्रतीक बनाकर 'भिखारिन' कहानी की नायिका को प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक रूढ़ियों से व्यक्तितत्व कितना प्रभावित होता है इसका उदाहरण 'प्रतिध्वनि' तथा 'देवदासी' कहानियों में प्राप्त होता है। प्राचीन परम्पराओं के विकृत प्रभाव को व्यक्त करते हुए कहानी-लेखक ने उसके मध्य विपण्ण, करुण-भावयुक्त व्यथित पात्रों का व्यक्तित्व निरूपण इन कहानियों में किया है।

सन् १९२९ से १९३३ ई० तक प्रसाद ने जिन कहानियों की रचना की उनका प्रकाशन सन् १९३३ ई० में 'आँधी' 'शीर्षक संग्रह में हुआ। इन कहानियों में प्रसाद का मानवतावादी उदार दृष्टिकोण पूर्णतः अभिव्यक्त हुआ है। यद्यपि आदर्श तथा मर्यादा के समर्थन में कहानीकार प्रसाद सदैव अपनी विशिष्ट भावभूमि पर रहने का प्रयत्न करते रहे हैं, तथापि मानवीय दुख, करुणा, भाग्य की प्रतारणा तथा जीवन-व्यापी कटुता को व्यक्त करते हुए उन्होंने पूर्ण सहानुभूति के साथ अनेक अविस्मरणीय पात्रों के व्यक्तित्व का सृजन किया है। इन पात्रों के यथार्थ और हृदयस्पर्शी स्वरूप

के समायोजन की प्रवृत्ति पर विचार करते हुये श्री मार्कण्डेय सिंह ने लिखा है—

'सामान्य रूप से तो प्रसाद के प्रायः सभी विशिष्ट पात्र आदर्श के छोर को छूते हुए प्रतीत होते हैं, 'आँधी' के पात्र भी वैसे ही हैं, पर लेखक ने अपनी आदर्शोन्मुख एव स्वच्छन्दतावादी अभिरुचि के अतिरेक में आकर उन्हें धरती से परे अपरिचित प्राणियों का रूप नहीं दिया है। जीवन के थपेड़, जिन्हें प्रसाद 'नियति' या 'भाग्य' के रूप में देखते हैं, 'आँधी' की तरह आकर क्षणभर में ही कितना उलटफेर जाते हैं, असख्य प्राणियो का जीवन-क्रम टूट कर कैसे बिखर जाता है—कवि, चिन्तक और कथाकार प्रसाद की प्रतिभा ऐसी ही आँधी में उड़े तिनकों और जीवनधारा के अनन्त उपकूलो से टकरा-टकरा कर बहते हुये मानव-चरित्रों को पकड़ कर, उनके दुख-द्वन्द्व, आशा-आकाक्षा, और जीवन-व्याप्त कटुता में भी छिपी उनकी अनुभूत माधुरी को नाना रूप देकर व्यक्त करने की चिर अभ्यस्त रही है'।[1]

इन सभी कहानियों में पात्रों के जीवन की सामाजिक स्थितियों के मध्य व्याख्या हुई है। पात्रों के व्यक्तित्व को सशक्त, भावप्रवण तथा सुधारवादिता से प्रेरित प्रतिक्रिया से युक्त चित्रित किया गया है। इस संग्रह की कहानियों का क्रम इस प्रकार है:

'आधी', मछुआ', 'दासी', 'घीसू', बेड़ी', 'व्रतभंग', 'ग्राम-गीत', 'विजया', 'अमिट-स्मृति', 'नीरा' और 'पुरस्कार'।

पात्रों के चरित्र को प्रधानता देते हुए प्रसाद जी ने प्रत्येक कहानी में किसी न किसी ऐसे व्यक्तित्व को चित्रित कर दिया है, जो चिन्तनशील, साहसी, वेदना-ग्रस्त तथा भावुकता से युक्त होते हुए भी हमारे परिचित वातावरण तथा समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। 'दासी', 'व्रतभंग' और 'पुरस्कार' कहानी में ऐतिहासिक वातावरण से कथावस्तु ली गयी है और उन्ही के अनुकूल पात्रों का सृजन कहानीकार ने किया है। कथावस्तु को प्रमाणिक आधार पर ग्रहण कर इतिहास-वर्णित पात्रो को प्रसाद ने प्रमुख स्थान नही दिया है, वरन् इसके लिये अपनी कल्पना का उपयोग कर उन्होंने उपयुक्त परिस्थितियों तथा वातावरण के मध्य काल्पनिक पात्रों के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है। उपर्युक्त तीनों कहानियों में प्रसाद की इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है। सामाजिक समस्याओं के आलोक में अन्तर को सहज ही छूकर सहानुभूति प्राप्त करने वाले पात्रों को जिन कहानियो में स्थान प्राप्त हुआ है, वे हैं 'घीसू', 'ग्राम-गीत', 'विजया' तथा 'अमिट स्मृति'। पात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली विविध सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों और कठोर विधानों के प्रति लेखक ने अपना आक्रोश व्यक्त किया है। इस संकलन की सभी कहानियों मे पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के

---

१. श्री मार्कण्डेय सिंह—'प्रसाद का कथा-साहित्य', पृ० ३०।

उत्कृष्ट तथा प्रभावपूर्ण वर्णन द्वारा उनकी व्यक्तिगत कुण्ठाओं, असन्तोष, परिताप तथा विद्रोहात्मक वृत्ति को व्यक्त किया गया है। पात्रों के व्यक्तित्व के विवेचन की दृष्टि से इस संग्रह की कहानियों में नारी व्यक्तित्व के निरूपण का जो प्रयास है, उसे भी देखना आवश्यक है। प्रेम, वासना, छल, असन्तोष, कर्तव्यपालन आदि शाश्वत वृत्तियों के आकर्षक किन्तु समस्या-प्रधान स्वरूप को चित्रित कर प्रसाद ने नारी व्यक्तित्व को हृदयस्पर्शी संवेदना के साथ उपस्थित किया है।

प्रसाद का अन्तिम कहानी-संकलन है 'इन्द्रजाल'। इसका प्रकाशन वर्ष १९३६ ई० में हुआ। सन् १९३३ से १९३६ ई० तक की प्रसाद की कहानियाँ इसमें सम्मिलित कर ली गयी हैं। कहानीकार का प्रौढ़ और परिपक्व कृतित्व इन कहानियों में स्वतः आ गया है। अपनी प्रतिभा के चरमोत्कर्ष पर पहुँच कर कहानीकार अधिक चिन्तनशील और समन्वयवादी हो गया है। आदर्श और यथार्थ, सुन्दर-असुन्दर, सुख-दुख, मोह-उत्सर्ग सबके प्रति उसकी दृष्टि समरसता से युक्त तथा उदार बन गयी है। इन प्रवृत्ति के अनुकूल ही उसने अपनी कहानियों के पात्रों का चयन भी किया है तथा उनके व्यक्तित्व को तटस्थ भाव से व्यक्त कर दिया है। अपनी पूर्व रचना-शैली के विविध प्रयोगों को भी आत्मसात कर कहानीकार प्रसाद ने इन कहानियों में सबका समन्वित रूप प्रस्तुत कर दिया है। 'इन्द्रजाल', 'नूरी' और 'चित्रवाले पत्थर' में 'आकाशदीप' संकलन की कहानियों की रचना-शैली को अपनाया गया है। 'छोटा जादूगर' और 'विराम चिन्ह' जैसी कहानियो मे सामाजिक समस्या तथा घटना को उसी प्रकार प्रस्तुत किया गया है जिस प्रकार 'आँधी' संकलन की समाज-सापेक्ष्य कहानियों में।

प्रसाद की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण : प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से प्रसाद ने पात्रों को ग्रहण कर उन्हें व्यक्तिगत विशेषताओं के प्राधान्य के साथ अपनी कहानियों में प्रतिष्ठित किया है। कहानीकार प्रसाद के व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य इन पात्रों के व्यक्तित्व में जाने-अनजाने किसी न किसी रूप में समाविष्ट हो गया है। उनमें भावुकता, सौन्दर्यानुराग, प्रेमप्रवणता तथा चिन्तनशीलता की प्रेरणा अपने रचनाकार के स्वभावगत उदात्त वैशिष्ट्य से ही प्राप्त होती है। इतना होते हुए भी प्रसाद जी ने प्रत्येक प्रमुख पात्र को स्वतंत्र व्यक्तित्व-विकास का अवसर प्रदान किया है। विचार तथा स्वभाव के क्षेत्र में उनमें साम्य अवश्य दिखाई पड़ता है, परन्तु व्यक्तिगत दृष्टिकोण तथा उद्देश्य के कारण वे अपने मे भी महत्वपूर्ण हैं। उन्हें वर्ग विशेष का प्रतिनिधि मानने का आग्रह उपयुक्त नहीं प्रतीत होता। उनके असामान्य रूप की ओर लेखक का विशेष झुकाव है अतः वे अपने निराले

व्यक्तित्व के कारण स्वतंत्र अस्तित्व रखते है। इस सम्बन्ध में श्री मार्कण्डेय सिंह ने साभिप्राय ही लिखा है—

"जैसे दो आँख, एक नाक' दो कान आदि स्थूल आंगिक साम्य रखते हुये भी हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में दूसरे से भिन्न होता है, वैसे ही कतिपय अंशो में स्वरूप-गत और भावगत साम्य रखते हुये भी, प्रसाद की कहानियों के पात्र अपना विशिष्ट व्यक्तित्व रखते हैं।"[1]

उनकी व्यक्तिगत विशेषताएँ इतनी प्रमुख बन जाती हैं कि कहानी का सम्पूर्ण प्रभाव पात्रों के व्यक्तित्व में ही केन्द्रित हो जाता है। इस विशेषता को परिलक्षित करते हुये श्री मार्कण्डेय सिंह ने कतिपय कहानियों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं :—

"उनमें (प्रसाद की कहानियों के पात्रो में) अपनापन इतना अधिक है विभिन्न वर्गो के प्रतिनिधि रूप में आये हुए पात्र भी अपने निरालेपन मे प्रतिनिधि से अधिक व्यक्ति-विशेष ही जान पड़ते है। 'छाया' की 'गुलाम' कहानी के गुलाम कादिर, 'आकाशदीप' की 'भिखारिन' और 'देवदासी' तथा 'इन्द्रजाल' के 'छोटा जादूगर' और 'गुण्डा' आदि सब पात्रो मे उनकी वर्गगत सामान्य विशेषताओं की अपेक्षा अपना निज का वैशिष्ट्य ही मुख्य है। इसी प्रकार 'आंधी' संग्रह की 'मधुआ' कहानी का शराबी भी, जहाँ तक पेट काट कर शराब के लिए पैसे बचाने की बात है, साधारण शराबी वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, किन्तु इस पागल दुनिया को देखने की दृष्टि, जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण और अपनी मूलभूत संवेदनाशीलता के कारण वह इतना असाधारण बन जाता है कि उसे शराबी वर्ग का 'टाइप' पात्र नही कहा जा सकता है।"[2]

व्यक्तित्व-विश्लेषण के विवेचन के दृष्टिकोण से प्रसाद जी की कहानियो के पात्रों को दो स्थूल वर्गो में विभाजित किया जाता है पुरुष-पात्र एवं नारी-पात्र। अपनी स्वभावगत भिन्नता तथा प्रवृत्तियो के नैसर्गिक वैभिन्य के कारण यह विभाजन नारी और पुरुष वर्ग के व्यक्तित्व के सम्यक् विश्लेषण में सहायक हो सकता है। यद्यपि प्रेम और सौन्दर्य के प्रति आकर्षण की सामान्य प्रवृत्ति सभी पात्रों में विद्यमान है तथापि, जैसा कि हमने विचार किया है, इन पात्रो का स्वतंत्र अस्तित्व भी है।

नारी पात्रों के व्यक्तित्व की रचना का सर्वप्रधान उपकरण करुणा की कोमल, प्रभावपूर्ण तथा व्यापक मनोवृत्ति को ही मानकर प्रसाद ने उसे मर्मस्पर्शी रूप प्रदान किया है। प्रेम और लालसा भी नारी पात्रों के व्यक्तित्व के अनिवार्य तत्व के रूप मे

---

१. मार्कण्डेय सिंह—"प्रसाद का कथा-साहित्य", पृ० ८७।

२. वही, पृ० ८७-८८।

ग्रहण किये गये हैं। प्रेम के क्षेत्र में प्रतिशोध, उत्सर्ग, अन्तर्द्वन्द्व और सत्साहस की वृत्तियों को समाविष्ट किया गया है। सामाजिक आदर्शों के प्रति यदि उनके मन में सम्मान तथा उत्सर्ग की भावना विद्यमान है, तो अन्याययुक्त सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोहात्मक प्रवृत्ति भी तीव्र वेग से अपने प्रकाशन का मार्ग ढूढ़ती हुई दृष्टिगत होती है। इस प्रसंग में कतिपय कहानियों के उदाहरण द्वारा इस विशेषता को देखना समीचीन है। 'चन्दा' कहानी की नायिका 'चन्दा' प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर अपने प्रतिस्पर्धी का वध कर देती है और तत्पश्चात् स्वयं आत्महत्या कर लेती है। वह प्रेम के व्यवधान को समाप्त कर अपने जीवन का अन्त इस दृष्टिकोण से करती है कि उत्सर्ग द्वारा ही प्रेम को अमरत्व प्रदान किया जा सकता है। अन्तर्द्वन्द्व तथा मनस्ताप की तीव्र आकुलता को चित्रित करते हुए प्रसाद ने 'स्वर्ग के खण्डहर' शीर्षक कहानी में 'मीना' के करुण-कोमल व्यक्तित्व को विषादयुक्त स्थिति में ढाला है।

नारी पात्रों के मानसिक द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक चित्रण करते हुये प्रसाद ने कोमलता, करुणा और भावुकता के समानान्तर प्रतिशोध और आक्रोश की भावना को भी अंकित किया है। इन विरोधी प्रवृत्तियों को चित्रित करते हुये कहानीकार प्रसाद ने नारी के उग्र रूप को अनेक प्रकार से व्यक्त किया है। 'आँधी' और 'पुरस्कार' कहानियों में कर्तव्य की प्रेरणा से नारी व्यक्तित्व के कठोर, दृढ़-निश्चययुक्त स्पष्ट स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। प्रतिशोध की वृत्ति का उद्दाम-रूप 'चन्दा' और 'अशोक' शीर्षक कहानियों में देखा जा सकता है। नारी व्यक्तित्व के इस कठोर उग्र रूप में कहीं-कहीं बलिदान का स्तुत्य रूप सहज सौन्दर्य के साथ प्रतिबिम्बित हुआ है। 'देवरथ' कहानी में प्रसाद जी की इस प्रवृत्ति का उदाहरण प्राप्त होता है। 'दासी' तथा 'भीख' शीर्षक कहानियों में आत्म-सम्मान के प्रति जागृत नारी व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। प्रतिशोध, बलिदान, आत्म-सम्मान और कठोरता के इन तत्वों का समन्वय जिन विशिष्ट कहानियों में विभिन्न नारी पात्रों के व्यक्तित्व में दृष्टिगत होता है, उनके महत्व का मूल्यांकन श्री मार्कण्डेय सिंह ने इस प्रकार किया है .

" 'आकाशदीप' की चम्पा, 'आँधी' की लैला और 'पुरस्कार' की मधूलिका की परिस्थितिजन्य कठोरता में तो प्रायः ये सभी रूप दिखाई पड़ते हैं। इनकी सहज सुकुमारता को मथकर निकला हुआ इनके व्यक्तित्व का यह तत्व इन्हें अत्यन्त आकर्षक और सजीव व्यक्तित्व प्रदान करता है।"[1]

अपनी उत्तरोत्तर विकसित कहानी-रचना-कला में प्रसाद ने नारी व्यक्तित्व का रूप स्पष्टतर और अधिक महत्वपूर्ण विशेषताओं के साथ अंकित किया है। उनकी

१. श्री मार्कण्डेय सिंह, "प्रसाद का कथा-साहित्य", पृ० ५१।

प्रथम प्रयोगयुगीन कहानियों में, जो 'छाया' में संकलित हैं, नारी पात्रों के व्यक्तित्व की रेखाएँ विशेष स्पष्ट नहीं हैं। 'प्रतिध्वनि' की कहानियों तक यह स्थिति किसी न किसी रूप में बनी रहती है। 'चित्तौर उद्धार' में राजकुमारी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वह एक ओर प्रेम तथा पतिभक्ति का उत्कृष्ट निदर्शन प्रस्तुत करती है तो दूसरी ओर पारिवारिक मर्यादा के प्रति उपेक्षा तथा पिता के प्रति कर्त्तव्य-विमुखता का संकेत देती है। प्रतिध्वनि की अन्य कहानियों में भी नारी व्यक्तित्व की पूर्ण प्रतिष्ठा सहज-रूप में नहीं हो पाई है। उदाहरण रूप में 'सहयोग', 'पाप की पराजय', 'कलावती की शिक्षा' और 'दुखिया' शीर्षक कहानियों को देखा जा सकता है।

'आकाशदीप' की कहानियों तक आते-आते प्रसाद ने नारी व्यक्तित्व की मार्मिकता को पूर्ण आस्था से ग्रहण कर उसके सफल चित्रांकन की शक्ति प्राप्त कर ली थी। प्रेम तथा कर्त्तव्य दोनों के निर्वाह में सफल 'चम्पा' का व्यक्तित्व 'आकाशदीप' शीर्षक कहानी में इतनी कुशलता तथा प्रभविष्णुता के साथ अंकित किया गया है कि वह प्रसाद कहानी-साहित्य का एक अप्रतिम चरित्र बन गया है। इस संग्रह की कुछ कहानियों में नारी पात्रों का व्यक्तित्व इतने महत्वपूर्ण और भावोत्तेजक रूप में अंकित है कि उसके समक्ष पुरुष पात्रों का व्यक्तित्व धूमिल और उपेक्षित सा प्रतीत होता है। 'स्वर्ग के खण्डहर में', 'बनजारा', 'अपराधी' और 'वैरागी' जैसी कहानियों में इस तथ्य के प्रमाण विद्यमान हैं।

'आँधी' संकलन की कहानियों में प्रसाद जी यथार्थ के धरातल पर उतर आये हैं। नारी पात्रों में जीवन की कठोरता से जूझने का सत्साहस कहानीकार ने समाविष्ट किया है। 'पुरस्कार' कहानी की मधूलिका अपनी स्थिति के प्रति पूर्ण सचेत है। अपने कर्त्तव्य तथा उत्सर्ग के क्षणों को वह सम्पूर्ण निष्ठा के साथ ग्रहण करती तथा साहस पूर्वक अपने दायित्व का निर्वाह करती है। 'बीसू' की बिन्दा, 'दासी' की फिरोजा, और 'आँधी' की लैला के व्यक्तित्व में भी यथार्थ के प्रति संवेदनशीलता के तत्व विद्यमान हैं।

'इन्द्रजाल' की कहानियों में नारी-पात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हुआ है। भावुकता के साथ दृढ़ता, प्रेम के साथ दायित्व-निर्वाह, सौन्दर्य के साथ साहस के समन्वय का सफल प्रयास नारी व्यक्तित्व के चित्रण के निमित्त किया गया है। कतिपय उदाहरणों द्वारा इस तथ्य का विवेचन किया जा सकता है। 'इन्द्रजाल' कहानी की बेला, 'चित्रवाले पत्थर' की मंगला, 'गुंडा' की दुलारी और पन्ना, 'देवरथ' की सुजाता, 'सालवती' की सालवती, 'सलीम' की नूरी के व्यक्तित्व का सम्यक् विवेचन करने पर यही ज्ञात होता है कि इन्हें कहानी के अनिवार्य तत्व के रूप में ग्रहण कर कहानीकार

ने इनकी रचना में अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा तथा कौशल का प्रयोग किया है।

पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व के अंकन में प्रसाद की कहानियों के वैशिष्ट्य पर विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र अपनी विलक्षण विचार-पद्धति, दृष्टिकोण, सिद्धान्त अथवा जीवनोद्देश्य के कारण अन्य पात्रों से सर्वथा भिन्न है। यद्यपि उनमें कुछ समानतायें भी हैं, तथापि स्वतंत्र जीवन-दर्शन तथा चिन्तन-शक्ति के कारण उनका पृथक् अस्तित्व है। व्यक्तित्व के निरूपण में पुरुष पात्रों के शरीर तथा अन्तर्जगत दोनों को प्रसाद ने समान महत्व दिया है। यद्यपि उनके अधिकांश पुरुष पात्र भावुक, संवेदनशील, उदार, करुणायुक्त तथा सौन्दर्य प्रेमी है तथापि उनमें कर्त्तव्यनिष्ठा, संघर्ष की शक्ति, आत्मबल जैसे पुरुषोचित सद्गुणों का अभाव नहीं है। प्रसाद की कहानियों में ऐसे पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व भी समाविष्ट है जो अपने अद्भुत चरित्र के कारण अविस्मरणीय और विलक्षण हैं। नूरी के प्रति समर्पित याकूब और लैला के प्रेमी रामेश्वर का व्यक्तित्व इसी प्रकार का है। बेला को अपना हृदय अर्पित कर गोली ने वैसा ही व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया है जैसा कि 'आकाश-दीप' की नायिका चम्पा के प्रति सर्वस्व अर्पण करने वाले जलदस्यु बुद्धगुप्त ने। अपनी आन्तरिक करुणा एवं व्यथा को प्रकाशित करने का कोई दुराग्रह भी इन विलक्षण पात्रों में नहीं है। सालवती का प्रेमी अभय भी प्रसाद जी की लेखनी से प्रसूत ऐसा ही पुरुष पात्र है। इनमें चरित्र की दृढ़ता के साथ ही संवेदनशीलता की गहराई भी विद्यमान है। इनके विद्रोह, व्यथा, कुण्ठा अथवा विवशता को कहानीकार प्रसाद ने बड़ी कुशलता से अंकित किया है।

प्रसाद जी की आरम्भिक कहानियों में पुरुष पात्र कल्पनाशील, भावुक, प्रेमी, सौन्दर्योपासक तथा शील-सदाचार-युक्त है। इनमें काव्यप्रेम और कला की साधना के प्रति अनुराग भी यथास्थान व्यक्त किया गया है। 'रसिया बालम' का युवक, 'तानसेन' का तानसेन, 'कलावती की शिक्षा' का श्यामसुन्दर इसी प्रकार के पात्र हैं। उनमें उत्सर्ग की भावना भी उच्च स्तर की है। 'रसिया-बालम' का युवक अपनी उँगली के रक्त से पत्र लिखता और राजकुमारी के प्रेम पर अपना सर्वस्व अर्पित कर देता है। इन कल्पनाशील भावुक पुरुष-पात्रों में भी प्रसाद जी ने मानवीय संवेदना की प्रतिष्ठा की है। काल्पनिक और प्रतीकात्मक कहानियों में पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन और विकास उतना प्रभावपूर्ण और कलात्मक नहीं है जितना यथार्थ एवं कल्पना के समन्वय से निर्मित कथावस्तु पर आधारित कहानियों के पुरुष पात्रों का। 'ग्राम', 'गूदड़ साईं', 'पत्थर की पुकार', 'जहाँनारा', 'शरणागत' और 'अघोरी का मोह' शीर्षक कहानियों के पुरुष पात्र अपनी स्वाभाविक भूमिका में अविस्मरणीय स्वरूप प्राप्त करते हैं।

प्रसाद जी ने अपनी उत्तरोत्तर विकसित कहानी-कला में पात्रों की व्यक्तित्व-रचना-प्रक्रिया को विशेष महत्व दिया। 'आकाश दीप' कहानी-संकलन की कहानियों में पुरुष पात्रों को कर्त्तव्य और दायित्व की गुरु गम्भीर वृत्तियों से संयुक्त किया गया है। प्रेम और भावुकता के धरातल से ऊपर उठकर वे कर्त्तव्य और दायित्व के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। इस प्रकार यथार्थ जीवन के अधिक निकट होने के कारण उनके व्यक्तित्व में सप्राणता और स्वाभाविक विकास की शक्ति प्रतिष्ठित हुई है। बाह्य और आन्तरिक स्थितियों का समान अभिरुचि से विवेचन कर प्रसाद जी ने पुरुष पात्रों को क्रियाशीलता और विवेक की शक्ति प्रदान की है। विस्तृत कहानियों में पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण विधिवत और विस्तार से हुआ है। अपेक्षाकृत छोटी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित अथवा विश्लेषित होने का कम अवसर प्राप्त हुआ है, क्योंकि इनका स्वरूप गद्यकाव्य जैसा है। भावुकता और कल्पना का आधिक्य होने से ऐसी छोटी कहानियों में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण अधिक प्रभावपूर्ण रूप में हुआ है।

अपनी प्रौढ़ एवं कलात्मक दृष्टि से सुनियोजित उत्तर-कालीन कहानियों में प्रसाद जी ने पुरुष पात्रों के समस्त गुणावगुणों को प्रभावपूर्ण ढंग से अंकित करने की चेष्टा की और उनके व्यक्तित्व को अविस्मरणीय महत्व प्रदान किया। नारी पात्रों के व्यक्तित्व को सजाने-सँवारने में प्रसाद जी ने सभी स्तरों पर अपनी परिष्कृत रुचि का परिचय दिया था। परन्तु इन उत्तरकालीन कहानियों में, जिनमें 'पुरस्कार', 'आँधी', 'सालवती', 'देवरथ' और 'इन्द्रजाल' उल्लेख्य हैं, पुरुष पात्रों की सृष्टि भी अपूर्व कुशलता से की गयी है। 'पुरस्कार' में राजकुमार अरुण के व्यक्तित्व को प्रसाद जी ने कर्मठता तथा संवेदनशीलता से संयुक्त कर सप्राणता प्रदान की है। 'सालवती' में अभय के व्यक्तित्व-अंकन में भी उन्होंने सहज गति से अनेक पुरुषोचित गुणों का समन्वय कर उसके प्रेम, स्वाभिमान तथा महत्तम उत्सर्ग भाव को आकर्षक विधि से विश्लेषित किया है। एक नहीं अनेक पुरुष रत्न अपने सक्षम व्यक्तित्व की प्रभविष्णुता से इस काल की कहानियों में प्राण-सञ्चार करते हैं। 'नूरी' के प्रति प्राण-प्रण से अर्पित याकूब, बेला का एकनिष्ठ प्रेमी गोली, मालवती का प्रणयी अभय, मधूलिका की कल्पना का आधार अरुण और सुजाता के सर्वस्व देवरथ के व्यक्तित्व विश्लेषण में प्रसाद जी को अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है। नारी पात्रों के समानान्तर ही पुरुष पात्रों के अमर व्यक्तित्व की रचना में वे अपनी कहानी कला के इस अन्तिम प्रौढ़ता-सम्पन्न युग में अपूर्व सफलता प्राप्त कर सके हैं।

राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रसाद जी की भावमूलक आदर्शवादी कहानी-परम्परा को आधार मान कर

भावपूर्ण सरस कहानियों की रचना करने वाले यशस्वी लेखकों में राजा राधिका-रमण सिंह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी सर्वप्रथम प्रकाशित कहानी 'कानों में कंगना'[1] है, जिसमें भावुकता और सरसता का सन्तुलित समन्वय है। 'गाँधी टोपी'[2] इनकी उत्कृष्ट कहानियों का प्रतिनिधि संकलन है, जिसमें विविध विषयों को आधार रूप में ग्रहण कर कहानी-रचना का प्रयास किया गया है। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों, सुधारों और आन्दोलनों को इनकी कहानियों में स्थान प्राप्त हुआ है। इस प्रकार भावुकता-प्रधान कहानियों में भी वे यथार्थ जगत के निकट हैं। जिन पात्रों को उनकी कहानियों में स्थान प्राप्त हुआ है वे भी यथार्थ-जीवन से सम्बद्ध तथा वास्तविक जगत के सुपरिचित व्यक्ति प्रतीत होते हैं। आदर्शों और प्रतीकों के जाल में उलझ कर कहानीकार भले ही कहीं-कहीं भटक गया हो, अधिकांशतः उसके पात्र वस्तु-जगत से सम्बन्ध बनाये ही रहते हैं।

'गाँधी-टोपी' में राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं के आलोक में विभिन्न प्रकार के पात्रों का व्यक्तित्व-विश्लेषण किया गया है। कल्पना यथार्थ और सहज अनुभूति के आधार पर 'दरिद्र नारायण', 'पैसे की घुघुनी' तथा 'एक अनुभूति' शीर्षक कहानियों की रचना हुई है। इनमें पात्रों का मनोविश्लेषण सरस तथा भावुकता-प्रधान शैली में किया गया है। 'गांधी टोपी' शीर्षक कहानी में सामाजिक समस्याओं के निराकरण में संलग्न कर्मठ पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। 'एक अनुभूति' में मनोविश्लेषण द्वारा व्यक्तित्व-विश्लेषण का प्रयास है। धार्मिक विश्वास को महत्व प्रदान कर 'इस हाथ दे उस हाथ ले' शीर्षक कहानी की रचना हुई है, जिससे परोपकार के प्रतिफल द्वारा पात्र-विशेष के उदात्त गुणों का विश्लेषण किया गया है। इनकी कहानियों में आदर्शों की विजय सर्वत्र दिखाई गयी है। 'बिजली' और 'पद का मद' यथार्थ की व्यंजना से सफल कलात्मक कहानियाँ हैं, जिनमें पात्रों का व्यक्ति-विश्लेषण मनोविज्ञान—समस्त और सन्तुलित है। राजा राधिकारमण सिंह की कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का अंकन भी उतनी ही कुशलता और रुचि के साथ हुआ है, जितनी उनके अन्तर के विश्लेषण में परिलक्षित होती है।

---

१ 'इन्दु'-कला ४, खण्ड २, किरण १ पृ० ४५, सन् १९१३।

२ 'गाँधी टोपी'—श्री राजराजेश्वरी-साहित्य मन्दिर, सूर्यपुर, शाहाबाद (बिहार)।

रायकृष्णदास की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सुप्रसिद्ध कलाविद् श्री रायकृष्णदास ने अपनी सरस, भाव-प्रधान कहानियों द्वारा प्रसाद जी की भावमूलक आदर्शवादी परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय प्राप्त किया है। इनके तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, 'सुधांशु', 'अनाख्या'[1] और 'आँखों की थाह'।[2] इनमें विविध विषयों, जैसे सामाजिक समस्याओं, व्यक्तिगत शौर्य, अलौकिक कर्तृत्व, ऐतिहासिक-कथावृत्त का संयोजन हुआ है। इस प्रकार समाज, परिवार और व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित अनेक प्रश्न इनकी कहानियों में अपना समाधान प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। घटनाओं की अपेक्षा चरित्र-विश्लेषण को इनकी कहानियों में अधिक महत्व दिया गया है। अतएव पात्रों के व्यक्तित्व के सुरुचि-पूर्ण अंकन की ओर भी इन्होंने ध्यान दिया है।

समाज के विभिन्न वर्गों की ओर लेखक की पैनी दृष्टि है जो अनेक मर्मस्पर्शी रहस्यों का उद्घाटन कर पात्रों के आकर्षक व्यक्तित्व के विविध चित्र प्रस्तुत करती है। 'आँखों की थाह' शीर्षक कहानी में 'सुषमा' के उदात्त चरित्र का अंकन बड़ी कुशलता से किया गया है। विभिन्न प्रतिकूल स्थितियों में भी वह अपने शील के संरक्षण में तत्पर रहकर अपनी चारित्रिक दृढ़ता का परिचय देती है। पारिवारिक जीवन का एक मोहक दृश्य अंकित है 'मिठास' शीर्षक कहानी में। वकील भूषण तथा उनकी प्रसन्नवदना पत्नी चन्द्रावली के व्यक्तित्व का विश्लेषण गृहस्थ-जीवन के मधुर सुखपूर्ण वातावरण में किया गया है। सामाजिक आदर्शों की आधारभित्ति पर अंकित 'नई दुनिया' शीर्षक कहानी में वेश्या-जीवन का संवेदनापूर्ण चित्रण है और स्तुत्य साहसिकता के साथ विरागी और गजरा जैसे पात्र कहानी की चरम परिणति में पति-पत्नी के सम्बन्ध का गौरव प्राप्त करते हैं।

पात्रों के मनोविश्लेषण को प्रधानता देते हुए रायकृष्णदास जी ने कतिपय कहानियों में पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व एवं प्रच्छन्न पीड़ा की मार्मिक व्यंजना भी प्रस्तुत की है। 'सुहाग' शीर्षक कहानी में पन्द्रह वर्षीया किशोरी की मनोव्यथा का अंकन हुआ है। वृद्ध पति के प्रति विरक्त होकर वह तरुण मुनीम की ओर आकृष्ट होती है। परन्तु मन के इस रहस्य को वह किसी पर प्रगट नहीं होने देती। चिंता में घुलकर वह अस्वस्थ हो जाती है, मृत्यु के अंक में प्रविष्ट हो जाती है। इसके व्यक्तित्व का विश्लेषण कहानीकार ने पूर्ण संवेदना के साथ किया है। हेमनाभ और गहूला के व्यक्तित्व का विश्लेषण 'गहूला' शीर्षक कहानी में परस्पर विरोधी परिस्थितियों के अंकन

---

१ भारती-भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९८६।

२ हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ, १९९७।

द्वारा किया गया है। पूर्व-स्मृति के तीव्र दंशन का अनुभव कर संज्ञाशून्य होने वाली 'गहूला' के अन्तर्द्वन्द्व का सांकेतिक अंकन रायकृष्णदास की व्यक्तित्व विश्लेषण सम्बन्धी कुशलता का परिचायक है। सभ्यता के आदि काल से कथावस्तु का सचय कर 'आवरण' शीर्षक कहानी में कमठ और उर्वी जैसे पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। किस प्रकार नारी के नग्न सौन्दर्य का आवरण निर्मित हुआ और कैसे उसके व्यक्तित्व के प्रति सामाजिक निष्ठा का उदय तथा विकास हुआ, इसका भव्य चित्रण इस कहानी मे हुआ है। कमठ और उर्वी प्रारंभिक सभ्यता के ऐतिहासिक प्रतीक बन गये है। इन पात्रो के व्यक्तित्व का सृजन एवं विश्लेषण अपूर्व सन्तुलन के साथ किया गया है।

कला की साधना मे तत्पर कर्मठ एवं विवेकशील पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण रायकृष्णदास जी ने विशेष सतर्कता के साथ किया है। 'इनाम' शीर्षक कहानी मे कलाकार को अपनी साधना का पुरस्कार हाथ कटवाने के रूप मे प्राप्त होता है। इस विचित्र पुरस्कार की योजना के मध्य कलाकार का व्यक्तित्व मार्मिक व्यजना के साथ चित्रित हुआ है। 'गल्पलेखक' शीर्षक कहानी मे भी साहित्य-साधक के व्यक्तित्व का तात्विक निरूपण है। प्रकृत-प्रतिभा के महत्व को सर्वाधिक प्रेरक तत्व के रूप मे स्वीकार किया गया है और उसी के आधार पर साहित्य-प्रणेता की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है।

पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण मे रायकृष्णदास जी ने आदर्श की ओर अपना ध्यान केन्द्रित रखा है। यथार्थ के संकुचित एव असमर्यादित वातावरण से निकल कर उनके पात्र आदर्शवादी उच्चता तक पहुँचने का प्रयास करते है। पात्रो के विचारो और भावों के विश्लेषण में इनकी सूक्ष्म दृष्टि ने अनाख्या की कहानियो में मनोवैज्ञानिक विवेचन की गहराई का निदर्शन प्रस्तुत किया है। दार्शनिक तथ्यो को भी कतिपय कहानियों में पात्रों के रूप मे प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व का काल्पनिक निरूपण किया गया है। 'बसन्त का स्वप्न' शीर्षक में लेखक की इस प्रवृत्ति का उदाहरण प्राप्त होता है।

रायकृष्णदास जी की कहानियों मे वर्णन की प्रधानता है अतएव पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण कहानीकार के द्वारा प्रस्तुत वर्णनों के माध्यम से हुआ है। सवाद-तत्व अथवा स्वाभाविक स्थिति विकास की ओर ध्यान न देने के कारण पात्रो के मनोविश्लेषण एवं व्यक्तित्व के सहज निरूपण का अभाव अधिकांश कहानियो मे है।

चण्डी प्रसाद हृदयेश की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रसाद जी की आलंकारिक भावमयी शैली का अनुगमन कर हृदयेशजी ने

कल्पना और भावुकता के आकर्षण से ओत-प्रोत कहानियों की रचना की। घटनाओं को महत्व न देकर इन्होंने भावनाओं के विवेचन को कहानी-रचना में प्रधानता दी। पात्रों के मनोभावों के विश्लेषण की ओर भी इन्होंने सतर्क दृष्टि रखी। अमूर्त भावों की व्यंजना भी इनकी कहानियों की एक अपूर्व विशेषता है। इनकी कहानियों के दो संग्रह प्रकाशित हैं—'नन्दन-निकुंज' और 'वनमाला'। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से उल्लेख्य कहानियाँ हैं :

'प्रेम-परिणाम', 'प्रेमपुष्पांजली', 'प्रणय परिपाटी', 'योगिनी', 'मौनव्रत', 'प्रतिज्ञा' तथा 'शान्ति निकेतन'।

प्रेम एवं प्रणय के विविध रूपों का चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है। सौन्दर्य, आकर्षण, मोह तथा वासना के सूक्ष्म विश्लेषण की ओर लेखक की विशेष अनुरक्ति है। 'प्रेम परिणाम' शीर्षक कहानी में विवाहित पुरुष के प्रेम का भावपूर्ण चित्रण है। प्रेमी 'शैलेन्द्र' के अन्तर्द्वन्द्व का काव्यात्मक विश्लेषण भी किया गया है। उसकी पत्नी 'सरला' और प्रेमिका 'विमला' के व्यक्तित्व का विश्लेषण भी विभिन्न स्थितियों में सन्तुलन के साथ किया गया है। 'प्रेमपुष्पांजली' कहानी का आधार भी प्रेम-व्यंजक घटना है। 'चन्द्रकला' और 'प्रेमी' के मन की विभिन्न स्थितियों का चित्रण इस रचना मे हुआ है। सौन्दर्य के उन्मत्तकारी आकर्षण का निरूपण करते हुए कहानीकार ने 'चन्द्रकला' के सौन्दर्य पर आसक्त प्रेमी की कष्टसहिष्णुता और स्टेशन तक पहुँचकर गाड़ी के चल देने पर पुष्पांजलि अर्पित करने की घटना का आकर्षक वर्णन किया है। 'प्रणय-परिपाटी' में कविकर्म की व्याख्या कर उसकी महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। नारी पात्रों के मनोभावों का विश्लेषण कलात्मक ढंग से किया गया है। 'मालती' अपने भावुक प्रेमी के भावों को ज्ञात कर स्वयं आकुलहृदया बनती है परन्तु प्रेमी के प्रति आत्म-समर्पण का अवसर उसे प्राप्त नहीं होता। संयोग और वियोग की स्थितियों का समान कुशलता के साथ इस रचना में अंकन किया गया है।

'योगिनी' शीर्षक कहानी मे प्रेम की व्यंजना व्यापक दृष्टि से की गयी है। 'सुरेन्द्र' तथा 'शैवालिनी' के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार ने प्रेम तथा लोक-कल्याण के लिये अंगीकृत सेवा-व्रत के पारस्परिक विरोध को कृत्रिम तथा अव्यावहारिक बताया है। सुरेन्द्र अपनी पत्नी को छोड़ कर लोकाराधन के लिये चल देता है और पति की वियोगाग्नि में दग्धा शैवालिनी तपस्या करने के उद्देश्य से 'योगिनी' बन जाती है। संन्यासी के उपदेश से सुरेन्द्र को अपने वास्तविक कर्तव्य का ज्ञान होता है। कहानी के अन्त में सुरेन्द्र और शैवालिनी का संयोग होता है। कहानीकार ने दोनों पात्रों की मनःस्थितियों का विश्लेषण कुशलता से किया है। दो प्रेमियों के मध्य प्रेमिका वासन्ती के व्यक्तित्व का निरूपण 'मौनव्रत' शीर्षक कहानी में किया

गया है। आशा के सूत्र को सहारा मानकर चलने वाले प्रेमी और निराश प्रणयी के विरोधी व्यक्तित्व-युग्म का चित्रण इस रचना में हुआ है। देश-सेवा-व्रत को धारण करने वाले विश्वनाथ और अमरनाथ के चरित्र का उदात्त रूप 'प्रतिज्ञा' शीर्षक कहानी मे अभिव्यक्त हुआ है। उनके व्यक्तित्व में त्याग, सेवा और कर्त्तव्य-परायणता सदृश महद्गुणों की प्रतिष्ठा की गई है। 'शान्ति निकेतन' शीर्षक कहानी में 'चन्द्रशेखर' और 'किशोरी' के प्रेम का काव्यात्मक वर्णन है। प्रतीकों के सहारे मानव-भावों के विश्लेषण का प्रयास इस कहानी की प्रमुख विशेषता है।

पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से हृदयेश जी की कहानियों का विशेष महत्व है। यद्यपि उनकी शैली काव्यात्मक और आलंकारिक है तथापि उसके द्वारा पात्रों के मन की विभिन्न स्थितियों का सन्तुलित विश्लेषण हुआ है। पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित एवं विश्लेषित करने में इनकी भाव-प्रवण रचना-पद्धति से सहायता ही प्राप्त हुई है। इनकी व्यक्तित्व-विश्लेषण-विधि मे कल्पना, भावुकता, दार्शनिकता और यथार्थ जगत् की तथ्यपरक घटनाओं का विचित्र समन्वय है। हृदयेश जी की कहानियो में अन्य तत्वों की स्थिति चाहे जो भी हो, उनका व्यक्तित्व-विश्लेषण का प्रयास सराहनीय है।

विनोदशंकर व्यास की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रसाद जी की कहानी-रचना-शैली का अनुसरण कर समाज के विविध रूपों का अंकन विनोदशंकर व्यास ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। राजनीतिक और ऐतिहासिक कथावस्तु को भी इन्होंने कहानी के आधार के रूप में ग्रहण किया। इनकी कहानियो मे घटना-वर्णन की प्रवृत्ति की प्रधानता है तथा संयोग एवं आकस्मिकता का संयोजन हुआ है। पात्रों में आदर्शवादिता अनिवार्यतः विद्यमान है। कल्पना को वर्णन एव विश्लेषण के मध्य प्रश्रय प्राप्त है। यथार्थ की ओर लेखक ने बहुत कम ध्यान दिया है। समाज के दीन एवं निराश वर्ग का चित्रण करने में भी व्यास जी ने भावुकता और आदर्श को प्रधानता दी है। 'भूली बात'[1] शीर्षक कहानी-संग्रह में इनकी नौ कहानियो का संकलन है। तृतीय दशक की इनकी कतिपय महत्वपूर्ण कहानियों का सचयन 'पचास कहानियाँ'[2] शीर्षक संग्रह मे किया गया है। इनकी प्रथम कहानी 'प्रत्यावर्त्तन'[3] है, जिसका प्रकाशन 'इन्दु' पत्रिका मे जनवरी १९२७ में हुआ।

---

१. प्रकाशन-पुस्तक मन्दिर काशी, सम्वत् १९८६।

२ प्रकाशन-भारती-भंडार (लीडर प्रेस), प्रयाग, सं० १९९६।

३. 'इन्दु'-कला ८, किरण, १९ जनवरी सन् १९२७।

'नव पल्लव', 'तूलिका', 'धूपदीप' तथा 'उसकी कहानी' इनकी इस युग की उल्लेखनीय कहानियाँ है।

सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र प्रेमी की भूमिका में अधिकांशतः असफल एवं निराश चित्रित किये गये हैं। संयमी युवक-युवतियों के आदर्श एवं त्याग का विश्लेषण भी व्यास जी ने उतनी ही तत्परता से किया है जितनी तत्परता से असामाजिक, अनैतिक एवं वेश्याओं के कलुषित जीवन से सम्बद्ध प्रेम के तिरस्कृत तथा उपेक्षित रूप का चित्रण किया है। इनकी कहानियों में पात्रों का चरित्र-विकास वर्णनात्मक पद्धति का आधार लेकर किया गया है, अतएव उनके व्यक्तित्व के विश्लेषण का अवसर कहानीकार ने प्राप्त कर लिया है। भिन्न-भिन्न वर्गों, व्यवसायों और उद्देश्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र व्यास जी की लेखनी से कहानी के दृश्य-पट पर अवतरित होने की क्षमता प्राप्त करते हैं। 'हृदय की कसक'[1] शीर्षक कहानी में वासनाजन्य आसक्ति के कारण उत्पन्न व्यथा तथा अनुभूति का मार्मिक चित्रण है जो सम्बद्ध पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में सहायक सिद्ध होता है।

व्यास जी ने स्त्री और पुरुष पात्रों को समान रुचि और कुशलता से कहानी के कथानक में संयुक्त करने का प्रयत्न किया है। भाग्यवाद के प्रति इनकी दृढ़ आस्था है। अतएव पात्रों को नियति के संकेत पर चलने के लिये विवश किया गया है। 'भाग्य का खेल' शीर्षक कहानी में यह प्रवृत्ति बहुत ही स्पष्ट रूप में परिलक्षित होती है। धनवान अथवा धनहीन बनना मनुष्य के भाग्य पर ही अवलम्बित है, ऐसा इस कहानी में बताया गया है। परिणामतः पात्रों को निश्चित ढर्रे पर ले चलना आवश्यक हो गया है। उनके व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश कर अन्य गुणावगुणों की व्याख्या की ओर ध्यान देना लेखक ने आवश्यक नहीं माना है। कतिपय कहानियों में व्यास जी ने पात्रों की मनःस्थिति का स्वाभाविक और मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण भी किया है। भाग्यवाद पर आधारित कहानियों की अपेक्षा इन कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण अधिक कलात्मक और स्वाभाविक बन पड़ा है। 'मोह' और 'अन्धकार' शीर्षक कहानियाँ उदाहरण के रूप में देखी जा सकती हैं। 'मोह' में सन्तानहीन वृद्ध की मनःस्थिति का उत्कृष्ट विश्लेषण है, और 'अन्धकार' में पुत्रहीना माँ के हृदय का भावपूर्ण किन्तु यथातथ्य चित्रण है।

प्रेम, करुणा, ममता, ईर्ष्या और प्रतिशोध की सूक्ष्म वृत्तियों का विश्लेषण भी व्यास जी की कहानियों में प्राप्त होता है। इनके विश्लेषण में स्वयं कहानीकार

---

१. 'इन्दु'—कला ८, किरण ३, मार्च सन् १९२७।

ने अपने वर्णन को प्रधानता दी है। जहाँ सहज गति से कथावस्तु के विकास और परिस्थितियों के अंकन को महत्व दिया गया हैं, वहाँ उपर्युक्त वृत्तियों का चित्रण बहुत ही आकर्षक है। यद्यपि इनमें आदर्शवादिता तथा भाग्यवादिता की प्रधानता है और वर्णनात्मक पद्धति का अनुसरण कर-स्वयं व्याख्या और विश्लेषण की पूर्ण स्वतन्त्रता का इन्होंने उपयोग किया है, तथापि घटनाओं की अपेक्षा पात्रों को अधिक महत्व देकर उनके व्यक्तित्व को सक्षम और प्रभाविष्णु स्वरूप देने का साहस इनकी कहानियों में स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

'उग्र' जी स्वतंत्र शैलीकार के रूप में समादृत होते हुए भी अपनी प्रारंभिक रचनाओं में प्रसाद-संस्थान के भावुकतामूलक आदर्शवादी कहानीकार प्रमाणित होते है। सन् १९२० से इनकी कहानी-रचना का समारम्भ हुआ जो आगामी कई दशाब्दियों तक चलता रहा। इनकी प्रारम्भिक रचनाओं का संकलन 'रेशमी'[१] के नाम से प्रकाशित है, जिसमें इनकी सत्रह कहानियाँ संग्रहीत हैं। पात्रों के व्यक्तित्व-निरूपण की दृष्टि से इनमें प्रमुख है—'विकास', 'रेशमी', 'प्रार्थना', 'रिसर्च विकास', 'बेईमानचन्द और ईमान सिंह', 'वाह होली! आह होली!', 'भ्रम', 'अवतार', 'मुक्ता', 'मोंको चूनरी की साध', टीला और गड्ढा' तथा 'संगीत समाधि'। समाज के विभिन्न वर्गों से इन्होंने पात्रों का संचयन किया है। विशेष रूप से शोषित, दलित, सामाजिक कुसंस्कारों से प्रपीड़ित, साम्प्रदायिकता के विषमय आघात से संतप्त पात्रों के व्यक्तित्व का तथ्यपरक विश्लेषण इनकी कहानियों में प्राप्त होता है। समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्तिगत जीवन की विविध समस्याओं को इनकी कहानियों मे प्रवेश पाने की छूट रही है।

देशभक्ति और राष्ट्रीयता के उच्च आदर्शों की व्यंजना इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है। पात्रों में अधिकांश संघर्षशील, साहसी और कर्मठ दिखाये गये हैं। प्रतिकूल स्थितियों के अंकन में 'उग्र' जी को कमाल हासिल है। 'उसकी माँ' और 'देशभक्त' शीर्षक कहानियों में उनकी स्थित्यंकन सम्बन्धी कुशलता का प्रमाण प्राप्त होता है। इस कलात्मक चित्रण की क्षमता से पात्रों के व्यक्तित्व को उभरने की शक्ति प्राप्त हुई है। विरोधी वृत्तियों के विश्लेषण द्वारा भी पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण किया गया है। 'बेईमानचन्द ईमान सिंह' में इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है। दो पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण एक ही सुगठित कथावस्तु के आधार पर कुशलता से किया गया है। इसी प्रकार 'वाह होली! आह होली!' में धनवानों और

---

१ प्रकाशक-गंगा ग्रन्थागार, २६ लाटूश रोड, लखनऊ।

निधनों की दशा का चित्रण कर सम्बद्ध पात्रों की मन:स्थिति का भावप्रधान विश्लेषण किया गया है। कुछ कहानियों में प्रतीकों के सहारे पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण किया गया है। उदाहरणार्थ 'टीला और गड्ढा' शीर्षक कहानी में चित्रित समाज के उच्च एवं निम्न स्तर के पात्रों का विश्लेषण दृष्टव्य है। समाज-सुधार मे प्रवृत्त व्यक्तियों की चरित्रहीनता का विश्लेषण कर उनके व्यक्तित्व के रहस्यमय स्वरूप का अंकन भी 'सुधारक' जैसी कहानियों में किया गया है। 'संगीत और समाधि' शीर्षक कहानी मे उग्र जी ने कलाकार के व्यक्तित्व की मार्मिक अभिव्यंजना की है तथा समाज का उसके प्रति क्या कर्त्तव्य है, इसका भी संकेत दिया गया है।

'उग्र' जी की लाक्षणिक भाषा तथा वातावरण के वर्णन की कुशलता भी पात्रो के व्यक्तित्व के निरूपण में सहायक होती है। 'विकास' शीर्षक कहानी में अर्थ-उपासना के प्रति गम्भीर व्यंग्य प्रस्तुत करते हुए उग्र जी ने धनलोलुपता का पर्दाफाश है और अर्थ-पिशाच पात्र के व्यक्तित्व का तीव्र व्यंजनात्मक विश्लेषण किया किया है। करुण-भाव के कलात्मक प्रसार के मध्य 'मोको चुनरी की साध' शीर्षक कहानी मे एक अल्पवयस्का बालिका के कोमल किन्तु आन्तरिक व्यथा से आन्दोलित मन का चित्रण किया गया है। 'मुक्ता' शीर्षक कहानी में भावप्रवण नारी-हृदय का आकर्षण युक्त चित्रण है। उसके सौन्दर्य, उदारता तथा भोले स्वभाव का उग्र जी ने सुरुचिपूर्ण अंकन किया है।

'उग्र' जी की कहानियों में भावप्रवण आदर्श पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण तो हुआ ही है साथ ही उस युग की विभिन्न समस्याओं के आलोक मे पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रियाओ की व्याख्या भी हुई है। अपनी कहानियों में दुर्वृत्त, पतित एवं उपेक्षित वर्ग के पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण का अपूर्व साहस उग्र जी ने प्रदर्शित किया। व्यक्तित्व-विश्लेषण में उन्होने तीव्र व्यंग्यों, कटूक्तियो, लाक्षणिक शब्दों और उत्तेजनापूर्ण अपशब्दों का भी प्रयोग किया है। उनकी वर्णन-कुशलता तथा मन:स्थितिया के विश्लेषण की क्षमता सर्वमान्य है।

भावमूलक आदर्शवादी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण का रूप

कहानी के शीर्षक : प्रसाद संस्थान के भावमूलक आदर्शवादी कहानीकारों ने अपनी कहानियों के शीर्षक सामान्यत: पात्रों के चरित्र, कार्य, व्यवहार, क्रिया-प्रतिक्रिया और उद्देश्य को लक्षित कर ही निर्मित किये हैं। प्रसाद जी की अधिकांश कहानियों के शीर्षक संक्षिप्त हैं और पात्रों के नाम, चरित्र अथवा व्यक्तिगत महत्व को व्यक्त करने में सक्षम हैं। 'ममता', 'नूरी', 'गुंडा', 'मधुवा', 'घीसू', 'नीरा', 'बन्दा', 'चूड़ीवाली', 'वैरागी', 'बनजारा', 'सलीम', 'देवरथ', 'दासी' तथा 'गुदड़साईं' संक्षिप्त

और पात्रों के नाम तथा कार्य की ओर संकेत देने वाले शीर्षक हैं। राजा राधिका-रमण सिंह की कुछ कहानियों में यही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। 'दरिद्र-नारायण' उनकी प्रसिद्ध कहानी को पात्र-विशेष के व्यक्तित्व की विलक्षणता को प्रकट करने वाला शीर्षक है। रायकृष्णदास ने भी कहानी के शीर्षक निर्धारण करने में पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं को महत्व दिया है। 'गहूला' 'नरराक्षस', 'आश्रित', 'गल्पलेखक', 'सुहाग', 'माँ की आत्मा', 'समदुखिनी' जैसे शीर्षक उनकी इस प्रवृत्ति के द्योतक हैं। चण्डी प्रसाद हृदयेश की कहानियों मे शीर्षकों की रचना वर्ण्यवस्तु के आधार पर हुई है, पात्रो की विशेषताओं को उनके द्वारा व्यक्त करने का प्रयास नहीं किया गया है। विनोदशंकर व्यास की कहानियों के अधिकांश शीर्षक पात्रों के व्यक्तित्व की ओर संकेत प्रस्तुत करते हैं। 'वंशीवाला', 'प्रमदा', 'रधिया', 'पगली', 'छलिया', 'अभागे का घर', 'करुणा', 'चित्रकार', 'अभिनेता', 'कल्पनाओं का राजा' इसी प्रकार के शीर्षक हैं। उग्र जी की अधिकांश कहानियों के शीर्षक भी पात्रो के कार्य, व्यवहार एव गुणावगुणों को लक्षित करने मे समर्थ हैं। 'देशभक्त', 'मुक्ता', 'रेशमी', 'बेईमान चन्द और ईमान सिंह', 'सुधारक', 'उसकी माँ' शीर्षक पात्रों के व्यक्तित्व से सीधा सम्बन्ध रखते हैं। इस प्रकार यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि प्रसाद-संस्थान के अधिकांश कहानीकारों ने पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने वाले शीर्षकों की रचना कर अपनी कहानियों को चरित्र-प्रधान स्वरूप प्रदान किया।

पात्रों के नाम : इस संस्थान के कहानीकारों ने पात्रों के नामकरण द्वारा उनके गुणावगुणों की ओर संकेत कर व्यक्तित्व विश्लेषण का आधार प्रस्तुत किया है 'ममता' कहानी की ममता स्नेह, उदारता और पर-सेवा-व्रत-रता नारी का आदर्श रूप है। 'आँखों की थाह' मे 'सुषमा' अपने सौन्दर्य की प्रधानता के कारण कहानी की केन्द्रीय शक्ति बनती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी 'विमला'[1] का चरित्र विमल बना रहता है। 'बेईमानचन्द और ईमानसिंह'[2] तो अपनी चरित्रगत विशेषताओं के कारण ही इस सज्ञाओं के अधिकारी बने हैं। 'तुलसा'[3] का चरित्र तुलसी-दल सा पवित्र बना रहता है। उसके व्यक्तित्व के अंकन में कहानीकार ने करुणा और पवित्रता की प्रतीक तुलसी की विशेषताएँ संयुक्त कर दी हैं। 'मणिभद्र'[4] रत्नों और बहुमूल्य वस्तुओं से परिपूर्ण सार्थवाह का अधिपति है। राजकुमार 'अरुण'[5] मधूलिका के लिए

१. 'सुहाग'—ले० रायकृष्णदास।
२. ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र',—'बेईमान चन्द और ईमानसिंह'
३. ,, ,, ,, —'मोंको चूनरी साध'
४. ले० जयशंकर प्रसाद,—'आकाशदीप'
५. — — —'पुरस्कार'

अरुणोदय के प्रकाश सदृश है। इस प्रकार भावुकतामूलक आदर्शवादी कहानियों में अधिकांश प्रमुख पात्रों के नाम का उनके चरित्र और व्यक्तित्व से निकट सम्बन्ध है।

भावमूलक आदर्शवादी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। अतएव प्रायः सभी कहानियों मे पात्रों के व्यक्तित्व का परिचय प्रारम्भ मे दिया गया है। कहीं उनके शरीर, आकार-प्रकार, वेश-भूषा का वर्णन है तो कहीं उनकी चरित्रगत विशेषताओं का परिचय प्रस्तुत किया गया है। उपमानों की सहायता से प्रारम्भ में ही पात्रों के स्वरूप तथा सौन्दर्य का काव्यात्मक वर्णन अधिकतर कहानियों मे प्राप्त होता है। नायिका के रूप की परम्परागत वर्णन-पद्धति का प्रभाव ऐसे स्थलों पर परिलक्षित होता है। 'रूखा स्नेह' की प्रमुख पात्रा का प्रारम्भिक परिचय इस प्रकार है—'देखा—एक नवयुवती पुष्पों को एकत्र कर रही है। उसकी सुन्दरता फूलों की अपेक्षा अधिक मनोरम थी। वह उम्र में लगभग उन्नीस वर्ष की जान पड़ती थी। भ्रमर के समान उसके काले केश बड़ी निपुणता से बाँधे गये थे। गौर वर्ण था। मृग के समान नयन थे। मुख पर एक अद्भुत कान्ति थी, शरीर पर केवल एक सादी धोती थी।'[1]

कहीं-कहीं पात्रों के स्वभाव का विश्लेषण भी उनके प्रारम्भिक परिचय में ही कर दिया गया है। 'कमला' के चंचल स्वभाव का वर्णन उसके व्यक्तित्व की ओर महत्वपूर्ण संकेत प्रस्तुत करता है—

'कमला भी अजब जिद्दी है। जब कभी दम बाँध कर गुम हो जाती है, नाको दम कर देती है। कोई पसन्द की चीज़ पा गई तो फूली नहीं समाती और नहीं तो फिर आप ही आप उफन कर फूलती रहती है'।[2]

इस प्रकार के परिचयात्मक वर्णन में प्रारम्भ में ही पात्र विशेष के स्वभाव, चरित्रगत-वैशिष्ट्य, आकार प्रकार तथा प्रभाव का ज्ञान प्राप्त कर लेने से व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप रोचक और कौतूहलवर्द्धक नहीं बन पाता। अधिकांश कहानियों में पात्रों का प्रारम्भिक परिचय कहानी-लेखकों ने स्वयं प्रस्तुत किया है। उनकी भाव-प्रवणता तथा स्वच्छन्द वर्णन-शैली का प्रभाव ऐसे स्थलों पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। उग्र जी की शैली में पात्रगत आकर्षण को तीव्र गति से विकसित होने का अवसर प्राप्त होता है। 'रेशमी' कहानी का यह अंश द्रष्टव्य है :

'सूरज-सा मुँह मेरे यार का, चाँद सा माथा, दिन सी दीप्त देह, रात सी रहस्यमय अलकें! उस रसीले की एक साँस आबेहयात...'। उकठा जंगल सिहरने,

---

१. ले० विनोदशंकर व्यास—'रूखा स्नेह' (पचास कहानियाँ), पृ० ३३।

२. ले० राजा राधिकारमण सिंह—'पैसे की धुधनी' (गांधी-टोपी), पृ० ५७।

लहराने लगा। हरियाली हँसने लगी, मेरे यार की पेशवाई में मौसमे-बहार भी बस रोचश्म बेकरार उस उजड़े बयार में दौड़ती आई'।[1]

पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण विविध प्रसंगों में

पात्रों की वेश-भूषा तथा आकृति के वर्णन द्वारा उनके व्यक्तित्व के बाह्य रूप का अंकन भावमूलक कहानियों में अन्य प्रसगों में भी हुआ है। कथानक के विकास के विविध चरण कहानीकारों को पात्रों के रूपाकन का अवसर देते रहे हैं। कहानी के पात्र अपनी वेशभूषा तथा बाह्य आकृति द्वारा स्वयं ही अपने गुण-अवगुणों का परिचय देने लगते हैं। इस संस्थान के अधिकांश कहानीकारों ने अपनी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व को आकर्षक और मनोरम रूप देने की चेष्टा की है। स्त्री पात्र ही नहीं पुरुष पात्र भी अपनी सज-धज तथा आकृति द्वारा आकर्षण का केन्द्र बनने के लिये प्रयत्नशील प्रतीत होते हैं। नारी पात्र का रूपांकन करते हुए प्रसाद जी ने लिखा है :

'किन्नरी सचमुच हिमालय की किन्नरी है। ऊनी लम्बा कुर्त्ता पहने है....कानों में दो बड़े-बड़े फीरोजे लटकते हैं। सौन्दर्य है, जैसे हिमानी-मंडित उपत्यका में वसन्त की फूली हुई बल्लरी पर मध्यान्ह का आतप अपनी सुख-कान्ति बरसा रहा हो। हृदय को चिकना कर देने वाला यौवन प्रत्येक अंग में लालिमा की लहरी उत्पन्न कर रहा है।'[2]

पुरुष पात्र के रूप और प्रभाव का अकन भी प्रसाद जी ने उतने ही मनोयोग से किया है। 'वैरागी' में पुरुष पात्र का रूपांकन द्रष्टव्य है :

'एक शिला-खण्ड पर वैरागी पश्चिम की ओर मुख किये ध्यान में निमग्न था। अस्त होनेवाले सूर्य की किरणें उसकी वरौनियों में घुसना चाहती थी, परन्तु वैरागी अटल, अचल था। बदन पर मुसकराहट और अंग पर ब्रह्मचर्य की रूक्षता थी। यौवन की अग्नि निर्वेद की राख से ढकी थी।'[3]

प्रसाद-संस्थान के अन्य प्रमुख कहानीकारों ने भी इसी भाव-प्रधान काव्यात्मक शैली में पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं——मुख्यतः बाह्य आकृति तथा सौन्दर्य——का चित्रण विविध प्रसंगों में किया गया है। चण्डीप्रसाद हृदयेश ने प्रसाद जी की शैली का सफलता के साथ अनुकरण किया है। किशोरी का रूप-चित्र प्रस्तुत करते हुए वे लिखते हैं :

---

१. ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'—'रेशमी' से (रेशमी से)।

२. ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'हिमालय का पथिक' (आकाश दीप से)।

३. ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'वैरागी' (आकाश दीप से)।

'किशोरी किशोरावस्था की सीमा पर पहुँच चुकी थी। यौवन की उद्दाम प्रवृत्ति की रंगभूमि में किशोरी ने प्रथम चरण रखा था। यौवन के तीव्र मद की अरुणिमा उसके नयन कमलों में दृष्टिगोचर होने लगी थी। उसकी गति में भी सुरा का मतवालापन परिलक्षित होता था।' *

प्रसाद जी के रूप-विधान और वर्णन शैली का अनुकरण हृदयेश जी ने अपनी अन्य कहानियों मे इसी प्रकार किया है। प्रसाद संस्थान के अन्य कहानीकारों जैसे रायकृष्णदास, राधिकारमण सिंह, विनोदशंकर व्यास और 'उग्र' जी की कहानियों में यह प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। अनुकूल अवसर पाते ही वे पात्रों के रूपांकन का प्रयास करते हैं। कार्य, व्यवहार तथा उद्देश्य के अनुकूल ही पात्रों के रूप तथा आकृति का अंकन करना इन कहानीकारों की सामान्य प्रवृत्ति है।

आकृति और वेशभूषा वर्णन की एक विशेषता सभी भावमूलक आदर्शवादी कहानीकारों में विद्यमान है। वह विशेषता है, कहानी में आद्यन्त एक ही प्रकार की वेश-भूषा तथा विकाररहित सौन्दर्य का बना रहना। कहानीकारों ने परिस्थितियों, भावनाओं तथा प्रतिक्रियाओं को ध्यान मे रखकर पात्रों की वेश-भूषा तथा रूप मे परिवर्त्तन की आवश्यकता नहीं समझी है। अधिकांश कहानीकारों ने एक ही साँचे मे ढले पात्रों की सृष्टि कर अपने कर्त्तव्य को समाप्त समझ लिया है। सौन्दर्य, आकर्षण यौवन और मादकता का आवरण प्रायः सभी पात्रों को प्राप्त हुआ है। उनकी परिवर्त्तनशील मनःस्थिति तथा क्रिया-प्रतिक्रिया का ध्यान रखकर रूप और वेश-भूषा मे परिवर्त्तनों का प्रसंगानुकुल वर्णन व्यक्तित्व विश्लेषण की दृष्टि से नही किया गया है।

पात्रों के व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण

पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिए उनकी मनोवृत्तियों, अन्तर्द्वन्द्व तथा अन्तःप्रेरणाओं का वर्णन व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप के विवेचन के लिये आवश्यक होता है। भावमूलक आदर्शवादी कहानियों में प्रेम, प्रणय, रूपासक्ति तथा उदात्त आदर्शों के प्रति उत्सर्ग-भावना के बहुरूपीय चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। इन्हीं के आलम्बन-रूप में पात्रों के व्यक्तित्व की सृष्टि की गयी है। प्रेम के अन्तर में टीस, वेदना, वियोग की कसक जैसी सूक्ष्म भावनाओं का चित्रण भी प्रसाद जी जैसे कुशल कहानीकार द्वारा हुआ है। इन भावनाओं के अंकन से पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का प्रयास मुख्य रूप से प्रसाद जी की कहानियों में परिलक्षित होता है। 'चूड़ीवाली' का भाव-व्यंजक विश्लेषण द्रष्टव्य है:

'यौवन के तीसरे पहर में जब प्रेम का उन्माद तपस्या की अग्नि में तपकर अवदात हो गया, तपःपूत प्रेम में मानवीय दुर्बलता के कारण करुण निराशा भी तद्रूप

धूमिल हो गयी, तभी सान्ध्य-बेला के धुंधलेपन में सहसा एक दिन प्रिय का आगमन हुआ'।[1]

भावना और आदर्श के सन्तुलन को निभाते हुए उपर्युक्त प्रसंग में प्रेम की पूर्णता की व्यंजना कहानीकार ने सफलता से की है, जिससे नारी-पात्र के धैर्य एवं उत्सर्ग की श्रेष्ठता का संकेत प्राप्त होता है।

प्रसाद जी की सौन्दर्य-विवेचन की दृष्टि पात्रों के व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश कर उनके सद्गुणों को व्यंजित करने में सक्षम थी। अतएव उनकी कहानियों में क्षमा, दया, करुणा एवं त्याग की उच्च मानवीय वृत्तियों को स्थान प्राप्त हुआ है। इनके विश्लेषण एवं निरूपण द्वारा नारी और पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व का आन्तरिक स्वरूप प्रकाशित हुआ है।

पात्रों के संवाद भी इस संस्थान की कहानियों में व्यक्तित्व विश्लेषण में सहायक सिद्ध हुए हैं। कहीं उनके द्वारा पात्रों की मनोवेदना को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है तो कहीं उन्हीं के सहारे कहानीकार ने पात्रों के चरित्र को विकसित किया है। 'नन्दू' और 'मोनी' की विवशता और प्रेम की आकुलता को 'बनजारा' कहानी के इस सम्वाद में कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है :

'तो मैं लौट जाऊँ ?'

'हाँ लौट जाओ, जब तक ओस की बूंदों से ढँकी धूल तुम्हारे पैरों में लगे, उतने ही समय में अपना पथ समाप्त कर लो।'

'मैं लादना छोड़ दूँगा मोनी।'

'ओह, यह क्यों ? मैं इस पहाड़ी पर निस्तब्ध प्रभात में घंटियों के मधुर स्वर की आशा में अनमनी बैठी रहती हूँ। वहाँ पहुँचने का, बोझ उतारने के व्याकुल विश्राम का अनुभव करके सुखी रहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि किसी को लादने के लिये बोझ इकट्ठा करूँ नन्दू'।[2]

उपर्युक्त संवाद में संयत ढंग के पात्रों की मनःस्थिति का भावपूर्ण विश्लेषण हुआ है।

पात्रों की उद्विग्नता, आकुलता तथा भावुकता का संकेत देने वाले संवादों की योजना द्वारा व्यक्तित्व के निरूपण की चेष्टा अन्य कहानियों में भी विद्यमान है।

---

१ ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'चूड़ी वाली' (आकाशदीप से)।

२ ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'बनजारा' (आकाशदीप से)।

'शान्ति निकेतन' के सरला और शैलेन्द्र का संवाद उनके व्यक्तित्व की पृथक् विशेषताओं की ओर संकेत देता है :

'शैलेन्द्र बोले—क्या इसमें प्रेम की कादम्बिनी न बरसेगी।

सरला बोली—शैलेन्द्र उन्मत्त न होओ। तुम जानते हो, इस प्रेम का पथ बड़ा कठिन है।

शैलेन्द्र संभल कर बोले—किन्तु अप्राप्य तो नहीं।

सरला बोली—नहीं, किन्तु प्राप्य है केवल मरण के उपरान्त'।[1]

आदर्श और प्रेम के निर्वाह की ओर गतिशील पात्रों के चरित्र तथा प्रवृत्ति का विश्लेषण इस संवाद द्वारा हो जाता है।

पात्रो के स्वगत कथन भी उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करते हैं। भावमूलक आदर्शवादी कहानियों के स्वगत-कथन में भावना और आवेश की तीव्रता का प्रभाव स्पष्ट है। मन की व्यथा को प्रतीकों के सहारे व्यक्त करती हुई 'मीना' एक अपरिचित-कुंज के प्रति जो निवेदन प्रस्तुत करती है वह मूलतः स्वगत कथन ही है। इसमें उसका करुण-कोमल व्यक्तित्व कितनी भाव-प्रवणता के साथ व्यक्त हुआ है :

'मैं एक भटकी हुई बुलबुल हूँ। हे मेरे अपरिचित कुंज! क्षण भर मुझे विश्राम करने दोगे? यह मेरा क्रन्दन है—मैं सच कहती हूँ यह मेरा रोना है, गाना नहीं। मुझे दम लेने दो। आने दो वसन्त का वह प्रभाव—जब सब संसार गुलाबी रंग में नहा कर अपने यौवन में थिरकने लगेगा और तब मैं तुम्हें अपनी एक तान सुनाकर, केवल एक तान, इस रजनी-विश्राम का मूल्य चुका कर चली जाऊँगी। तब तक अपनी किसी सूखी डाल पर ही अंधकार बिता लेने दो। मैं एक पथ पर भूली हुई बुलबुल हूँ।'[2]

परस्पर विरोधी पात्रो की मनःस्थिति का विश्लेषण कर भावप्रधान कहानियो मे प्रतिक्रियाओं के पीछे अन्तर्निहित प्रेरणाओ का सांकेतिक विश्लेषण भी किया गया है। 'शान्ति निकेतन'[3] के शैलेन्द्र और सरला 'आकाशदीप'[4] के बुद्धगुप्त और चम्पा के व्यक्तित्व में विरोधी मनोवृत्तियो के घात-प्रतिघात का चित्रण कर सशक्त अन्तःप्रेरणाओं की ओर मार्मिक संकेत प्रस्तुत किया गया है। कहीं-कहीं कहानीकार ने मनःस्थिति का संकेत न देकर स्पष्ट वर्णन कर दिया है। जैसे ममता की व्यथा तथा करुण स्थिति के सम्बन्ध में प्रसाद जी स्वयं ही कहने लगते हैं :

---

१ ले० चण्डी प्रसाद हृदयेश—'शान्ति निकेतन' (नन्दन-निकुंज से)।

२ ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'स्वर्ग के खण्डहर में' (आकाशदीप से)।

३ ले० चण्डी प्रसाद हृदयेश—'शान्ति निकेतन' (नन्दन निकुंज से)।

४ ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'आकाशदीप' (आकाशदीप से)।

'....युवती ममता शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आंखो में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटकशयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी....परन्तु विधवा थी... तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था'।[१]

व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इस प्रकार का वर्णन कौतूहल-वृद्धि तथा सहजगति से उभरने वाले पात्रों के चरित्र विकास में सहायक नहीं होता।

आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

श्री जयशंकर प्रसाद ने भावमूलक आदर्शवादी कहानियों का प्रारम्भ कालक्रम से आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों के प्रकाश में आने के प्राय: चार वर्ष पूर्व किया था। समाज, राजनीति, देशप्रेम और सुधार आन्दोलनों से प्रेरणा ग्रहण कर यशस्वी कथाकार श्री प्रेमचन्द और उनकी रचना-पद्धति का अनुसरण करने वाले अन्य उत्कृष्ट कहानीकारों ने विविध प्रसंगों पर आधारित कहानियों की रचना की। इस जीवन्त, प्रेरणाप्रद एवं यथार्थ के स्पन्दन से समन्वित नवीन कला-संस्थान ने जिन उल्लेखनीय कहानीकारों को आकृष्ट किया उनमें विश्वम्भरनाथ जिज्जा, ज्वालादत्त शर्मा, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, सुदर्शन, उपेन्द्रनाथ अश्क तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में इस संस्थान के प्रवर्तक श्री प्रेमचन्द की कहानी-कला के विभिन्न तत्व तथा लक्षण विद्यमान हैं। पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व को इस संस्थान की कहानियों में सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। इसीलिये इस वर्ग के कहानीकारों की रचनाओं में सोद्देश्य चरित्रांकन एवं व्यक्तित्व-निरूपण की प्रधानता स्वीकार की गयी है[२]। इन कहानियों में पात्रों का चयन राजनीति, इतिहास, धर्म, प्रेम, हास्य-मनोरंजन तथा अनेकानेक प्रसंगों एवं सामाजिक विषयों के व्यापक क्षेत्र से किया गया है।

पात्रों के व्यक्तित्व को यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित करने का सत्साहस प्रदर्शित करते हुए भी प्रेमचन्द-संस्थान के आदर्श-प्रेमी कहानीकारों ने आदर्श और यथार्थ के संघर्ष को चित्रित कर अन्त में आदर्श की सफलता को प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार पात्रों के व्यक्तित्व में आदर्श गुणों एवं विशेषताओं को समन्वित करने की सामान्य प्रवृत्ति उनकी कहानियों में विद्यमान है। पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की

---

१ ले० श्री जयशंकर प्रसाद—'ममता' (आकाशदीप से)।

२. डा० ब्रह्मदत्त शर्मा—'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन' पृ० २२६।

वर्णनात्मक पद्धति को ही इस संस्थान के कहानीकारों ने अपनाया है। अधिकांश कहानियों में संयोग तथा आकस्मिकता को प्रधानता दी गयी है। अतएव पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण आदर्शों से परिसीमित एवं आबद्ध है। यद्यपि वर्णन-कुशलता और कल्पना की विशदता ने विविध प्रसंगों और परिस्थितियों में मानव-व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की क्षमता इस संस्थान के कहानीकारों को प्रदान की है, तथापि इनमें आकस्मिकता का मोह विद्यमान है जो व्यक्तित्व-विशेष को पूर्व निर्धारित स्थितियों तथा परिणाम के अनुसार चलने को प्रेरित करता है।

इस संस्थान की अधिकांश कहानियों में मध्यवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण एवं विश्लेषण हुआ है। पात्रों के अन्तर्जगत के विश्लेषण की ओर भी इस संस्थान के प्रमुख कहानीकारों का ध्यान गया है, फलतः उनके व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का अंकन भी यथार्थ स्थितियों के मध्य हुआ है। घटनाओं के आकर्षण तथा व्यामोह से मुक्त होकर कहानीकारों ने पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व को महत्व प्रदान किया है। पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य निरूपण का प्रयास तो प्रायः सभी कहानियों में देखा जा सकता है। परन्तु आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण विशिष्ट कहानियों में ही उपलब्ध है। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि जिस वातावरण में पात्रों के व्यक्तित्व को गतिशील होने का अवसर दिया गया है, उसमें भी यथार्थ और विश्वसनीयता के तत्व विद्यमान है। असम्भव और काल्पनिक वातावरण को पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण के लिये उपयुक्त नहीं समझा गया है।

प्रेमचन्द-संस्थान के कहानीकारों ने कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व को सशक्त और गतिशील रूप देने की व्यापक चेष्टा की। यद्यपि वे पूर्व परम्परा के प्रभाव के कारण अब भी दैवयोग और आकस्मिकता को अपनाये रहे तथापि यथार्थ के स्पन्दन को अनुभव करने वाली स्थितियों के अंकन तथा सहज-सम्भव वातावरण के चित्रण द्वारा पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व के प्रभावी रूप की प्रतिष्ठा की। कर्त्तव्यपरायणता और आदर्श-रक्षा की प्रवृत्तियाँ सामान्य रूप से पात्रों के व्यक्तित्व की निर्धारक शक्तियों के रूप में महत्व पाती रहीं। समाज-सुधार और देशप्रेम के उदात्त भावों ने भी अविस्मरणीय पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त किया। निस्सन्देह इस संस्थान के प्रवर्त्तक एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण कहानीकार स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द है।

श्री प्रेमचन्द और उनकी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द उर्दू कथा-साहित्य में सन् १९०१ से ही अपनी रचनाओं के कारण ख्याति प्राप्त कर रहे थे। हिन्दी कहानी-रचना की ओर वे सन् १९१५ में प्रवृत्त हुए। इसके पूर्व वे १०८ उर्दू कहानियों का प्रणयन कर कहानीरचना में कुशलता

प्राप्त कर चुके थे। सन् १६१७ में आपका प्रथम कहानी-संकलन 'सप्तसरोज' प्रकाशित हुआ। उसमें कुल सात कहानियाँ थीं।

(१) बड़े घर की बेटी (२) सज्जनता का दण्ड (३) सौत (४) पंच परमेश्वर (६) नमक का दारोगा (८) उपदेश (७) परीक्षा।

उपर्युक्त कहानियों में चार उर्दू में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी। (१) नमक का दारोगा (२) बड़े घर की बेटी (३) उपदेश तथा (४) परीक्षा। शेष तीन कहानियाँ हिन्दी में प्रथम बार प्रकाश में आईं। हिन्दी और उर्दू के समन्वय को प्रस्तुत करने वाली इस रचना में ही हिन्दी-जगत को प्रेमचन्द की प्रतिभा तथा रचना-कुशलता का परिचय प्राप्त हो गया। इस संकलन के भूमिका-लेखक श्री मन्नन द्विवेदी गजपुरी ने प्रेमचन्द को रवि बाबू के समकक्ष मानकर हिन्दी-साहित्य में उनका अभिनन्दन किया। लगभग २१ वर्षों तक निरन्तर हिन्दी कहानियों की रचना द्वारा उन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य की श्रीवृद्धि की। ढाई सौ से भी अधिक कहानियों की विपुल सम्पदा ने हिन्दी कहानी को गति, शक्ति, व्यापक दिशा-दृष्टि और अपूर्व व्यंजना शक्ति प्रदान की।

सन् १६१७ से प्रेमचन्द की कहानियों के संकलन प्रकाशित होने लगे और जीवन के विविध पक्षों की अभिव्यक्ति में समर्थ पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व का नया-नया रूप उभरता गया, प्रत्यक्ष होता गया। 'सप्तसरोज' के अतिरिक्त विभिन्न वर्षों एवं तिथियों में प्रकाशित उनके अनेक संग्रहों में अग्रलिखित उल्लेखनीय हैं :

'नवनिधि'[२], 'प्रेम पचीसी'[३], 'प्रेम पूर्णिमा'[४], 'प्रेमद्वादशी'[५], 'प्रेमतीर्थ'[६], 'प्रेमचतुर्थी'[७], 'प्रेमप्रसून'[८], 'प्रेमप्रतिमा'[९], 'प्रेरणा'[१०], 'अग्नि-समाधि'[११], 'प्रेमपंचमी'[१२]

---

१. 'सप्त सरोज'—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६ हैरिसन रोड, कलकत्ता।
२ 'नव-निधि', हिन्दी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय, बम्बई, सं० १६७४।
३ 'प्रेम पचीसी', हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, सं० १६८०।
४ 'प्रेम पूर्णिमा' ,, ,, सं० १६७६।
५ 'प्रेम द्वादशी', गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, सं० १६८३।
६ प्रेमतीर्थ', सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् १६३६।
७ 'प्रेम चतुर्थी', हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, हरिसन रोड, कलकत्ता, सं० १६८५।
८ 'प्रेमप्रसून', गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, सं० १६८१।
९ 'प्रेम प्रतिमा', भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, सं० १६८३।
१० 'प्रेरणा', सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् १६३२।
११ 'अग्निसमाधि', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, सन् १६२६।
१२ 'प्रेमपंचमी', गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, सं० १६८७।

'कफन'[1], 'मानसरोवर-आठ भाग'[2], 'गल्प-गुच्छ'[3], 'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ'[4] 'नवजीवन'[5], 'नारी जीवन की कहानियाँ'[6], 'पाँच फूल'[7], 'मृतक-भोज'[8]।

इनके प्रथम कहानी संकलन 'सोजे-वतन'[9] में, जो उर्दू में सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ, देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत पात्रों को स्थान प्राप्त हुआ है। इनकी उत्तरोत्तर विकसित कहानी-कला में देशभक्ति का प्रभाव भी विवर्द्धित होता गया है। अनेक उत्कृष्ट कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के परिचालक तत्व के रूप में देशभक्ति का समन्वय किया गया है। 'समर यात्रा', 'राष्ट्रसेवक', 'सुहाग की साड़ी' शीर्षक कहानियों मे देशभक्ति के महत्वपूर्ण रूप के संयोजन का क्रमशः विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। प्रेमचन्द के विशद कहानी-साहित्य में अनेक विषयों एवं प्रसंगों का समावेश हुआ है। अतएव उनकी कहानियों के वर्गीकरण का प्रयास कई विद्वान समालोचकों ने विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित होकर किया है। पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण को ध्यान में रखते हुए प्रेमचन्द की उत्कृष्ट कहानियों का वर्गीकरण किया जाय तो ज्ञात होगा कि जीवन के प्रायः सभी पक्ष उनकी कहानियों में व्यक्त हुए हैं। पात्रों के विविध स्वरूप इन कहानियों के संवेद्य को अनेक विधियों से पाठक वर्ग तक पहुँचाते है। चरित्र और व्यक्तित्व की सप्राणता ने प्रेमचन्द के पात्रों को अविस्मरणीय रूप प्रदान किया है। व्यक्तित्व के नियामक और परिचालक तत्वों के आधार पर उनकी प्रमुख कहानियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है:

(१) प्रेम व्यंजक कहानियाँ:—'विश्वास', 'सती', 'ज्योति', 'दिल की रानी', 'शिकार', 'वेश्या', 'घासवाली', 'कायर', 'कैदी', 'विद्रोही', 'मिस पद्मा', 'उन्माद', 'जादू', 'लैला', 'विनोद', 'प्रेम का उदय', 'अभिलाषा', 'रानी सारंधा', 'विस्मृति', 'पाप का

---

१ 'कफन' सरस्वती प्रेस, बनारस, १९३७।

२ 'मानसरोवर', आठ भाग, सरस्वती प्रेस बनारस, सन् १९३५।

३ 'गल्पगुच्छ', सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् १९२९।

४ ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, हिन्दी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय, बम्बई, सन् १९३८।

५ 'नवजीवन', गोपाल पब्लिशिंग हाउस, बाँकीपुर, सन् १९३५।

६ 'नारी जीवन की कहानियाँ' सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् १९३८।

७ 'पाँच फूल', सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् १९२९।

८ 'मृतक भोज', मोतीलाल, ६० हरिसन रोड, कलकत्ता, सन् १९३२।

९ 'सोज़ेवतन' (उर्दू), प्रकाशित सन् १९०९।

अग्नि-कुंड', 'धोखा', विस्मृति', 'मर्यादा की वेदी', 'कामनातरु', 'सेवा मार्ग', 'धर्म-संकट', 'दो सखियाँ', 'स्मृति का पुजारी', 'आगा-पीछा', 'रहस्य'।

(२) सर्वाहित प्रणयव्यंजक कहानियाँ : 'बालक', 'धिक्कार', 'कायर', नरक का मार्ग', 'अन्तिम शान्ति'।

(३) उदात्त प्रेमव्यंजक कहानियाँ : 'जीवन का शाप', 'स्त्री और पुरुष', 'निर्वासन', 'दिल की रानी', 'घासवाली', 'जादू', 'रसिक सम्पादक', 'दारोगाजी'।

(४) पुरुषत्व व्यंजक कहानियाँ : 'आहुति', 'हार की जीत', 'विश्वास।'

(५) सतीत्व व्यंजक कहानियाँ : 'आधार', 'सती', 'स्वर्ग की देवी', 'शिकार' 'दो सखियाँ।'

(६) धार्मिकता व्यंजक कहानियाँ : 'न्याय', 'मुक्तिधन', 'क्षमा', 'सद्‌गति', 'दुर्गा का मन्दिर', 'आत्माराम', 'खून सफेद', 'बासी भात में खुदा का साझा', 'डामुल का कैदी', 'ब्रह्म का स्वाँग'।

(७) अधिकार-मद व्यंजक कहानियाँ : 'बड़े भाई साहब', 'दण्ड', 'सभ्यता का रहस्य', 'समस्या', 'जुरमाना', 'पछतावा', 'सज्जनता का दण्ड', 'बोध', 'प्रेरणा', 'गुल्ली डंडा', 'ईश्वरीय न्याय', 'पशु से मनुष्य', 'पंचपरमेश्वर'।

(८) उदात्त सामाजिकता-व्यंजक कहानियाँ : 'बहिष्कार', 'मनुष्य का परम-धर्म', 'खून सफेद', 'कुसुम', 'दहेज', निर्वासन', 'ठाकुर का कुँआ', 'मन्दिर', 'धिक्कार', 'मृतक-भोज', 'सुभागी', 'तेंतर', 'भूत', सुहाग की साड़ी', 'नरक का मार्ग'।

(९) राजनीतिक आदर्श-व्यंजक कहानियाँ : 'विचित्र होली', 'सत्याग्रह', 'होली का उपहार', 'तावान', 'अनुभव', 'नशा', 'पंडित मोटेराम शास्त्री', 'सुहाग की साड़ी'।

(१०) नैतिक आदर्श व्यंजक कहानियाँ : 'विश्वास', 'उद्धार', 'रियासत का दीवान', 'दीक्षा,' 'मुक्तिमार्ग', 'सभ्यता का रहस्य', 'दो बहनें', 'दुर्गा का मन्दिर', सच्चाई का उपहार','राम-लीला','मंत्र','ममता','गरीब की हाय','समस्या' 'परीक्षा'।

(११) गृह-प्रपंच व्यंजक कहानियाँ : 'गृहदाह', 'महातीर्थ', 'बूढ़ी काकी', 'तेंतर', 'नैराश्य', 'बेटों वाली विधवा', 'घरजमाई', 'दो भाई', 'वैर का अन्त,' 'खूचड़', 'आभूषण', 'स्वामिनी', 'बूढ़ी काकी', 'शंखनाद'।

(१२) उदात्त मानवताव्यंजक कहानियाँ : 'बहिष्कार', 'सती', 'मर्यादा की वेदी', 'आँसुओं की होली', 'मृत्यु के पीछे', 'जुगनू की चमक', 'धर्मसंकट', 'लोकमत का सम्मान', 'राज्यभक्त'।

(१३) मानवीय दुर्बलता-व्यंजक कहानियाँ : 'लाटरी', 'मोटर के छींटे',

'माँगे की घड़ी', 'धर्मसंकट', 'विध्वंस', 'वेदी का धन', 'बलिदान', 'एक आँच की कसर', 'गरीब की हाय', 'जीवन का शाप', 'डिक्री के रुपये'।

(१४) विशिष्ट चरित्र-व्यंजक कहानियाँ : 'लांछन', 'घासवाली', 'तावान,' 'ढपोरशंख,' 'डिमान्स्ट्रेशन', 'स्मृति का पुजारी', 'कफन', 'लेखक', 'मूड', 'दफ्तरी', 'बौड़म', 'निमंत्रण', 'कज़ाकी', 'पंडित मोटेराम शास्त्री'।

उपर्युक्त वर्गीकरण में प्रेमचन्द की उन सभी कहानियों का समावेश है जिनमें पात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र को विश्लेषित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। कतिपय समीक्षकों ने स्त्रीशून्य, स्त्रीसहित, स्त्री-प्रधान, पुरुष प्रधान आधार पर भी प्रेमचन्द की कहानियों का वर्गीकरण किया है।[1] परन्तु इस प्रकार के वर्गीकरण से पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में कोई सहायता प्राप्त नहीं होती। उपर्युक्त वर्गीकरण में पात्रों, स्थितियों, वातावरण तथा विविध समस्याओं को ध्यान में रखा गया है, ताकि प्रेमचन्द-कहानी-साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त हो सके।

इस प्रसंग में यह भी आवश्यक है कि प्रेमचन्द की कहानी-रचना के विभिन्न स्तरों अथवा सोपानों को उनकी कहानी-कला के विकास के दृष्टिकोण से समझ लिया जाय। प्रेमचन्द उर्दू से हिन्दी की ओर प्रवृत्त हुए, अतएव प्रारम्भ में उर्दू की शैली, विषय-विवेचन-विधि, पात्रों के चरित्रांकन का प्रभाव उनकी रचनाओं पर परिलक्षित होता है परन्तु अपनी प्रतिभा, रचना-कौशल और व्यापक दृष्टिकोण के कारण वे कुछ ही समय के उपरान्त ऐसी कहानियाँ लिखने लगे, जिन पर उर्दू का प्रभाव अत्यन्त क्षीण था। देशभक्ति तथा इतिहास के आदर्शों से आगे निकल कर वे शीघ्र ही ग्राम्यजीवन और शोषित-दलित वर्ग की समस्याओं की ओर आकृष्ट हुए तथा विविध स्रोतों से उनकी कहानियों में ऐसे पात्र आने लगे, जिनके व्यक्तित्व को निरूपित, विश्लेषित अथवा मात्र अंकित करने का साहस भी अब तक किसी ने नहीं किया था। प्रेमचन्द की कहानी-रचना-कला तथा उत्तरोत्तर विकसित विश्लेषण-शक्ति का विवेचन करने के पूर्व उनकी रचनाओं को ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से देखें तो तीन काल-खण्ड अपनी भिन्न विशेषताओं के साथ दृष्टिगत होते हैं।

(१) आरम्भ काल—सन् १९१७ से १९२० तक

(२) विकास-काल—सन् १९२१ से १९३० तक

(३) प्रौढ़-रचना-काल सन् १९३१ से सन् १९३६ तक।

उत्कृष्ट प्रगतिशील कलाकार के रूप में प्रेमचन्द निरन्तर कहानियों को

---

१. श्री सत्येन्द्र, एम० ए०, 'प्रेमचन्द : उनकी कहानी-कला', पृ० २१।

परिमार्जित, प्रांजल और मर्मस्पर्शी रूप प्रदान करते रहे। उनकी कहानियों में पात्रो की अवतारणा उत्तरोत्तर विकसित अनुभूत्यात्मकता के साथ होती रही। उपर्युक्त तीनों काल-खंड उनकी सतत् सतर्क प्रयत्नशीलता तथा विकासयुक्त रचना-कौशल के परिचायक है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इन तीनों काल-खंडों की सामान्य प्रवृत्तियों पर विचार करना समीचीन है।

(१) आरंभ-काल : कहानी रचना में प्रवृत्त होने के पूर्व प्रेमचन्द सामाजिक उपन्यासों की रचना कर अपनी प्रतिभा तथा रचना शक्ति का परिचय दे चुके थे। समाज की विविध समस्याओं को अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर उनका सुधारवादी विश्लेषण करना और आदर्श-प्रतिष्ठा के लिए त्यागशील, कर्त्तव्यनिष्ठ पात्रों की सृष्टि करना उनकी आरम्भिक उपन्यास-रचना की प्रमुख विशेषताएं है। कहानी रचना के आरंभिक स्वरूप पर यह विशेषताएं अत्यधिक प्रभाव डालने मे समर्थ सिद्ध हुई। विस्तृत कहानियों मे विविध प्रसंगों को समेटते हुए प्रेमचन्द ने आरम्भिक कहानियों में इतने अधिक पात्रो को स्थान दे दिया कि उनके व्यक्तित्व निरूपण तथा विश्लेषण का उन्हें समुचित अवसर ही नहीं मिला। 'सप्त-सरोज' से 'प्रेमपचीसी' तक उनकी कहानियों मे यही प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। आदर्श और सुधार की उत्कट भावना से प्रेरित होकर प्रेमचन्द ने इस काल में जिन लम्बी-लम्बी कथाओं का सृजन कहानियो के रूप में किया है, उनमें अनेकानेक पात्रो के व्यक्तित्व उभरे है, परन्तु उनका निरूपण एवं विश्लेषण नहीं हो पाया है। कहानी में इतनी इकाइयाँ है कि उनका गठन नहीं हो सका है। इन इतिवृत्तात्मक विशद कहानियों के विविध प्रसंगों के आधार पर अनेक उत्कृष्ट कहानियो की रचना हो सकती थी, जिनमें प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण को उपयुक्त महत्व प्राप्त होता।

इस प्रकार हम देखते है कि आरम्भकालीन कहानियो में कथानक विस्तृत और इतिवृत्तात्मक है। अनेक घटनाओं और प्रसंगों के आयोजन के कारण पात्रों की संख्या बहुत अधिक है। अतएव उनके सक्षम व्यक्तित्व की योजना तथा विश्लेषण का कहानीकार को अवसर प्राप्त नहीं हुआ है। वर्णनात्मक प्रवृत्ति के कारण सभी कहानियों में घटना की ओर ही प्रेमचन्द का विशेष ध्यान है। संवेदनात्मक अनुभूति को जागृत कर पात्र-विशेष के व्यक्तित्व के अन्तर में प्रविष्ट होने की ओर वे ध्यान नहीं दे सके है। कहानीकार ने पात्रों को अपने भावों की अभिव्यक्ति का अवसर न देकर स्वयं ही उनके सम्बन्ध में सब कुछ कह डाला है। चरित्रगत बाह्य विशेषताओं और आदर्श गुणों को महत्व देकर प्रेमचन्द ने उनकी स्वयं विवेचना की है परन्तु पात्रो को अपने मनोभावों को व्यंजित करने का समुचित अवसर नही दिया है। आदर्श

और सुधारवादिता ने पात्रों के व्यक्तित्व की अन्य विशेषताओं को व्यक्त होने का अवसर नही दिया है। स्वाभाविक दृष्टि से पात्रों के कार्य, भाव, विचार तथा व्यवहार की व्यंजना नही हुई है, वरन् आदर्श पालन के लिये उनकी सभी प्रवृत्तियों तथा विशेषताओं का एक निश्चित दिशा में समायोजन कर दिया गया है। संयोग तथा आकस्मिकता का प्रभाव प्रायः सभी कहानियों मे विद्यमान है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस काल मे प्रेमचन्द घटना, संयोग, आदर्श और सुधार को प्रधानता देकर ऐसी विस्तृत कहानियों की रचना मे संलग्न रहे जिनमे बहुसंख्यक पात्रों की अवतारणा हुई, परन्तु उनके व्यक्तित्व का सम्यक् विश्लेषण सम्भव नही हुआ।

(२) विकास काल : प्रेमचन्द की कहानी कला का द्वितीय काल उसके विकास तथा व्यापकता का द्योतक है। 'प्रेमप्रसून' और 'प्रेमद्वादशी' की भूमिकाओं मे उन्होंने अपने कहानी-रचना सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। आदर्श और नैतिकता को कहानी के आधारभूत तत्वों के रूप में ग्रहण कर उन्ही के आधार पर इस काल की कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित किया गया है। एक ओर उन्होने कहानी के बाह्य रूप का विश्लेषण करते हुए उसमे आध्यात्मिक और नैतिक उपदेश की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया :

'हमारा विचार है कि आख्यायिका में यह तीन गुण अवश्य होने चाहिये .

(१) उसमें कोई आध्यात्मिक या नैतिक उपदेश हो।

(२) उसकी भाषा अत्यन्त सरल हो।

(३) उसकी वर्णन-शैली स्वाभाविक हो और उन्ही सिद्धान्तों के अनुसार इन कहानियों की रचना की गयी हो।'[1]

और दूसरी ओर कहानी में जीवन के विश्लेषण की क्षमता, सद्भावनाओं को दृढ करने की शक्ति एवं कौतूहल वृद्धि की प्रवृत्ति का समर्थन इस प्रकार किया :

'ऐसी कहानी जिसमे जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो मनुष्य मे सद्भावनाओ को दृढ़ न करे या जो मनुष्य मे कुतूहल का भाव न जागृत करे, कहानी नही है'।[2]

उपर्युक्त धारणा ने जीवनगत सत्यो के आलोक में पात्रों के व्यक्तित्व-निरूपण की ओर प्रेमचन्द को प्रेरित किया। महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रभावित होकर उन्होंने आदर्शवादी पात्रों को अपनी कहानियो मे स्थान दिया। परन्तु यथार्थ की उपेक्षा कर मात्र आदर्श की ओर उनकी दृष्टि नहीं है। यथार्थ की भूमि पर ही आदर्श

१ 'प्रेमप्रसून', भूमिका भाग, पृ० ६।

२ 'प्रेमद्वादशी', भूमिका भाग, पृ० ४।

के निर्वाह की चेष्टा उनके द्वारा सृजित पात्रों द्वारा होती है। आदर्श और यथार्थ के इस समन्वय की ओर उन्होंने स्वयं ही संकेत किया है :

'हमने इन कहानियों में आदर्श को यथार्थ से मिलाने की चेष्टा की है'।[1]

तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने प्रेमचन्द को ऐसे पात्रों की अवतारणा की ओर प्रेरित किया जो उस युग का विश्वसनीय प्रतिनिधित्व कर सकें। उनकी इस काल की कहानियों में गांधीवाद का व्यावहारिक रूप प्रकट हुआ है और सत्याग्रह तथा आन्दोलन की भूमिकाओं में पात्रों के व्यक्तित्व की सक्रियता अंकित की गयी है। 'सत्याग्रह' शीर्षक कहानी तो महात्मा गांधी की सत्याग्रह नीति का यथातथ्य रूप ही प्रस्तुत करती है। सत्याग्रह का आडम्बर करने वाले ढोंगी पात्र के व्यक्तित्व का रहस्योद्घाटन कर सत्यनिष्ठ सत्याग्रही के व्यक्तित्व की महत्ता प्रतिस्थापित की गयी है। 'जेल' शीर्षक कहानी में नारी पात्र—मृदुला—के व्यक्तित्व का उदात्त स्वरूप अंकित किया गया है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन की वेदी पर अपने को सोत्साह अर्पित करने वाली नारी के व्यक्तित्व का यह अंकन अपूर्व सफलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। नारी पात्र की स्वतन्त्र गतिशीलता तथा क्षमता का प्रकाशन 'ब्रह्मा का स्वाँग' शीर्षक कहानी में हुआ है। 'मैकू' में मद्य-निषेध को कथा-वस्तु का आधार बनाकर तत्कालीन विकट समस्या के मध्य पुरुष पात्र के दृढ़ निश्चय तथा भाव-परिवर्तन का एक साथ चित्रण किया गया है। इस प्रकार गतिशील, सक्षम एवं यथार्थ के प्रकाश को सहन करने में समर्थ पात्रों की अवतारणा विकास काल की कहानियों में हुई है।

(३) **प्रौढ़ रचना-काल :** इस काल तक आते-आते प्रेमचन्द पात्रों के मनोवैज्ञानिक निरूपण की ओर आकृष्ट हो चुके थे। जीवन के तथ्य और सत्य ही कहानी-रचना और पात्र-आयोजन के आधार बन गये। आदर्शों के व्यामोह से मुक्त होकर प्रेमचन्द ने अनुभूति की प्रधानता स्वीकार की और उसकी अभिव्यंजना के लिये अविस्मरणीय पात्रों की रचना कर उनके व्यक्तित्व का अपूर्व सन्तुलन के साथ निरूपण एवं विश्लेषण किया। वर्णन की विशदता को त्याग सूक्ष्म मार्मिक संकेतों द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करना वे अधिक उपयुक्त और कलात्मक प्रयास मानने लगे। अपने इस विचार को उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया है :

'कहानी एक प्रसंग का, आत्मा की एक झलक का सजीव और मर्मस्पर्शी चित्रण है। इस तथ्य ने उसमें प्रभाव आकस्मिकता और तीव्रता भर दी है। अब उसमें व्याख्या का अंश कम संवेदना का अंश अधिक रहता है। उसकी शैली प्रवाह

---

१ 'प्रेमप्रसून' भूमिका भाग, पृ० ६।

मयी हो गयी है। लेखक को जो कुछ कहना है, वह कम से कम शब्दों में कह डालना चाहता है। वह अपने चरित्रों के मनोभावों की व्याख्या करने नहीं बैठता, केवल उसकी तरफ इशारा कर देता है'।[१]

पात्रों के व्यक्तित्व को सक्षम और गतिशील बनाने का व्यापक प्रयास इस काल की कहानियों में विद्यमान है। कोमलता, सदाचार और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रतिमूर्ति नारी पात्र में भी प्रेमचन्द ने ओजस्विता, विद्रोह और क्रान्ति के भावों की स्थापना की है। मिस पद्मा, कुसुम और देवी जैसे नारी पात्र प्राचीन गलित विकृत परम्पराओं का तीव्र विरोध करने में सक्षम हैं। प्राचीन आदर्शों के मोह से मुक्त हो कर इन नारी-पात्रों ने यथार्थ का अवलम्ब ग्रहण किया है। उपेक्षिता-नारी के क्रोधावेश और दृढ़ निश्चय का चित्रण 'लांछन' शीर्षक रचना में मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द की साहसिकता और नारी-स्वातन्त्र्य के प्रबल समर्थन का प्रतीक है इस कहानी की प्रमुख पात्रा 'देवी'। पति के तिरस्कार की प्रतिक्रिया उसके शब्दों में इस प्रकार व्यक्त है : 'नीचों के साथ नीच ही बनना चाहिए। यह मेरी भूल थी कि इतने दिनों से इनकी घुड़कियाँ सहती रही। जहाँ इज्जत नहीं, मर्यादा नहीं, विकास नहीं, प्रेम नहीं वहाँ रहना बेहयाई है'।[२]

यथार्थ का तथ्यपूर्ण अंकन करते हुए प्रेमचन्द ने पात्रों की सच्चरित्रता को विशेष महत्व प्रदान किया है। स्त्रियोचित सद्गुणों और सद्भावों से संयुक्त वेश्या 'माधुरी' का चरित्र भी उसकी त्याग वृत्ति के कारण आकर्षक और प्रशंसनीय रूप ग्रहण करता है। सद्भावों की विजय को आधार मान कर 'सौत' शीर्षक कहानी में गोदावरी के व्यक्तित्व को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'विमाता' शीर्षक कहानी में 'अम्ब' का चरित्र भी मातृ-स्नेह का प्रतीक बन गया है। पुरुष पात्रों को उनके यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रेमचन्द ने जीवन की विविध समस्याओं की ओर संकेत किया है। सुशिक्षित समुदाय की कुण्ठा और वितृष्णाएँ उतनी ही कुशलता से पात्रों के जीवन में चित्रित की गयी हैं, जितनी कुशलता से सर्वहारा वर्ग के तीव्र असन्तोष, निस्सहाय करुणा और मार्मिक वेदना का अंकन किया गया है।

प्रेमचन्द ने इस काल में अभिजात वर्ग और निम्न वर्ग के पात्रों को विविध प्रसंगों से उठाकर अपनी कहानियों में प्रतिष्ठित किया है। नगर से ग्राम तक उनकी व्यापक दृष्टि ने अनेक वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों को देखा है और उनके व्यक्तित्व को

---

१ 'मानसरोवर', भाग १, भूमिका पृ० ८।

२ 'लांछन', मानसरोवर, भाग ५, पृ० १३८।

विश्वसनीय रूप में विश्लेषित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है। इस काल की कहानियों में सी० आई० डी० का इन्स्पेक्टर, नाटककार, नाटक कम्पनी के प्रोप्राइटर, साहित्यिक सम्पादक, ग्रामीण मजदूर, चमार, गोंड़, चन्दा उगाहने वाले क्रूरकर्मी पत्नी का त्याग करने वाले पति, वैभवशाली मिल मालिक, मजदूर, स्कूलों के छात्र, अध्यापक, दफ्तर के क्लर्क, ढोंगी साधु, वेश्यागमन करनेवाले व्यक्ति, जमींदार, रियासत के दीवान इत्यादि विभिन्न प्रकार के पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ अवतरित हुए हैं।

इस काल की कहानियों में बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व का विश्लेषण प्रेमचन्द ने विशेष सतर्कता से किया है। 'प्रेरणा' शीर्षक कहानी में 'सूर्यप्रकाश' के भावपरिवर्तन तथा प्रवृत्तियों के उदात्तीकरण का उत्कृष्ट विश्लेषण हुआ है। 'मोहन' उसकी प्रगति तथा सुधार का प्रेरक तत्व बन जाता है। 'दो बैलों की कथा' में भैरो की लड़की के स्नेहपूर्ण सरल, सुकोमल व्यक्तित्व का भावपूर्ण निरूपण हुआ है। 'ईदगाह' में हामिद की मनोवृत्तियों का बहुत ही स्वाभाविक विश्लेषण हुआ है। 'गुस्सा' में भगवती की लड़की समस्त कहानी पर अपने प्रभावयुक्त व्यक्तित्व से छायी रहती है। 'बड़े भाई साहब' शीर्षक कहानी में प्रेमचन्द ने अपने को छोटे भाई के रूप में प्रस्तुत कर बाल-व्यक्तित्व का सन्तुलित और तथ्यपूर्ण विश्लेषण किया है।

तात्पर्य यह है कि इस काल में कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व की प्रधानता ने प्रथम स्थान ले लिया है। घटनाओं को उसका अनुगामी बना दिया गया है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की भूमि पर उतर कर कहानीकार ने मानवीय कुंठाओं का यथातथ्य अंकन किया है और उनके पीछे निहित कारणों की ओर संकेत भी दिया है। आर्थिक विषमता और सामाजिक कुरीतियों के चित्रण द्वारा भारतीय समाज की विविध समस्याओं की ओर संकेत किया गया है। सक्षम और विद्रोही पात्रों की अवतारणा ने इस काल की कहानियों में युग-धर्म को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

आरम्भिक काल की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

'सप्त-सरोज', 'नवनिधि' और 'प्रेमपचीसी' की कतिपय कहानियाँ आरम्भिक काल की रचनाएँ हैं। इनमें कथावस्तु विशेष विस्तृत है तथा कई घटनाओं को एक ही कहानी में अनुस्यूत करने की सामान्य प्रवृत्ति कहानीकार में विद्यमान है। परिणामतः प्रायः सभी कहानियों में पात्रों की संख्या अधिक है। इतिवृत्तात्मक शैली को अपनाकर प्रेमचन्द ने पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व का 'कथावाचक'[1] की भाँति विस्ता-

१ डा० लक्ष्मीनारायण लाल, 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास', पृ० १०७।

रयुक्त वर्णन कर दिया है। आदर्श और मर्यादा-पालन की वृत्तियों से संयुक्त पात्रो की सृष्टि कहानीकार ने मनोयोगपूर्वक की है। स्त्री पात्रों में त्याग, करुणा, भावुकता और उदारता के सद्गुणों का उत्कर्ष चित्रित किया गया है और पुरुष पात्रों में भावना तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का समन्वय प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री-पात्र : स्त्री पात्रों को यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित करते हुए भी प्रेमचन्द ने उन्हें आदर्शवादी प्रवृत्तियों से संयुक्त करना अनिवार्य माना। आदर्श-रक्षण और मर्यादा-पालन की प्रवृत्ति इस काल की कहानियों में अवतरित सभी प्रमुख स्त्री पात्रों में दृष्टिगत होती है। 'रानी सारन्धा' शीर्षक कहानी में 'सारन्धा' का त्याग और सत्साहस उसे आदर्श नारी रूप प्रदान करता है। बड़े घर की बेटी' में 'आनन्दी' अपनी सहनशीलता तथा सद्भाव से पारिवारिक संकट का निवारण कर आदर्श गृहिणी की कुशलता का परिचय देती है। 'मर्यादा' की वेदी, मे प्रभा 'पाप का अग्निकुंड' मे 'राजनन्दिनी' अपनी उच्चस्तरीय भावनाओं तथा निष्ठा द्वारा भारतीय नारी के उच्चादर्शों के अनुरूप कार्य करती है। 'पंचपरमेश्वर' के 'खाला' का व्यक्तित्व भी आदर्श से अनुप्राणित है। 'सौत' में गोदावरी का आदर्श रूप उभरता है तथा 'ममता' मे माँ की उदात्त स्नेह-वृत्ति का परिचय प्राप्त होता है। समाज की परम्परागत मान्यताओं का समर्थन तथा प्रचलित आदर्शों का स्पष्ट प्रभाव सभी मुख्य नारी-पात्रों के व्यक्तित्व के निरूपण के प्रसंग में देखा जा सकता है। मर्यादा-रक्षण तथा पतिव्रत धर्म के निर्वाह की प्रबल भावना तथा अविचल निष्ठा सभी वर्गों की स्त्रियों मे विद्यमान है। 'मर्यादा की वेदी' की 'प्रभा' राज-कुल की स्त्री है और समाज में उसके परिवार की मान्यता तथा प्रतिष्ठा का विशिष्ट उच्चस्तर है। अपनी व्यक्तिगत कामनाओं को कुचल कर वह मर्यादा-रक्षण के निश्चय को व्यक्त करती है :

'संसार मे सभी की आशाएँ पूरी नही होतीं, जिस तरह यहाँ अपना जीवन काट रही हूँ, वह मैं ही जानती हूँ। किन्तु लोकनिन्दा भी तो कोई चीज है। संसार की दृष्टि में मैं चित्तौड़ की रानी हो चुकी। अब राणा जिस भाँति रखें, उसी भाँति रहूँगी। मैं अन्त समय तक उनसे जलूँगी, घृणा करूँगी, कुढ़ूँगी, जब जलन बढ़ ही जायेगी विष खा लूँगी या छाती में कटार मार कर मर जाऊँगी। लेकिन इसी भवन मे। इस घर से बाहर कदापि पैर न रखूँगी'।[1]

सामान्य परिवार में मध्यवर्गीय परिस्थितियों मे पलने वाली नारी 'गोदावरी' के व्यक्तित्व मे भी उत्कृष्ट त्याग-वृत्ति तथा सहनशीलता का समन्वय समान अभिरुचि के साथ किया गया है। प्रभा के समान वह भी पति की इच्छा को सर्वोपरि मान कर

१ 'नवनिधि'—'मर्यादा की वेदी', पृ० ६०, ६१।

प्राणोत्सर्ग के लिये भी प्रस्तुत है। 'सौत' शीर्षक कहानी में उसके आदर्श प्रेम तथा उत्सर्ग की अभिव्यंजना में उसका यह कथन कितना सहायक सिद्ध होता है :

'स्वामी संसार में सिवा आपके मेरा कोई नही था। मैंने अपना सर्वस्व आपके सुख की भेंट कर दिया है। आपका सुख इसी में है कि मैं संसार से अलग हो जाऊँ। इसलिये ये प्राण भी आपकी भेंट है। मुझसे जो अपराध हुए हों, क्षमा कीजिएगा। ईश्वर आपको सदा सुखी रखे।'[1]

इस प्रकार प्रेमचन्द की आरंभिक कहानियों मे नारी पात्रों के व्यक्तित्व का आधार आदर्श और मर्यादा का पालन ही है। कष्ट-सहिष्णुता, त्याग, व्यथा के विष को सहर्ष पी जाने की क्षमता का समावेश इसी उद्देश्य से नारी-व्यक्तित्व में हुआ है कि आदर्श-रक्षण का उत्कर्षयुक्त चित्रण किया जा सके। विभिन्न वर्गों और सामाजिक स्तरों से प्राप्त नारी-पात्र समान रूप से आदर्श-पालन की ओर उन्मुख हैं। अपनी पारिवारिक मर्यादा का रक्षण उनके समक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण-प्रश्न है। विभिन्न अवस्थाओं की नारियों के व्यक्तित्व को विभिन्न आदर्शों के आलोक में प्रस्तुत किया गया है। अविवाहिता स्त्री पात्र 'गंगाजली' को 'बेटी का धन' शीर्षक कहानी मे प्रस्तुत किया गया है और विवाहिता स्त्रियों के रूप में गोदावरी-गोमती, सारधा, प्रभा, आनन्दी, गिरिजा तथा राजनन्दिनी को क्रमश : सौत, रानी सारंधा, मर्यादा की वेदी, बड़े घर की बेटी, अमावस्या की रात्रि तथा राजनन्दिनी शीर्षक कहानियों मे प्रस्तुत किया गया है। इन सबकी प्रतिष्ठा आदर्श और मर्यादा की भूमि पर की गयी है।

अवस्था-भेद के दृष्टिकोण से देखा जाय तो इस काल की कहानियों मे विभिन्न अवस्थाओं की नारियों के व्यक्तित्व दृष्टिगत होंगे। उनमे आयु, अनुभव, क्रियाशीलता तथा सहिष्णुता की मात्रा के विचार से विशेष अन्तर है। उनके आदर्शों में भी विभिन्नता है। वृद्धा नारियो के रूप में 'पंचपरमेश्वर' की खाला, 'ममता' की माँ, 'ईश्वरी न्याय' की सत्यनारायण की माँ और 'गरीब की हाय' की मूँगा को प्रस्तुत किया गया है। प्रौढ़ावस्था तक पहुँची हुई नारियों के रूप में 'ईश्वरीय न्याय' की भानुकुँवरि, 'ज्वालामुखी' की रमणी तथा 'गरीब की हाय' की नागिन को देखा जा सकता है। युवावस्था के गुण-धर्म से समन्वित उल्लेख्य नारी-पात्रों मे प्रभा, आनन्दी, गिरिजा, राजनन्दिनी आदि हैं। वृद्धाओं में वात्सल्य, उदारता, व्यापक-स्नेह तथा पवित्र करुणा के आदर्श प्रतिबिंबित है। प्रौढ़ाएँ गम्भीरता, कर्त्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता और उदारता के सद्गुणों से समन्वित हैं। युवतियों में—कतिपय अपवादों को छोड़कर प्राय: सभी में—मर्यादा-पालन, कुल-प्रतिष्ठा-रक्षण, उच्च चारित्र्य तथा उत्सर्ग के आदर्श

---

१ 'सप्तसरोज', 'सौत', पृ० १६।

गुण विद्यमान हैं। अपवाद रूप में कामिनी तथा मिसेज राम-रक्षा भी हैं जिन्हें क्रमशः 'धर्मसंकट' तथा 'ममता' शीर्षक कहानियों में प्रस्तुत किया गया है। इनमें उच्छृंखलता, दम्भ और ढोंग की प्रधानता है।

सभी नारी पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण कहानीकार ने सामाजिक विशेषतः पारिवारिक परिस्थितियों के मध्य किया है। भानुकुँवरि, सारन्धा, प्रभा उच्चकुल के वैभवसम्पन्न परिवारों की हैं और शेष अधिकांशतः सामान्य मध्यम वर्गीय परिवारों की स्त्रियाँ हैं। सबमें समाज की मान्यताओं के प्रति निष्ठा तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिये उत्सर्ग की भावना विद्यमान है। डाक्टर लक्ष्मीनारायण लाल के शब्दों में—

'यहाँ स्त्री चरित्र की इन मान्यताओं के पीछे प्रेमचन्द की इतनी धारणाएँ थी—भारतीय आर्य ललनाओं, पत्नियों की आदर्श संयुक्त परिवार में आस्था और स्त्री चरित्र के पीछे शिवं सुन्दरम् की भावना'।[1]

पुरुष-पात्र : प्रेमचन्द ने अपनी आरम्भिक कहानियों में पुरुष पात्रों का चयन समाज के विभिन्न वर्गों से किया है। उनके व्यक्तित्व के विश्लेषण के निमित्त विविध परिस्थितियों की रचना उन्होंने की है। समाज के भिन्न-भिन्न अंगों की ओर उनकी दृष्टि गयी है और प्रतिनिधि पात्रों को उन्होंने सभी दिशाओं से ग्रहण किया है। उनकी कहानियों में जमीदार, कारिन्दा, सिपाही, दारोगा, वकील, ठीकेदार, इन्जीनियर, किसान, सेठ, गड़ेरिया, बेकार, शिक्षित, नेता तथा साहूकार आदि विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों के व्यक्तित्व की अवतारणा हुई है। आदर्शवादिता की दृष्टि से जिन पुरुष पात्रों को कपट, अनैतिकता, द्वेष और प्रतिशोध की वृत्तियों से युक्त चित्रित किया गया है, वे भी अन्त तक सुधर गये हैं तथा उनके व्यक्तित्व में आदर्श गुणों का समावेश कर दिया गया है। अपने आदर्शों की ओर गतिशील होने वाले पात्रों में यथार्थ के प्रति उपेक्षा का भाव नहीं है। चाहे वे शिक्षित हों अथवा अशिक्षित। चाहे वे नगर-निवासी हों अथवा ग्रामवासी, कर्त्तव्य की कठोर भूमि पर अग्रसर होने में तनिक भी नहीं हिचकते। यद्यपि भावना और कर्त्तव्य के द्वन्द्व में पड़ कर कभी उन्हें मार्ग से भटकना पड़ता है तथापि अन्त तक वे अपने सत्कर्त्तव्य-पथ पर पहुँच ही जाते है। विरोध और संघर्ष से उन्हें गतिशील होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

संस्कार, शिक्षा और योग्यता के आधार पर पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाय तो उनके दो वर्ग दृष्टिगत होते हैं। प्रथम वर्ग शिक्षित, सभ्य

---

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास, पृ० १११।

और विवेकशील पात्रों का है जिनमें उल्लेखनीय हैं—नमक का दरोगा के वंशीधर, उपदेश के शर्मा जी, धर्म संकट के रूपचन्द, ममता के रामरक्षादास, सज्जनता का दण्ड के शिवसिंह, ईश्वरी न्याय के सत्यनारायण तथा परीक्षा शीर्षक कहानी के पंडित जानकी नाथ। इन पात्रों के व्यक्तित्व में शिक्षा और संस्कारजन्य नैतिकता ने आदर्श परिपालन की क्षमता उत्पन्न की है। परिस्थितियों के आघात और समाज की प्रतिक्रिया से इनके चरित्र में उत्थान-पतन के अनेक अवसर आते हैं। परन्तु अन्त में सद्वृत्तियों की विजय होती है और असत् की पराजय। अशिक्षित पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण उनकी मूल प्रवृत्तियों के आलोक में हुआ है। उनके भावों के परिष्कार और परिवर्तन की परिस्थितियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। उदाहरणार्थ बड़े घर की बेटी के लालबिहारी और 'उपदेश' के बाबूलाल के व्यक्तित्व के परिष्करण को देखा जा सकता है।

प्रौढ़ और वयस्क पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व की गम्भीरता, विवेकशीलता तथा अनुभव से प्राप्त व्यवहारकुशलता का चित्रण इस काल की कई उत्कृष्ट कहानियों में प्राप्त होता है। 'परीक्षा' शीर्षक कहानी में सुजानसिंह और 'बेटी का धन' शीर्षक कहानी में झगड़ू साहू अनुभवी पुरुषों के व्यक्तित्व के दो पृथक् निदर्शन प्रस्तुत करते हैं। 'नमक का दारोगा' में अलोपीदीन की व्यवहारकुशलता तथा उन पर विवेक की विजय का विश्लेषण आकर्षक रूप में हुआ है। 'पंचपरमेश्वर' में जुम्मन खाँ और 'सौत' में पंडित देवदत्त के पाश्चाताप के माध्यम से उनके व्यक्तित्व का गूढ़ रहस्यमय पक्ष विश्लेषित हुआ है। सहायक पात्रों के रूप में जिन व्यक्तियों ने कहानी में घटना-क्रम को विकसित किया है तथा प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण की भूमिका प्रस्तुत की है उनमें रामगुलाम, गिरिधर गोपाल, चम्पतराय, कैलाशनाथ, जितेनसिंह, अलगू चौधरी, जुल्फिकार अली खाँ दारोगा, वकील साहब तथा इंजीनियर साहब उल्लेखनीय हैं। इनके कार्य, विचार, प्रतिक्रिया एवं प्रभाव से कहानियों में गतिशीलता और व्यवस्था का समावेश हुआ है और साथ ही प्रधान पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ सुव्यवस्थित विधि से अभिव्यक्त हो सकी हैं।

पुरुष पात्रों में नारी-पात्रों की अपेक्षा यथार्थवादी दृष्टिकोण की प्रधानता है। इस तथ्य का समर्थन डा० लक्ष्मीनारायण लाल के इस कथन से प्राप्त होता है—

'पुरुष चरित्रों के पीछे भी प्रेमचन्द की वही मान्यताएँ थीं, जो उनके स्त्री-पात्रों के पीछे थीं। दोनों के मूल भाव-भूमि में केवल इतना अन्तर है कि स्त्री-चरित्र में असन्तोष, क्रान्ति की भावना पुरुष की अपेक्षा अधिक है। लेकिन स्त्रियाँ अपेक्षाकृत आदर्शवादी हैं और पुरुष यथार्थवादी, यद्यपि इनकी प्रगतिशीलता पंगु है।'[१]

---

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल, 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास', पृ०० ११२।

विकास काल की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रेमचन्द की कहानी-रचना का सर्वाधिक विस्तृत काल जो सन् १९१८ से सन् १९६० तक प्रसृत है, उनकी अनेक उत्कृष्ट और अविस्मरणीय कहानियों का सृजन-काल है। समाज, राजनीति, व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक समस्याओं के विविध पक्षों का निरूपण-विश्लेषण करते हुए प्रेमचन्द ने अनेक वर्गों के पात्रों का सतर्क दृष्टि से चयन किया है। आरम्भिक काल की कहानियों में व्यक्तित्व की गहराई में उतरने का अवकाश कहानीकार को प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि उसे इतिवृत्तात्मक शैली में घटनाओं के कई मोड़ों को संभालते हुए कथा वस्तु को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना ही आवश्यक प्रतीत हुआ। विकास-काल की कहानियों में पात्रों के क्रियाशील, सक्षम व्यक्तित्व का निरूपण कर उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी किया गया है। केवल समस्या विशेष को प्रस्तुत कर उसमें पात्रों को उलझा कर छोड नहीं दिया गया है, वरन् उनको क्रियात्मक शक्ति और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की क्षमता द्वारा उन्हें समाधान तक पहुँचने का सम्बल भी प्रदान किया गया है।

इस काल की कहानियों में जिन पात्रों का व्यक्तित्व विश्लेषित हुआ है, उनमें नगरवासी और ग्रामवासी दोनों हैं। व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक की समस्याओं के मध्य उनके कार्यों का विस्तार है। पारिवारिक समस्याओं से सम्बद्ध पात्रों में आदर्शवादिता अब भी विद्यमान है परन्तु वे कठोर वास्तविकता और तथ्यपूर्ण जीवन सत्य की ओर अधिक आकृष्ट और गतिशील रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। पति-पत्नी के सम्बन्ध के विविध रूपों पर आधारित कहानियों में पुरुष और नारी को स्वाभाविक वृत्तियों का विश्लेषण हुआ है। जिन आर्थिक समस्याओं के मध्य पात्रों को प्रस्तुत किया गया है उनके व्यक्तित्व का सन्तुलन कहीं भी नष्ट नहीं हो पाया है। विवाह, रिश्वत आदि सामाजिक समस्याओं के आलोक में कई महत्त्वपूर्ण पात्रों का व्यक्तित्व प्रकाशित हुआ है।

इस काल की कहानियों का संकलन 'प्रेम-प्रसून' 'प्रेम प्रतिमा', 'प्रेम प्रमोद', 'प्रेम द्वादशी,' 'प्रेमतीर्थ', 'अग्नि समाधि' और अन्य कहानियाँ','समर-यात्रा और अन्य ग्यारह कहानियाँ' तथा 'सप्तसुमन' शीर्षक संग्रहों में हुआ है। 'प्रेमपूर्णिमा' को कतिपय कहानियाँ अपनी रचनागत विशेषताओं और रचना-काल के अनुसार इसी समय की मानी जायेंगी। उदाहरणार्थ शंखनाद, दो भाई, दुर्गा का मन्दिर, सेवा-मार्ग, बोध, बलिदान, सच्चाई का उपहार एवं महातीर्थ। अधिकांश विकास-कालीन कहानियों में पात्रों का व्यक्तित्व घटनाओं के महत्व को पीछे छोड़ कर मनोवै-

ज्ञानिक-विश्लेषण की भूमि पर उतर आया है। जिन कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का आकर्षक, मनोवैज्ञानिक, सन्तुलित, तथ्यपूर्ण विश्लेषण हुआ है, उनमें उल्लेखनीय है—महातीर्थ, बोध, आत्माराम, शंखनाद, सच्चाई का उपहार, समरयात्रा, बूढ़ीकाकी राज्यभक्त, मुक्तिमार्ग, दीक्षा, मंत्र, ब्रह्मा का स्वाँग, मृत्यु के पीछे, गृहकलह, अग्नि-समाधि, दो सखियाँ, लैला, सुजान भगत, सवासेर गेहूँ, सती, हिंसा-परमोधर्म, गुल्ली डंडा, सुहाग का शव, मोटेराम शास्त्री, पूस की रात, पत्नी से पति, घास-वाली, माँ, मैकू, शराब की दूकान, परीक्षा, आँसुओं की होली एवं आहुति।

स्त्री-पात्र : विकास कालीन कहानियों मे प्रेमचन्द ने नारी पात्रों को अधिक सशक्त और यथार्थवादी रूप प्रदान किया है। उनके व्यक्तित्व में साहस, धैर्य विवेकपूर्ण विरोध और अन्याय के प्रतिशोध के निमित्त आक्रोश तथा क्रियाशीलता के तत्वों का समन्वय हुआ है। हमने देखा है कि आरम्भकालीन कहानियों के स्त्री पात्रों के चरित्र मे मर्यादा-रक्षण, पारिवारिक प्रतिष्ठा को स्थिर रखने की प्रवृत्ति एवं पुरुष वर्ग के अनाचार-अत्याचार को सह लेने की स्वभाव सिद्ध क्षमता ही प्रमुख विशेषता के रूप मे अंकित है। परन्तु इस काल के नारी-पात्रो में विवेक और स्पष्टवादिता के गुणों का प्राधान्य है। विभिन्न कहानियों में वे प्रमुख पात्र का स्थान प्राप्त करती हैं और उनके व्यक्तित्व के चतुर्दिक अन्य पात्रों के चरित्र का विकास होता है। उनमे विद्रोह और चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं। 'शंखनाद' शीर्षक कहानी में गुमान की स्त्री ने अपनी सहनशीलता को असहाय बोझ के समान उतार फेंका है और मुखर बन कर पति की अकर्मण्यता का तीव्र विरोध किया है। 'आभूषण' शीर्षक कहानी में नारी का क्रोध परमेश्वर के प्रति उग्र रूप मे व्यक्त हुआ है। अपनी सौन्दर्य हीनता से विक्षुब्ध होकर वह ईश्वरीय-न्याय की याचना करती है। 'नैराश्यलीला' में तो पुरुष वर्ग के प्रति नारी की तीव्र प्रतिक्रिया और आक्रोश का ज्वालामुखी इन शब्दों में ही फूट पड़ा है""मुझमें जीवन है, चेतना है, जड़ क्योंकर बन जाऊँ, मुझसे यह नहीं हो सकता कि अपने को अभागिनी दुखिया समझूँ और एक टुकड़ा रोटी खाकर पड़ी रहूँ। ऐसा क्यो करूँ? संसार मुझे जो चाहे समझे मै अपने को अभागिनी नहीं समझती। मैं अपने आत्म-सम्मान की रक्षा कर सकती हूँ। मैं इसे घोर अपमान समझती हूँ कि पग-पग पर मुझ पर शंका की जाय, नित्य कोई चरवाहे की भाँति मेरे पीछे लाठी लिए घूमता रहे। यह दशा मेरे लिए असह्य है। पुरुष क्यों स्त्री का भाग्य विधाता है? स्त्री क्यों नित्य पुरुषों का आश्रय चाहे क्यों उनका मुँह ताके?"

नारी की इस साहसिकता के साथ उसके व्यक्तित्व का विमल, निष्कपट रूप भी इस काल की कहानियों में अभिव्यक्त हुआ है। मुखरा और स्पष्टवादिनी होती हुई भी नारी का चरित्र पुरुष की अपेक्षा अधिक सन्तुलित, सरल और विश्वसनीय

है। उसके व्यक्तित्व में अवसरवादिता, कपट और द्वेष की स्वार्थपूर्ण असामाजिक प्रवृत्तियों का संस्पर्श भी नहीं है। 'ब्रह्मा के स्वाँग', एवं 'ईश्वरी न्याय' और 'विध्वंस' शीर्षक कहानियों में नारी के सबल और नीतियुक्त उद्गार उसके व्यक्तित्व का आकर्षक रूप प्रस्तुत करते हैं। एक ओर उँच्च-स्तर के वातावरण में पलने वाली नारी भानुकुवरि सत्यनारायण की बेईमानी का साहस के साथ पर्दाफाश करती है तो दूसरी ओर अपनी पुश्तैनी भूमि के अधिकार पर प्राणोत्सर्ग के लिए प्रस्तुत विधवा, सन्तानहीना गोंड़िन 'भुनगी' अत्याचारी जमींदार का विरोध अन्तिम क्षण तक करती है। उसके शब्दों में उसका दृढ़ निश्चय उमड़ पड़ा है :

'क्यों छोड़ कर निकल जाय। बारह साल खेत जोतने से आसामी भी काश्तकार हो जाता है तो इस झोपड़ीमें बूढ़ी हो गई। मेरे सास ससुर और उनके बाप-दादे इसी झोपड़ी में रहे। अब इसे यमराज को छोड़कर और कोई मुझसे नहीं ले सकता।'[1]

इस काल के नारी पात्रों में पुरुषों को सत् कार्यों की ओर प्रेरित करने का साहस भी है। अपने व्यक्तित्व के आकर्षण से; ऊंचे चरित्र से उन्होंने पुरुषों को पथ-भ्रष्ट होने से बचाया है। लोभ, ईर्ष्या और कपट की प्रबलता ने पुरुषवर्ग को लालच और स्वार्थ की ओर झुकने के लिये विवश किया है। नारी व्यक्तित्व द्वारा ऐसे अवसरों पर पुरुषों को नैतिकता, सत्कार्य एवं परोपकार की प्रेरणा प्राप्त हुई है। अपने विशद वर्णन क्षेत्र में प्रेमचन्द ने विश्व स्रोतों से नारी पात्रों को प्रस्तुत किया है। ग्रामीण वातावरण से 'दूजी' और 'विन्ध्येश्वरी' जैसी अविवाहिता युवतियों को लिया गया है, जिन्हें आर्थिक विषमता के मध्य उपस्थित किया गया है। 'शान्ति' और 'चन्दा' सम्भ्रान्त परिवार की सुसंस्कृत युवतियाँ हैं। 'तूरया' पठान परिवार की युवती है। 'तारा' सिने तारिका है और उसके व्यक्तित्व से सम्बद्ध समस्याएँ नारी मन के रहस्यों पर प्रकाश डालती हैं। विधवा और वृद्धा नारियाँ भी अपने संवेग को प्रभावित करती हैं। 'मानकी', 'पन्ना' और 'मुलिया' को उदाहरण रूप में देखा जा सकता है। प्रौढावस्था की नारियों में 'बुनाकी', 'सुभागी' और 'सुखिया' उल्लेखनीय हैं। नगर के वातावरण में पलने वाली नारियों के व्यक्तित्व का गठन उत्सर्ग, साहस, स्पष्टवादिता और देश प्रेम के तत्वों से हुआ है। ग्रामीण वातावरण से प्राप्त नारियों में सत्साहस के साथ धर्मभीरुता और कर्त्तव्य के साथ ममत्व एवं उदारता का समन्वय भी दृष्टिगत होता है।

---

१. 'प्रेमपचीसी'.....नैराश्यलीला, पृ० ३६२-६३।

पुरुष पात्र : अपनी विशद व्यापक दृष्टि का उपयोग कर प्रेमचन्द ने इस काल की कहानियों के लिये समाज के सभी वर्गों से पुरुष-पात्रों का चयन किया है। आरम्भिक कालकी कहानियों में पंडित, वकील, देशप्रेमी, जमींदार, कृषक इत्यादि का जो रूप पात्रों के माध्यम से आया था, उसे पुनः प्रकाश में लाते हुए जज, पेशकार, डाक्टर, बैरिस्टर और वायसराय को भी कहानी के फलक पर प्रस्तुत कर दिया गया है। इन उच्चस्तरीय पुरुष-पात्रों के अतिरिक्त बादशाह, नवाब, रायसाहब, राजपूत-शासक, मिलमालिक, मिल मैनेजर के रूप में अभिजात्य वर्ग के पात्रों को लिया गया है।

मध्य वर्ग के विविध स्तरों से पुरुषपात्रों का चयन करते हुए कहानीकार ने उनसे किसी न किसी समस्या का सम्बन्ध जोड़ दिया है और उनके व्यक्तित्व की सक्रियता को विकसित होने के लिये पर्याप्त अवसर दिया है। समाज के निम्न-स्तर के पात्र भी अपनी समस्याओं के साथ विभिन्न कहानियों में उपस्थित हुए हैं। इस प्रकार धोबी, चमार, गरीब किसान, माली, भंगी, मिल मजदूर, कारिन्दे और दफ्तरी के साथ ही पुलिस के कर्मचारी, पेशकार, मुंशी, गाँव के मुखिया, सम्पादक, स्वामी जी, दफ्तर का क्लर्क, संगीताचार्य आदि भी पुरुष पात्रों के रूप में अंकित किये गये है। नगर के पुरुष पात्रों मे स्वार्थ तथा अधिकारलिप्सा की प्रबलता है। ग्रामीण क्षेत्र के पात्र अधिकतर आपदाओं से विवश, निष्कपट, संत्रस्त तथा धर्मभीरु हैं।

इस काल की कहानियों के पुरुष पात्र कहानीकार की पूर्व मान्यताओं से संयुक्त होते हुए भी अधिक क्रियाशील तथा जाग्रत हैं। उनके व्यक्तित्व मे गति, क्षमता और प्रभाव का समावेश हुआ है यद्यपि प्रेमचन्द ने चरित्रगत गुणों को पूर्ववत् रखते हुए विविध समस्याओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया है तथापि पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व की महत्ता उनकी सक्रियता के कारण बढ़ गई है। अपनी नौकरी अथवा व्यवसाय तक ही पुरुष पात्रों की गति सीमित नहीं है वरन् उनका व्यक्तित्व सार्वजनीन प्रश्नों के समाधान की ओर अग्रसर हुआ है। 'लालफीता' शीर्षक कहानी के हरिविलास, 'ईश्वरी न्याय' के सत्यनारायण तथा 'बैंक का दीवाला', के साँईदास का व्यक्तित्व उनके व्यवसाय तक ही सीमित नहीं है वरन् उनके चतुर्दिक प्रसृत वातावरण तथा परिस्थितियों का भी उससे घनिष्ठ सम्बन्ध है। मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग के पुरुष पात्रों में एक ओर मर्यादा-रक्षण की प्रवृत्ति, अंधविश्वास के प्रति मोह, बाह्य सम्मान की चिन्ता विद्यमान है तो दूसरी ओर अपने समुचित अधिकारों तथा न्याय को पाने के लिये संघर्ष की शक्ति भी।

बालक बालिकाएं : बालकों और बालिकाओं से सम्बन्धित उल्लेखनीय कहानियों में प्रेमचन्द ने अपनी सूक्ष्म निरीक्षण-शक्ति तथा स्थिति-अंकन की कुशलता का परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण अपूर्व सफलता के साथ किया है। इस

प्रकार की कहानियों में प्रमुख हैं—महातीर्थ, बूढ़ी काकी, गृहदाह, चोरी, विमाता, कजाकी, रामलीला, निमन्त्रण, गुल्ली डंडा, अलग्योझा, शंखनाद, मृतक भोज और एक आँच की कसर। बालक बालिकाओं को इनमें से कुछ कहानियों में प्रमुख स्थान प्राप्त है और कुछ में उनके व्यक्तित्व से अन्य पात्रों तथा कहानी के संवेद्य को गतिशीलता प्राप्त होती है। 'बूढ़ी काकी', 'कजाकी', 'रामलीला', 'गुल्ली डंडा' तथा 'चोरी' शीर्षक कहानियों में बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण विश्लेषण उपलब्ध होता है। अपने विवेक का उपयोग कर वे कहानी की दिशा को परिवर्तित कर देते हैं। यद्यपि उनमें चंचलता, भोलापन और सहज स्नेह की बालकोचित विशेषताएँ अक्षुण्ण हैं, तथापि उनकी विचार-शक्ति और क्रियाशीलता उन्हें महत्वपूर्ण पात्र बनने तथा उल्लेखनीय व्यक्तित्व प्राप्त करने का अवसर देती है।

कतिपय कहानियों में बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व द्वारा महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान को प्रस्तुत करने में कहानीकार को विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। 'गृहदाह', 'अलग्योझा' इस प्रकार की कहानियों के प्रमुख उदाहरण हैं। अन्य पात्रों के व्यक्तित्व को उभारने की प्रेरणा देने वाले बालक और बालिकाओं को 'एक आँच कसर', 'निमन्त्रण', 'मृतक भोज' और 'शंखनाद' में देखा जा सकता है। स्वयं प्रमुख पात्र न होते हुए भी इन कहानियों में प्रेरक शक्ति बनने का गौरव इन्हें ही प्राप्त है। प्रेमचन्द ने कुछ अल्पवय के शिशुओं को भी कतिपय उत्कृष्ट कहानियों में महत्वपूर्ण पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके सुकोमल विकसनशील व्यक्तित्व का प्रभाव सम्पूर्ण कहानी पर विद्यमान है। 'महातीर्थ' में रुद्रमणि कहानी की धारा को मनोवैज्ञानिक मोड़ प्रदान करता है। 'लांछन' में शारदा और 'विमाता' में पुन्नू का व्यक्तित्व अपनी प्रभावविष्णुता से कहानी के संवेद्य को मार्मिक रूप और तीव्र व्यंजना की शक्ति देता है।

प्रौढ़ रचना काल की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रेमचन्द के परिपक्व विचारों की व्यंजना और प्रौढ़ रचना शैली का कलात्मक स्वरूप इस काल की कहानियों में दृष्टिगत होता है। समाज की नैतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर अब कहानीकार ने यथार्थ की दृष्टि से देखना ही उपयुक्त समझा। आदर्शों की छाया से निकल कर वे यथार्थ के धूप और धुँए में चलने का सत्साहस प्रदर्शित करने लगे। प्रायः प्रत्येक पात्र के व्यक्तित्व के पीछे आर्थिक समस्या की छाया उन्हें किसी न किसी रूप में दिखाई पड़ती थी। अतएव वर्ग-वैषम्य, आर्थिक दुश्चिन्ता तथा सामाजिक-स्तरों की दुस्सह विभिन्नता उन्हें शुद्ध यथार्थ की भूमि पर पात्रों को प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा देने लगी। पूर्व वर्णित विवाह, प्रेम एवं

पारिवारिक कलह आदि से सम्बन्धित समस्याओं पर भी प्रेमचन्द ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से विचार करते हुए ऐसे पात्रों की रचना की है जो अधिक कर्मठ, सक्षम और गतिशील हैं।

स्त्री-पात्र : इस काल की कहानियों में नारी पात्र कई वर्गों तथा स्थितियों से लिये गये है। उनमे क्रान्ति और विद्रोह की भावनाएँ विद्यमान हैं। नगरजीवन से ग्रामीण जीवन तक जितने नारी पात्र हैं, सबमें चेतना, अधिकार प्राप्ति की शक्ति तथा उमंग और स्वत्व-रक्षा के भाव प्रबल रूप में हैं। चाहे वह 'उन्माद' की उच्च संस्कारों मे पली वागेश्वरी हो अथवा 'ठाकुर का कुँआ' की अतिसामान्य स्तर की निम्नवर्गीया 'सुखिया', सबमें एक ही प्रकार की विशेषता है। पाश्चात्य शिक्षा के दुष्प्रभाव का नारी व्यक्तित्व से सम्बन्ध जोड़ते हुए भी प्रेमचन्द उसकी उग्र स्वातन्त्र्य-भावना को प्रधान स्थान देते हैं।

कहानीकार का दृश्य-फलक अब इतना अधिक विस्तृत हो गया है कि उसमे लन्दन नगर (उन्माद) से अण्डमान-द्वीप (डामुल का कैदी) तक के विभिन्न दृश्य समाविष्ट हो गये हैं। अतएव स्त्री पात्रों के चयन के लिये कहानीकार ने विशद कथा-भूमि का उपयोग किया है। स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश कर प्रेमचन्द ने उनकी प्रसुप्त भावनाओं का परीक्षण भी किया है। चाहे पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध में भूली हुई 'मिस पद्मा' हो चाहे पति की उपेक्षा से पीड़िता व्यथित-हृदया 'कुसुम', सबमें वितृष्णा और अतृप्ति की तीव्र जलन है। सच्चरित्रता को प्रेमचन्द सन्तुलित व्यक्तित्व का अनिवार्य तत्व मानते हैं और उसके महत्त्व का प्रतिपादन उन्होंने विभिन्न स्थलों पर किया है। परन्तु कृत्रिम सामाजिक बन्धनों से ऊपर उठकर पारास्परिक सहयोग, सद्भाव तथा समानता के आधार पर चरित्र-गठन को वे स्वाभाविक और उचित मानते हैं। 'लाँछन' शीर्षक कहानी में देवी अपने पति के प्रति पूर्णतः अर्पिता है तथा आदर्श रमणी की भाँति सेवा-परायणा भी। परन्तु अकारण ही बार बार उपेक्षिता, अपमानिता और लांछिता होकर वह धैर्य खो देती है तथा अपने अधिकारों के प्रति आग्रहशीला बन जाती है।

अधिकांश स्त्री-पात्रों युवावस्था के मध्य अंकित किये गये हैं। उनमें विवेक से अधिक क्रियाशीलता और प्रतिकार की मनोवृत्ति का प्राबल्य है। कुछ प्रौढ़ाएँ और विधवाएँ भी कतिपय उत्कृष्ट कहानियों में अपने प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के कारण उल्लेखनीय स्थान प्राप्त कर सकी हैं। सौत', 'मृतक भोज' तथा 'बेटोंवाली विधवा' में इनके महत्वपूर्ण उदाहरण प्राप्त होते हैं। इनमें विचारशीलता, धैर्य, सहिष्णुता तथा उदारता के सद्गुणों का समावेश हुआ है। प्रायः सभी नारी पात्रों के व्यक्तित्व के निरूपण में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर कहानीकार की सतर्क दृष्टि है। विविध

स्थितियों के बीच मनोभावों और प्रतिक्रियाओं के अंकन के सन्तुलन को निभाते हुये नारी पात्रों के व्यक्तित्व के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन भी सफलता के साथ इन कहानियों में किया गया है उनमें स्त्री के स्वाभाविक चरित्र और विश्वसनीय व्यक्तित्व का तथ्यपूर्ण विश्लेषण हुआ है। सद्गुणों और उत्कृष्ट चारित्र्य के साथ ही मानवीय कुण्ठाओं, दुर्बलताओं और तीव्र प्रतिक्रियाओं का मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण इस काल की कहानियों में प्रस्तुत किया गया है।

पुरुष पात्र : इस काल के पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व में मनोवैज्ञानिक तथ्य-पूर्णता और सहज विकास के लक्षण विद्यमान हैं। आदर्श के मोह में पुरुष पात्रो के व्यक्तित्व को कृत्रिम विशेषताएँ प्रदान कर उसके सहज रूप को बाधित करने की चेष्टा इस काल की कहानियों में कहीं भी नहीं है। अपने शुद्ध, सत्य रूप में पुरुष-चरित्र का विकास इनमें हुआ है। मध्य वर्ग के पात्रों की संख्या इन कहानियों में सबसे अधिक है। 'कफन' जैसी कुछ उल्लेख्य कहानियों में सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि पुरुष-पात्र भी दृष्टिगत होते है। अधिकांश पुरुष पात्र साधारण नौकरियों या व्यवसाय में संलग्न व्यक्ति हैं। नगर जीवन के मध्य जिन पुरुष पात्रो का व्यक्तित्व अंकित किया गया है उनपर आधुनिक सभ्यता का प्रभाव भी विद्यमान है। अभिजात वर्ग के पुरुष पात्र विशिष्ट समस्याओं को लेकर उपस्थित हुए हैं। यद्यपि उनकी संख्या कम है तथापि उनके व्यक्तित्व की रचना में कहानीकार ने अपनी विश्लेषण कुशलता का विशिष्ट निदर्शन प्रस्तुत किया है, इसलिये उन पर विचार करना आवश्यक है।

'मिस पद्मा' में प्रसाद के व्यक्तित्व को प्रेमचन्द ने प्रबल अनर्थकारी दुष्परिणाम के साथ सम्बद्ध किया है। 'उन्माद' का मनहर पाश्चात्य सभ्यता का एक क्रूर व्यंग्य है। 'रियासत का दीवान' में मिस्टर मेहता के व्यक्तित्व में अन्तर्द्वन्द्व की प्रबलता और नैतिक-मूल्यों की पुनर्विचार की आन्तरिक प्रेरणा का समन्वय हुआ है। 'एक आँच की कसर' में वकील-साहब के स्वार्थ-केन्द्रित दम्भी व्यक्तित्व का निरूपण तथ्य-पूर्ण विश्लेषण के साथ किया गया है। प्रेमचन्द ने इन विभिन्न कहानियों में पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न विषम प्रभाव और चिन्तनीय सामाजिक अनर्थों का विश्लेषण विभिन्न वर्ग के पात्रों के माध्यम से किया है।

आर्थिक कठिनाइयों में निरन्तर पिसने वाले पुरुष पात्रों की दयनीय स्थिति का अंकन कर उनके व्यक्तित्व की कुण्ठाओं, वासनाओं और दमित इच्छाओं का करुण एवं विश्वसनीय अंकन प्रेमचन्द ने 'कफन', 'ईदगाह' और 'दूध का दाम' जैसी भावोत्तेजक कहानियों में किया है।' 'कफन' शीर्षक कहानी में 'घीसू' और 'माधव' निर्धन शोषित-वर्ग के पतित-पराजित पात्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मृतक पत्नी के कफन के लिए चन्दे में प्राप्त रुपयों से चिर-दमित वासना की पूर्ति कर अर्थात् पूड़ी खाकर

और शराब पी कर माधव कहता है, कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढकने को चिथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर क्या, कफन चाहिए, कफन तो लाश के साथ जल ही जाता है।[1] जीवन का कटु सत्य इस प्रकार इन पात्रों के व्यक्तित्व में प्रतिमूर्त हुआ है। गलित, दूषित सामाजिक परम्पराओं, कुरीतियों और आर्थिक विषमता के प्राचीर पर इस काल की कहानियों के पुरुष पात्र पूरी शक्ति से प्रहार करते हैं। यथार्थ परिस्थितियों और सहज स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ उनके व्यक्तित्व का संचालन करती हैं।

बालक और बालिकाएँ : विकासकालीन कहानियों में बालक और बालिकाओं के भावुक और कोमल-वरण व्यक्तित्व का अंकन विशेष रुचि के साथ किया गया है। परन्तु प्रौढ रचना काल में उनके व्यक्तित्व में चेतना, विवेक और कर्तव्यनिष्ठा को विशेष प्रभावपूर्ण तत्वों के रूप में समन्वित किया गया है। 'प्रेरणा', 'दो बैलों की कथा', 'कुत्सा' 'दूध का दाम', 'ईदगाह' और 'बड़े भाई साहब' में बालक बालिकाओं का व्यक्तित्व अधिक मनोविज्ञान-सम्मत रूप में विश्लेषित हुआ है। इनके द्वारा न केवल कथानक का स्वस्थ विकास हुआ है, वरन् अन्य पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की भूमि भी निर्मित हुई है। प्रतिक्रिया-जन्य भावावेगों से आन्दोलित बालक और बालिकाओं के आकर्षक और विश्वसनीय रूप 'प्रेरणा' और 'दो बैलों की कथा' में बड़ी कुशलता से व्यक्त हुए हैं।

'प्रेरणा' शीर्षक कहानी में 'सूर्यप्रकाश' और 'मोहन' के व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है। विद्यालय के उद्धत बालक के रूप में सूर्यप्रकाश कहानी के दृश्य पट पर अवतरित होता है। और 'मोहन' के प्रति अपने कर्तव्य की गुरुता को समझता हुआ धीरे धीरे अध्ययनशील अनुशासित छात्र बन जाता है। उसके व्यक्तित्व की सुषुप्त वृत्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं और वह निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होता है। उसमें न केवल विनम्रता और सच्चरित्रता के सद्गुणों का ही विकास होता है, वरन् उसे उच्च शिक्षा प्राप्त कर विशिष्ट पद तक पहुँचने में भी कठिनाई नहीं होती। 'दूध का दाम' शीर्षक कहानी में 'मंगल' और 'सुरेश' के व्यक्तित्व का विश्लेषण आर्थिक-वैषम्य के आधार पर किया गया है। कुसंगति के दुष्परिणाम को मंगल के व्यक्तित्व में सहज गति से व्यक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ है। 'ईदगाह' में 'हामिद' नामक निर्धन मुसलमान बालक का प्रभावपूर्ण चित्र अंकित किया गया है। अपनी दादी के लिए मेले से चिमटा लाकर वह अपनी बालकोचित सहज-संवेदना का प्रमाण प्रस्तुत करता है। विभिन्न तर्कों द्वारा वह साथी बालकों के खिलौनों की निस्सारता सिद्ध करता है। उसका आत्म-विश्वास निर्धनता की करुणा को दबाकर ऊपर उठ आया है।

---

१. प्रेमचन्द, 'कफन और शेष रचनाएँ' पृ० १०।

(२) विश्वम्भरनाथ जिज्जा की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

कालक्रम से प्रेमचन्द-संस्थान के प्रथम उल्लेखनीय कहानीकार विश्वम्भरनाथ जिज्जा हैं। यद्यपि उनकी रचनाएँ संख्या में कम ही हैं तथापि उनमें वर्णन की कुशलता और प्रभावशाली पात्रों की अवतारणा के कारण विचारणीय विशेषताएँ विद्यमान हैं। 'इन्दु' के माध्यम से इनकी कहानियां प्रकाश में आईं।[1] पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर विचार किया जाय तो इनकी दो कहानियाँ विशेष महत्वपूर्ण प्रतीत होती हैं। 'विदीर्ण हृदय' और 'परदेशी'।[2] 'विदीर्ण-हृदय' में जिज्जा अधिक भावुक पात्रों के चयन की ओर आकृष्ट हुए हैं और 'परदेशी' में आदर्शवादी क्रियाशील पात्रों को प्रस्तुत किया गया है। दो नारी-पात्रों का व्यक्तित्व 'विदीर्ण-हृदय' में निरूपित किया गया है। संयोग और आकस्मिकता के मोह ने कहानीकार को स्वाभाविक रूप से व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का अवसर नहीं दिया है। मनोगत भावों के विश्लेषण के दृष्टिकोण से यह कहानी अवश्य ही महत्वपूर्ण है। दो सखियाँ परस्पर वार्ता द्वारा अपने अन्तर की वेदना को व्यक्त करती हैं। भावावेग और करुणा का उद्वेलन एक को मरण की सीमा में पहुँचा देता है। दूसरी की दारुण-मनोव्यथा उनके व्यक्तित्व के करुण रूप को व्यंजित करती है।

'परदेशी' शीर्षक कहानी में जमुना और परदेशी क्रमशः नारी और पुरुष पात्र हैं। जमुना विधवा है और संयोगवशात् परदेशी उसके द्वार पर आश्रय प्राप्ति हेतु उपस्थित होता है। दोनों क्रमशः परिचय, सहानुभूति, प्रेम और फिर प्रणय की भूमिका में उतर पड़ते हैं। एक दिन परदेशी अकस्मात ही जमुना को छोड़ कर चल देता है। जमुना की करुण स्थिति का अंकन कुशलता से किया गया है। पात्रों की मन:स्थिति का विश्लेषण, उनके अन्तर्द्वन्द्व का अंकन विशेष आकर्षक तथा मनोविज्ञान सम्मत होता यदि इस कहानी में आकस्मिकता तथा संयोग को प्रधानता न दी गयी होती। चरित्र-अंकन तथा व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इन कहानियों का ऐतिहासिक महत्व है।

(३) पंडित ज्वालादत्त शर्मा की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सुधारवादी प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर पंडित ज्वालादत्त शर्मा ने आदर्शवादी कर्मनिष्ठ पात्रों का आयोजन अपनी कहानियों में किया। उनकी कहानी रचना, पद्धति अपनी समग्र विशेषताओं के आलोक में प्रेमचन्द की कहानी कला के विशेष

---

१ 'इन्दु'—कला ६, खण्ड २, किरण १, जुलाई सन् १९१५, पृ० ४४।

२ 'मधुकरी' (सं० विनोदशंकर व्यास), प्रथम खण्ड।

निकट है। आरंभिक कहानियों में प्रेमचन्द ने जिस सामान्यतः आदर्शवादी प्रवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया था उसका स्पष्ट प्रभाव इनकी कहानियों पर परिलक्षित होता है। पात्रों के व्यक्तित्व को जिन कहानियों में अधिक सतर्कता से निरूपित किया गया है उनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय अग्रलिखित हैं :

'मिलन'[१], 'अनाथ बालिका'[२], 'भावपरिवर्त्तन'[३], 'विरक्त-विज्ञानानन्दन'[४], 'मिहनताना'[५], 'विधवा'[६], 'बूढ़े का ब्याह'[७] तथा 'कहानी लेखक'[८]।

इन कहानियों में संघर्षरत, कार्यकुशल धैर्यशील, आदर्श पात्रों की अवतारणा की गयी है। व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के बीच पात्रों की विशेषताओं को प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया गया है। प्राचीन दूषित परम्पराओं के प्रति इन पात्रों में असन्तोष और आक्रोश के भाव उग्र रूप मे अंकित किये गये है। यद्यपि आकस्मिकता और संयोग को प्रस्तुत करने का आग्रह इनकी रचनाओं में प्रायः सर्वत्र ही दृष्टिगत होता है तथापि पात्रो की व्यक्तिगत क्षमता, गतिशीलता और प्रभावपूर्णता को बनाये रखने का यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिस्थितियो के वर्णन तथा घटनाओं को विस्तार देने की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर जहाँ भी उन्होंने कहानियो में विविध प्रसंगों को जोड़ कर उन्हें विशद् बनाया है, वहाँ पात्रो के व्यक्तित्व में अंकन में विशृंखलता आ गयी है। 'कहानी-लेखक' को उदाहरण के रूप मे देखा जा सकता है। इसमें एक बेकार ग्रेजुएट के व्यक्तित्व को अंकित किया गया है। विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य तथा सत्साहस से वह सफलता का मार्ग प्राप्त कर लेता है। आकस्मिक रूप से वह एक बड़े अधिकारी का कृपापात्र बन कर उच्च पद पर पहुँच जाता है। उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व को स्वयं उभरने का अवसर दिया गया होता तो उसके अधिक विश्वसनीय एवं स्वाभाविक रूप का विकास होता।

---

१ 'सरस्वती', भाग १६, सं० २, दिसम्बर सन् १९१५, पृ० १६०।
२ वही, भाग १७, सं० २, सन् १९१६, पृ० १०७।
३ वही, भाग १७, सं० ५, सन् १९१६, पृ० ३१३।
४ वही, भाग १७, सं० २, सन् १९१६, पृ० ८५।
५ वही, भाग १७, सं० ६, पृ० १७०।
६ वही, भाग १७, सं० ३, दिसम्बर १९१६।
७ वही, भाग, १८, सं० ६, जून सन् १९१७, पृ० ३१३।
८ हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ—(सं० भगवती प्रसाद वाजपेयी, हिन्दी सम्मेलन, प्रयाग. पृ० ७१।

(४) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सुप्रसिद्ध निबन्धकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने कतिपय उल्लेखनीय कहानियों द्वारा सामाजिक समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया। 'सरस्वती' पत्रिका के द्वारा इनकी कहानियाँ प्रकाश में आईं। सन् १९१६ से उन्होंने कहानी-रचना का कार्य आरम्भ किया और समय-समय पर अपनी कहानियों द्वारा व्यक्ति, परिवार और मुख्यतः समाज की विविध समस्याओं को प्रस्तुत करते रहे। प्रभावशाली पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण इनकी जिन उत्कृष्ट कहानियों में हुआ है उनमें 'नन्दिनी', 'झलमला', 'अंजलि' और 'चक्करदार चोरी' विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। प्रेम के क्षेत्र में उतरने वाले पात्रों को विविध परिस्थितियों में सक्रिय रूप देने का प्रयास इनकी रचनाओं में विद्यमान है। कहानीकार ने कहीं-कहीं वक्ता का रूप धारण कर लिया है। वहीं उसके विश्लेषण में कृत्रिमता आ गयी है। उपयुक्त संवाद-योजना अवश्य ही पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने में सहायक सिद्ध हुई है। घटनाओं की अपेक्षा पात्रों को अधिक प्रधानता देकर इन्होंने उनके व्यक्तित्व को सर्वोपरि स्थान दिया है। वैसे दृष्टिकोण तो इनका आदर्शवादी है ही, परन्तु पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व के निरूपण और विश्लेषण में स्वाभाविकता और विश्वसनीयता की विशेषताएँ प्रायः सभी कहानियों में दृष्टिगत होती हैं। सन्तुलित विस्तार तथा समुचित सरस शब्द-योजना भी व्यक्तित्व विश्लेषण के कलात्मक रूप को विकसित करने में सहायक सिद्ध हुए है।

(५) सुदर्शन की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रेमचन्द-संस्थान के विशेष उल्लेखनीय कहानीकार सुदर्शन हैं। अपनी सुदीर्घ-कालीन साहित्य-साधना द्वारा इन्होंने कहानी-साहित्य की महत्वपूर्ण श्रीवृद्धि की है। इनके प्रमुख कहानी-संकलन अग्रलिखित है :

'पुष्पलता', 'सुदर्शन-सुधा', 'तीर्थयात्रा', 'सुप्रभात', 'नगीने', 'पनघट', 'चार कहानियाँ', 'सुदर्शन-सुमन', 'परिवर्त्तन', 'पारस', 'सात कहानियाँ', 'अंगूठी का मुकदमा', 'राजकुमार सागर', 'फूलवती' तथा 'रुस्तम सोहराब।'

उपर्युक्त कहानी-संकलन उनकी अनेक वर्ष में लिखी कहानियों के क्रमिक विकास का परिचय भी प्रस्तुत करते हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की विविध समस्याओं से सम्बद्ध अनेकानेक पात्र उनकी कहानियों में स्थान प्राप्त कर भाव-प्रकाशन के साधन बन चुके हैं। उनकी विविध कहानियों के अनेकरूपीयपात्रों की कई कोटियाँ बन सकती हैं। आदर्श की प्रधानता तो प्रायः सभी पात्रों के व्यक्तित्व का आधारभूत तत्व है। व्यक्तित्व के असामान्य रूप के विश्लेषण का प्रयास भी 'अन्ध-

कार', 'हार की जीत' तथा 'परिवर्तन,' जैसी कहानियों में किया गया है। 'अंधकार,' में सन्तानहीन स्त्री-पुरुष की भावनाओं का तात्विक विश्लेषण है। 'परिवर्तन' में हरिसेन तथा रूपचन्द के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करने वाली स्थितियों का सतर्कता से समावेश किया गया है।' 'हार की जीत' में बाबा भारती की उदात्त सेवा-वृत्ति के समक्ष छली खड्गसिंह की कपट-वृत्ति घुटने टेक देती है।

सामान्य दैनिक जीवन की समस्याओं को भी सुदर्शन ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है, और हमारे सुपरिचित पात्रों को नवीन आकर्षण के साथ प्रस्तुत किया है। प्रेम और प्रणय की भूमिकाओं में जो पात्र अवतरित हुए हैं, उनमें आदर्श-वादिता का प्राधान्य है। प्रेम की वेदी पर उत्सर्ग के लिये प्रस्तुत होने वाले पात्रों के व्यक्तित्व को इस प्रकार की कहानियों में सतर्कता से विश्लेषित किया गया है। आदर्श और चरित्र के संतुलन को प्रेम-प्रधान कहानियों में बिगड़ने नहीं दिया गया है। 'पत्थरों का सौदागर, शीर्षक कहानी में कुंअर सूर्य प्रकाश के आदर्श प्रेम की भावपूर्ण व्यंजना प्रस्तुत की गयी है। सरजा' के प्रति उनके मन में गहन प्रेम है परन्तु सच्चरित्रता का अवलम्ब ग्रहण कर ही वे आत्मतुष्टि की ओर प्रवृत्त होते हैं। सौहार्द्र और मित्रता के निर्वाह द्वारा आदर्श-रक्षण की उत्कृष्ट मनोवृत्ति को महताबराय के व्यक्तित्व में 'दो मित्र' शीर्षक कहानी में व्यक्त किया गया है। 'सदासुख' शीर्षक कहानी में प्रमुख पात्र सदासुख के पवित्र निःस्वार्थ प्रेम की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति उसके व्यक्तित्व को आलोकित कर देती है। भगवती और उसके पुत्र के प्रति उसके प्रेम और उत्सर्ग की वृत्तियाँ आदर्श के चरम उत्कर्ष-बिन्दु पर प्रतिष्ठित हैं। 'राजा' शीर्षक कहानी में आदर्श राजा के कर्तव्यों का निरूपण कर उसके व्यक्तित्व के सन्तुलित और स्वाभाविक रूप की प्रतिष्ठा की गयी है। 'कायापलट' शीर्षक कहानी में सामाजिक कुप्रथा—पर्दा-प्रथा—का तीव्र विरोध किया गया है। 'रक्षा' के जीवन की परिवर्तन-शील स्थिति का चित्रण कर इस कहानी में व्यक्तित्व के संतुलित रूप का विश्लेषण किया गया है।

ऐतिहासिक वातावरण से भी सुदर्शन ने कथावस्तु का कुशलता के साथ चयन किया है। पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करते हुए तत्कालीन वातावरण तथा स्थितियों को कहानीकार ने सतर्क दृष्टि से अंकित किया है। 'दिल्ली का अन्तिम दीपक' एवं 'धर्म की वेदी पर' इस कोटि की उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। 'दिल्ली का अन्तिम दीपक' में सामान्य घटनाओं के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व को ऐसी विशेषताएँ दी गयी हैं जो उन्हें अविस्मरणीय बना देती हैं। 'सुभागी' भड़भूजन भी अपनी व्यक्तिगत चरित्रगत विशेषताओं से हमें सहज ही आकृष्ट करती है। प्राचीन काल की परिस्थितियों के मध्य 'धर्म की वेदी पर' शीर्षक कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है।

कल्पना तथा अलौकिक घटनाओं का समन्वय कर कतिपय कहानियों में भावुक, आदर्शवादी पात्रों की अवतारणा की गयी है। 'प्रेमतरु' शीर्षक कहानी में नारी-पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार ने उसकी उदारता को महत्व दिया है। सुलक्खो का प्रेम अपने शत्रु के वृक्ष पर केन्द्रित रहता है और उसके रहस्यमय मन की ओर संकेत प्रस्तुत कर देता है। पात्रों के व्यक्तिगत जीवन में उतर कर कहानीकार उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की चेष्टा करता है। 'कवि की स्त्री' और 'फूलवती' शीर्षक कहानियों में विचित्र घटनाओं तथा स्थितियों के अंकन द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व के रहस्यमय तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

प्रेमचन्द के समान इन्होंने जीवन और जगत की विभिन्न स्थितियों से पात्रों का चयन किया है। उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिये कथावस्तु को अनेक मोड़ भी देने की चेष्टा लम्बी कहानियों में दृष्टिगत होती है। अनेक पात्रों का समावेश और उनके विविध-रूपीय व्यक्तित्व के अंकन का प्रयास जिन विस्तारयुक्त कहानियों में हुआ है उनमें 'परिवर्तन' (६५ पृष्ठ), 'रुस्तम-सोहराब' (६ पृष्ठ), 'पत्थरों का सौदागर' (१० पृष्ठ) और 'फूलवती' (१०५ पृष्ठ) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता है, अनेक वर्ग के बहुसंख्यक पात्रों का समावेश हो गया है। मुख्य पात्रों के व्यक्तित्व को अधिक सतर्कता से विश्लेषित किया गया है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन पर दार्शनिक, दासी, राजकुमारी, न्यायाधीश, विद्यार्थी, माली, धोबी, मन्त्री गुरु, शिष्य, भड़भूजा, नौकर, हाकिम, चोर, क्लर्क, कवि, चपरासी, भाभी, देवर, सौत, मजदूर, संन्यासी इत्यादि प्रमुख हैं।

सुदर्शन की अधिकांश कहानियों में पात्रों को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है। फलतः उनके चरित्र और व्यक्तित्व को विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त तथा विश्लेषित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। आदर्श की व्यंजना को उद्देश्य रूप से ग्रहण करते हुए कहानीकार ने जीवन के विविध तथ्यों तथा सत्यों का अपने सुनिश्चित दृष्टिकोण से विवेचन किया है। उनके आदर्शवादी दृष्टिकोण का वहन करने वाले पात्र क्रियाशील, प्रभावशाली और सच्चरित्र हैं। अधिकांश कहानियों में प्रारम्भ से अन्त तक प्रमुख पात्र के व्यक्तित्व का प्रभाव व्यंजित किया गया है और उसके विभिन्न तत्वों का विश्लेषण भी आकर्षक ढंग से किया गया है।

(६) विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

पारिवारिक और सामाजिक जीवन से विविध पात्रों का चयन कर कौशिक जी ने उत्कृष्ट आदर्श-प्रधान कहानियों की रचना की है। प्रेमचन्द की आदर्शवादी

परम्परा के वे प्रतिनिधि कहानीकार हैं। 'चित्रशाला'[1] (दो भाग) और 'पेरिस की नर्तकी'[2] उनकी श्रेष्ठ कहानियों के संकलन हैं। सन् १९१६ में कौशिक जी कहानी रचना की ओर प्रयत्नशील हुए और क्रमशः परिमार्जित और सुव्यवस्थित कहानियों का प्रणयन करते हुए प्रेमचन्द की परम्परा को अग्रसर करते रहे। श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने उनके रचनाकौशल का विवेचन करते हुए उन्हें मानव-चरित्र का कुशल व्यंजक भी माना है। जिस किसी विषय को कहानी के आधारवस्तु के रूप में उन्होंने ग्रहण किया उसका कुशलता से अंकन कर तथा उसका आद्यन्त निर्वाह कर अपनी रचनाशक्ति का परिचय कौशिक जी ने प्रस्तुत किया। श्री टण्डन जी के शब्दों में "(कौशिक जी) किसी भी चित्र को अपने कुशल हाथों से चित्ताकर्षक एवं कला पूर्ण बना सकते थे। केवल समाज का चित्र ही नहीं वरन् मानव-चरित्र के निगूढ़ रहस्य का चित्रण भी मार्मिक ढंग से करते थे।'[3] तत्कालीन समाज की विविध स्थितियों का कुशलतापूर्वक अंकन करते हुए उन्होंने मानव व्यक्तित्व से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को सुलझाने की चेष्टा की है। उनके द्वारा प्रस्तुत पात्रों में अधिकांश कर्त्तव्यनिष्ठ, आदर्शपरायण और सच्चरित्र हैं। प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व का तथ्यपूर्ण विश्लेषण करने के लिये प्रतिकूल गति से चलने वाले असामाजिक एव अनैतिक कृत्यों मे संलग्न पात्रों को भी कतिपय कहानियों में स्थान दिया गया है।

व्यक्ति, समाज, जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय से सम्बन्धित विविध समस्याओं के द्वारा मध्यवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व के अनेक रूप इनकी कहानियों मे विश्लेषित हुए है। निर्धन किसानों, मजदूरों और अनाश्रित विधवाओं के करुण रूप का अंकन भी कुछ कहानियों में हुआ है। इनकी प्रथम प्रकाशित कहानी 'रक्षाबन्धन'[4] में भाई और बहन के विशुद्ध प्रेम का वर्णन करते हुए उनके व्यक्तित्व के मानवीय संवेदना एव सहज उद्वेलित स्नेह की प्रधानता दिखाई गयी है। 'स्वाभिमानी नमक हलाल' शीर्षक कहानी में मुनीम मटरूमल की उदारता तथा सेवा-परायणता का स्वाभाविक चित्रण है। सेठ चुन्नूमल की अव्यवहारिकता और पश्चाताप का मनोवैज्ञानिक-विश्लेषण किया गया है। स्वामी को संकट से मुक्त कर मुनीम मटरूमल पुनः अपने स्वाभिमान का संपोषक बनकर घर बैठ रहता है। 'नर पशु' मानवीय व्यवहार के कुत्सित रूप को व्यंजित करने वाली उत्कृष्ट कहानी है। अम्बिका प्रसाद के पाशविक आचरण के प्रति कहानीकार ने अपना तीव्र विरोध अभिव्यक्त करने हुए उसकी पत्नी

१ 'चित्रशाला' गंगा ग्रन्थागार, ३६ गौतम बुद्ध मार्ग लखनऊ (१९२४)।
२ 'पेरिस की नर्तकी', साहित्य-भवन प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद (१९४२)।
३ 'वही, (भूमिका श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन), भूमिका भाग से उद्धृत।
४ 'सरस्वती' अक्तूबर १९१६, भाग १७, सं० ४, पृ० २१५।

गायत्री देवी के व्यक्तित्व का करुण रूप अंकित किया है। मानव-व्यक्तित्व के रहस्यों की ओर संकेत करने वाली कहानियों में पात्रो के आचरण तथा प्रतिक्रिया की कलात्मक व्यंजना तथा सन्तुलनयुक्त विश्लेषण हुआ है। उदाहरण के रूप में 'वह प्रतिमा', 'अशिक्षित का हृदय' तथा 'विधवा' शीर्षक कहानियाँ दृष्टव्य हैं।

मानवीय चरित्र के उत्कर्ष का आधार सत्यनिष्ठा और ईमानदारी है, इस आदर्श की प्रतिष्ठा 'गँवार' शीर्षक कहानी में हुई है। 'ढपोरशंख' में तथा कथित धर्म-धुरन्धरों के व्यक्तित्व का रहस्योद्घाटन किया गया है धर्म के नाम पर पाखंड और आडम्बर फैलाने वाले पात्रों के चरित्र की यथार्थव्यंजना इस कहानी में हुई है। कालेज से घर तक सन्मित्रता के सम्बन्ध का दृढ़ता से निर्वाह करने वाले उत्सर्ग-प्रिय पात्रों के व्यक्तित्व का उत्कृष्ट विश्लेषण 'अभिन्न' शीर्षक कहानी में हुआ है। मानव चरित्र के परिवर्तन का महत्व व्यक्त करते हुए 'ताई' शीर्षक कहानी मे रामेश्वरी के व्यक्तित्व का आकर्षक ढंग से निरूपण किया गया है। 'माता का हृदय' भी पात्र-विशेष के व्यक्तित्व की अनुकूल शक्ति का परिचय प्रस्तुत करने वाली कहानी है। अपनी विविधरूपिणी कहानियों में कौशिक जी ने प्रमुख पात्रो के व्यक्तित्व को आदर्शगुणों से अलंकृत करने का प्रयास किया है। परिस्थितियाँ और संयोग उनके व्यक्तित्व की गन्तव्य दिशा का निर्धारण करते हैं।

(७) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

प्रेमचन्द के समान ही अश्क का आगमन उर्दू कथा-क्षेत्र से हिन्दी कथा-साहित्य में हुआ था। सन् १९२६ से अब तक कहानी रचना के सोपानों को पारकर वे प्रौढ़ता और ख्याति के उच्च-शिखर तक पहुँच चुके हैं। सन् १९२६ से १९३३ तक उनकी कहानियों में आदर्शों की प्रधानता दृष्टिगत होती है। सन् १९३३ तक प्राप्त उनकी हिन्दी कहानियों में प्रेमचन्द की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृत्ति की प्रधानता विद्यमान है। सन् १९३३ के पश्चात् उनकी कहानियों के संकलन हैं 'पिंजरा' 'अंकुर' 'निशानियाँ' और 'दो धारा'। अन्तिम दो संकलन यथार्थ और आदर्श की समन्वय-भूमि पर प्रतिष्ठित पात्रों के व्यक्तित्व को भी प्रस्तुत करते हैं इन संकलनों में संग्रहीत कहानियों में रूमानी वातावरण में पात्रो की अवतारणा की गयी है। आदर्श-रक्षण में तत्पर पात्रों का व्यक्तित्व निष्ठा, उत्सर्ग, साधना, सहिष्णुता इत्यादि उत्कृष्ट गुणों से अलंकृत किया गया है।

सामाजिक जीवन की विभिन्न स्थितियों में अश्क जी के पात्रों का व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं के साथ उभरा है। 'चट्टान' शीर्षक कहानी में आध्यात्मिक साधना

का विवेचन करते हुए 'शंकर' के व्यक्तित्व का निरूपण किया गया है। उसकी साधना तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का अंकन कुशलता के साथ हुआ है। इनकी प्रसिद्ध कहानी 'नज्जिया' मे प्रेम और सामाजिक विषमता के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है। रूप तथा सौन्दर्य के तत्वों का विश्लेषण करते हुए कहानीकार ने 'नासूर', 'जादूगरनी' और 'चित्रकार की मौत' में प्रेम में निमग्न पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन किया है। निराशा और वियोग की तीव्र व्यथा के साथ ही त्याग और उदारता का समन्वय इन पात्रों के व्यक्तित्व की अविस्मरणीय विशेषताएँ बन गयी है। 'पहेली' शीर्षक कहानी में रामदयाल के व्यक्तित्व का विश्लेषण करता हुआ कहानीकार उसकी पत्नी 'उर्मिला' के व्यक्तित्व के प्रति आदर और संवेदना के भाव का सृजन करता है।

अश्क जी की आदर्शवादी कहानियों में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि पात्रो को स्थान प्राप्त हुआ है। अपने व्यक्तित्व की महत्ता के आधार पर ये पात्र स्वतः सामान्य एवं विशेष वर्गो मे विभक्त हो जाते है। सामान्य वर्ग के पात्रो का कार्य-क्षेत्र व्यापक है। वे विभिन्न सामाजिक समस्याओं को उनकी चरम परिणति की ओर ले जाते हैं। उनके आदर्शवादी समाधान की भूमिका निर्माण भी ऐसे ही पात्रों के द्वारा होता है। विशेष वर्ग के पात्र अधिक प्रभावपूर्ण और मनोविज्ञान-सम्मत व्यक्तित्व लेकर अवतरित होते हैं। उनमें यथार्थ की ओर चलने का आग्रह विद्यमान है। आदर्श की सीमा से निकल कर व वस्तुजगत की विभिन्न स्थितियो का निरीक्षण परीक्षण करते हैं और तथ्यपूर्ण मनोवैज्ञानिक निष्कर्षो तक पहुँचते हैं। अश्क जी की उत्तरकालीन कहानियों मे मुख्यतः इस प्रकार के पात्रों को ही स्थान प्राप्त हुआ है। जीवन के व्यापक दृश्य-पट से इन्होंने जिन अनेक अविस्मरणीय पात्रो का संचयन कर उनके व्यक्तित्व की कुशलता से निरूपण किया है, उनमे प्रमुख हैं :

नज्जिया नर्तकी, बदरी पहाड़ी युवक, सुजुं पहाड़ी युवती, रामदयाल अभिनेता, सादिक तारबाबू, सन्तराम नौकर, ईश्वर कलाकार और नील कमल सम्पादक।

पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषण के माध्यम से मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आलोक में प्रतिष्ठित करने का आग्रह अश्क जी की कहानियों मे उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है। व्यक्ति और समाज के मनोविज्ञान का वही रूप इन पात्रों के व्यक्तित्व में दृष्टिगत होता है जो प्रेमचन्द की कहानियों में विद्यमान है। डा० लक्ष्मीनारायण लाल के शब्दों में :

जिस तरह प्रेमचन्द की कला व्यक्ति-समाज के यथार्थ जीवन और मनोविज्ञान का सामूहिक प्रतिनिधित्व करती थी, ठीक वही धरातल अश्क की कहानियों का है। यही कारण है कि इनकी कहानियां जहाँ एक ओर समाज की आलोचना प्रस्तुत

करती हैं, वहाँ व्यक्ति के मनोविज्ञान की व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। चरित्र पर तीखे व्यंग्य के साथ पाठक को एक निश्चित आदर्श अथवा लक्ष्य की ओर प्रेरित करती हैं।''[1]

आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेपण का स्वरूप

पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का विश्लेषण : आदर्शोन्मुख यथार्थवाद समाज और राष्ट्र की विविध समस्याओं और व्यक्तिगत जीवन के अनेकानेक पक्षों का प्रतिनिधित्व करता हुआ जिन यशस्वी कहानीकारों द्वारा उनकी अविस्मरणीय रचनाओं में विकसित और प्रसृत हुआ उनके सत्प्रयत्नों का संक्षिप्त विवेचन पिछले पृष्ठों में हो चुका है। यहाँ हम देखेंगे कि किस प्रकार अपने पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण का महत्वपूर्ण कार्य इन कहानियों में सम्पन्न हुआ है। पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का विश्लेषण करते हुए उनके गुणावगुणों का परिचय इस परम्परा के सभी कहानी-कारों ने प्रस्तुत किया है। उनके कार्य, व्यवहार, प्रभाव तथा आदर्श एवं सिद्धान्तों की व्याख्या विभिन्न प्रसंगों में प्रायः सभी कहानियों में प्राप्त होती है। व्यक्तित्व के बाह्य पक्ष पर अपेक्षाकृत दृष्टि अधिक केन्द्रित रही है अतएव कहानीकारों ने स्वयं वक्ता का स्थान ग्रहण कर लिया है। इस परम्परा के जनक और सर्वाधिक लोकप्रिय कहानी-कार प्रेमचन्द स्वयं ही विस्तारपूर्वक पात्रों के बाह्य-रूप का वर्णन करने में उत्साह दिखाते थे। प्रारम्भिक कहानियों में तो उनकी यह प्रवृत्ति इतनी प्रबल है कि पाठक-वर्ग को ऊब सी हो जाती है। परन्तु उत्तरोत्तर उनकी यह प्रवृत्ति कम होती गयी है। प्रौढ़ रचना काल की उत्कृष्ट कहानियों में वे पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप के अंकन के प्रति सर्वथा उदासीन हैं।

पात्रों के नाम, गुण, महत्व, लक्ष्य और प्रभाव को लक्षित कर इस परम्परा की अधिकांश कहानियों के शीर्षकों की रचना की गयी है। रानी सारन्धा, लैला, ज्वालामुखी, आत्माराम, बूढ़ी काकी, शिकारी, राजकुमार आदि यदि प्रेमचन्द की पात्र-प्रधान कहानियों के शीर्षक हैं तो फूलवती, दो मित्र, सदासुख, कमल की बेटी, एथेन्स का सत्यार्थी, राजा गुरुभक्त एवं पत्थरों का सौदागर जैसे शीर्षक सुदर्शन की कहानियों में पात्रों के नाम और महत्व के परिचायक हैं। कौशिक जी की अधिकांश कहानियों के शीर्षक भी प्रमुख पात्र की विशेषताओं को व्यक्त करते हैं, जैसे 'स्वाभिमानी नमकहलाल', 'ताई', 'नास्तिक प्रोफेसर', 'नरपशु', 'ढपोर-शंख'; 'अभिन्न' तथा 'माता का हृदय' आदि। अश्क जी की प्रारम्भिक कहानियों में भी पात्रों की प्रधानता को व्यक्त

---

१. 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास', पृ० २७७।

करने वाले शीर्षकों को विशेष प्रश्रय प्राप्त हुआ है। 'ज्ञानी','नेता','आर्टिस्ट','तारबाबू', 'चित्रकार की मौत', 'जादूगरनी', 'नज्जिया' तथा 'वह मेरी मंगेतर थी' शीर्षक उदाहरण के रूप में देखे जा सकते हैं। इस परंपरा के अधिकांश कहानीकारों में यह प्रवृत्ति विद्यमान है।

पात्रों के नामकरण द्वारा उनके व्यक्तित्व की ओर संकेत देने का आग्रह भी बहुत-सी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों में स्पष्ट है। 'चन्दा', 'तारा', 'तूरया' और 'रेवती' सौन्दर्य-सम्पन्ना नारी-पात्र हैं। 'मुलिया', 'बुलाकी', 'शुभानी', 'सुखिया' नाम से ही ग्रामीण वातावरण में पली नारियाँ प्रतीत होती हैं। 'देवी', 'कुसुम', 'अम्ब', 'माधुरी', सुनीता' और 'मृदुला' का व्यक्तित्व उनके नाम के अनुरूप ही अंकित हुआ है। पुरुष-पात्रों में भी 'सूर्य प्रकाश', 'मोहन', 'मनहर', 'सुजानसिंह', 'मोटेराम' और 'मंगल' अपने नाम के अनुसार ही व्यक्तित्व प्राप्त करने में सफल हुये हैं। यह प्रवृत्ति स्वयं प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियों में दृष्टिगत होती है। अपनी उत्तरकालीन कहानियों मे उनका आग्रह इस ओर नहीं रहा है। सुदर्शन तथा कौशिक की कहानियो में भी इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है।

कहानी के प्रारम्भ मे पात्रो के परिचय को प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व का बाह्य-विशेषताओं का उद्‌घाटन कर देना आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकारों की सामान्य प्रवृत्ति रही है। आरम्भिक काल की कहानियों में प्रेमचन्द पात्रों के चरित्र, स्वभाव, सिद्धान्त तथा प्रभाव का प्रारम्भ में ही वर्णन कर देना आवश्यक समझते थे। पाठक-वर्ग को कुछ भी सोचने-समझने की आवश्यकता नहीं रह जाती थी। बेनीमाधव सिंह का परिचय उन्होंने इतने विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है

'बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमीदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य से सम्पन्न थे। गाँव का पक्का तालाब और मन्दिर जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्ति-स्तम्भ थे। कहते है इस दरवाजे पर हाथी झूलता था। अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैस थी, जिसके शरीर में पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती, क्योंकि एक न एक आदमी हांड़ी लिए उसके सर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक सम्पत्ति वकीलो की भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय वार्षिक एक हजार से ऊपर न थी'।[1]

विकास-काल तक आते-आते प्रेमचन्द ने पात्रो के प्रारम्भिक परिचय को संक्षिप्त करना आवश्यक मान लिया। उन्हीं के शब्दों में, किसी चरित्र की रूपरेखा करते समय हुलिया नवीसी की जरूरत नही। दो चार वाक्यों में मुख्य-मुख्य बाते कह देना चाहिये।'[2]

---

१ 'बड़े घर की बेटी', सप्त सरोज, पृ० १।

२ 'प्रेमचन्द', कुछ विचार, पृ० ४८ (सरस्वती प्रेस, बनारस, चतुर्थ संस्करण)।

अतएव विकास कालीन कहानियों में व्यक्तित्व के बाह्य रूप का वर्णन संयत और चरित्र-व्यंजक है। 'शान्ति का परिचय उसी के शब्दों में, सीधा उसके प्रारम्भिक व्यवहार का परिचायक बन कर, इस प्रकार व्यक्त हुआ है :

'जब मैं ससुराल आई तो, बिल्कुल फूहड़ थी। पहनने ओढ़ने का सलीका न बातचीत करने का ढंग। सिर उठाकर किसी से बातचीत न कर सकती थी। किसी के सामने जाते शर्म आती। स्त्रियों तक के सामने बिना घूँघट के झिझक होती थी।'[१]

प्रौढ़ रचना काल में प्रेमचन्द मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थवादी विश्लेषण को प्रधानता देने लगे। अतएव विस्तृत प्रारम्भिक परिचय में उनका विश्वास नहीं रह गया। इसी प्रकार पात्रों के प्रारम्भिक परिचय को प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति अन्य आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकारों में भी परिलक्षित होती है।

विभिन्न स्थितियों का कुशलता पूर्वक अंकन कर उनके मध्य पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित एवं विश्लेषित करने का प्रयास प्रायः सभी कहानियों में दृष्टिगत होता है। पात्रों के स्वभाव तथा चरित्र को व्यक्त करने वाली पूर्व स्थितियों, तीव्र संवेदना को व्यक्त करने वाली वर्तमान स्थितियों तथा व्यक्तित्व को गतिशील बनाने वाली भावी स्थितियों का संयोजन प्रेमचन्द ने कलात्मक ढंग से किया है। कौशिक एवं अश्क की कहानियों में भी स्थिति-अंकन की कुशलता द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की क्षमता है। 'बूढ़ी काकी' और 'कफन' में उत्कृष्ट स्थिति अंकन के कौशल का परिचय प्राप्त होता है। गरम-गरम लाल-लाल पूड़ियों को कल्पना में देखने से, लाड़ली द्वारा लायी गयी थोड़ी सी पूड़ियों को खाने से बूढ़ी काकी अपने लोक-धर्म को विस्मृत कर उदर धर्म के पोषण में प्रवृत्त हो जाती हैं। इस स्थिति की अन्तिम परिणति कितनी मार्मिक और व्यक्तित्व-व्यंजक है :

'दीन क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुन कर भक्षण करने लगी।—काकी बुद्धिहीन होते हुये भी इतना जानती थी कि मैं वह काम कर रही हूँ, जो मुझे कदापि न करना चाहिए'।[२]

उपर्युक्त स्थिति के अंकन का उपयोग दूसरे पात्र के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण किन्तु आकस्मिक भाव-परिवर्तन को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से भी किया गया है। बूढ़ी काकी की इस दयनीय स्थिति को देखकर कठोर-हृदया रूपा के हृदय में भाव-परिवर्तन का ज्वार उठता है। इस भयंकर स्थिति का अवलोकन कर वह किस मनःस्थिति में पहुँचती है इसका वर्णन प्रेमचन्द के शब्दों में इस प्रकार है—'एक ब्राह्मणी दूसरी की

---

१ 'शान्ति', मानसरोवर, भाग ७, पृ० ८०।

२ 'बूढ़ी काकी', मानसरोवर भाग ८, पृ० १५६।

जूठी पत्तलें टटोले, इससे अधिक शोक हृदय में हो, यह असम्भव था ।—रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ । करुणा और भय से उसकी आँखे भर आयीं' ।[1]

'कफन' शीर्षक कहानी में अन्तिम स्थिति का कलापूर्ण अंकन पात्रों के कुण्ठित एवं दमित-वासना-ग्रस्त व्यक्तित्व का सजीव एवं संवेदनापूर्ण रूप प्रस्तुत करता है—'तब दोनों न जाने किस दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने आ पहुँचे ।—साहु जी एक बोतल हमें भी देना ।—फिर दोनों नाचने लगे । उछले भी । कूदे भी । गिरे भी । मटके भी, भाव भी बताए । अभिनय भी किए । और आखिर नशे में मदमस्त होकर वहीं गिर पड़े' ।[2]

स्थिति अंकन की कुशलता किसी न किसी रूप में इस संस्थान के अन्य कहानीकारों जैसे सुदर्शन, ज्वालादत्त शर्मा एवं बख्शी जी की रचनाओं में भी विद्यमान है ।

पात्रों के आकार-प्रकार और वेश-भूषा के विस्तृत वर्णन द्वारा उनके व्यक्तित्व की बाह्य विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत करने का आग्रह प्रेमचन्द की प्रारंभिक कहानियों में दृष्टिगत होता है । सभी वर्गों के पात्रों की वेशभूषा तथा आकृति का उन्होंने सोत्साह वर्णन किया है । पण्डित घासीराम के स्वरूप का अंकन करते हुए वे लिखते हैं :

'पंडित घासीराम ईश्वर के परमभक्त थे ।—आध घन्टे तक चन्दन रगडते फिर आईने के सामने एक तिनके से माथे पर तिलक लगाते । चन्दन की दो रेखाओं के बीच में लाल बिन्दी होती थी । फिर छाती पर बाहो पर चन्दन की गोल-गोल मुद्रिकाएँ बनाते' ।[3]

अर्थ-पिशाच सेठ की आकृति का हास्यपरक वर्णन करते हुए उसकी व्यवहारजन्य विशेषता की ओर भी वे संकेत करते हैं :

'सेठ जी की उम्र कोई पचास की थी । सिर के बाल झड़ गये थे और खोपडी ऐसी साफ सुथरी निकल आई थी जैसे ऊसर खेत । आपकी आँखें थीं तो छोटी पर बिल्कुल गोल । चेहरे के नीचे पेट था । और पेट के नीचे टाँगें, मानो किसी पीपे में दो मेखें गाड़ दी गयी हों । लेकिन यह खाली पीपा न था' ।[4]

इस प्रकार पात्रों के स्वरूप एवं वेशभूषा का वर्णन प्रस्तुतकर कहानीकार पाठकों के मनोरंजन एवं जिज्ञासा का प्रशमन कर लेता है । परन्तु विस्तृत वर्णन ऊहात्मक

१ 'बूढ़ी काकी', मानसरोवर भाग ८, पृ० १५७ ।
२ 'कफन', कफन और शेष रचनाएँ, पृ० १० ।
३ 'सद्गति', मानसरोवर, भाग ४ ।
४ 'तगादा', मानसरोवर, भाग ४ ।

और बोझिल बन जाते हैं। क्योंकि अपने अनुमान, भावी घटना, अन्य पात्रों के वर्णन तथा स्वाभाविक रूप से आने वाले परिवर्तनों के माध्यम से पात्रों को समझने का अवसर पाठकों को प्राप्त नहीं होता। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों में इतिवृत्तात्मक प्रणाली से पात्रों के बाह्य रूप को एक ही स्थान पर एक बार वर्णित कर देने की प्रवृत्ति प्रायः सर्वत्र देखी जाती है। अपनी उत्तरकालीन रचनाओं में प्रेमचन्द और अश्क ने इस प्रकार के विस्तृत वर्णन को अनावश्यक मान उसे सूक्ष्म और सांकेतिक रूप देने का सफल प्रयास किया।

व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण

पात्रों के व्यक्तित्व में अन्तः प्रेरणाओं की क्रियाशीलता, विभिन्न प्रकार के व्यवहार, प्रतिक्रिया और आवेग—आचरण की प्रेरणा भरती रहती है। पात्रों के बाह्य व्यवहारों के पीछे भी आन्तरिक सकारण स्थिति विद्यमान रहती है। जब कहानीकार पात्रों के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण करता है तो वह अन्तः प्रेरणाओं की ओर संकेत देना आवश्यक समझता है। मनोवैज्ञानिक विवेचन के अनुसार अन्त:-प्रेरणाएँ पात्रों के कार्य-व्यवहार, क्रिया-प्रतिक्रिया के कारण रूप में व्यक्तित्व के गुह्य प्रदेश में विद्यमान रहती हैं।[1] प्रेमचन्द ने अन्तःप्रेरणाओं की सांकेतिक व्याख्या द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व में सन्तुलन तथा उनके कार्यों में स्वाभाविक गतिशीलता की स्थिति का आद्यन्त निर्वाह करने का प्रयास किया है। 'नमक का दारोगा', 'परीक्षा' 'बड़े घर की बेटी', 'पंचपरमेश्वर', 'बूढ़ी काकी', 'विमाता', 'प्रेरणा' और 'ईदगाह' शीर्षक कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण उनकी प्रेरणाओं के आधार पर सफलता पूर्वक किया गया है।

प्रेमचन्द संस्थान के अन्य प्रमुख आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार भी अन्तः-प्रेरणाओं के आधार पर पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण करते रहे। इस दृष्टि से सुदर्शन की 'दिल्ली का अन्तिम दीपक', 'पत्थरों का सौदागर', 'अठन्नी का चोर', 'कायापलट' और 'प्रेमतरु' शीर्षक कहानियाँ विशेष महत्वपूर्ण हैं। कौशिक की 'यौवन की आंधी', 'माहृ', 'पथभ्रष्ट', 'विधवा', 'अभिन्न', 'स्वाभिमानी' 'नमक-हलाल' और 'ताई' शीर्षक कहानियों में अन्तः प्रेरणाओं का प्रभाव दृष्टव्य है। पात्रों के विभिन्न कार्यों की संगति बैठाने के लिये अन्तः प्रेरणाओं के प्रभाव का उपयोग किया गया है। अव्यक्त प्रेरणाओं का सांकेतिक वर्णन बाह्य व्यवहार का नियामक बन गया है। इन अन्तःप्रेरणाओं के

---

1 'Motives' then are the effective incitements to action that lies behind our acts, behind the show of things."

—Ruch, 'Psychology of Life', P. 122 (Scott Foresman, New-York, 3rd Edition.)

संकेत के बिना व्यक्तित्व के सन्तुलित विश्लेषण का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता। अतएव आदर्श और यथार्थ दोनों की समन्वय-भूमि पर इस परम्परा के कहानीकारों ने इसके विश्लेषण के महत्व को ठीक ढंग से समझ लिया था।

इन कहानियों में व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप के विश्लेषण की दृष्टि से निम्न-लिखित विशेषताएँ मुख्य रूप से द्रष्टव्य हैं :

(१) पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण उत्तरकालीन रचनाओं में अधिक कलात्मक और मनोविज्ञान-सम्मत है।

(२) मूल प्रवृत्तियों को सभी स्तरों की कहानियों में कुशलता के साथ विश्लेषित किया गया है।

(३) स्थायी भावों और भावनाग्रन्थियों का सांकेतिक वर्णन-प्रेमचन्द की प्रौढ़ कालीन रचनाओं में बालकों और स्त्रियों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के प्रसग में प्राप्त होता है।

(४) आदर्श पात्रों के व्यक्तित्व में सकल्पशक्ति की प्रबलता आकर्षक ढंग से निरूपित की गयी है।

(५) पात्रों के कार्यों और व्यवहारों को उनकी मनोवृत्तियों, संस्कारों और भावनाओं के परिप्रेक्ष्य में युक्तिसंगत और मनोविज्ञान-सम्मत रूप प्रदान किया गया है।

इन विशेषताओं को पूर्व प्रकरण में विविध उदाहरणों द्वारा समझने का प्रयास किया गया है। प्रेमचन्द संस्थान के अधिकांश कहानीकार व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप के विश्लेषण में पूर्व युग के कहानीकारों से बहुत आगे रहे हैं।

भावमूलक यथार्थवादी कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व विश्लेषण

भावना तथा कल्पना को प्रधानता देकर भावमूलक यथार्थवादी कहानियों के प्रणेताओं ने प्रेम, त्याग, परोपकार, सौंदर्य और साहस के सात्विक रूप का समन्वय कर अनेक वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों को प्रस्तुत किया। शासक, सैनिक, कृषक, सेवक, भिक्षुक और समाज-हित-चिन्तक के व्यक्तित्व का विश्लेषण इस वर्ग की कहानियों में हुआ है। विभिन्न परिस्थितियों में पात्रों के व्यक्तित्व का यथार्थवादी विश्लेषण इन कहानियों के पात्रों को अधिक सशक्त, प्रभावशाली और विश्वसनीय बनने का सुयोग प्रदान करता है। चरित्र की प्रधानता के कारण पात्रों का महत्व घटना, स्थिति अथवा वातावरण की अपेक्षा विशेष अधिक है। प्रसाद तथा प्रेमचन्द की कहानी-रचना-पद्धति का संयुक्त प्रभाव इन पर विद्यमान है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और चतुरसेन शास्त्री प्रमुख भावमूलक यथार्थवादी कहानीकार हैं। इतिहास, समाज, राजनीति और व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं को कल्पना की सहायता से विकसित कर इन दोनों

प्रख्यात कहानीकारों ने यथार्थवादी पात्रों को प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिये तथ्यपूर्ण स्थितियों का कुशलता से अंकन किया गया है।

(१) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

गुलेरी जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता और भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के सुविख्यात विद्वान थे। अपनी ज्ञान-साधना से समय निकाल कर उन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य को तीन महत्वपूर्ण कहानियों की बहुमूल्य समृद्धि प्रदान की। 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का काँटा' और 'उसने कहा था' शीर्षक तीनो कहानियों में गुलेरी जी की अविस्मरणीय पात्रों की सृजन-शक्ति का परिचय प्राप्त होता है। कालक्रम से 'सुखमय जीवन', इनकी प्रथम कहानी है। 'बुद्धू काँटा'[२] द्वितीय और 'उसने कहा था'[३] अंतिम रचना है। इन तीनों कहानियों मे प्रेम और सयत प्रणय का निर्वाह ऐसे पात्रों द्वारा होता है जो जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रखते हैं। मध्यवर्गीय स्थितियो में ही इन पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। भावना और कर्त्तव्य का समन्वय प्रत्येक पात्र के व्यक्तित्व की उल्लेखनीय विशेषता बन गई है।

'सुखमय जीवन' के प्रमुख पात्र बाबू जयदेवशरण शर्मा बी० ए० हैं। उन्हे लेखक के रूप मे उपस्थित किया गया है। उनकी रचना का नाम 'सुखमय जीवन' है। यह पुस्तक ही उनके जीवन को एक नयी दिशा की ओर मोड़ती है। अपने मित्र के घर जाते समय साइकिल की हवा निकल जाने पर जयदेवशरण एक किशोरी के सहारे उसके घर पर आश्रय प्राप्त करते हैं। गृहस्वामी बाबू गुलाबराय वर्मा और उनकी स्त्री इनसे मिलकर प्रसन्नता का अनुभव करते है तथा इनकी पुस्तक की प्रशसा भी करते हैं। किशोरी (कमला) की माँ को नवयुवक लेखक की अनुभवहीनता के कारण उसकी योग्यता पर सन्देह हो जाता है। स्वभावतः रूप-गुण-सम्पन्ना किशोरी (कमला) के प्रति जयदेव का मन अनुरक्त होता है, और अवसर पाते ही वे अपना प्रेम-निवेदन उसके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। कमला और उसके पिता उनके दुस्साहस की भर्त्सना करते हैं। परन्तु जब ज्ञात होता है कि जयदेवशरण अविवाहित हैं तो

---

१ 'सुखमय जीवन' चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, भारतमित्र सन् १९११, गुलेरी जी की अमर कहानियाँ।

२ 'बुद्धू का काँटा', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गुलेरी जी की अमर कहानियाँ (वक्तव्यभाग के अनुसार सन् १९११ से १९१५ के बीच की)।

३ 'उसने कहा था', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी—'सरस्वती जून १९१५, भाग १६, सं० ६, पृ० ३४१।

परिस्थितियाँ बदल जाती हैं और परिवार के भावी जामाता के रूप मे उनका स्वागत होता है। कहानी का अन्त सुखमय बन जाता है। इस कहानी में पात्र-विशेष की विभिन्न मन:स्थितियों का विश्लेषण सतर्कता के साथ किया गया है।

'बुद्धू का काँटा,' रघुनाथ और भगवन्ती की प्रेम-कथा पर आधारित है। रघुनाथ इन्टरमीडिएट का भावुक छात्र है। उसके पिता कम आयु में उसका विवाह नहीं करना चाहते परन्तु उसकी माता के मन में शीघ्र ही सास बनने की प्रबल लालसा है। परिस्थितियों से प्रभावित होकर रघुनाथ के पिता विवाह के लिये प्रस्तुत हो जाते हैं। परीक्षा देने के बाद रघुनाथ ३० मील का पहाड़ी मार्ग तय करता हुआ घर की ओर चल पड़ता है। उसे टट्टू की सवारी करनी पड़ती है। गर्मी के दिन की यह यात्रा उसे पूर्णरूप से थका देती है। मार्ग मे पानी पीने के लिये वह एक कुएँ पर पहुँचता है। पानी भरने वाली स्त्रियाँ उस पर व्यंग्य और परिहास के बाण छोड़ती हैं। एक चंचल बालिका सबसे अधिक व्यंग्य करती है। उसका रूप, वाग्-वैदग्ध्य और चंचलता रघुनाथ के मन में प्रेम का बीजारोपण कर देते हैं। रघुनाथ घर पहुँच जाता है। एक दिन अकस्मात् वही लड़की रघुनाथ को नदी के किनारे मिल जाती है। दोनों प्रतिस्पर्धा की भावना से प्रेरित होकर एक दूसरे से खिचने लगते हैं। अकस्मात् रघुनाथ नदी में गिर पड़ता है और वह लड़की उसकी रक्षा करती है। फिर दोनों एक-दूसरे से उलझते और मारपीट कर बैठते हैं। लड़की भागने का प्रयास करती है, परन्तु काँटा लग जाने से पकड़ में आ जाती है। यहीं से दोनों के मन में समान रूप से प्रेम की अनुभूति उत्पन्न होती है। परिस्थितियाँ इस प्रकार मोड़ लेती हैं कि दोनो—रघुनाथ और भगवन्ती—परस्पर विवाह-सम्बन्ध द्वारा स्थायी प्रेम-बन्धन में बँध जाते हैं। दोनों प्रमुख पात्रों की विभिन्न भावनाओं, क्रिया-प्रतिक्रियाओं और निगूढ़ प्रणय-वृत्तियों का कहानीकार ने आकर्षक ढंग से विश्लेषण किया है।

'उसने कहा था' गुलेरी जी की सर्वोत्कृष्ट कहानी है। इसमें पात्रों के व्यक्तित्व को अपूर्व सफलता के साथ विश्लेषित किया गया है। उपयुक्त वातावरण तथा स्थितियों की रचना द्वारा पात्रों के मनोभावों और विचारों को सन्तुलन के साथ व्यक्त करने का प्रयास इस कहानी में परिलक्षित होता है। अमृतसर के बम्बूकार्ट मुहल्ले से कहानी का आरम्भ होता है। कहानी का प्रमुख पात्र बालक लहना सिंह अकस्मात ही एक बालिका से दूकान पर मिलता है। वह बालिका से प्रश्न पूछता है कि क्या उसकी कुड़माई (सगाई) हो गयी है। बालिका धत् कह कर भाग जाती है। एक दिन अपनी रेशम का कढ़ा हुआ सालू दिखाकर वही बालिका बताती है कि उसकी कुड़माई हो गयी है। बालक और बालिका के पारस्परिक प्रेम-सम्बन्ध के विकास पर यहीं एक विराम-चिह्न लग जाता है। संयोगवशात् बालक लहना सिंह युवक होकर

उसी कम्पनी का सैनिक बनता है जिसके सूबेदार हजारा सिंह हैं। हजारा सिंह ही उसकी प्रेमिका के—जो अब सरदारनी के नाम से सम्बोधित है—पति हैं। अपने पूर्व-प्रेम की मधुर स्मृति लहनासिंह को त्याग और उत्सर्ग के लिए प्रेरित करती है। सरदारनी उससे वचन लेती है कि वह उसके पति तथा एकमात्र पुत्र बोधासिंह के प्राणों की रक्षा करेगा। लहनासिंह प्रेम की उदात्त भावना से प्रेरित होकर इस कर्त्तव्य-भार को सहर्ष अंगीकार करता है। सूबेदार हजारासिंह, लहना सिंह और बोधा सिंह साथ ही लाम पर जाते हैं। खन्दकों में वर्षा और शीत के प्रकोप से कठिनाई इतनी बढ़ जाती है कि हिलना-डुलना कठिन हो जाता है। जर्मन-सेना की गोलाबारी अनिश्चित रूप से होती ही रहती है। बोधा सिंह बीमार पड़ जाता है। लहना सिंह उसकी ड्यूटी करता, अपने वस्त्र उसको दे देता और निरन्तर अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत बना रहता है। इसी समय जर्मन गुप्तचर 'लपटन साहब' का वेश बना कर प्रवेश करता है और सूबेदार हजारा सिंह को बाहर जाकर मोर्चा संभालने का आदेश दे देता है। लहना सिंह अपने मनोरंजक प्रश्नों के द्वारा उसे पहचान लेता तथा राइफिल से मार गिराता है। गिरते-गिरते जर्मन गुप्तचर लहना सिंह को पिस्तौल की गोली से आहत कर देता है। लहना सिंह अपने आदेश से सूबे-दार को वापस बुलाता है। जर्मन सेना के सैनिकों को सिक्ख सैनिक प्राण-पण से रौंद डालने का प्रयास करते है। सूबेदार के लौटते ही शेष जर्मन सैनिक बन्दी बना लिये जाते हैं। लहना सिंह आग्रहपूर्वक सूबेदार और बोधा सिंह को घायलों को ले जाने वाली गाड़ी से भेज देता है। स्वयं वह खंदक में अर्द्ध चेतन स्थिति में पड़ा हुआ जीवन के विगत दृश्यों को देखने लगता है। सूबेदार को दिया हुआ वचन उसे याद आता है। सूबेदारनी का मार्मिक कथन उसे बार-बार भावावेश की स्थिति में पहुँचा देता है। कहानी के अन्त में युद्ध के मैदान में घावों के कारण लहना सिंह की मृत्यु की करुण सूचना है।

उपर्युक्त तीनों कहानियों में गुलेरी जी ने पात्रों के व्यक्तित्व के परिचालक तत्व के रूप में प्रेम की व्यंजना की है। प्रथम कहानी में पात्रों की मनःस्थिति का सीधा विश्लेषण है। प्रथम साक्षात्कार प्रेम की भावना को जाग्रत करता है। बीच में बाधायें आती हैं परन्तु उससे पात्र-विशेष के व्यक्तित्व में कोई असन्तुलन नहीं आता। विवाह के रूप में अन्तिम परिणति का संकेत है। दूसरी कहानी में पात्रों को संघर्ष और द्वन्द्व में डालने की चेष्टा की गई है। परन्तु कहानी का अन्त प्रथम रचना के समान ही है। पात्रों के व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं कलात्मक निरूपण की दृष्टि से तीसरी कहानी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें न केवल प्रेम के उत्सर्गमय सात्विक रूप की अभिव्यक्ति हुई है, वरन् पात्रों के भाव, कार्य, प्रतिक्रिया और अन्तः

प्रेरणा की संगति भी सफलतापूर्वक बैठायी गयी है। वासना का सहजगति से उदात्त प्रेम का स्वरूप प्राप्त कर व्यक्तित्व की निर्धारक और प्रेरक शक्ति बन जाना इस कहानी की अप्रतिम विशेषता है। कहानी की विभिन्न स्थितियाँ पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करती हैं।

(२) चतुरसेन शास्त्री की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने अपनी सुदीर्घकालीन साधना द्वारा हिन्दी कहानी-साहित्य की स्मरणीय सेवा की है। सन् १९१४ से कहानी-रचना की ओर प्रवृत्त होने वाले शास्त्री जी ने विभिन्न दशकों में अनेक प्रकार की कहानियों का प्रणयन किया है। हिन्दी कहानी के विकास-काल में इनकी ऐतिहासिक कहानियाँ प्रकाश में आईं। कुछ उत्कृष्ट सामाजिक कहानियों की रचना द्वारा इन्होंने अपनी रुचि की व्यापकता का परिचय भी प्रस्तुत किया। ऐतिहासिक वातावरण में तत्कालीन पात्रों के व्यक्तित्व को शास्त्री जी ने कुशलता के साथ निरूपित किया। यद्यपि घटना और वातावरण की ओर इनका ध्यान विशेष आकृष्ट था और उसके अंकन में ये विशेष रुचि दिखाते रहे, तथापि पात्रों के व्यक्तित्व को व्यंजित होने की पूरी सुविधा उनकी कहानियों में प्राप्त होती रही। विकास-काल की इनकी मुख्य प्रकाशित रचनाएँ हैं—'अक्षत', 'आवारागर्द', 'स्त्रियो का ओज', 'सिंहगढ़ विजय' और 'वीरगाथा।' इन कहानी-संकलनों में विविध प्रकार की रचनाएँ संग्रहीत हैं। विविध विषय, पात्रों की स्थिति, कहानी के विस्तार और रचना शैली की दृष्टि से विद्यमान है। राजपूत जाति के पुरुषों एवं रमणियों के व्यक्तित्व का अंकन सुरुचिपूर्णता के साथ किया गया है। कल्पना और भावों की प्रबलता ने इतिहास-विश्रुत घटनाओं के अंक से पात्रों के चयन को कलात्मक स्वरूप प्रदान किया है। कहानीकार ने कार्य, भाव, विचार और व्यवहार का सन्तुलनयुक्त समन्वय कर ओजपूर्ण भाषा में वीर पुरुषों के व्यक्तित्व का निरूपण किया है। नारी-पात्रों के व्यक्तित्व में साहस, धैर्य, उत्सर्ग और सच्चरित्रता की विशेषताएँ मुख्य रूप में समन्वित की गयी है।

इस काल में रचित शास्त्री जी की जिन कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का कलापूर्ण विश्लेषण हुआ है उनमें निम्नलिखित उल्लेख्य हैं:

'रूठी रानी', 'लोहे का भय', 'अस्मत पर हाथ', 'विधवा सिंहनी', 'दुर्गाधिकारिणी', 'क्षत्रिय पुत्री', 'भस्मराशि', 'वीरवधू', 'हाड़ी-रानी', 'पन्ना धाय', 'खूनी', 'लालारुख', 'दे खुदा की राह पर', 'सिंहगढ़ विजय तथा,' 'हलाहल से ब्याह'।

इन कहानियों में पुरुष और नारी के मनोभावों तथा प्रतिक्रियाओं का आकर्षक वर्णन हुआ है। यद्यपि अधिकांश पात्र ऐतिहासिक हैं तथापि लेखक की कल्पना

तथा भावना के धरातल पर वे पाठक-वर्ग की संवेदना के अधिकारी बन जाते हैं। 'खूनी' जैसी कतिपय उत्कृष्ट सामाजिक कहानियों में पश्चाताप और मानसिक संघर्ष का उत्तम ढंग से विश्लेषण किया गया है। प्रेम तथा वीरता ही शास्त्री जी की कहानियों के वे प्रमुख तत्व हैं जिनके चतुर्दिक पात्रों के व्यक्तित्व गतिशील रहते हैं।

भावमूलक यथार्थवादी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेपण का स्वरूप

व्यक्तित्व के बाह्यरूप का विश्लेषण : पात्रों के व्यक्तित्व को कहानी के शीर्षक द्वारा संकेतित करने की दिशा में इस वर्ग के कहानीकारों का कोई आग्रह नहीं है। ऐतिहासिक कहानियों के शीर्षक से पात्रों के कार्य, प्रभाव, व्यवहार एवं चरित्र का कुछ न कुछ संकेत अवश्य मिलता है। सामाजिक कहानियों के शीर्षक और पात्रों के नाम स्वतत्र रूप से रखे गये हैं। 'उसने कहा था', 'बुद्धू का काँटा' तथा 'सुखमय जीवन' शीर्षक कहानियों में पात्रों के नाम से उनके व्यक्तित्व को सम्बद्ध करने का आग्रह नहीं है। परिस्थितियों के कलात्मक-अंकन द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को कुशलतापूर्वक विश्लेषित किया गया है। प्रेम तथा वीरता के भावों से सम्बन्धित स्थितियों का सुरुचिपूर्ण अंकन पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व के लिये कितना उपयुक्त सिद्ध हुआ है इसका प्रमाण 'उसने कहा था', 'खूनी', 'हलाहल से ब्याह', 'अस्मत पर हाथ' और 'पन्ना धाय' शीर्षक कहानियों में प्राप्त होता है।

संवाद-योजना के कौशल ने भी पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण में महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है। उपर्युक्त दोनों कहानीकारों की रचनाओं में अधिकांश संवाद पात्रों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हैं। उनके कार्य, व्यवहार, चिन्तन एवं प्रभाव को गतिशीलता देने वाले संवाद प्रायः सभी कहानियों में प्राप्त होते हैं। 'हलाहल से ब्याह' शीर्षक कहानी में प्राणोत्सर्ग के लिये प्रस्तुत राजपूत-युवती के व्यक्तित्व की ओर निम्नलिखित सम्वाद एक मार्मिक संकेत प्रस्तुत करता है :

'चाचा जी कहो क्या बात है।'

'बेटी तुझे मरना होगा।'

'क्यों चाचा जी ?'

'देश और राज्य की रक्षा के लिए, हमारे संकट तो तू जानती ही है। जयपुर और जोधपुर नरेश दोनों ही तुझे ब्याहना चाहते हैं। सहस्रों मनुष्यों को रक्तपात से बचाने का यही उपाय है।'

'तो यह तो बड़ी अच्छी युक्ति है। चाचा जी मैं तैयार हूँ।'

'हाय बेटी मैं विष लेकर आया हूँ।'

'मुझे दीजिए चाचा जी, मेरा अहोभाग्य जो मेरे बलिदान से राज्य की विपत्ति टले।'[1]

पात्रों के बाह्य रूप, कार्य प्रतिक्रिया और भावों की अभिव्यक्ति के ढंग का वर्णन कर इस वर्ग के कथाकारों ने उनके व्यक्तित्व वाह्य स्वरूप का परिचय दिया है। यद्यपि वर्णनात्मकता की प्रवृत्ति प्रायः सभी कहानियों में लक्षित होती है, तथापि उसने सीमातिक्रमण कर कहानीकार को वक्ता और व्याख्याता नहीं बना दिया है। कार्य व्यापार द्वारा पात्र के व्यक्तित्व में निहित रहस्यमय मनोभाव के विकास को सहज स्वाभाविक रूप निम्नलिखित अंश में दिया गया है :

'रघुनाथ ने मुख दूसरी ओर कर लिया। उसने भी वैसा ही किया। रघुनाथ ने दाहिना घुटना उठा कर अपना आसन बदला। वहाँ भी वैसा ही हुआ। रघुनाथ बाईं हथेली धरती पर टेक कर अंगड़ाई ली, लड़की ने भी वही मुद्रा की। ये सब प्रयोग रघुनाथ ने यह निश्चय करने के लिये ही किये थे कि यह लड़की क्या वास्तव में मेरा मखौल कर रही है। उसने हलका सा खंखारा, रघुनाथ ने उतना ही खंखारना उधर से सुना। अब संदेह नहीं रह गया।'[2]

ऐतिहासिक कहानियों में पात्रों की आकृति और वेशभूषा के वर्णन की ओर कहानीकार श्री चतुरसेन शास्त्री की रुचि परिष्कृत और संयत है। सामाजिक कहानियों में आकार-प्रकार तथा वेश आदि के वर्णन का कोई विशेष आग्रह नहीं है। कहीं-कहीं कुछ संकेत मात्र दे दिये गये हैं। भाव एवं व्यवहारगत वैशिष्ट्य को ही पात्रों के व्यक्तित्व के मुख्य तत्वों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण : पात्रों के व्यक्तित्व के स्वरूप का विश्लेषण उदात्त एवं परिष्कृत मानवीय वृत्तियों की व्यंजना द्वारा करने का प्रयास भावमूलक यथार्थवादी कहानियों में हुआ है। साहस, त्याग, देश-प्रेम, संयत एवं उत्सर्गमय प्रेम तथा सत्यनिष्ठ स्वाभिमान को प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में ग्रहण किया गया है। संघर्ष, परीक्षा, विपत्ति और अन्तर्द्वन्द्व की विभिन्न स्थितियाँ पात्रों के व्यक्तित्व के कलात्मक अंकन मार्ग प्रशस्त करती हैं। प्रायः सभी पात्रों के जीवन में प्रेम मर्यादित तत्व के रूप प्रयुक्त किया गया है। स्थितियों एवं घटनाओं के सहज विकास ने व्यक्तित्व का स्वयं ही विश्लेषण कर दिया है। वहाँ पात्र को बोलने की आवश्यकता ही नहीं

---

१ 'हलाहल से ब्याह (स्त्रियों का ओज), पृ० १०८ (गौतम बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली), सन् १९३६।

२ 'बुद्धू का काँटा' (गुलेरी जी की अमर कहानियाँ), पृ० ३५।

रह गयी है। 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी के महत्व का विवेचन करते हुए उसमें वर्णित मानवीय वृत्तियों को प्रत्यक्ष करने वाली स्थितियाँ तथा घटनाओं के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा था "उसने कहा था 'शीर्षक कहानी में गुलेरी जी ने पक्के यथार्थवाद के बीच, सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त निपुणता के साथ सपुटित किया गया है।...... घटना के भीतर से प्रेम का स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा है..... केवल झाँक रहा है, निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं है। सुरुचि के सुकुमार से सुकुमार स्वरूप पर कहीं आघात नहीं पहुँचता। इसकी घटनाएं बोल रही है। पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं।"[1]

पात्रों के अन्तर के सौन्दर्य एवं परिष्कृत भावों का विश्लेषण अन्तर्द्वन्द्व एवं मानस-मथन के सहज विकसित रूप द्वारा भी किया गया है। उपर्युक्त अवसरों पर पात्रों के भाव-व्यंजक कथन उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता का संकेत दे जाते हैं। एक दो वाक्य ही कभी-कभी वैमनस्य, चिन्ता एवं भेद की ऊँची भित्ति को गिरा देते है। गुलेरी जी की कहानी मे यह वाक्य कितना भावव्यंजक है:

"मेरा कसूर......मेरा गवंरपन.......मैं उजड्ड......मेरा अपराध मेरा पाप मैंने क्या कह डाला.........आ.........“घिग्घी बंध चली। उसका मुंह बन्द करने का एक ही उपाय था। रघुनाथ ने वही किया।"[2]

रघुनाथ और भगवन्ती का गूढ़ प्रेम अपनी पूर्णता को पहुँच कर यथार्थ मे परिवर्तित हो जाता है।

पात्रों की अन्तः प्रेरणाओं को सांकेतिक रूप में व्यक्त कर इस वर्ग के कहानीकारों ने उनके कार्य एवं विचार में औचित्य तथा विश्वसनीयता की विशेषतायें प्रस्तुत कर दी हैं। देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर प्रेम का व्यापक स्वरूप विभिन्न वर्गों के पात्रों को एक दूसरे के निकट आने का अवसर प्रदान करता है। गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' में यह विशेषता अधिक स्पष्ट है। समाज तथा नीति की मर्यादा का उल्लंघन इन कहानियों के पात्रों ने नहीं किया है। अतएव मूल प्रवृत्तियों, आवेगों एवं भावनाग्रन्थियों के विश्लेषण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित करने का प्रयास इनमें नहीं है। प्रत्येक कहानी को चरम परिणति में आदर्श का समन्वय हुआ है। यथार्थवादी वातावरण होते हुए भी सामाजिक मर्यादाओं तथा आदर्शो के मध्य ही पात्रों के व्यक्तित्व को गतिशीलता दी गयी है। पात्रोचित भाषा भी उनके व्यक्तिगत संस्कार तथा मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति में सहायता प्रदान करती है।

---

१ आ० रामचन्द्र शुक्ल, "हिन्दी साहित्य का इतिहास", पृ० ४८१।

२ 'बुद्धू का काँटा', (गुलेरी जी की अमर कहानियाँ) पृ० ४६।

यथार्थवादी कहानियों में व्यक्तित्व विश्लेषण

हिन्दी कहानी साहित्य के विकास-काल में सर्वश्री भगवती प्रसाद वाजपेयी तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने यथार्थवादी कहानियों की रचना द्वारा एक स्वतंत्र वर्ग का सृजन कर दिया। इन कहानियों में यथार्थ के अंकन तक ही कहानीकार का कर्त्तव्य सीमित माना गया है। नैतिकता, आदर्श, समाज-हित अथवा मर्यादा का बन्धन इनमें कहीं भी दृष्टिगत नहीं होता। कहानीकार का उद्देश्य वस्तुतथ्य को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना है। प्रेमचन्द संस्थान के कहानीकारों ने आदर्श की कभी उपेक्षा न की। यथार्थवादी दृष्टिकोण रखते हुए भी प्रेमचन्द और उनकी रचना-पद्धति का अनुसरण करने वाले कथाकारों ने आदर्श को यदि लक्ष्य न माना तो उसका तिरस्कार भी नहीं किया। यथार्थवादी कहानियों में पात्रों का सहज, स्वाभाविक एवं मनोविज्ञान-सम्मत व्यक्तित्व ही प्रकाश में आया है। आदर्श के सम्बल को भार समझ कर उसे फेंक दिया गया है। समाज की प्रत्यक्ष समस्याओं के चित्रण को महत्व देकर सम्बन्धित पात्रों के व्यक्ति का विश्लेषण विविध रूपों में किया गया है। प्रेम, साहस, उदारता और निष्ठा का वर्णन कर व्यक्तित्व के निरूपण का प्रयास इन कहानियों में भी है। परन्तु आदर्शवादिता का स्थान अब यथार्थवादिता ने प्राप्त कर लिया है। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा के शब्दों में

'यथार्थवादी परम्परा के कहानीकारों की रचनाओं में समाज की प्रत्यक्ष समस्याओं का चित्रण मिलता है। यथा विधवा विवाह, अछूतोद्धार, वेश्याओं का सुधार, नवयुवक तथा नवयुवतियों के अनियंत्रित प्रेम, शोषित वर्ग का असन्तोष तथा विद्रोह की भावना आदि। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों में भी पीड़ित मानवता के चीत्कार का प्रदर्शन हुआ है, उनमें भी ह्रासोन्मुख मध्यवर्गीय समाज की समस्याएं सामने आई है। उनमें भी मानव-वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, परन्तु यथार्थवादी कहानियों में दृष्टिकोण का भेद हो गया है अब कहानीकार अपने व्यक्तित्व को बहुत ऊपर रखता है तथा आदर्श प्रदर्शन से अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखता।'[1]

(१) श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

अपनी बहुसंख्यक कहानियों द्वारा वाजपेयी जी ने समाज के अनेक रूपों का कलापूर्ण चित्रण किया है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण उन्होंने शुद्ध यथार्थवादी दृष्टिकोण से किया है। उनकी कहानियों में प्रेम, सौन्दर्य, वासना, स्वार्थ और क्रिया-प्रतिक्रिया का आकर्षक और परिमार्जित शैली में अंकन हुआ है। पात्रों के व्यक्तित्व की गहराई में उतर कर उनके मनोभावों को समझने की चेष्टा कहानीकार श्री वाज-

---

१ डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन, पृ० २६२।

पेयी ने की है। सन् १९२२ में इन्होंने कहानी-रचना का कार्य आरम्भ किया और अनेक वर्षों तक कहानी-साहित्य के भाण्डार को अपनी रचनाओं से परिपूर्ण करते रहे हैं। पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण की कुशलता का उदाहरण जिन मुख्य कहानियों में प्राप्त होता है, वे अग्रलिखित हैं :

'अपमान का भाग्य', 'झाँकी', 'परीक्षा', 'मिठाईवाला', 'थोड़ी सी पी ली', 'अपराधी के पत्र', 'वंशीवादक', 'हत्यारा', 'टिकुली', 'आत्मघात' 'उस क्षण का सुख', 'रहस्य की बात', 'संकल्पों के बीच में', 'उर्वशी' 'घटनाचक्र', 'शैतान', 'नर्त्तकी', 'छोटे बाबू', 'खाली बोतल', 'रजनी', 'स्वयंवर', 'विश्व प्रतिबिम्ब', 'झरना', 'लिली', 'याद' 'अन्धेरी रात', 'ट्रेन पर', 'केवाड़ी', 'इन्द्रजाल', 'मैना' और 'हारजीत'।

इनमें अधिकांश सामाजिक कहानियाँ हैं। समाज की समस्याओं को ज्यों का त्यों उपस्थित करने वाले पात्र इनमें अपने यथार्थ रूप में उतरे हैं। 'अपराधी के पत्र' शीर्षक कहानी में प्रेमी-प्रेमिका के व्यक्तित्व का कलापूर्ण अंकन किया गया है। 'झाँकी' में प्रेमांकुर और उर्मिला के प्रेमभाव के सहारे उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। सामाजिक व्यवधानों का यथातथ्य वर्णन कर पात्रों के प्रति पाठक-वर्ग की सहानुभूति को जाग्रत किया गया है। 'थोड़ी सी पी ली' कहानी में वासनाग्रस्त व्यक्ति के समस्या प्रधान व्यक्तित्व का विश्लेषण है। 'कालूराम का बतासा' कैसी विधवा की ओर वासना के मोह में बढ़ना ही उसके पतन का कारण बन जाता है। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से 'मिठाई वाला' शीर्षक कहानी विशेष महत्वपूर्ण है। बालकों के मन को अपने आकर्षक स्वर से मुग्ध करने वाला 'मिठाई वाला' खिलौने बेचता है और कुछ समय बाद वंशी बेचता है। उसका उद्देश्य बालकों को प्रसन्न करना है न कि धनोपार्जन करना। उसके मन में निहित वात्सल्य इस मार्ग से व्यक्त होता रहता है। उसके अन्तर में सन्तान के अभाव का गम्भीर विषाद जिस तीव्र व्यथा को उत्पन्न करता रहता है उसका प्रशमन, अन्य बालकों को देख कर उन्हें प्रसन्न कर तथा उनके हर्ष में भावविभोर होकर करने का प्रयास मिठाई वाला के व्यक्तित्व की बाह्य विशेषताएँ हैं, जिनका सीधा सम्बन्ध उसकी मन:स्थिति से है।

समाजसुधार की भावना से प्रेरित होकर वाजपेयी जी ने 'हत्यारा' शीर्षक कहानी की रचना की है। विपिन और मैना के व्यक्तित्व का विश्लेषण विभिन्न स्थितियों के मध्य किया गया है। विपिन समाज के विरोध की चिन्ता न कर मैना से विवाह कर लेता है। विधवा नारी के प्रति समाज के दुर्व्यवहार का चित्र प्रस्तुत करते हुए कहानीकार ने साहसी पुरुष के व्यक्तित्व को कलात्मक ढंग से विश्लेषित किया है। 'उस क्षण का सुख' भी समाज-सुधार की ओर मार्मिक संकेत प्रस्तुत करने वाली ऐसी कहानी है, जिसके अंक में वेश्या के व्यक्तित्व का उदात्त रूप व्यंजित हुआ

है। 'शकुन्तला' नारीत्व के गुण से विभूषिता ऐसी वेश्या है जो सुरेन्द्र नामक साहसी और विनयशील व्यक्ति के प्रति निःस्वार्थ भाव से आत्मसमर्पण करने को प्रस्तुत है। परन्तु सुरेन्द्र का अन्तर्द्वन्द्व उसे समाज के समक्ष टिकने नहीं देता। इन दोनों पात्रों की भावनाओं और मानसिक-संघर्ष की विभिन्न स्थितियों का कहानीकार ने कुशलता के साथ विश्लेषण किया है। 'उर्वशी' कहानी में 'चन्दा' के व्यक्तित्व को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया है। अपने पति की वैभव-सम्पन्नता से उसका हृदय संन्तुष्ट नहीं होता। पति के प्रेम को पूर्ण रूप में पाने की आकुलता उसके मन में निरन्तर बनी रहती है। बिहारी चन्दा की उपेक्षा कर उर्वशी की ओर वासना पूर्ति के उद्देश्य से आकृष्ट होता है। उसके व्यक्तित्व मे भावना-ग्रन्थियाँ विशेष सक्रिय हैं। 'अन्धेरी रात' और 'घटनाचक्र' वेश्या-जीवन पर आधारित कहानियाँ है। इनमे वेश्याओं के त्यागपूर्ण चरित्र का विश्लेषण किया गया है। कजली का व्यक्तित्व तो उसकी अनुपम साधना के प्रकाश में उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर होता है।

'त्याग' शीर्षक कहानी में प्रेम की महत्ता को व्यक्त करते हुये 'शिवकुमार' 'अलकनन्दा' और 'विमला' के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। विमला के त्याग से कहानी का सम्वेद्य और प्रभावशाली स्वरूप प्राप्त करता है। अकलनन्दा के मार्ग को निष्कटक और प्रशस्त बना कर स्वयं ही शिवकुमार से पृथक् होने का कार्य विमला के व्यक्तित्व को विमल स्वरूप प्रदान करता है। 'ट्रेन पर' शीर्षक कहानी में सुनन्दा के त्याग को अंकित कर उसके व्यक्तित्व की महत्ता व्यक्त की गयी है। 'इन्द्रजाल' एक भिन्न प्रकार की सामाजिक कहानी है। विधवा जीवन की स्थितियों का विश्लेषण कर 'राधा' की वासनात्मक तृष्णा का सतर्कता से अंकन किया गया है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इनकी कहानियों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इनके द्वारा प्रस्तुत रचनाओ मे मध्यवर्गीय पात्रो के व्यक्तित्व का निरूपण एव विश्लेषण सबसे अधिक है। यथार्थवादी आधार भूमि पर इन पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। असामान्य एवं समस्याप्रधान पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित कर कहानीकार ने समाज के ज्वलन्त प्रश्नो को उनके माध्यम से उपस्थित किया है। कुछ विशेष पात्रों के नाम प्रस्तुत कर डा० ब्रह्मदत्त शर्मा ने इस तथ्य का समर्थन इस प्रकार किया है :

इनके अनेक पात्रों में व्यक्तित्व की प्रधानता है। इन्होंने नरेन्द्र जैसे चरित्र की कल्पना है जो सदा स्त्रियों का विरोध करता है। इनकी कहानियों में प्रेमाकुर और उर्मिला जैसे प्रेमी है, जो समाज की चिन्ता न करके अपना विवाह स्वयं करने के पक्ष में हैं, और अलकनन्दा तथा शिवकुमार जैसे पति-पत्नी हैं। कालू फायरमैन, मिठाई वाला, रत्नमाला, दिवाकर, मैना, शकुन्तला, टिकुली, चन्दा, उर्वशी, केशव, सतीश, शिवराम

जैसे पात्रों में व्यक्तित्व की प्रधानता है किसी वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं'।[1]

व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता एवं गतिशीलता के लक्षणों का प्रयोग इन पात्रों के सृजन में अनिवार्य रूप से किया गया है। अतएव उत्कृष्ट व्यक्तित्व-विश्लेषण का संकेत वाजपेयी जी की अधिकांश कहानियों में प्राप्त होता है।

(२) श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

निराला जी ने जीवन के यथार्थ चित्रों को कहानी के माध्यम से व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। मतवाला नामक पत्र में इनकी प्रारम्भिक कहानियाँ समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं। पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने वाली प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित हैं :

'पद्मा और लिली', 'ज्योतिर्मयी', 'कमला', 'प्रेमिका परिचय', 'परिवर्त्तन', 'सुकुल की बीबी', 'गजानन्द शास्त्रिणी', 'कला की रूपरेखा', 'क्या देखा' और 'चतुरी चमार'।

इनकी कहानियों के संकलन 'लिली'[2], 'सुकुल की बीवी'[3], 'सखी'[4] और 'चतुरी चमार'[5] हैं। इन संकलनों की रचनाएँ समाज के विविध पक्षों को प्रस्तुत करती हैं। विधवा-विवाह की समस्या को अंकित कर कहानीकार ने विधवा की मनोदशा का विश्लेषण भी किया है। अछूत कहे जाने वाले निम्नवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व को भी 'चतुरी चमार' जैसी उत्कृष्ट कहानियों में विश्लेषित किया गया है। वेश्याओं के दुर्दशाग्रस्त जीवन का यथातथ्य निरूपण करते हुए निराला जी ने उनके उपेक्षित व्यक्तित्व की गरिमा को बढ़ाया है। प्रेम के संयत और मर्यादित स्वरूप का चित्रण भी उन्होंने उतनी ही कुशलता से किया है जितनी कुशलता से अनियंत्रित और असमर्यादित वासनाओं का।

समाज की यथार्थ स्थिति के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के उद्देश्य से निराला जी ने देखे-सुने और समझे हुए दृश्यों की अवतारणा की। नगय

---

१ डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, 'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन', पृ० २५५

२ पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'लिली', गंगा ग्रन्थागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ।

३ ,, ,, ,, 'सुकुल की बीवी', भारती-भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग।

४ ,, ,, 'सखी', 'सरस्वती पुस्तक भण्डार, लखनऊ।

५ ,, ,, 'चतुरी चमार', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग।

और ग्रामीण क्षेत्र से कहानियों के पात्र समान अभिरुचि के साथ ग्रहण किये गये हैं। 'पद्मा और लिली' शीर्षक कहानी में पद्मा और राजेन्द्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है। परन्तु कहानी अपने लक्ष्य से सुसम्बद्ध नही हो पायी है। समस्या के समाधान तक पहुँचने का अवसर पात्रों को प्राप्त नहीं हो सका है। सामाजिक-रूढ़ियों का चित्रण करते हुए नारी पात्र के व्यक्तित्व का यथातथ्य अंकन 'सुकुल की बीबी' शीर्षक कहानी मे किया गया है। परिस्थितियों का आघात उसकी पथभ्रष्टता का कारण बन जाता है। 'श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी' में समाज-सेवी ढोंगियों के चरित्र का रहस्योद्घाटन किया गया है। देश-सेवा तथा समाज-सेवा का पाखण्ड कर स्वार्थ-पोषण करने वाले पात्रों के व्यक्तित्व का तथ्यपूर्ण विश्लेषण किया गया है। 'सुपर्णा' के चरित्र तथा आचरण का परिवर्त्तन इस कहानी की विचारणीय विशेषता है। 'प्रेमिका का परिचय' परिहासात्मक शैली की ऐसी कहानी है जो वासना-ग्रस्त छात्र के व्यक्तित्व का तात्विक-विश्लेषण प्रस्तुत करती है। 'कमला' और 'श्यामा' भी पात्र-प्रधान कहानियाँ है। इनमें पात्रों के व्यक्तित्व को महत्व देकर उसे कथावस्तु का आधार बना दिया गया है।

निराला जी ने पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए स्वयं ही उनके गुण-अवगुणों का परिचय दे दिया है। कही वर्णनात्मक-विस्तार के आग्रह के साथ उन्होने पात्रों के स्वरूप, आकार-प्रकार, क्रिया-प्रतिक्रिया का विवरण प्रस्तुत कर दिया है, कहीं सांकेतिक रूप से पात्रों के व्यक्तित्व का निर्देश मात्र कर वे आगे बढ़ गये है। घटनाओं के द्वारा ही पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताएँ प्रकाश मे आती है। कहानीकार ने असामान्य स्थितियो की अपेक्षा सहज, अनुभूत वस्तु-स्थिति को चित्रित कर उसके महत्व को मान्यता दी है। अतएव उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज को ठीक-ठीक प्रतिबिम्बित करने वाले पात्रों को ही स्थान प्राप्त हुआ है। यद्यपि इन पात्रों को असाधारण स्थितियों में पड़ कर अन्तर्द्वन्द्व के गहन-गम्भीर क्षेत्र में जाने की आवश्यकता बहुत कम हुई है तथापि उनके भावो, विचारों और प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कहानीकार ने वर्णन द्वारा उपयुक्त स्थलों पर कर दिया है। अधिकांश कहानियो के पात्र समस्या-विशेष के अंतिम समाधान तक पहुँचने की चेष्टा करते हैं। समाज के अस्वच्छ और अस्वस्थ रूप को व्यक्त करने वाले पात्रों की ही इन कहानियों मे अधिकता है। उनके व्यक्तित्व-विश्लेषण में प्रत्यक्ष वस्तु-स्थिति-अंकन को सबसे अधिक महत्व प्रदान किया गया है।

यथार्थवादी कहानियो में व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप

व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का विश्लेषण :समाज और जीवन के यथातथ्य रूप को प्रस्तुत करते हुए यथार्थ वादी कहानीकारो ने पात्रों को आदर्श तथा कल्पना से

मुक्त कर उनकी प्रतिष्ठा ठोस वास्तविकता के धरातल पर की। उनके बाह्य स्वरूप तथा वेशभूषा का आवश्यकतानुसार उन्होंने वर्णन कर दिया। वैसे नख-शिख वर्णन की प्रवृति इन कहानीकारों में नहीं है। कहानी के संवेद्य को तीव्र बनाने के लिए कहीं-कहीं बाह्य वर्णन को विस्तृत रूप दे दिया गया है। पात्रों की मनोवृत्तियों तथा भावनाओं के विश्लेषण की ओर ही इन कहानीकारों ने विशेष रूप से ध्यान दिया है। वाजपेयी जी संकेत स्थिति-अंकन अथवा संवाद द्वारा पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं को बताते हुए प्रसंगवत उनके बाह्य स्वरूप का उल्लेख भी कर देते हैं। निराला जी पात्रों के बाह्य स्वरूप का चित्रोपम वर्णन भी प्रस्तुत करते हैं। अधिकांश कहानियों में बाह्य तथा आन्तरिक स्वरूप को एक साथ विश्लेषित कर दिया है। विमला का परिचय प्रस्तुत करते हुए वाजपेयी जी लिखते हैं :

विमला अभी नवयुवती है। उसका रूप लावण्यतारंग मलिका की भाँति लहराया करता है। वह जिसे प्यार करती है उसके पीछे नहीं पड़ती वरन् उसी को अपने पीछे दौड़ाया करती है।[1]

पात्रों के नामकरण द्वारा उनके व्यक्तित्व को संकेतिक करने का कोई आग्रह इन कहानियों में विद्यमान नहीं है। अधिकांश पात्रों के नाम सहज गति से कथावस्तु में समाविष्ट हो गये है। श्री वाजपेयी जी की कहानियों के अधिकांश शीर्षक अवश्य ही प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं की ओर संकेत प्रस्तुत करते हैं। 'इन्द्रजाल', 'मैना', 'टिकुली', 'खाली बोतल', 'रजनी', 'उर्वशी', 'अपमान का भाग्य' और 'वंशीवादन' शीर्षक पात्रों के कार्य, उद्देश्य, परिणाम तथा स्वरूप का संकेत दे देते हैं। विभिन्न स्थितियों के अंकन द्वारा पात्रों के कार्य तथा विचार का सम्बन्ध-सूत्र कुशलता से निर्मित किया गया हैं। तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का यथातथ्य और आवश्यक विश्लेषण ही इन कहानियों में उपलब्ध होता है।

व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण : यथार्थवादी कहानियों के अधिकांश पात्र मध्यवर्गीय है। निराला जी ने 'चतुरी चमार' जैसे उपेक्षित वर्ग के पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण भी किया है। परन्तु संख्या में अधिक पात्र सामान्य मध्य-वर्ग के ही हैं। उनमें समाज के प्रति आक्रोश और उसकी रूढ़ियों के प्रति विद्रोह के मनोभाव विद्यमान हैं। अछूतोद्धार, विधवा विवाह, वेश्या-जीवन, जातिगत-सम्प्रदायगत संकीर्ण मनोवृत्तियों से सम्बद्ध समस्याओं को लेकर ये पात्र कहानी के दृश्यपट पर उतरते हैं। उनके मन की स्थिति का विश्लेषण कहानीकारों ने विभिन्न विधियों से किया है।

---

१. ले० भगवती प्रसाद वाजपेयी, शीर्षक 'त्याग,'—'हिलोर' के पृ० ५५ पर (गंगा ग्रन्थागार, ३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ)।

निराला जी अधिकांश पात्रों के अन्तर की समस्त वेदना, अनुभूति तथा वासना को वर्णन द्वारा व्यक्त कर देते है । वाजपेयी जी ने संवादो द्वारा पात्रों को एक दूसरे के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने तथा उनकी गतिविधि को पहचानने का अवसर दिया है। कही-कही सांकेतिक उल्लेख द्वारा वे पात्रों की मन:स्थिति का कलात्मक सूक्ष्म विश्लेषण भी कर देते है। 'विमला', और 'टिकुली' के व्यक्तित्व-विश्लेषण में यह विश्लेषण दृष्टव्य है । पात्रो के मन की स्थिति को विश्लेषित करने के लिए संवादों की सार्थक तथा साभिप्राय योजना वाजपेयी जी की कहानियों में हुई है । शंकाग्रस्त पुरुष एवं ईर्ष्या तथा उत्तरदायित्वहीनता से कुण्ठित नारी के व्यक्तित्व का सांकेतिक विश्लेषण निम्नलिखित संवाद में किया गया है :

पूछ बैठे ---कहा गई नर्मदा ?

जवाब मिला—अपनी सखी मालविका के साथ सिनेमा देखने गई है । 'अच्छा' कहते-कहते बिस्मय विमूढ़ हो उठे। किशोरी लाल जी फिर उत्तेजनापूर्वक बोले—और तुमने मना नहीं किया ?

मैं मना क्यो करूँ? बी० ए० में पढने वाली लड़की—उमर मे मुझसे सिर्फ एक साल छोटी—मेरा कहना वह मानने ही क्यो लगी ?

"हूँ, तो अब इस घर की रही सही मर्यादा पर भी आंच आने को है "।[1]

प्रेम के विभिन्न रूपों का विश्लेषण करते हुए यथार्थवादी कहानीकारों ने वासना ग्रस्त पुरुषों तथा काम-भावना से प्रपीड़िता नारी पात्रों के मन तक पहुँचने की चेष्टा भी की है । 'बिहारी' और 'राधा' के व्यक्तित्व को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। इनकी उग्र काम-भावना इनके व्यक्तित्व की कुण्ठाओं तथा चरित्र के पतन का कारण बन जाती है। निराशा और क्षोभ का विश्लेषण करते हुये 'खाली बोतल' में कैलाश के व्यक्तित्व का बड़ा ही मार्मिक अंकन किया गया है। कहीं-कहीं लम्बे संवादों का सहारा लेकर कहानीकार पात्रो के मन की प्रच्छन्न वृत्ति तक चक्कर काट कर पहुँचता है। निम्नलिखित संवाद उदाहरण के रूप में दृष्टव्य है :

कैलाश ने कहा—"सच बताइयेगा, इस समय आप क्या सोच रही है ?"

"पूछ कर क्या कीजिएगा ?"

"यों ही।"

१: भगवती प्रसाद वाजपेयी, 'हिलोरें', (गंगा ग्रन्थागार, ३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ), पृ० ५१ ।

"तब मैं उसे न बतलाऊँगी।"

"और मैं बिना जाने आपको सोने न दूँगा।"

"इतनी जबरदस्ती।"

"फिर करूँ क्या, लाचार जो हो गया हूँ।"

"ऐसी क्या बात है ?"

"है।"

"आखिर मैं भी सुनूँ।"

"अपने दिल से पूछिए।"

"घंटे भर बाद।"[1]

इस विस्तृत संवाद के द्वारा कहानीकार जिस मन:स्थिति तक पहुँचता है, उसे सीमित शब्दों में भी व्यक्त किया जा सकता था। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के विश्लेषण द्वारा उनके व्यक्तित्व की ओर संकेत देने का प्रयास वाजपेयी जी की कुछ कहानियों में हुआ है। 'खाली बोतल', 'शैतान' तथा 'आत्मघात' शीर्षक कहानियों को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। निराला जी की कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप के विश्लेषण की कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है। पात्रों के व्यक्तित्व के परिचालक तत्व के रूप में अन्त:प्रेरणाओं को यथार्थवादी कहानियों में विशेष महत्व दिया गया है। दमित वासनाएँ और कुण्ठाएँ पात्रों के व्यक्तित्व को विभिन्न दिशाओं में प्रेरित करती हैं। मूल प्रवृत्तियों तथा संवेगों से प्रेरित क्रियाओं की संगति बैठा कर पात्रों के व्यक्तित्व को सहज विश्वसनीय रूप में विश्लेषित किया गया है। निराला जी की अपेक्षा वाजपेयी जी का विश्लेषण अधिक मनोवैज्ञानिक तथा कलात्मक है।

---

१. ले० भगवती प्रसाद वाजपेयी—'खाली बोतल' (गौतम बुक डिपो, देहली) पृ० ५३

७

तृतीय युग-उत्कर्ष काल (सन् १९३६ से १९४७ तक)

व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप

प्रमुख कहानीकारों की रचनाओं के आधार पर

प्रेमचन्द और प्रसाद की कला का प्रभाव सन् १९३६ तक हिन्दी कहानी-साहित्य पर अपनी पूर्ण पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। इन दो महान् कहानीकारों ने जिन स्वतंत्र संस्थानों के प्रवर्त्तन का गौरवपूर्ण कार्य किया, उनके अन्तर्गत उस युग के प्रायः समस्त उल्लेखनीय कहानी-लेखक स्वतः आ गये। पाश्चात्य कहानीकला और राष्ट्रीय जागृति के विभिन्न सोपानों ने सन् १९३० से ही हिन्दी कहानी की दिशा को परिवर्तित करने का प्रयास आरम्भ किया। स्वयं प्रेमचन्द अपनी उत्तर-कालीन कहानियों में अत्यधिक यथार्थवादी हो गये थे। डा० देवराज के शब्दों में—"उनके अन्तिमकाल की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता का आग्रह इतना बढ़ गया है कि घटनाओं का निर्माण, कथा की सजावट, आदर्शवादिता का मोह तथा राजनैतिक या सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण इत्यादि की धूमधाम रहते हुये भी चरित्र-चित्रण तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का स्वर मुखरित होने लगा है"।[1] प्रेमचन्द ने पात्रों की मनःस्थिति तथा अन्तःप्रेरणाओं के विश्लेषण को महत्व देकर हिन्दी कहानी के भावी स्वरूप की ओर संकेत दिया था।

प्रेमचन्द के जीवन-काल में ही जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय जैसे प्रतिभावान और स्वतंत्र विचारक कहानी रचना के क्षेत्र में आ गये थे। मानव-मन के सूक्ष्म विश्लेषण की ओर इनका ध्यान आकृष्ट हुआ, और बाह्य वर्णन से उदासीन होकर उन्होंने व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप को विश्लेषित कर कहानी के धरातल पर सजीव, सक्रिय, विवेकशील पात्रों की अवतारणा की। सामाजिक यथार्थवाद और दार्शनिक चिन्तन ने भी इन कहानीकारों को विचार-विवेचन-विश्लेषण की नयी दृष्टि

१—डा० देवराज उपाध्याय, 'आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान', पृ० १०६।

प्रदान की। तब तक फ्रायड के मनोविश्लेषण ने पाश्चात्य कथा साहित्य को अत्यधिक प्रभावित कर महत्वपूर्ण जीवन-दर्शन बनने का गौरव प्राप्त कर लिया था। जोशी, अज्ञेय और पहाड़ी की कहानियों में फ्रायडवादी विचारधारा का प्रभाव व्यक्त होने लगा। समाजवादी व्यवस्था की जीवन्त व्याख्या का आदर्श मार्क्सवाद से प्राप्त कर यशपाल जैसे कुशल कथाकार ने व्यक्ति और समाज के तात्विक विश्लेषण का प्रयास किया।

राजनीतिक एवं राष्ट्रीय आन्दोलनों ने भी जनमानस को इस युग में विशेष रूप से प्रभावित किया। सन् १९३५ तक भारतीय जनता महात्मा गांधी की प्रेरणा से जागरण के पश्चात् स्वातंत्र्य के प्रकाश को देखने की बलवती आकांक्षा से उद्वेलित हो रही थी। तत्कालीन ब्रिटिश शासकों की क्रूर दमननीति और कूटनीतिक चालों का रहस्य खुलने लगा था। हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य के पीछे अंग्रेजों की साम्प्रदायिकता की आग भड़काने की प्रवृत्ति निहित है, इसका ज्ञान भी विवेकशील-जन-नेताओं को प्राप्त हो गया था। राजनीतिक अधिकारों की माँग का प्रश्न लेकर धारा सभाओं में प्रवेश पाने का प्रयत्न तत्कालीन राजनीतिक संस्था—कांग्रेस—की ओर से हो रहा था। कांग्रेस के मन्त्रिमण्डल बनाने, पाकिस्तान बनाने की माँग को मुस्लिम लीग की ओर से उपस्थित किये जाने और कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों के त्यागपत्र देने की घटनाओं ने विचारक, समाजसुधारक और साहित्यक वर्ग को समान रूप से प्रभावित किया। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये भारत छोड़ो आन्दोलन, और विभिन्न अवसरों पर क्रान्तिकारी प्रयत्नों ने ऐसे असंख्य पात्रों, परिस्थितियों और कार्यों के वर्णन तथा विश्लेषण की आधारभूमि प्रस्तुत की जो समाज और राष्ट्र की प्रत्यक्ष समस्याओं और घटनाओं से सम्बद्ध थे। सन् १९४२ के पश्चात् अंग्रेजों की कूटनीतिक चालबाजियों का चक्र पुनः आरम्भ हुआ। देसाई-लियाकत योजना, वेवेल योजना और लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाही राजनीतिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं। सन् १९४७ के पन्द्रह अगस्त को स्वतंत्रता की घोषणा एवं भारत पाकिस्तान के मध्य घटित होने वाली साम्प्रदायिक क्रूरता की अगणित लोमहर्षक घटनाओं ने समाज और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तक घटित होने वाली उपर्युक्त महत्वपूर्ण घटनाओं एवं आन्दोलनों के प्रभावक्षेत्र से हिन्दी कहानीकारों ने विविध वर्गों के पात्रों का चयन किया। अनेकरूपीय स्थितियों के मध्य उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण यथार्थवादी धरातल पर किया गया। आदर्श और सांस्कृतिक मर्यादाओं के स्थान पर जीवन की प्रत्यक्ष समस्याओं को पात्रों के व्यक्तित्व के निरूपण के लिये विशेष उपयुक्त माना गया। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा के विचारानुसार इस युग में मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण

को अपना कर कहानीकारों ने व्यक्ति और समाज की विविध स्थितियों को विश्वसनीय एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया। उन्ही के शब्दों में—'इस युग में मनोविज्ञान के विकास ने मनुष्य की अन्तर्प्रवृत्तियों की विश्लेषण पद्धति के आधार पर, मनुष्य और समाज के प्रश्नों को नये दृष्टिकोण से देखने का मार्ग निकाला। कहानीकारों ने चरित्र की अवतारणा इसी मनोविश्लेषण पद्धति पर करना आरम्भ कर दिया'' ।[1]

फ्रायड की विचारधारा से प्रभावित होकर मनोविश्लेषण को आधार रूप में ग्रहण करने वाले कहानी लेखकों ने दमित वासनाओं और कुण्ठाओ की तात्विक व्याख्या कर पात्रो के व्यक्तित्व का उत्कृष्ट विश्लेषण किया। प्रेम, वासना और इन्द्रिय-जन्य आकर्षण की मनोविज्ञान-सम्मत विवेचना के संकेत इनकी कहानियो में प्राप्त होने लगे। यौनवादी विश्लेषण के नग्न रूप की ओर भी कतिपय कहानी-लेखक आकृष्ट हुए और उनकी रचनाओं में असामान्य व्यक्तित्व से संयुक्त पात्रो को स्थान प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर्जगत के भिन्न तत्वो के विश्लेषण की ओर इन कहानीकारो ने अपनी शक्ति को केन्द्रित किया।

मनोविश्लेषण के माध्यम से कहानीकारों ने प्रमाणित किया कि पात्रो के व्यक्तित्व में चेतन मन से अधिक अवचेतन मन को सक्रियता विद्यमान रहती है। चेतन और अवचेतन के असन्तुलन और असामंजस्य से व्यक्तित्व समस्यामूलक, दुर्बोध और असामाजिक बन जाता है। इन तत्वों की ओर ध्यान देकर विद्रोह, अपराध और पाप की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की गयी। पात्रो के व्यक्तित्व के असन्तुलन के वास्तविक कारण ढूंढ़े गये और व्यक्ति-विश्लेषण की नयी सबल धारा का इस प्रकार उद्भव और विकास हुआ। स्त्री पात्रो और पुरुष पात्रों के विभिन्न सम्बन्धो की नयी व्याख्या के आलोक में उनके व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया गया। बाह्य घटनाओं और कार्यो की अपेक्षा मानसिक संघर्षो, अन्तर्द्वन्द, आत्मविश्लेषण और सुषुप्त वृत्तियो के विवेचन को अधिक महत्व प्राप्त हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्कर्ष काल की कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुये कहानीकारों ने व्यावहारिक जीवन-दर्शन को प्रधानता दी है। प्राचीन मान्यताओं पर पुनर्विचार और पुनर्परीक्षण की दृष्टि डाली गयी है। इस युग में गांधीवाद के विकसित रूप मानववाद की प्रतिस्थापना द्वारा युग धर्म के अनुकूल जीवन-दर्शन को ढालने का प्रयास हुआ। मानववादी दर्शन सर्वग्राही, सर्वव्यापक और उदार सिद्धान्तों का प्रेरक बन कर आया। जैनेन्द्र, अज्ञेय, जोशी और अश्क की

---

१. डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, 'हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन' पृ० २७५।

व्यापक मानवतावादी दृष्टि के पीछे यह दर्शन विभिन्न रूपों में निहित है। पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण जब इस दृष्टिकोण से किया जाने लगा तो पाप-पुण्य, सदाचार, अनाचार, नीति-अनीति और धर्म-अधर्म की परम्परागत मान्यताओं में परिवर्तन और संशोधन किये गये।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर लिखी गयी कहानियों में समाज और उसकी समस्या से अधिक व्यक्ति को महत्व प्राप्त हुआ है। उसके अहं और अस्तित्व की व्याख्या नवीन एवं सुपरीक्षित प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर की गयी फ्रायड के यौनवाद के सिद्धान्तों ने इस प्रकार के विश्लेषण को कितना प्रभावित किया है, इसे सुप्रसिद्ध कहानीकारों की रचनाओं के विवेचन के प्रसंग में देखा जायगा। फ्रायड ने जिन यौनवादी सिद्धान्तों की स्थापना की उनमें संशोधन और परिवर्द्धन का कार्य परवर्ती मनोविश्लेषक जुंग और एडलर ने किया। इच्छा शक्ति और आत्मविज्ञापन की प्रवृत्तियों को मानव व्यक्तित्व के प्रमुख परिचालक तत्वों के रूप में फ्रायड के उत्तरकालीन व्याख्याताओं ने ग्रहण किया। हिन्दी के सजग एवं अध्ययनशील कहानीकारों ने इन नयी व्याख्याओं को आत्मसात कर उन्हें भी व्यक्तित्व विश्लेषण के आधार-रूप में ग्रहण किया।

कार्लमार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त का व्यापक प्रभाव भारतीय चिन्तनपद्धति पर भी इसी युग में परिलक्षित होता है। हिन्दी कहानी-साहित्य भी उसके प्रभावक्षेत्र में आया। वैसे तो साम्यवादी चिन्तनपद्धति की पूर्ण उपेक्षा किसी भी विवेकशील और प्रगतिशील कहानीकार द्वारा सम्भव नहीं थी, परन्तु उसका सर्वाधिक कलात्मक, व्यवस्थित और प्रभावशाली रूप यशपाल के कहानी-साहित्य में उपलब्ध होता है। उन्हें इस परम्परा का अग्रदूत और उन्नायक कहा जा सकता है। वर्ग चेतना और सामान्य मानव के उत्थान की प्रेरणा इनकी कहानियों में निहित है। परवर्ती कहानीकारों को इस विचारधारा और चिन्तन-पद्धति ने बहुत अधिक प्रभावित किया है।

उपर्युक्त विशिष्ट कहानी परम्पराओं के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से कहानी-लेखक का कार्य भी अनेक सुयोग्य कथाकारों द्वारा चलता रहा। उनमें कहीं आदर्श और मर्यादा रक्षण को प्रधानता दी गयी और कहीं पारिवारिक तथा गृहस्थ जीवन की समस्याओं का चित्रण प्रमुख रूप से किया गया। हास्यपरक कहानियों में व्यंग्य और विद्रूप को मुख्य तत्व के रूप में महत्व प्राप्त हुआ। साहसप्रधान कहानियों द्वारा पात्रों के बुद्धिकौशल, साहस, धैर्य और सक्रियता का चित्रण हुआ। उत्कर्षकाल के कुछ ही वर्षों में हिन्दी कहानी साहित्य का अभूतपूर्व उत्थान हुआ। विविध क्षेत्रों से प्राप्त पात्रों के बाह्य और आन्तरिक स्वरूप की व्याख्या कर व्यक्तित्व विश्लेषण

के क्षेत्र को अनेक यशस्वी कहानीकारों को व्यापक मनोवैज्ञानिक, चिन्तनप्रधान एवं प्रभविष्णु प्रेरणायें प्रदान कीं।

उत्कर्ष काल की कहानियों को व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से निम्नलिखित चार प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(१) मनोवैज्ञानिक विश्लेषण-प्रधान कहानियाँ :
प्रमुख कहानीकार—जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी और पहाड़ी।

(२) यथार्थवादी कहानियाँ :
प्रमुख कहानीकार—यशपाल, भगवती चरण वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क।

(३) भावुकतामूलक कहानियाँ :
प्रमुख कहानीकार—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सियारामशरण 'गुप्त', सुमित्रानन्दन पन्त, मोहनलाल महतो वियोगी और कमलाकान्त वर्मा।

(४) पारिवारिक समस्यामूलक कहानियाँ :
प्रमुख कहानीकार—कमलादेवी चौधरी, उषादेवी मित्रा और होमवती देवी।

इनके अतिरिक्त अन्य उल्लेखनीय कहानीकारों में सर्वश्री जी० पी० श्रीवास्तव, अमृतलाल नागर, हरिशंकर शर्मा, अन्नपूर्णानन्द वर्मा, राधाकृष्ण, श्रीराम शर्मा और रघुवीर सिंह अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण विशेष प्रसिद्ध हैं। इन कहानीकारों की रचनाओं में विभिन्न शैलियों के प्रयोग हुये हैं और पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की अपेक्षा व्यंग्य और अद्भुत कार्यों के वर्णन को विशेष प्रधानता दी गयी है।

जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

जैनेन्द्र जी ने अपनी उत्कृष्ट मौलिक कहानियों द्वारा हिन्दी-कहानी-साहित्य के प्रेमचन्दोत्तर युग में विशेष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। सन् १९२८ से कहानी रचना की ओर ये प्रवृत्त हुए और १९३१ तक अपने चिन्तन, जीवन दर्शन और वर्णन-पद्धति के कारण स्वतंत्र कहानी परम्परा के प्रवर्त्तक का स्थान ग्रहण कर लिया। समाज के विभिन्न रूपों और पात्रों के विविध प्रकार के व्यक्तित्व का समन्वय इनकी कहानियों में हुआ है। इनकी रचनाओं में दार्शनिक चिन्तन और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की प्रधानता है। यथार्थ अंकन की कुशलता और उदात्त कल्पना के समन्वय ने पौराणिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक समस्यामूलक और नितान्त व्यक्तिगत समस्याओं के धरातल से अनेकरूपीय पात्रों के चयन की प्रेरणा और शक्ति जैनेन्द्र जी को प्रदान की है।

जैनेन्द्र जी ने दार्शनिक चिन्तन के आधार पर जिन कहानियों की रचना की है उनमें प्रस्तुत पात्रों के व्यक्तित्व पर विचारक, जैनेन्द्र के व्यक्तित्व की छाप अंकित हो गयी है। उनकी दार्शनिक मान्यताओं और धारणाओं को अनेक उत्कृष्ट कहानियों में व्यक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से उनका दार्शनिक चिन्तन भिन्न रूप ग्रहण करता है। अतएव उनकी कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण और विश्लेषण भी दो प्रकार से हुआ है। धर्म, शिक्षा, नीति और आदर्श की आधारभित्ति पर दार्शनिक कहानियों के पात्र प्रतिष्ठित किये गये हैं। मनोवैज्ञानिक-विश्लेषण प्रधान कहानियों में जीवन और जगत् की यथार्थ समस्याओं और प्रवृत्तियों को लेकर चलने वाले पात्रों के व्यक्तित्व का तात्विक विवेचन हुआ है। इस प्रकार व्यक्तित्व विश्लेषण की दृष्टि से उनकी कहानियों के दो वर्ग किये जा सकते हैं :—

(१) दार्शनिक कहानियाँ—जिनमें पौराणिक, काल्पनिक और ऐतिहासिक पात्रों को प्रस्तुत किया गया है।

(२) मनोवैज्ञानिक कहानियाँ—जिनमें जीवन के सत्य तथा तथ्य से संबंधित वस्तुजगत के पात्रों को प्रस्तुत किया गया है।

दार्शनिक कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

• इस प्रकार की कहानियों में ऐतिहासिक पात्रों के व्यक्तित्व को भी समन्वित किया गया है। यशो-विजय, वसन्त तिलका, जयवीर और यशस्तिलका जैसे रहस्यपूर्ण और महत्वाकांक्षी पात्रों की अवतारणा 'जयसन्धि' जैसी भावपूर्ण और आकर्षक कहानी में हुई है। पौराणिक कथाओं मे वर्णित पात्रों को मानवीय संवेदना तथा प्रवृत्तियों से संयुक्त कर कहानी के अंक में प्रतिष्ठित किया गया है। शंकर, पार्वती, इन्द्र, शची, नारद, कामदेव, रति और कात्यायन के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए कहानीकार ने उनमें मानवीय मनोभावों, संवेगों और प्रतिक्रियाओं का आरोपण कुशलतापूर्वक किया है। पार्वती और नारद मानवीय दुख, करुणा और वेदना से द्रवित होकर संसार के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते है। 'उर्ध्वबाहु', 'भद्रबाहु', 'अनबन' और 'नारद का अर्घ्य' शीर्षक कहानियों में नीति और दर्शन की चिन्तन प्रधान कथा-भूमि पर पौराणिक पात्रों के व्यक्तित्व को कुशलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। 'रानी महामाया', 'जनार्दन की रानी', और 'राजपथिक' जैसी कहानियों मे राजाओं और रानियों के व्यक्तित्व को सदाचरण, नीतिमत्ता और मर्यादा-रक्षण की विशेषताओं से संयुक्त कर विश्लेषित किया गया है।

दार्शनिक कहानियों में अवतरित पात्रों के व्यक्तित्व में आध्यात्मिकता के साथ

ही मानवता के उच्च आदर्शों का प्रतिफलन हुआ है। 'लाल सरोवर' शीर्षक कहानी के वैरागी के व्यक्तित्व में सेवा, निस्पृहता, त्याग और उदारता के उदात्त गुणों का समन्वय हुआ है। उसके विपरीत मंगलदास की भक्ति और सेवा के पीछे स्वार्थ की अन्तःप्रेरणा ही प्रधान रूप ग्रहण कर लेती है। मंगलदास के व्यक्तित्व से व्यंजित संकीर्णता ही वैरागी के व्यक्तित्व की महत्ता को उत्कर्ष प्रदान करती है। कल्पना और भावना के आधार पर जिन कहानियों में प्रतीकात्मक पात्रों की प्रतिष्ठा हुई है, उनमें आध्यात्मिक विश्लेषण ही प्रधान तत्व बन गया है। 'नीलम देश की राजकुमारी' मे राजकुमार, उसकी माँ और नीलम देश की राजकन्या के व्यक्तित्व को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनके माध्यम से कहानीकार ने ब्रह्म और आत्मा के मिलन का प्रतीकात्मक वर्णन किया है। पेड़-पौधे और जीवजन्तु भी 'वह बिचारासाँप', 'तत्सत्' एवं 'चिड़िया की बच्ची' शीर्षक कहानियो में मानवीय वृत्तियों से संयुक्त कर दिये गये है। उनमें मानव-व्यक्तित्व के उन तत्वों का आरोपण किया गया है जो कहानी के संवेद्य को व्यक्त करने के लिये अनिवार्यतः अपेक्षित हैं। दार्शनिक कहानियो मे पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व की ही प्रधानता है। इस तथ्य को डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने इन शब्दों में व्यक्त किया है :

'वस्तुतः चरित्र-निर्माण और व्यक्तित्व-प्रतिष्ठा ही इन दार्शनिक कहानियो के प्राण हैं, इसके ही माध्यम से कहानीकार ने अपना अभीष्ट पूरा किया है।'[१]

मनोवैज्ञानिक कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

जैनेन्द्र जी की मनोवैज्ञानिक कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का तथ्यपूर्ण और कलात्मक विश्लेषण उच्चस्तरीय और सन्तुलितयुक्त है। बाह्य स्वरूप की अपेक्षा अन्तर की वृत्तियो का विवेचन इनमें विशेष महत्वपूर्ण माना गया है। इन कहानियों के अधिकांश पात्र विवेकशील, गम्भीर और आत्मचिन्तन में मग्न रहनेवाले हैं। कहानीकार ने बाह्य से चलकर अन्तर तक पहुँचने की क्रिया को विकास माना है और इन कहानियों के प्रायः सभी पात्र इसी विकास के मार्ग पर हैं। अपने इस दृष्टिकोण की व्याख्या करते हुये जैनेन्द्र जी ने लिखा है :—

'यह बात अच्छी तरह समझ लेनी होगी कि शरीर से प्राणों की ओर बढ़ना बनावट से स्वाभाविकता की ओर बढ़ना होगा, सजावट से रुचिरता की ओर और आडम्बर से प्रसाद की ओर बढ़ना होगा। स्थूल वासना के नीचे धरातल पर इस प्रगतिशील जगत में टिकना नहीं हो सकेगा, सूक्ष्म की ओर अग्रसर होना ही होगा।

---

१ डा० लक्ष्मी नारायण लाल—'हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास', पृ० २४९।

इसी का नाम विकास है।[1]

इसी सूक्ष्म की ओर गतिशील पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण जैनेन्द्र जी ने विविध प्रकार की स्थितियों की रचना द्वारा किया है। मूक-सहनशीलता और आत्म-पीडन की प्रधानता इन पात्रों में है। मनोवैज्ञानिक विवेचन के अनुसार इनका व्यक्तित्व अन्तर्मुखी है। 'मास्टर जी' शीर्षक कहानी में एक अध्यापक के व्यक्तित्व का तथ्यपूर्ण विश्लेषण है। 'जाह्नवी' में नारी और पुरुष के व्यक्तित्व का निरूपण उन्हें प्रेम और प्रणय की भूमिका में स्थित कर किया गया है। 'ग्रामोफोन का रिकार्ड' में पति और पत्नी के असन्तुलित और असन्तोष में दग्ध व्यक्तित्व का चित्रण हुआ है। 'पानवाला', 'ध्रुवयात्रा' और 'ब्रिटिश' शीर्षक कहानियों में भी प्रेम के विभिन्न स्वरूप व्यक्त हुए हैं और उनसे सम्बद्ध पात्रों के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की कुशलता के साथ व्यंजना हुई है। 'नादिरा' कहानी में नादिरा 'राजीव की भाभी' में राजीव और 'एक रात' में जयराम तथा सुदर्शना के व्यक्तित्व के सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा जैनेन्द्र जी ने अपनी मनोवैज्ञानिक विवेचन की कुशलता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। विशिष्ट और प्रतिनिधि दोनों प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व में अपनी सूक्ष्म विवेचनशक्ति से कहानीकार ने कुछ अविस्मरणीय तत्वों को प्राप्त कर लिया है और उनका अंकन कथासूत्रों के सहज विकास के साथ कर दिया है। कहीं यह आत्म-विश्लेषण है जैसे 'क्या हो' शीर्षक कहानी में, कहीं केवल मानसिक-संघर्ष के रूप में है जैसे 'ग्रामोफोन' का रिकार्ड में और कहीं सहज-क्रिया के रूप में प्रस्तुत भाव-प्रकाशन है जैसे 'एक रात' में। प्रतिनिधि पात्र अपने व्यक्तित्व द्वारा वर्ग या समूह-विशेष के भावों, प्रतिक्रियाओं और व्यवहारों को व्यक्त करते हैं। 'ग्रामोफोन का रिकार्ड' में विजया का प्रतिनिधि व्यक्तित्व उस प्रकार के सम्पूर्ण नारी-वर्ग के भावों का नेतृत्व करता है। 'पत्नी' में सुनन्दा भारतीय परिवार की मूक, सहनशीला कर्त्तव्यरता और रूढ़ संस्कारों में पलने वाली नारी-वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है 'चालीस रुपये' में वागीश मध्यवर्गीय समाज-सुधारकों की प्रवृत्तियों का प्रतीक है।

जैनेन्द्र जी की कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य और आन्तरिक स्वरूप की व्याख्या के निमित्त स्थूल घटनाओं से हटकर महत्वपूर्ण संकेतों और सूक्ष्म वृत्तियों के विश्लेषण को प्रधानता प्राप्त हुई है। अपनी संकेत-प्रधान विश्लेषण प्रणाली की महत्ता का विश्लेषण करते हुए उन्होंने लिखा है :

'कोई कथन सीधे अपने पदार्थ में और कोई घटना अपने सीमित अर्थ में

---

१. जैनेन्द्र कुमार—'एक रात', भूमिका भाग, पृ० ३।

सार्थक नहीं होती। सबका अर्थ विस्तृत है। इससे सब कुछ मात्र संकेत रूप में, सूचक इंगित रूप में ही अर्थकारी है।"[1]

जैनेन्द्र जी ने कहानी को वर्णनात्मकता के आग्रह से मुक्त कर व्यक्तित्व विश्लेषण की मनोवैज्ञानिक-विवेचन-भूमि पर प्रतिष्ठित किया है। उनके पात्रों मे सक्षम व्यक्तित्व के दर्शन होते है। स्वसत्तायुक्त कार्य-व्यापार विवेक एवं प्रभाव द्वारा इन पात्रों का स्थान कहानी मे बहुत ही महत्वपूर्ण बन गया है। बौद्धिक, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विवेचन के समावेश द्वारा जैनेन्द्र जी ने कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व के तात्विक विश्लेषण की क्षमता का अभूतपूर्व कलात्मकता के साथ सृजन कर कहानी-क्षेत्र मे नवीन युग का प्रवर्त्तन किया है।

२ अज्ञेय की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर अज्ञेय जी ने अपनी विचार-प्रधान कहानियों में देश-विदेश के अनेकवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण किया है। कई दशको से हिन्दी कहानी-साहित्य की उल्लेखनीय श्रीवृद्धि का गौरव अज्ञेय जी को प्राप्त है। जीवन के विविध अनुभवों को कहानी के सांचे में ढाल कर उन्होंने ऐसे अविस्मरणीय पात्रों के व्यक्तित्व का सृजन किया है जो अपनी वैयक्तिकता, सक्षमता और गतिशीलता में विलक्षण हैं। सामाजिक आदर्शों तथा व्यक्तिगत सिद्धान्तों के निर्वहन में सलग्न पात्र भी व्यक्तिगत विलक्षणता से संयुक्त है। व्यक्तित्व की सप्राण प्रतिष्ठा के कारण अज्ञेय जी की अधिकांश कहानियाँ व्यक्ति-प्रधान बन गयी हैं। इस दृष्टिकोण से विचारणीय कहानियों में निम्नलिखित प्रमुख हैं :

'विपथगा', 'पैगोडा वृक्ष', 'हारिति', 'हरसिंगार', 'रोज', 'एकाकी तारा', 'अमर' 'इन्दु की बेटी', 'मंसो', 'सभ्यता का एक दिन', 'परम्परा', 'शरणदाता', 'बदला' 'लेटर-बाक्स', 'वसन्त', 'मिलन', 'कड़ियाँ', 'एक घण्टे मे', 'कैसेन्ड्रा का अभिशाप', 'ह्रीलोबीन की बत्तखें', 'पुरुष का भाग्य', 'नम्बर दस', 'कोठरी की बात', 'सिगनेलर', 'ताज की छाया में', 'जिज्ञासा', 'पुलिस की सीटी' और 'बन्दों का खुदा खुदा के बन्दे'

'विपथगा' में मेरिया इवानोव्ना के सबल और क्रियाशील नारी-व्यक्तित्व का आकर्षक चित्रण है। कठिन परिस्थितियों में भी वह असामान्य स्त्री के धैर्य तथा साहस का प्रमाण उपस्थित करती है। 'पैगोडा वृक्ष' में सुखदा और दिनेश के व्यक्तित्व का

---

१ श्री जैनेन्द्र कुमार—'साहित्य का श्रेय और प्रेय', सूर्योदय प्रकाशन, दिल्ली—१९५३, पृ० ११२।

कलात्मक अंकन है। विपत्ति के क्षणों में सुखदा के व्यक्तित्व का सौन्दर्य उसके साहस-पूर्ण कर्त्तव्य के कारण निखर उठता है। 'हारिति' में हारिति और क्वानियन के व्यक्तित्व का विश्लेषण देश-प्रेम की भूमिका में किया गया है। 'मिलन' में डिमोटी और सर्जियस नामक दो मित्रों के पारस्परिक प्रेम को कथावस्तु के रूप में ढालकर अज्ञेय जी ने उदात्त मानवीय आदर्शों की व्यंजना की है। दोनों पात्रों के व्यक्तित्व की सूक्ष्म से सूक्ष्म विशेषताओं पर भी कहानीकार की सतर्क दृष्टि है। 'एकाकी तारा' में नारी व्यक्तित्व में अन्तर्द्वन्द्व और मानसिक ऊहापोह की स्थिति सन्तुलन के साथ विश्लेषण किया गया है। पति और भाई के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य के निर्वाह का अन्तर्द्वन्द्व नारी व्यक्तित्व के संक्रान्त रूप को प्रस्तुत करता है। संकल्प-शक्ति से अपने कर्त्तव्य को निश्चित कर सक्रिय हो जाने की क्षमता भी उसी नारी-व्यक्तित्व में विकसित हो जाती है। समाज की अकारण निष्ठुरता और दम्भ पर आघात करते हुए अज्ञेय जी ने 'नम्बर दस' के प्रमुख पात्र रतन के व्यक्तित्व का सृजन किया है। दारिद्रय की विकरालता उसे चोरी करने को विवश करती है। उसे जेल में पहुँचाकर समाज की व्यवस्था सन्तुष्टि की साँस लेती है। जेल से छूटने पर बाहर कोई सहायता न पाने पर वह पुनः चोरी करता है ताकि जेल जाने का अवसर मिल जाय। मानव की विवशता, करुणा और दैन्य का उत्कृष्ट विश्लेषण इस रचना में हुआ है।

क्रान्तिकारी जीवन का विशद् अनुभव अज्ञेय जी को प्राप्त है। अपनी अनेक कहानियों में उन्होंने क्रान्तिकारी पात्रों के व्यक्तित्व का तथ्यपूर्ण विश्लेषण किया है। 'कैसेन्ड्रा का अभिशाप', 'छाया', 'द्रोही', 'एक घण्टे में' तथा 'कोठरी की बात' में क्रान्ति और क्रान्तिकारी जीवन की व्याख्या है तथा उसी के अनुरूप पात्रों के व्यक्तित्व की रचना की गयी है। कहीं-कहीं, कहानीकार ने व्याख्याता का रूप भी ग्रहण कर लिया है। मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विवेचन ऐसे स्थलों पर इतना गम्भीर चिन्तनप्रधान और बोझिल हो जाता है कि पात्रों के व्यक्तित्व के विकास की सहज गति अवरुद्ध होने लगती है। इनमें कहानीकार के अनुभव और ज्ञान का विवेचन ही प्रधान हो उठा है। जहां कथावस्तु के सहज प्रवाह में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण उनके कार्य, व्यवहार, क्रिया और आत्मविश्लेषण के माध्यम से किया गया है वहाँ अधिक कलात्मकता और आकर्षण विद्यमान है। 'छाया' कहानी को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। बंदी अरुण के व्यक्तित्व को विभिन्न मनःस्थितियों की व्याख्या द्वारा कुशलता के साथ विश्लेषित करने का प्रयास बहुत ही कलात्मक है। सुषमा के व्यक्तित्व को अंकित करने में कहानीकार ने अपनी प्रतिभा का विशिष्ट प्रमाण उप-स्थित किया है। राजनीतिक जीवन से फांसी के तख्ते तक उसके व्यक्तित्व की प्रभाव-सीमा प्रसृत है। जेल के वार्डर और मेट्रन भी उस प्रभाव-क्षेत्र में आ जाते हैं। कहानी

की संवेदना को तीव्रतम रूप देने की शक्ति अरुण और सुषमा के व्यक्तित्व में निहित है।

अज्ञेय जी की कहानियाँ पात्र विशेष के व्यक्तित्व को केन्द्र मान कर विकसित हुई हैं। व्यक्तिनिष्ठ मनोविज्ञान और दार्शनिक चिन्तन ने कहानीकार अज्ञेय को विचारक और विवेचक भी बना दिया है। समस्त सामाजिक, नैतिक, आर्थिक या साम्प्रदायिक समस्याओं का समाधान और अध्ययन उन्होंने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से किया है। उनके पात्र उनके इसी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। अज्ञेय जी का मानवतावादी जीवन-दर्शन उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के धरातल पर प्रतिष्ठित हुआ है। कहानीकार के भाव और विचार उसके सभी प्रमुख पात्रों और व्यवहार में उतर कर जीवन के ज्वलन्त प्रश्नों का समाधान ढूँढ़ते हैं।

अज्ञेय जी के 'अहं' का प्रभाव भी उनके द्वारा सृजित पात्रों के व्यक्तित्व पर स्पष्टतः परिलक्षित होता है। उनका 'अहं' संकीर्ण और स्व-केन्द्रित नहीं है, वरन् उसमें मानव-हित का समाहार हुआ है। व्यक्ति-विशेष में स्थित अहं को कहानीकार ने सर्वजनीन, सर्वव्यापक और समुन्नत स्वरूप प्रदान किया है। 'कोठरी की बात' में सुशील और दिनमणि का अहं भाव उनके व्यक्तित्व का प्रधान तत्व बन गया है। 'द्रोही' शीर्षक कहानी में व्यक्तित्व का निरूपण मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विवेचन-विश्लेषण की आधारभूमि पर हुआ है। तात्पर्य यह है कि जिस अहं की स्थापना विवेकशील, आत्मविश्लेषणरत पात्रों के व्यक्तित्व में हुई है वह उदात्त, व्यापक, सर्वहित-साधक और यथार्थजगत् से सुसम्बद्ध है।

व्यक्तित्व के पक्ष विशेष को तीव्र आलोक से प्रकाशित करने वाली अज्ञेय जी की कतिपय कहानियों में विद्रोही पात्रों के प्रभावशाली व्यक्तित्व की अवतारणा हुई है। समाज की दूषित परम्पराओं के प्रति इनके मन में आक्रोश, प्रतिक्रिया और अमर्ष के भाव भरे पड़े हैं। विभिन्न स्थितियों में उनका विस्फोट होता रहता है। कभी-कभी मौन और विरक्ति भी उनके विद्रोही मनोभाव का संकेत प्रस्तुत कर देते हैं। 'दुख और तितलियाँ' का शेखर, 'रोज' की मालती, 'सूक्ति-और भाषा' की जसुमती, 'परम्परा-एक कहानी' का दरबान तथा 'सभ्यता का एक दिन' का नरेन्द्र सामाजिक-विद्रोह के अग्रदूत हैं। वे मौन भी हैं और स्थिति विशेष में मुखर भी। जिन पात्रों के व्यक्तित्व में राजनीतिक विद्रोह की ज्वाला का उत्ताप है वे शुद्ध क्रांतिवादी बन गये हैं। उनके कार्य तथा विचार कहानी की गतिविधि का निर्धारण करते हैं। इन पात्रों के व्यक्तित्व की रचना अज्ञेय जी ने बड़े मनोयोग एवं विशेष सुरुचि से की है। उदाहरण के रूप में 'पैगोडा वृक्ष' की सुखदा 'छाया' के अरुण और सुषमा, 'कोठरी की बात' के सुशील और दिनमणि तथा 'एक घंटे में' के प्रभाकर और रजनी के व्यक्तित्व

को लिया जा सकता है। समाज और व्यक्ति के सतत विकसित सम्बन्धों का विवेचन करते हुए कहानीकार अज्ञेय ने मानव व्यक्तित्व के भावी रूप का सप्रमाण अनुमान भी प्रस्तुत किया है। जिन पात्रों को ऐसी भूमिका में प्रस्तुत किया गया है, उनमें शोषण और न्याय के प्रति तीव्र असन्तोष और उग्र आक्रोश विद्यमान है। परन्तु इन वृत्तियों के विकास का वे समुचित मार्ग नहीं पा रहे हैं। ऐसा आभासित होता है कि आने-वाले युग के विद्रोह का अंकुर उनके व्यक्तित्व से फूटेगा। उदाहरण देखे जा सकते हैं 'एकाकी तारा' के लूनी, 'हरसिंगार' के गोविन्द, 'शान्ति हँसी थी' के जानकीदास और 'शान्ति तथा जीवनी शक्ति' की भातरा के व्यक्तित्व में।

इलाचन्द्र जोशी की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

जोशी जी व्यक्ति और समाज के यथार्थ जीवन के मनोवैज्ञानिक विश्लेषक माने जाते हैं। भारतीय चिन्तन पद्धति और पाश्चात्य मनोविश्लेषण का प्रभाव उनकी कहानी-कला पर परिलक्षित होता है। सन् १६२० से अब तक हिन्दी कहानी साहित्य को अपनी उत्कृष्ट रचनाओं द्वारा उन्होंने निरन्तर गौरवान्वित किया है। व्यक्तित्व विश्लेषण की मनोवैज्ञानिक पद्धति के सृजकों में उनका नाम प्रथम पंक्ति में आता है। विविध विषयों और समस्याओं को उनकी कहानियों में स्थान प्राप्त हुआ है। जिन कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप अधिक मनोवैज्ञानिक कलापूर्ण और प्रभावयुक्त है उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं :

'मिस्त्री', 'रक्षित धन का अभिशाप', 'रोगी,' 'एक शराबी की आत्म-कथा,' 'चौथे विवाह की पत्नी', 'होली,' 'परित्यक्ता,' 'स्वामी आलोकानन्द,' 'प्रेतात्मा,' 'गोदावरी की काशी यात्रा' तथा "जारज"।

'मिस्त्री' कहानी एक ऐसे पात्र के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है जिसके मन में यह धारणा बद्धमूल हो गयी है कि स्त्री कृतघ्न होती है, उसके सभी कार्य स्वार्थ-प्रेरित होते हैं तथा वह स्वभावतः लज्जारहित होती है। विविध स्थितियों में उसकी धारणाएँ प्रबल होती जाती और उसका व्यक्तित्व कुण्ठाग्रस्त बन जाता है। 'रक्षित धन का शाप' में ठाकुर बलवीर सिंह के अन्तर्द्वन्द्व का विश्लषण करते हुए कहानीकार ने लोभवृत्ति की प्रबलता को प्रदर्शित किया है। अभिशप्त धन का लाभ न तो ठाकुर को प्राप्त होता है न उनकी सन्तान को। अनुचित मार्ग से प्राप्त धन आशंका, उपद्रव, अशान्ति और विनाश का कारण बन जाता है। इस कथन के सहारे बलवीर सिंह के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है। नारी-चरित्र का विश्लेषण करते हुए श्यामा के व्यक्तित्व को 'रोगी' शीर्षक कहानी में अंकित कर कहानीकार ने काम-भाव के उद्दाम रूप की व्यंजना प्रस्तुत की है। पति के रोगग्रस्त होने पर श्यामा चिकित्सा

के लिये आये हुये डाक्टर के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित करती है। उसके पति के शंकालु स्वभाव का विश्लेषण यथार्थ स्थितियों मे किया गया है। इसी प्रकार 'एक शराबी की आत्मकथा' मे कमला के व्यक्तित्व का अंकन हुआ है। बाह्य रूप से पति के प्रति प्रेम दिखाने वाली नारी परपुरुष से कैसे सम्बन्ध जोड़ने की चेष्टा करती है, इसका उदाहरण कमला के चरित्र से प्राप्त होता है। विधवा स्त्री के व्यक्तित्व को 'होली' शीर्षक कहानी मे विश्लेषित किया गया है। 'स्वामी आलोकानन्द' मे कपट-पूर्ण आचरण करने वाले ढोंगी व्यक्ति के रहस्य का उद्घाटन हुआ है। बाह्य व्यवहार और आन्तरिक वृत्तियो मे वैषम्य दिखाकर व्यक्तित्व के असामान्य रूप का विश्लेषण किया गया है। पति और पत्नी मे वैमनस्य और कटुता किस सीमा तक पहुँच सकती है और उसका परिणाम दोनो के व्यक्तित्व को कितना प्रभावित कर सकता है, इसका चित्रण 'परित्यक्ता' शीर्षक कहानी में हुआ है। सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप का यथातथ्य अंकन करते हुये जोशी जी ने सास और बहू के व्यवहार का चिन्तनीय रूप 'प्रेतात्मा' शीर्षक कहानी मे प्रस्तुत किया है। 'जारज' मे पतित स्त्री के समस्यामूलक व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है। समाज के बाह्य आवरण का भेदन कर कहानीकार उसके वास्तविक स्वरूप तक पहुँचने मे सफल हुआ है।

जोशी जी की कहानियो मे पात्रों में व्यक्तित्व का विश्लेषण मनोविज्ञान सम्मत बौद्धिक स्तर पर हुआ है। जिन कहानियों में असाधारण और विशिष्ट कोटि के पात्रो को प्रस्तुत किया गया है उनमें कौतूहल और जिज्ञासा की प्रवृत्ति अधिक विकसित हुई है। 'कापालिक,' 'रात्रिचर', 'प्रेतात्मा', 'शराबी और एकाकी' को उदाहरण के रूप मे लिया जा सकता है। मध्यम वर्ग के पात्रों को सामान्य जीवन की यथार्थ परिस्थितियों के प्रतिनिधि के रूप मे उपस्थित किया गया है। इनके व्यक्तित्व मे विशिष्ट गुण और स्वाभाविक दुर्बलताओ का समान रूप से चित्रण हुआ है। अपने आदर्शों, संस्कारों और मान्यताओं के प्रति इनके मन में आस्था है। यथार्थ की भूमि पर होते हुए भी वे अपने व्यक्तिगत गुणावगुणो से सम्पूर्ण वस्तु स्थिति को प्रभावित करते रहते हैं। 'बिन्दी', 'मोहन', 'रञ्जन', 'कामना', 'महेन्द्र' और 'तारा' ऐसे ही अविस्मरणीय पात्र है। पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में जोशी जी ने चेतन और अवचेतन जगत् की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। व्यक्तित्व विशेष के मूल में निहित कुण्ठाओं और दमित वासनाओं को उन्होने कलात्मक विधि से विश्लेषित किया है। आत्मविश्लेषण के माध्यम से पात्रों को अपनी प्रवृत्तियो, काम-नाओं और अतृप्त इच्छाओं के विवेचन का अवसर उन्होने प्रदान किया है। जोशी जी की विश्लेषणपरक कहानी रचना-शैली के वैशिष्ट्य पर विचार करते हुये

डा० लक्ष्मी नारायण लाल ने पात्रों के बाह्य और अन्तर के तादात्म्य को महत्वपूर्ण तत्व के रूप में स्वीकार किया है।

'व्यापक रूप से जोशी जी की कहानी-कला विश्लेषणात्मक है, इस पर बौद्धिकता की छाप सबसे अधिक है। इनका सबसे बड़ा कारण जोशी जी का कलात्मक दृष्टिकोण है। बाह्य अन्तर का तादात्म्य इनकी कहानीकला में लक्ष्यात्मक गंभीरता लाता है। इस कलागत दृष्टिकोण को न समझने वाले आलोचक जोशी जी की कहानी-कला के मूल्यांकन में पथभ्रष्ट हो जाते हैं, जोशी जी की कला में अपना एक स्वतन्त्र छंद है, गति है, इनकी अपनी एक विशिष्ट धारा है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता है।'[1]

रमा प्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी' की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

पाश्चात्य मनोविज्ञान, विशेषतः फ्रायडवादी मनोविश्लेषण के प्रभाव को लेकर पहाड़ी जी हिन्दी कहानी क्षेत्र मे आये। समाज के यथार्थ रूप का नग्न चित्रण इनकी कहानियों में उपलब्ध होता है। मूल प्रवृत्तियों से परिचालित व्यक्तित्व प्रदान कर उन्होंने अपनी रचनाओं में पात्रो को विविध स्थितियो में प्रस्तुत किया है। कहानी मे पात्र की प्रधानता को महत्व देकर उन्होंने घटनाओं को उसके व्यक्तित्व-विश्लेषण मे सहायक तत्व के रूप में स्वीकार किया है। उनका कथन है—' मैं पात्र को उठा लेता हूँ—घटनाएँ स्वयं उसे चारों ओर से घेरती हैं।' उनके कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें निम्नलिखित विशेष प्रसिद्ध हैं :—

'सफर', 'छाया मे', 'यथार्थवादी रोमान्स', 'अधूरा चित्र', 'सड़क पर', 'मौली', 'नया रास्ता', 'बया का घोंसला' और 'हिरन की आँखें।'

इन संग्रहो में सामाजिक, दार्शनिक, साहस-प्रधान, देशप्रेम-प्रधान और नैतिक कहानियाँ संकलित की गयी हैं। संख्या में सबसे अधिक कहानियाँ सामाजिक धरातल से लिखी गयी हैं। जिन सामाजिक कहानियो में पात्रों के व्यक्तित्व को फ्रायडवादी विचारधारा के अनुसार विश्लेषित किया गया है, उनमें ये प्रमुख हैं :—

'रज्जो', 'आखिरी स्केच', 'प्रेम कथा', 'मौंचू और मीला', 'कंकड़-चूना-ईंटे', 'रुक्मिणी के घर', 'प्रेम-कथा', 'तीखा-व्यंग्य', 'अधूरा चित्र', 'चारबिराम', 'रैन-बसेरा', 'राजरानी', 'छिपकली', 'कबूतरी', 'हिरन की आँखें', 'फायरब्रिगेड', 'ऐस्पिरीन की टेबलेट', 'विश्राम एक विराम', 'आश्रय', 'केवल प्रेम ही', 'सड़क पर',

---

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल, 'हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास', पृ० २७७।

'भोली', 'किन्तु',. 'जीवन का रहस्य, 'यदि मैं जानती', 'झगड़ा', 'मोम की मूर्ति', 'खेल का आधार', 'सुरीला' और 'सभ्यता की ओर।'

इन कहानियों में समाज के अस्वस्थ एवं नग्न स्वरूप के चित्रण का प्रबल आग्रह विद्यमान है। अधिकांश पात्र अपने दायित्व को विस्मृत कर अनैतिक और असामाजिक कार्यो मे लिप्त दिखाई पड़ते है। प्राचीन रूढियों के खोखलेपन का चित्रण भी इनमें उतनी ही कुशलता से किया गया है, जितनी कुशलता से पाश्चात्य सभ्यता के दूषित प्रभाव और चरित्रगत दुष्परिणामो का अंकन हुआ है। स्त्री-पुरुष के यौन-सम्बन्धों का विश्लेषण पहाडी जी की कहानियो मे अधिकांश स्थलों पर प्राप्त होता है। व्यक्ति तक ही यौन व्यापारों को सीमित नहीं रखा गया है, वरन् उनका सम्बन्ध परिवार और समाज तक विस्तृत कर दिया गया है। प्रेम तथा प्रणय के मूल में काम वासना की प्रबलता दिखाई गयी है।

काम-भाव की परितृप्ति का मार्ग न पाकर पहाड़ी जी की कहानियों के अधिकांश पात्र पथभ्रष्ट हो जाते हैं। पारिवारिक बन्धनों और परम्परागत मर्यादाओं के कारण जिन पात्रों को स्वच्छन्द आचरण की सुविधा प्राप्त नहीं होती वे भयकर दुष्परिणाम भोगने को विवश हो जाते हैं। मृत्यु, पागलपन, आत्म-हत्या अथवा गृह-त्याग की स्थिति में पहुँचना उनके लिये आवश्यक हो जाता है। विवाह भी कामभाव से आकुल पात्रों के व्यक्तित्व में सन्तुलन लाने में असमर्थ रहता है। 'रज्जो' और 'अधूरा चित्र' में इस प्रवृत्ति के उदाहरण देखे जा सकते है। जब पात्रों के व्यक्तित्व मे निराशा, कुण्ठा और व्यथा अपनी चरम स्थिति की ओर अग्रसर होती है तब वे हत्या द्वारा अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने लगते हैं। 'आखिरी स्केच', 'एक विराम' 'मौंचू और मीला', 'रुक्मिणी के घर', 'विश्राम' और 'कुसुम की बात' में ऐसे ही पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। शारीरिक सन्तुष्टि को प्रधानता देकर स्वच्छन्द रूप से वासना-तृप्ति के लिए प्रयत्नशील पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण 'चार विराम', 'हिरन की आँखें', 'यथार्थवादी रोमांस', 'राजरानी' और 'ऐस्प्रिन के टबलेट' शीर्षक कहानियो में हुआ है। पुरुष पात्र और स्त्री पात्र समान रूप से काम-वासना की असन्तुष्टि से प्रपीड़ित हैं और अवसर पाते ही मर्यादाओ को तोड़कर शारीरिक भूख के निवारण मे संलग्न हो जाते हैं। 'आनन्दी,' 'सुमित्रा', पीताम्बर,' 'श्यामा', 'मिसेज कान्त,' 'मिस्टर पुरी,' 'कबूतरी,' 'सरयू,' 'छोटी रानी,' 'भाभी' और 'सुरेश' एक से एक बढ़कर इस पथ का नेतृत्व करते हैं।

पहाड़ी जी ने अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र को—अर्थात् मूल प्रवृत्ति के रूप मे काम-भाव को—अपना कर उसी के दायरे मे उच्चवर्गीय और निम्नवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण विशेष दृष्टिकोण से किया है। कामवासना के द्वन्द्व

को आधार मान कर उन्होंने पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं का चित्रण किया है। धनी और साधन-सम्पन्न वर्ग के अधिकांश पात्रों को काम-तृप्ति में असमर्थ, कुण्ठित और विवश दिखाया गया है। उनके स्थान पर निम्न वर्ग के पात्र परिस्थितियों की प्रेरणा से पहुँच-कर वासनापूर्ति के साधन बनते हैं। स्त्री पात्रों को पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक अतृप्त और असन्तुलित दिखाया गया है। फ्रायड के काम-वासना सम्बन्धी सिद्धान्त को पहाड़ी जी ने कलात्मक रूप देने की चेष्टा की है। परन्तु नग्न-चित्रण का मोह इतना अधिक बढ़ गया है कि उनकी अनेक कहानियाँ केवल चरित्र-हीनता के विस्तृत विवरण तक ही सीमित रह गयी हैं। समाज और व्यक्ति के सम्बन्धों की व्याख्या जिस रूप में फ्रायड ने की है, उसमें कामप्रवृत्ति प्रेरणा, शक्ति और सन्तुलन का आधार बन कर प्रतिष्ठित हुई है। किसी भी प्रकार शारीरिक-भोग को प्राप्त कर लेना ही फ्रायडवादी विचारधारा की चरमपरिणति नहीं है। काम-वासना साधनमात्र है व्यापक सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने के लिये। परन्तु पहाड़ी जी की कहानियों में काम-तृप्ति ही लक्ष्य के रूप में ग्रहीत है। अतएव फ्रायड-वादी विचार-पद्धति का एकांगी उपयोग ही उनकी कहानी-कला में हो सका है।

यशपाल की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

समाज के यथार्थ स्वरूप का अपूर्व कुशलता से विश्लेषण करने वाले यशस्वी कहानीकारों में श्री यशपाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अपनी विविध कहानियों द्वारा उन्होंने इतिहास, राजनीति धर्म तथा सामाजिक समस्याओं का प्रभावपूर्ण और चिन्तन-प्रधान विवेचन किया है। उनकी उत्कृष्ट कहानियों के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें संग्रहीत कहानियों में विषय की विविधता है। अतएव अनेक वर्गों के पात्रों का व्यक्तित्व इनमें विश्लेषित हुआ है। उल्लेखनीय संकलन हैं—'पिंजड़े की उड़ान', 'वो दुनिया', 'चक्कर क्लब', 'तर्क का तूफान', 'ज्ञान-दान', 'अभिशप्त', तथा 'भस्मावृत्त चिन्गारियाँ'। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी अनेक कहानियाँ समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं।

समाज की विभिन्न समस्याओं को अपने सशक्त व्यक्तित्व से समाधान की ओर प्रेरित करने वाले प्रभावशाली पात्रों की अवतारणा उनकी सामाजिक कहानियों में हुई है। व्यक्तित्व विश्लेषण के महत्व की दृष्टि से विचारणीय कहानियों में निम्न-लिखित प्रमुख हैं— हिंसा', 'दुखी', 'कर्मफल', 'ज्ञयामी', 'नई दुनिया', 'गुडबाई', 'दर्देदिल', 'अपनी करनी', 'उतरा नशा', 'अभिशप्त', 'रोटी का मोल', 'रिज्क' 'पुनिया की होली', 'काला आदमी', 'समाधि की धूल', 'छलिया नारी', 'चार आने', 'चूक गई', 'आदमी का बच्चा', 'पुलिस की दफा', 'पुरुष धनवान', 'नारी

का सौन्दर्य', 'दूसरी नाक', 'जहाँ हद नहीं', 'दो मुँह की बात', 'हृदय', 'पराई', 'मजहब', 'शर्त', 'तीसरी चिता', 'प्रेम का सार', 'नीरस पथिक', 'समाज सेवा' और 'पहाड़ की स्मृति।' धार्मिक कथाओं के अंशो पर यशपाल जी ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से विचार कर पौराणिक और धार्मिक पात्रों के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विश्लेषण किया है। अपनी मान्यताओं के आधार पर इतिहास विश्रुत व्यक्तियों को भी उन्होंने यथार्थवादी रूप देने की चेष्टा की है। इस दृष्टिकोण से जिन उत्कृष्ट कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है उनमें मुख्य हैं—'शम्बूक', 'राजा', 'प्रायश्चित', 'दासधर्म', 'सत्य का मूल्य' और 'परलोक'।

यशपाल की कहानियों में ऐसे पात्रों को स्थान प्राप्त हुआ है जो आर्थिक संघर्ष और वर्गचेतना के प्रतीक हैं। मानवीय वृत्तियों के संघर्ष के धरातल पर उनकी प्रतिष्ठा की गयी है। 'पिंजड़े की उड़ान' शीर्षक सकलन की प्रायः सभी कहानियों के पात्र यथार्थ जीवन की समस्याओं से जूझते हुए अपनी व्यक्तिगत क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत करते है। प्रचलित मान्यताओं पर प्रहार करने के उद्देश्य से इन पात्रों द्वारा कर्मफल, परलोक-चिन्ता और तथाकथित कुलीनता के परम्परागत नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति व्यंग्य और तिरस्कार भी व्यक्त किया गया है। 'वो दुनिया' नामक संग्रह में समाज और व्यक्ति के संघर्ष को प्रधानता दी गयी है। नवयुवक और नवयुवतियों के व्यक्तित्व मे स्वच्छन्द वृत्तियों के विकास की ओर संकेत किया गया है। वर्णित पात्रों में पूजीपति भी हैं और सर्वहारा वर्ग के दीन-दरिद्र व्यक्ति भी। 'ज्ञानदान' शीर्षक कहानी संग्रह लेखक के घोर यथार्थवादी दृष्टिकोण का परिचायक है। मानव व्यक्तित्व को प्रेरित करने वाली प्रमुख मूल-प्रवृत्तियों का विश्लेषण कहानीकार ने स्पष्ट और प्रभावपूर्ण विधि से किया है। काम-वृत्ति, बुभुक्षा और अधिकार प्राप्ति ही इस संग्रह में आयी हुई कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व की आधारभूत स्थापनायें हैं जिनके माध्यम से जीवन की कठोर वास्तविकता अभिव्यक्त होती है।

'तर्क का तूफान' और 'भस्मावृत्त चिनगारियाँ' में भी पात्रों के चयन का आधार आर्थिक, नैतिक और प्रेम सम्बन्धी समस्याएँ ही हैं। 'अभिशप्त' समाज के निम्न मध्यम वर्ग तथा शोषित वर्ग के पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने वाली कलात्मक कहानियों को प्रस्तुत करता है। अपनी दमित वासनाओं के पाश में बंधकर मानव के व्यक्तित्व में जो असन्तुलन आ जाता है उसका विश्लेषण 'फूलों का कुर्ता' की कहानियों मे उत्कृष्ट और मनोवैज्ञानिक पद्धति से किया गया है। विभिन्न स्थितियों में इन पात्रो के मनोभावो का कुशलता के साथ निरूपण यशपाल की कहानी-रचना-शक्ति का परिचायक है। 'शम्बूक' कहानी में ऋषि ऋत्विक-वर्हि के व्यक्तित्व

का विश्लेषण करते हुए कहानीकार ने उनके उद्दाम पुत्र-प्रेम का निरूपण किया है। बाह्य कठोरता के अन्तर में स्नेह की अविरल धारा किस प्रकार प्रवाहित होती रहती है, इसका उदाहरण ऋषि का व्यक्तित्व है। शम्बूक को तपस्वी, साधक और दृढ़ निश्चय-व्रती के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यशपाल जी की अन्य श्रेष्ठ कहानियों में भी पात्रों के व्यक्तित्व को सतर्कता से विश्लेषित करने का प्रयास निहित है।

यशपाल की कहानियों के अधिकांश पात्र कथावस्तु को विकसित करते हुए स्वयं ही कहानी के प्रमुख तत्व बन जाते हैं। उनके चरित्र की विशेषताएँ सम्पूर्ण कहानी को आच्छादित करती हैं। कहानीकार पात्रों के मनोभावों का विश्लेषण करता हुआ उनके कार्य-व्यवहार तथा प्रतिक्रियाओं का यथातथ्य निरूपण करता है। संकेत, वार्तालाप, कार्य-व्यापार और वातावरण के वर्णन द्वारा उनके व्यक्तित्व का सहज गति से विश्लेषण होता रहता है। नवीन मूल्यों और मान्यताओं के आलोक में ही पात्रों के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है चाहे वे ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक कथावस्तु पर आधारित कहानी में आये हों अथवा समाज की वर्तमान समस्याओं से सम्बद्ध होकर कहानी के दृश्यपट पर अवतरित हुए हैं।

भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सुप्रसिद्ध कथाकार श्री भगवतीचरण वर्मा ने स्वतंत्र भाव-प्रकाशन को महत्व देते हुए आकर्षक कहानियों की रचना की है। उनकी प्रतिनिधि कहानियों के संकलन हैं 'दो बाँके' तथा 'इंस्टालमेण्ट'। समाज के अनेक रूपों का चित्रण करते हुए उन्होंने विविध वर्गों के पात्रों का व्यक्तित्व निरूपित किया है। उनकी कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का घटना अथवा कार्यव्यापार से अधिक महत्व दिया गया है। अधिकांश पात्र सुशिक्षित, सम्पन्न और उच्च सामाजिक स्थिति के हैं। उनके व्यक्तित्व को यथार्थ स्थितियों के मध्य विश्लेषित किया गया है। भारतीय समाज की स्थिति के नग्न-प्रदर्शन का साहस वर्मा जी में विद्यमान है। सामाजिक असंगतियों पर उनके पात्र निर्मम आघात करने की क्षमता से संयुक्त हैं। समाज के इतर वर्गों के पात्र भी अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण प्रमुख स्थान के अधिकारी बन गये हैं। उनके व्यक्तित्व में इतनी शक्ति है कि वे कथावस्तु को इच्छानुसार मोड़ देते तथा कहानी के उद्देश्य को भी प्रभावित करते हैं।

'दो पहलू' शीर्षक कहानी में सुशिक्षित महत्वाकांक्षी नवयुवक और भिखारी के व्यक्तित्व का समान कुशलता के साथ विश्लेषण किया गया है। 'प्रेजेंट्स' में आधुनिक सभ्यता के चकाचौंध में सदाचरण की महत्ता को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाले पात्र के व्यक्तित्व का व्यंग्य-प्रधान विश्लेषण है। 'दो बाँके' लखनऊ के वातावरण में

तथाकथित पहलवानों— शोहदों—के व्यक्तित्व का हास्यपरक विवेचन प्रस्तुत करने वाली कहानी है। 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' शीर्षक कहानी में 'हीरोजी' का व्यक्तित्व विचित्र आकर्षण के साथ उपस्थित किया गया है। 'अर्थपिचाश' लोभी व्यक्ति की दुर्दम संचय-प्रवृत्ति को विश्लेषित करती है। 'अनशन' कहानी में पाण्डेय की कपट-वृत्ति का रहस्योद्घाटन हुआ। 'लाला तिकड़मी लाल' यश प्राप्ति के लिये साहित्य में भी व्यापार वृत्ति ग्रहण करने वाले धनिक की मनोवृत्तियों का विश्लेषण करने वाली हास्यपरक कहानी है। 'विक्टोरिया क्रास' में एक सिपाही के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए उसकी वीरता का रहस्य बताते हुये कहानीकार ने उसके विक्टोरिया क्रास पाने की घटना का हास्यप्रधान वर्णन किया है। परिस्थितिवश उसकी कायरता पर वीरता का मुलम्मा चढ़ जाता है और वह श्रेष्ठ वीर के पारितोषिक का अधिकारी बन जाता है।

वर्मा जी ने पात्रों के आकार प्रकार का वर्णन उत्साहपूर्वक किया है और उनके व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का उद्घाटन भी कुशलतापूर्वक किया है। पात्रों के संवाद उनके व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों तथा अवगुणों की ओर संकेत प्रस्तुत करते रहते हैं। स्थिति अंकन में भी वर्मा जी ने सतर्क कहानीकार के दायित्व का निर्वाह किया है। उनके पात्रों में दमित वासनाएँ हैं जो अपने सृजनकर्ता की प्रेरणा से व्यक्त हो जाती हैं। स्वच्छन्द आचरण वर्मा जी के अधिकांश पात्रों की स्पष्टतः दृष्टिगत होनेवाली मुख्य विशेषता है। वैभवसम्पन्नता, स्वतन्त्र विचार-प्रकाशन और मुक्त आचरण का वर्णन उच्चवर्गीय पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिये आवश्यक रूप से प्रस्तुत किया गया है। पात्रों की वेशभूषा, उनकी स्थिति, योग्यता और व्यवहार के अनुकूल ही वर्णित की गयी हैं। कहीं-कहीं वर्मा जी ने वेशभूषा तथा आकृति का रेखांकन चित्रकार की भाँति किया है। 'रेल में' शीर्षक कहानी के इस प्रसंग में यह प्रवृत्ति स्पष्टतः अभिव्यक्त है :

'चेहरा गोल भरा हुआ और सुन्दर था। माथा नीचा, नाक सिरे पर गोल और आँखें चमकीली तथा छोटी-छोटी थी, जिन पर सोने की कमानी का चश्मा चढ़ा था। सर के बाल भी खिचड़ी थे, पर महीन कटे हुये। वे इकहरे बदन के हृष्ट-पुष्ट आदमी थे मझोले कद के। काशी सिल्क का कुरता और महीन किनारे की धोती पहने हुए थे'।[1]

पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए वर्मा जी कार्यकारण का सम्बन्ध

---

१ भगवतीचरण वर्मा, 'दो बाँके' (भारती भंडार, लीडर प्रेस प्रयाग) पृ० ३१।

अवश्य जुटा देते हैं। व्यक्त आचरणों का सूत्र अव्यक्त अन्तः प्रेरणा से स्वतः संयुक्त होता रहता है। जहाँ असामान्य व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है वहाँ वर्मा जी ने पात्रों के जीवन-दर्शन, संस्कार और उदात्त भावों का सूक्ष्म विवेचन भी कर दिया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

अश्क जी की साहित्य-साधना के महत्व तथा उनके द्वारा विश्लेषित आदर्शवादी पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर पूर्व प्रकरण में विचार किया जा चुका है। सन् १९३३ के पश्चात् उनकी कहानियाँ यथार्थ की आधार-भूमि पर उतरने लगीं। भावप्रवणता, आदर्शवादिता और कल्पनाशीलता से मुक्त होकर अश्क जी की कहानी जीवन के सत्यों और तथ्यों की अभिव्यंजना का महत्वपूर्ण उद्देश्य सम्पन्न करने लगी। समाज की विभिन्न स्थितियों में पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करते हुये अश्क जी ने जिन यथार्थवादी कहानियों की रचना की है उनमें मनोवैज्ञानिक विवेचन की सूक्ष्मता तथा कलात्मक वर्णन की विशेषताएँ देखी जा सकती है।

मानवीय प्रवृत्तियों तथा व्यवहारों का यथार्थवादी विवेचन करते हुये अश्क जी ने कई प्रकार के पात्रों को प्रस्तुत किया है। सामान्य जीवन को आधार मान कर जिन पात्रों के सहज व्यक्तित्व को सीधी वर्णन-रेखाओं से अंकित कर दिया गया है उनमें पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों के अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं। नौकर, किसान, श्रमिक तथा साधारण कार्यों में संलग्न पात्रों के व्यक्तित्व को स्वाभाविक गति के साथ विश्लेषण की परिधि में आने का अवसर दिया गया है। 'काले साहब' का रिक्शावाला सर्वहारा वर्ग का ऐसा सदस्य है जो अपनी करुणा और विवशता मे निरन्तर दबता जा रहा है। 'उबाल' का चन्दन मानसिक उत्तेजना की स्थिति से शारीरिक भूख की सन्तुष्टि की ओर किन स्थितियों में अग्रसर होता है, इस ओर कहानी कार ने सतर्क दृष्टि रखी है। उसकी तथाकथित दुर्बलता के पीछे काम भाव की मूल प्रवृत्ति को प्रेरक तत्त्व के रूप में सांकेतिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। 'बगूले' शीर्षक कहानी में दुल्ले का व्यक्तित्व बहुत ही सहज गति से विश्लेपित हुआ है। 'डाची' में बाकर की विवशता, वात्सल्य तथा मूक वेदना को बड़ी ही कुशलता से अंकित करते हुए कहानी-लेखक ने उसके व्यक्तित्व के प्रति पाठक वर्ग की संवेदना को उद्बुद्ध कर दिया है। 'तीन सौ चौबीस' शीर्षक कहानी में हैदर का अविस्मरणीय व्यक्तित्व अपनी अतिसामान्य किन्तु अत्यधिक प्रभावपूर्ण भूमिका के मध्य स्वाभाविक रूप में उभरा है। इस प्रकार के पात्र हमारे मन मे सहज ही स्थान बना लेते है और उनकी विवशता, करुणा, मूकवेदना और सामाजिक शोषण से संत्रस्त हृदय के भावों का अमिट प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को प्रधानता देकर अश्क जी ने कुछ ऐसे पात्रों की सृष्टि की है जो विशेष मनोभावों, वासनाओं, स्थितियों और सामाजिक समस्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'पिंजरा' में शान्ति की मनःस्थिति का अंकन करते हुये कहानीकार ने हमारे सामाजिक संस्कारों का तथ्यपूर्ण विश्लेषण किया है। गोमती के व्यक्तित्व का विश्लेषण भी यथार्थ सामाजिक स्थितियों के मध्य हुआ है। 'अंकुर' में शंकरी की अतृप्त इच्छा का संकेतात्मक चित्रण करते हुये कहानीकार ने उसके व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष का उत्कृष्ट अंकन किया है। सामाजिक परम्पराओं के दुष्प्रभाव से तथा विषम अवस्था के कारण सुरजीत और ईश्वर के व्यक्तित्व को जो महत्वपूर्ण क्रियाएं आन्दोलित करती हैं उनका सन्तुलित विश्लेषण 'नासूर' शीर्षक कहानी में हुआ है। 'बैंगन का पौधा' ऐसे वृद्ध पुरुष के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करता है जो समाज की आर्थिक विषमता का विवेकशील प्रत्यक्ष-दर्शी है। जिसकी दृष्टिपरिधि में बंगलों में विश्राम करने वाले वैभव-सम्पन्न व्यक्तियों की स्थिति और ठंड से ठिठुर कर मरने वाले निराश्रित वर्ग की स्थिति यथातथ्य रूप में स्थान बना लेती है और जो समाज की क्रूर विषमताओं पर तीव्र व्यंग्य प्रस्तुत करता है।

अश्क जी के सभी पात्रों के लिये किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचना या उसकी ओर संकेत व्यक्त करना आवश्यक है। व्यक्तिगत, सामाजिक अथवा परम्परागत समस्याओं के प्रकाश में पात्रों के व्यक्तित्व का तात्विक विश्लेषण इनकी कहानियो में हुआ है। जहाँ पात्र अधिक आत्म-केन्द्रित हैं वहाँ मनोविश्लेषण की सूक्ष्मता का समावेश हुआ है। जहाँ व्यंग्य और तीखी उक्तियों द्वारा किसी समस्या के विश्लेषण का प्रयास है वहाँ पात्र मुखर, क्रियाशील और तर्कशील बन गये हैं। तात्पर्य यह है कि अश्क जी की यथार्थवादी कहानियों में विविध प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उच्चस्तरीय रूप में उपलब्ध है।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

अपनी आकर्षक और सुरुचिपूर्ण कहानियो द्वारा श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने कई दशकों तक हिन्दी कहानी-साहित्य की श्रीवृद्धि की है। मानव जीवन की विविध समस्याओं पर भावप्रधान दृष्टिकोण से विचार करते हुए उन्होंने ऐसे अनेक अविस्मरणीय पात्रों की सृष्टि की है, जो भावुक, आदर्शवादी, कर्त्तव्यपरायण और संवेगजनित आचरण से प्रेरणा प्राप्त करने वाले हैं। मानव प्रेम की व्याख्या करते हुए जीवन के अनेक रूपों को इनकी कहानियों ने कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनकी प्रमुख कहानियों के संकलन हैं—'चन्द्रकला'[1], 'भय का

---

१. श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार—'चन्द्रकला', हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई।

राज्य'[1], 'अमावस'[2] तथा 'विवाह की कहानियाँ'[3]। इनमें सामाजिक, साहसिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कथानकों का आधार लेकर विभिन्न प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण किया गया है।

'बचपन' शीर्षक कहानी में कठोर-हृदय और क्रूरकर्मा आफताब के व्यक्तित्व का विश्लेषण करके उसकी असंस्कृत मूल प्रवृत्ति की ओर संकेत प्रस्तुत किया गया है। गुलशन का करुण-कोमल व्यक्तित्व शिशु-सुलभ संवेदनशीलता का निदर्शन उपस्थित करता है। 'पगली' शीर्षक कहानी में द्वेष, शत्रुता, कपट और संकीर्ण दृष्टिकोण के प्रतीक नवाब के व्यक्तित्व का अंकन जिस कुशलता के साथ किया है, उसी कुशलता का परिचय हरिहर शर्मा और फातिमा के सहज स्नेह-सूत्र में आबद्ध, उदारता से अलंकृत भावुक व्यक्तित्व के विश्लेषण में किया गया है। साम्प्रदायिक कटुता और दृष्टिकोण की संकीर्णता को व्यक्तित्व की गतिशीलता में बाधक बताया गया है। भारतीय पंडित के पुस्तक-प्रेम, ज्ञान-रक्षण और संस्कार-बद्धता का विश्लेषण करते हुये उसके व्यक्तित्व का निरूपण 'ताड़ का पत्ता' शीर्षक कहानी में किया गया है।

क्रान्तिकारी जीवन की कथावस्तु के आधार पर विद्यालंकार जी ने कर्मठ सिद्धान्तवादी तथा परम निर्भीक पात्रों के व्यक्तित्व की रचना की है। प्रेम और वासना को देश-हित तथा कर्त्तव्य-पालन के मार्ग में बाधक समझ कर ये पात्र इन प्रवृत्तियों से बचने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टिकोण से जिनके आचरण में दुर्बलता दिखाई देती है वे दण्ड के भागी बनते हैं। 'सन्देश' शीर्षक कहानी में क्रोपेट नामक पात्र के व्यक्तित्व को कहानीकार ने अपूर्व सफलता के साथ विश्लेषित किया है। ऐंजेलिन नाम की नारी की ओर सहजगति से आकृष्ट होने वाला क्रोपेट अन्तर्द्वन्द्व की गहराई में उतरने को विवश हो जाता है। क्रान्तिकारी दल के नायक और क्रोपेट एक विचित्र निर्णय की स्थिति में पहुँचते हैं। दोनों का दुखद अवसान बड़ा ही कारुणिक है। 'हूक' और 'भूत' शीर्षक कहानियों में भी राजनीतिक एवं क्रान्तिकारी पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है।

विद्यालंकार जी की अधिकांश कहानियों में पात्रों को सशक्त, मुक्त और गतिशील व्यक्तित्व प्रदान किया गया है। यद्यपि सभी पात्रों में यथार्थ से जूझने की शक्ति है तथापि आदर्श की उपेक्षा की प्रवृत्ति उनमें नहीं है। समाज की प्रचलित मान्यताओं पर प्रहार करने वाले पात्र भी सच्चरित्र और किसी न किसी आदर्श पर

---

१. श्री चन्द्र गुप्त विद्यालंकार— भय का राज्य', विश्व साहित्य ग्रन्थमाला, लाहौर।
२. ,, ,, —'अमावस' ,, ,,
३. ,, ,, —'विवाह की कहानियाँ' ,,

चलने वाले हैं। समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हुए भी वे अपने में पूर्ण तथा स्व-सत्तायुक्त प्रतीत होते है। समुचित परिस्थितियों का सृजन कर विद्या-लकार जी ने पात्रों के व्यक्तित्व को गतिशील होने का अवसर प्रदान किया है। पात्रों के मानसिक संघर्ष की भूमिका भी उनके व्यक्तित्व के विश्लेषण में योगदान प्रस्तुत करती है। उपयुक्त वातावरण का सृजन भी लेखक ने अधिकांश कहानियों में कुशलता पूर्वक किया है। भौतिक वातावरण और आन्तरिक वातावरण की रचना में समान अभिरुचि प्रदर्शित की गयी है। भावमूलक कहानी की सरसता, भाव-प्रवणता और सौन्दर्य-चेतना को अक्षुण्ण रखते हुए विद्यालंकार जी ने विभिन्न वर्गों के पात्रों के व्यक्तित्व में अपराजेय साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के विश्लेषण के लिये प्रत्यक्ष जीवन से प्रेरणा ग्रहण की है।

सियारामशरण गुप्त की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

कविवर सियाराम शरण गुप्त ने कहानी-रचना द्वारा समाज की विभिन्न समस्याओं के अंक में अनेक भावुक एवं आदर्शवादी पात्रों के व्यक्तित्व का सृजन किया है। उनके कार्य, व्यवहार, भाव, विचार तथा अन्तर्द्वन्द्व को भी विभिन्न प्रसगो मे सतर्कता से विश्लेषित किया है। इनकी कहानियों मे अधिकांश पात्र निम्न वर्ग अथवा सामान्य मध्यम वर्ग के हैं। प्रेम-प्रणय के विविध रूप भी इन पात्रों द्वारा व्यक्त होते है और आदर्श, त्याग, कर्त्तव्यपरायणता तथा सत्साहस का परिचय भी इन्ही के द्वारा प्राप्त होता है। गुप्त जी की कहानियों के दो संग्रह प्रकाशित हैं—'मानुषी'[1] और 'बोल'[2]। इनकी कतिपय कहानियाँ आत्मविश्लेषण-प्रधान निबन्धो के समान हैं।

'मानुषी' शीर्षक कहानी में नारी व्यक्तित्व का विश्लेषण भारतीय आदर्शों के आलोक में हुआ है। स्वामिभक्ति सम्पूर्ण श्रेय की प्रदायिका तथा श्रेष्ठतम उपलब्धि है। आदर्श को स्थापना द्वारा नारी-व्यक्तित्व की महत्ता को प्रतिष्ठित किया गया है। कहानीकार की भावुकता तथा आदर्शप्रियता उसके द्वारा सृजित पात्रो के व्यक्तित्व में अवतरित हैं। बाल-मनोविज्ञान पर आधारित विश्लेषण के सहारे 'त्याग' शीर्षक कहानी में एक बालक की उदात्त वृत्ति का चित्रण किया गया है। आदर्श पर सर्वस्व-समर्पण की प्रवृत्ति के पीछे केवल क्षणिक आवेश या उत्तेजना नहीं है, वरन् सुचिंतित विचार है। 'कोटर और कुटीर' में प्रतीकों के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है। चातक और स्वातिजल के प्रतीक मानव व्यक्तित्व के व्यंजक बन गये है। 'पथ में से' शीर्षक कहानी में पुत्र तथा

---

१. श्री सियाराम शरण गुप्त— 'मानुषी', साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी।
२ " " " — 'बोल' " "

माता के चिर-स्पृहणीय स्नेह-सम्बन्ध के आधार पर पुत्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है। मन को विचलित करने वाली परिस्थितियों से भी पुत्र माता की स्मृति के बल से पथभ्रष्ट नहीं होता। कहानीकार ने संस्कारजनित प्रवृत्ति की प्रबलता का विश्लेषण किया है। 'बैल की बिक्री' शीर्षक कहानी कृषक वर्ग के शोषित, प्रपीड़ित, व्यक्तित्व का भावग्राही रूप प्रस्तुत करती है। 'काकी', 'मुंशी जी' तथा 'झूठसच' शीर्षक कहानियों में पात्रों के मनोभावों के विश्लेषण की ओर कहानीकार की प्रवृत्ति अधिक है। गुप्त जी की कहानियों मे पात्रों के व्यक्तित्व का वही अंश विश्लेषित हुआ है जो कहानी की उद्देश्य-पूर्ति में सहायक है। सामान्य मनो-विश्लेषण की दृष्टि से इनकी रचनाएं पठनीय हैं।

सुमित्रानन्दन पन्त की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सुविख्यात कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत जीवन को लक्ष्य कर कतिपय भावपूर्ण कहानियों की रचना की है। इनकी कहानियो का संग्रह है—'पाँच कहानियाँ'[1]। इसमें 'पानवाला', 'दम्पत्ति,' 'बन्नू', 'उस बार' और 'अवगुठन' शीर्षक कहानियाँ संग्रहीत है। समाज तथा परिवार की परम्परागत मर्यादा का ध्यान रखते हुए पन्त जी ने प्रेम तथा प्रणय की कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियों के पात्र भावुक, सहनशील, कर्त्तव्यपरायण और उदार हैं। कहानीकार ने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव को अपने पात्रों पर अंकित कर दिया है। विभिन्न स्थितियों में कहानी के पात्र अपने सृजनकर्ता के भावों की अनुकृति प्रतीत होते हैं।

'पानवाला' शीर्षक कहानी में एक दुखित और आर्थिक-दुश्चिन्ता में ग्रस्त नवयुवक के व्यक्तित्व का विश्लेषण हुआ है। स्थिति-अंकन की कुशलता द्वारा कहानीकार ने उसके मनोभावों, प्रतिक्रियाओं और स्वभावजन्य विशेषताओं का अंकन किया है। 'दम्पत्ति' कहानी में पति और पत्नी के मनोभावों का विवेचन कर उनके प्रेम एवं प्रणय की स्थितियों में व्यक्तित्व-निरूपण का कार्य सम्पन्न किया गया है। इस कहानी मे पन्त जी का विश्लेषण विशेष भाव-प्रधान है। 'बन्नू' तथा 'उसबार' शीर्षक कहानियों में नवयुवक पात्रों की मन:स्थितियों का विवेचन करते हुये कहानीकार प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है। भावुक, कल्पनाशील नवयुवकों के व्यक्तित्व को स्वाभाविक गति से विकास का अवसर देकर उसका यथातथ्य विश्लेषण किया गया है। 'अवगुठन' शीर्षक कहानी में पात्रों का व्यक्तित्व रहस्य के झीने आवरण में ढँका हुआ है। पन्त जी ने कलात्मक स्वरूप प्रदान कर इस कहानी को आकर्षक बनाया है।

---

१ श्री सुमित्रानन्दन पन्त—'पाँच कहानियाँ', भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग।

कहानी के अन्त मे पात्रों के सम्बन्ध में पन्त जी की विश्लेषण शक्ति की उत्कृष्टता दृष्टिगत होती है ।

प्रकृतया कवि होने के कारण इनकी कहानियो में भावप्रवणता और दृश्य-चित्रण की विशेषताएं विद्यमान हैं। पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण भी कवि-दृष्टि से किया गया है। यद्यपि कथावस्तु का आधार प्रत्यक्ष जीवन है, तथापि पात्रों क स्वभाव, कार्य, व्यवहार एवं मनोभावों का विश्लेषण कल्पना और भावुकता के आधार पर हुआ है। पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य और आन्तरिक स्वरूप के निरूपण के लिये प्रसाद जी की काव्यात्मक शैली के अनुसरण का प्रयास किया गया है।

उदाहरणार्थ—

'सरला सार थी, रस थी, सुबोध उस प्रेम के मधुर फल का छिलका जिसमें सरला की मधुरता और रस स्वयं आ गया था।—सुबोध अनन्त शून्य था। वह प्रबल शक्ति, वह निश्चल कूलों की सहिष्णुता था, वह चंचल उद्वेलित धारा'।[1]

पन्त जी की कहानियों में घटनाओं की अपेक्षा पात्रो को अधिक महत्व दिया गया है और उनके व्यक्तित्व को सुरुचिपूर्णता के साथ विश्लेषित किया गया है ।

मोहनलाल महतो 'वियोगी' की कहानियों में व्यक्तित्व विश्लेषण

वियोगी जी ने कल्पना और भावुकता का आश्रय लेकर उत्कृष्ट कहानियों की रचना की है। सूक्ष्म तत्वों का विवेचन करते हुये वे पात्रो के व्यक्तित्व की गहराई मे उतरने का प्रयास भी करते हैं। काव्यात्मक सरसता से युक्त रचना-शैली अपना कर इन्होंने काल्पनिक भावुक पात्रों की अवतारणा की है और प्रत्यक्ष जीवन के सुपरिचित पात्रों के व्यक्तित्व का अंकन भी किया है।

'कवि' शीर्षक कहानी में कवि के व्यक्तित्व का विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण किया गया है। उसके मनोभाव विभिन्न युगो की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वियोगी जी ने कवि के व्यक्तित्व के अनुकूल काव्यात्मक भाषा का प्रयोग कर उसकी मनःस्थिति का कुशलता के साथ अंकन किया है। समाज, देश, परिस्थिति तथा युग-प्रभाव के विभिन्न रूपों को चित्रित कर उसके मध्य कवि के व्यक्तित्व के विश्लेषण का प्रयास हुआ है। 'वे बच्चे' माँ के वात्सल्यपूर्ण व्यक्तित्व की जीती-जागती कहानी है। व्यग्रतापूर्वक अपने बच्चों की प्रतीक्षा करती हुई माता किन संकल्प-विकल्प के जाल में उलझी है इसका वर्णन मार्मिक विधि से किया गया है। मातृ-स्नेह के चित्रण, स्वभावतः उद्वेलित वात्सल्य के विश्लेषण और प्रतीक्षाकुल नारी हृदय के तथ्यपूर्ण अंकन की दृष्टि से यह कहानी अत्युत्कृष्ट है। 'खोपड़ी' एक प्रतीकात्मक रचना है जो

१. श्री सुमित्रानन्दन पन्त', पाँच कहानियाँ 'पृ० ४१ ।

कहानी को जीवनगत सत्यों के आधार पर व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रेरणा देती है। 'कली' शीर्षक कहानी में संकेतों के माध्यम से मानवीय वृत्तियों की व्याख्या की गयी है। कली और पंछी ऐसे व्यक्तित्व के प्रतीक हैं जो युग और समाज की कठोर प्रतिक्रियाओं के आघात से निरन्तर प्रताड़ित और प्रपीड़ित है। एक नवयुवक का व्यक्तित्व इसमें विश्लेषित हुआ है। परिस्थितियाँ उसे फाँसी के तख्ते पर पहुँचाने वाली हैं। फाँसी मिलने से पाँच मिनट पूर्व उसे अपनी पत्नी से मिलने का अवसर दिया जाता है। अपने सौभाग्य से वंचित होने के लिये विवश नारी के करुण कोमल व्यक्तित्व का विश्लेषण कहानी में सतर्कता से किया है।

कमलाकान्त वर्मा की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

भाव-प्रधान कहानियों के रचयिता के रूप में श्री कमलाकान्त वर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है। जीवनगत सत्यों की व्याख्या करते हुए उन्होंने अपनी 'पगडण्डी' 'तकली' और 'खण्डहर' शीर्षक कहानियों में कल्पित पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। अमूर्त्त भावों और जड़ पदार्थों को मानव-रूप देकर उन्होंने अपनी सूक्ष्म-वस्तु-विवेचन शक्ति का परिचय दिया है। 'पगडण्डी', 'तकली' और 'खण्डहर' के मानवीकरण द्वारा उनमें सशक्त, गतिशील और प्रभविष्णु व्यक्तित्व की विशेषताओं का समन्वय किया गया है। मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठकर कहानीकार गम्भीर जीवन-दर्शन के क्षेत्र में प्रवेश करता है और उसकी कहानियों में प्रतीकात्मक भाषा के सहारे मानव-मनोभावों का विश्लेषण सुसम्बद्ध रूप में होता रहता है।

कलात्मकता की दृष्टि से वर्मा जी की कहानियाँ सर्वथा नवीन ढंग की हैं। व्यक्तित्व की विशेषताओं को प्रस्तुत करने के लिये आत्म-विश्लेषण को प्रधानता दी गयी है। प्रमुख व्यक्तित्व के चतुर्दिक समस्त कथा-चक्र प्रवर्तित होता रहता है। पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विवेचन का आधार ग्रहण किया गया है। सामान्य प्रवृतियों का विवेचन कर पात्र-विशेष के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की चेष्टा सभी कहानियों में दृष्टिगत होती है। पगडण्डी को नारी व्यक्तित्व की विशेषताओं से संयुक्त कर विभिन्न प्रसंगों में उसकी सामान्य प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। ऐसे स्थलों पर कहानीकार ने मनोवैज्ञानिक का स्थान ग्रहण कर लिया है। उदाहरणार्थ—

'स्त्री प्रेम से विह्वल हो जाती है और अपने उच्छ्वसित हृदय के उद्गारों को जब निरुद्ध नहीं कर पाती तब वह झगड़ा करती है। स्त्री का सबसे बड़ा बल है रोना उसकी सबसे बड़ी कला है झगड़ा करना। झगड़ा करके तिनकना, रूठ कर रोना, फिर दूसरे को रुलाकर मान जाना नारी हृदय का प्रियतम विषय है।"

१ श्री कमलाकान्त वर्मा—'पगडण्डी', 'हिन्दी कहानियाँ', पृ० १९५।

इस प्रकार मानवीय व्यक्तित्व की विशेषताओं का निरूपण तथा जीवनगत चिरन्तन सत्यो का विश्लेषण इन कहानियो में कुशलता के साथ हुआ है। कहानीकार का अपना व्यक्तित्व भी इन्हीं रचनाओं में प्रतिभासित होता है।

कमलादेवी चौधरी के कहानियो में व्यक्तित्व-विश्लेषण

समाज के विविध रूपों से कथावस्तु को ग्रहण कर कमला देवी ने ऐसे पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण अपनी आकर्षक कहानियों मे किया है जो हमारे चिर-परिचित है और मन के बहुत निकट प्रतीत होते है। परिवार, धर्म, जाति, सम्प्रदाय और वर्ग-विशेष से सम्बन्धित पात्रो के व्यक्तित्व का स्पष्ट और सीधा विश्लेषण इनकी कहानियों में प्राप्त होता है। सन् १६२३ से इन्होंने कहानी-रचना का कार्य कई दशकों तक किया है। इनके सुप्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं—उन्माद, पिकनिक, यात्रा और बेलपत्र। इन संकलनों में कमलादेवी की उन प्रतिनिधि कहानियों को स्थान प्राप्त हुआ है, जिनमे पात्रों के व्यक्तित्व को प्रधानता प्राप्त है। प्रेम, त्याग, आदर्श-रक्षण, मर्यादा-पालन और सामाजिक कुसंस्कारों के प्रति मार्मिक व्यंग्य को इन पात्रों से सम्बद्ध किया गया है। विभिन्न प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इनकी निम्नलिखित कहानियाँ विशेष रूप से विचारणीय हैं :—

'साधना का उन्माद', 'भिखमंगे की बिटिया', 'पागल', 'अमी की अभिलाषा', 'भ्रम', मेरी रानी', 'कर्कशा', 'प्रायश्चित', 'त्याग', 'आंखे खुलीं', 'स्वप्न', 'करुणा', 'वीणा', 'कर्त्तव्य', 'सुरिया', 'पतन' 'कन्यादान', 'गीता', 'कैलासा', 'पिकनिक', 'हार', 'बलिदान', 'अधूरा चित्र', 'पराजय', 'सुखिया', 'चित्रकार', 'मातृहीना' और 'रूपा'।

इनकी कहानियों के पात्र आदर्श और मर्यादित जीवन की ओर विशेष आकृष्ट हैं। जहाँ उनके भावो, विचारो और इच्छाओं के अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं प्राप्त होती है वहाँ वे दुखित होते, कष्ट सहन करते और भीतर ही भीतर जलते रहते है। प्रेम सम्बन्धों के सुखपूर्ण और दुखपूर्ण रूपो का स्पष्ट रुचि के साथ अंकन किया गया है। समाज के विभिन्न वर्गों से प्रेमी और प्रेमिकाओं के व्यक्तित्व उठाये गये है और उनका विश्लेषण यथार्थ स्थितियों में हुआ है। विधवा जीवन से सम्बन्धित कहानियों में एक ओर पवित्र आचरण वाली और दूसरी ओर दूषित चरित्र वाली विधवाओं के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। कहानी लेखिका ने विधवा के चरित्र-को कलंकपूर्ण बताकर उसके प्रायश्चित का विधान भी किया है। यह प्रायश्चित कहीं कहानी में मृत्यु का सूचक बन जाता है और कहीं पात्र विशेष को उन्माद की स्थिति तक पहुँचा देता है।

अछूतों के प्रति समाज की तिरस्कार और घृणा कितनी प्रबल है इसको आधार रूप में ग्रहण कर कमला देवी ने कतिपय मार्मिक कहानियों की रचना की है। 'पागल' शीर्षक कहानी में उच्च वर्ग के पात्र की हृदय हीनता का वर्णन कर कहानी-लेखिका ने एक ऐसा प्रतिनिधि व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है जो उच्चवर्गीय, रूढ़िगत दूषित परम्परा से सम्बन्धित, समाज का निन्दनीय रूप व्यक्त करता है। अछूत शिशु की चिकित्सा के लिये किसी भी प्रकार तैयार न होने वाले निष्ठुर वैद्य और पुत्र की मृत्यु हो जाने पर उन्मादग्रस्त होने वाले अछूत जाति के पिता के व्यक्तित्व को इस कहानी में मर्मस्पर्शी रूप में उपस्थित किया गया है। 'भिखमंगे की बिटिया' में भी अछूत वर्ग के प्रति सवर्णों की तिरस्कार भावना का भावपूर्ण निरूपण है। अछूत कन्या को मृत्यु की ओर ले जाने का दायित्व अहंकार एवं कुलीनता के अभिमान में डूबे उच्च वर्ग पर ही आ जाता है।

'त्याग' शीर्षक कहानी में सेवा में निरत रहने वाली पुत्री के व्यक्तित्व को आदर्शगुणों से समन्वित कर प्रस्तुत किया गया है। 'स्वप्न' में सुरीला और उसके पिता का व्यक्तित्व अंकित हुआ है। विधवा सुरीला से त्याग, सद्धर्मपालन और इन्द्रियदमन की आशा रखने वाले पिता के दुराचरण को सहज और स्वाभाविक स्थितियो के मध्य विश्लेषित किया गया है। 'कर्त्तव्य' और 'वीणा' शीर्षक कहानियाँ पति-पत्नी के सम्बन्धों के आधार पर विवाहित पुरुष और नारी के व्यक्तित्व को प्रेम और उपेक्षा की भूमिका में प्रस्तुत करती है। 'करुणा' और 'गीता' में भाभी-देवर के सम्बन्ध का विवेचन करते हुए विभिन्न स्थितियों में उनके प्रेम का चित्रण हुआ है।

पारिवारिक और सामाजिक समस्याओ के आलोक में कमलादेवी ने पात्रो के व्यक्तित्व का सोद्देश्य विश्लेषण किया है। प्रतिनिधि और व्यक्तिनिष्ठ पात्र समान रूप से यथार्थवादी भूमिका में प्रस्तुत किये गये हैं। उनकी कहानियों का लक्ष्य आदर्श प्रतिष्ठा है। पात्रों का व्यक्तित्व सम्पूर्ण कहानी को सुनिश्चित लक्ष्य की ओर गतिशील करता है। सभी उत्कृष्ट कहानियों में कहानी लेखिका की सूक्ष्म निरीक्षण और सन्तुलित विश्लेषण की शक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

उषादेवी मित्रा की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

श्रीमती उषादेवी मित्रा ने भारतीय समाज की अनेकानेक समस्याओ को प्रस्तुत करते हुए भावुक, आदर्शवादी और उत्सर्ग-प्रिय पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण आकर्षक शैली में अपनी विभिन्न प्रकार की कहानियों में किया है। गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित बहुत से विचारोत्तेजक प्रश्न इनकी रचनाओं में उभरे हैं। पुरुष और नारी पात्रों को प्रेम, विवाह, वैधव्य जीवन, रूपासक्ति और आदर्श-पालन को महत्वपूर्ण

भूमिकाओं में प्रस्तुत किया गया है। इनकी कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें निम्नलिखित विशेष प्रसिद्ध हैं :—

'आँधी के छन्द', 'नीम चमेली', 'पटधारी', 'महावर', मेघ-मल्लार' और 'रागिनी'।

सामाजिक कहानियों के अतिरिक्त कतिपय अन्य उत्कृष्ट कहानियों की रचना भी श्रीमती मिश्रा ने की है। उनमें भी पात्रों के व्यक्तित्व की प्रायः वे ही विशेषताएँ प्रकाश में आई है, जो सामाजिक कहानियों में प्रमुख रूप से वर्णित है, जैसे आदर्श प्रेम, त्याग, सहिष्णुता, मर्यादापालन आदि। ऐसी कहानियाँ राजनीतिक, धार्मिक, पौराणिक और सर्वथा काल्पनिक कथावस्तुओं पर आधारित हैं। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से इनकी महत्वपूर्ण कहानियों को निम्नलिखित वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है :—

(१) सामाजिक कहानियाँ—रहस्यमयी, उन्नीस सौ पैंतीस, रूप का मोह, ललिता की डायरी, पुतली जी उठ, मत्युंजयी, जीवन का एक दिन, रिक्ता, सुहाग की बिंदी, जीवन ज्वाला, बहताफूल, मन की देन, कल्पना की देन, अफीम का फूल और आह।

(२) धार्मिक और पौराणिक कहानियाँ—मन का यौवन और चातक।

(३) राजनीतिक कहानियाँ—देशभक्त, महान की पूजा और चम्मच भर आँसू।

(४) प्रतीकवादी काल्पनिक कहानियाँ—जातिस्मर, प्रथम छाया, कलाकार, बुलबुल और अतृप्त वासना।

उपर्युक्त कहानियो में पात्रों का चयन अनेक वर्गों और क्षेत्रों से किया गया है। उनमें प्रस्तुत समस्याओं के विश्लेषण के लिये पात्रों में उन्हीं विशेषताओं का आरोपण हुआ है जो समस्या के समाधान में सीधी सहायता प्रदान करती हैं। इस प्रकार कहानी लेखिका का व्यक्तित्व पात्रों के कार्य, व्यवहार, प्रभाव और लक्ष्य की दिशा को निश्चित करने वाला तत्व बन गया है। स्त्री मनोभावों का तात्विक विश्लेषण 'रहस्यमयी' शीर्षक कहानी में प्राप्त होता है। इसमें भी कहानी-लेखिका ने अपने आदर्श तथा सिद्धान्त का आरोपण पात्रों के व्यक्तित्व पर किया है। 'रूप का मोह' शारीरिक सौंदर्य के आकर्षण की प्रबलता को व्यंजित करने वाली कहानी है। सुनील को भावुक रूप पर आसक्त और निराश प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। रुक्मिणी को न पाकर वह मृत्यु का आलिंगन करता है। 'उन्नीस सौ पैंतीस में' नारी हृदय की विविध भावनाओं का भावपूर्ण अंकन हुआ है। पति के द्वारा उपेक्षिता नारी का जीवन कितना दुखमय होता है तथा परित्यक्ता होकर वह कितनी निराश्रिता, विपन्ना

और तिरस्कृता होती है इसका सांकेतिक विश्लेषण 'ललिता की डायरी' और 'पुतली जी उठ' शीर्षक कहानियों में प्राप्त होता है। दारिद्रय और नितान्त अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की असमर्थता नारी को पतन के मार्ग पर जाने के लिये विवश कर देता है इस तथ्य पर आधारित कहानी है 'जीवन का एक दिन'। 'बहता फूल' में समाज के अनय-चक्र में पिसने वाले पात्रों के मनोभावों का मार्मिक विश्लेषण है।

श्रीमती मिश्रा की कहानियों में नारी पात्रों के व्यक्तित्व का उत्कर्ष मुख्य रूप से दिखाया गया है। अधिकांश पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व में असंयम, असन्तुलन, उग्र वासना और तीव्र आसक्ति के तत्व विद्यमान हैं। जातिगत, वंशगत और सम्पन्नता से उद्भूत अभिमान उच्चवर्गीय पात्रों में जिस मिथ्या दम्भ का सृजन करता है उस पर कहानी लेखिका ने कठोर प्रहार किया है। समाज के कुसंस्कारों और कुरीतियों के पाश में आबद्ध नारी पात्रों की मूक करुणा और दयनीय स्थिति का अंकन बड़ी कुशलता से हुआ है। पुरुष पात्रों की विलासिता, स्वार्थान्धता और पाखण्डप्रियता की तीव्र व्यंजना उनके व्यक्तित्व के यथार्थ रूप को विश्लेपित कर देती है।

होमवती देवी की कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेषण

सामाजिक और पारिवारिक जीवन से सम्बद्ध विषयों पर होमवती देवी ने विचारपूर्ण कलात्मक कहानियों की रचना की है। इनकी कहानियों के संकलन हैं 'धरोहर' और 'स्वप्नभंग'। पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण की दृष्टि से अग्रलिखित कहानियाँ विशेष महत्वपूर्ण हैं :—

'अन्तिम सहारा', 'कहानी का अन्त', 'अन्तिम साथ', 'एप्रिलफूल', 'टी पार्टी 'स्पेशल परमिट', 'त्यागी जी', 'नया अंक', 'वारण्ट', और 'जीवनक्रम'।

निम्नवर्ग के शोषित और प्रपीड़ित सर्वहारा समुदाय के दुख और दयनीय दशा का इनकी कहानियों में मार्मिक चित्रण हुआ है। किसान और श्रमिक बुभुक्षा, रोग, अज्ञान और क्षुद्र सङ्घर्षों के आघात से व्यथित होकर कितनी चिंतनीय स्थिति तक पहुँच गये हैं, इसका उदाहरण इनके पात्र सफलता से प्रस्तुत करते हैं। विधवा-जीवन की समस्त करुणा और व्यथा को अपने अंक में लपेट कर अविस्मरणीय नारी-पात्र 'अंतिम सहारा' और 'कहानी का अन्त' शीर्षक कहानियों में अवतरित हुए हैं। कला की साधना में निरत भावुक और कल्पनाशील पात्र भी कठोर आर्थिक समस्याओं के आघात से विचलित हो जाते हैं। उनकी पारिवारिक और भौतिक आवश्यकताओं की ओर समाज उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। इस तथ्य के आलोक में 'वारण्ट', 'जीवनक्रम', 'विडम्बना' और 'नया अंक' शीर्षक कहानियों की रचना हुई है। इनमें श्रम-साधना में संलग्न पात्रों की मनोव्यथा का भी मार्मिक अंकन किया गया है।

होमवती जी की कहानियों के पात्र सीधे, सच्चे और बड़े बेचारे हैं। उनके जीवन की प्रतिष्ठा यथार्थ की भूमि पर हुई है। उनमें से अधिकांश समाज के अन्याय से दुखित और आकुल है। पात्रों के व्यक्तित्व को स्थितियों, घटनाओं और क्रियाओं द्वारा विश्लेषित किया गया है। कहानी लेखिका ने व्यंग्य और हास्य का प्रयोग कर अपनी विश्लेषण पद्धति को व्यंजनात्मक रूप दिया है। पात्रों के व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण अपेक्षाकृत अधिक उत्कृष्ट और मनोविज्ञान-सम्मत है।

उत्कर्षकाल की अन्य कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

हिंदी कहानी-साहित्य के उत्कर्ष काल में कुछ अन्य उल्लेखनीय कहानीकारों ने भी अपनी आकर्षक रचनाओं से हिंदी साहित्य के गौरव को विवर्द्धित किया। उनकी कहानियों में जीवन और जगत से सम्बद्ध विविध विषयों का समावेश हुआ है और परिणामतः विभिन्न प्रकार के पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण अनेक रूपों में हुआ है। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने कतिपय उत्कृष्ट कहानियों की रचना की है। 'वोल्गा से गंगा तक' और 'सतमी के बच्चे' उनके प्रसिद्ध कहानी संकलन हैं। कहानियों के पात्र विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों से लिये गये हैं। ईसा से ६००० वर्ष पूर्व से सन् १९४२ के आन्दोलन तक की विराट् आधारभूमि पर 'वोल्गा से गंगा तक' के पात्र प्रतिष्ठित किये गये हैं। कल्पना के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषतायें प्रस्तुत की गयी हैं। 'सतमी के बच्चे' शीर्षक कहानी में उन्नीसवीं शताब्दी की एक दरिद्रा अहीरनी की करुण कथा है। उसे तथा उसके बच्चों को कहानीकार ने बहुत ही मार्मिक ढङ्ग से कहानी के फलक पर प्रस्तुत किया है। भूख की विषम व्यथा अहीरनी के बच्चों की मृत्यु का कारण बनती है। यथार्थ के ही आधार पर 'पाठक जी' कहानी में पाठक जी की दैन्यावस्था का चित्रण कर उनके साहसी और उद्यमशील व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। 'पुजारी' में प्रगतिशील विचारों के समर्थक पात्रों के व्यक्तित्व का निरूपण है। अपने अनुभवों के आधार पर राहुल जी ने 'स्मृति ज्ञानकीर्ति' कहानी में विद्वान, कष्ट-सहिष्णु, धैर्यशाली, ज्ञान-साधक के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। तिब्बत में अनेक कष्टों का प्रसन्नता से सहन करने वाले महाज्ञानी पात्र के रूप में राहुल जी ने अपने ही व्यक्तित्व को प्रस्तुत कर दिया है।

हास्य और व्यंग को प्रधानता देते हुए जिन यशस्वी कहानीकारों ने समाज और देश की विभिन्न समस्याओं के साथ अनेक वर्गों के पात्रों को उपस्थित किया उनमें सर्वश्री जी० पी० श्रीवास्तव, अन्नपूर्णानन्द वर्मा, अमृतलाल नागर, हरिशंकर शर्मा और राधाकृष्ण का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्री जी० पी० श्रीवास्तव

हिन्दी साहित्य के विकासकाल से ही अपनी कहानियों द्वारा विनोदशील, व्यंग्य-प्रिय, हँसोड़ और परिहासप्रेमी पात्रों को अपनी सरस कहानियों में प्रस्तुत करने लगे। इनकी कहानियों के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। 'लम्बी दाढ़ी' और 'नोकझोंक' में उनकी प्रतिनिधि हास्य-कहानियाँ संग्रहीत हैं। 'लम्बी दाढ़ी' में एक मौलवी साहब तथा 'पण्डित जी' में संस्कृत विषय के अध्यापक के व्यक्तित्व का विश्लेषण हास्यपरक शैली में व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण से हुआ है। 'मास्टर साहब' और 'कालेज मैच' में क्रमशः एक अध्यापक और वृद्ध मुसलमान यात्री को पात्रों के रूप में ग्रहण कर उन्हें हास्य का आलम्बन बनाया गया है। 'काली मेम' में पाश्चात्य सभ्यता को सब कुछ मानने वाली एक भारतीय महिला के व्यक्तित्व को तीव्र व्यंग्यात्मक शैली में विश्लेषित किया गया है। 'श्रीमान चूलानन्द' एक ऐसे मूर्ख व्यक्ति को प्रमुख पात्र के रूप में उपस्थित करने वाली कहानी है जो अपने हास्यास्पद कार्यों से पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन करता है। श्रीवास्तव जी की कहानियों में पात्रों की मूर्खताओं और स्वभाव-जन्य दुर्बलताओं को ही चित्रित किया गया है। हास्य के माध्यम से मनोवृत्तियों की सूक्ष्म व्याख्या एवं व्यंग्य के माध्यम से कुसंस्कारों पर तीव्र प्रहार भी हो सकता है और उत्कृष्ट हास्य कहानियों की ये विशेषताएँ उन्हें चिरस्मरणीय बनाती हैं। परन्तु श्रीवास्तव जी की कहानियों में विश्लेषण की इस सूक्ष्मता का अभाव है।

श्री अन्नपूर्णानन्द वर्मा ने भी हास्यरस की कहानियों की रचना द्वारा अपनी कहानी-कला का परिचय दिया है। 'मंगल मोद', 'मगन रहु चोला', 'महाकवि चच्चा', 'मेरी हजामत' और 'कल की बात' उनकी हास्यपरक कहानियों के संकलन हैं। इनमें पात्रों की वेशभूषा, स्वभाव, परिस्थिति अथवा क्रिया की विचित्रता का वर्णन कर उनके व्यक्तित्व का व्यंग्यात्मक विश्लेषण किया गया है। श्री राधाकृष्ण ने जीवन के विविध क्षेत्रों से पात्रों का चयन कर उन्हें हास्यजनक स्थितियों में प्रस्तुत किया है। पात्रों का नामकरण भी इन्होंने अपने उद्देश्य के अनुकूल ही किया है, जैसे 'भामिनी भूषण', 'चापड़चंद्रम्' और 'श्रीयुत गोलमिर्च फोरनदास'। सामाजिक कुसंस्कारों और वर्तमान युग की प्रशासन सम्बन्धी दुर्बलताओं को लक्ष्य कर उन्होंने उपयुक्त पात्रों का सृजन किया है। श्री अमृतलाल नागर ने 'अकबरी लोटा' और 'प्याले में तूफान' जैसी उत्कृष्ट हास्य कहानियों की रचना कर ऐसे पात्रों को उपस्थित किया है जो शिष्ट और संयत हास्य को कलात्मक ढंग से व्यक्त करने में कुशल हैं। श्री हरिशंकर शर्मा ने समाज और व्यक्ति को समान रूप से अपने व्यंग्य एवं मर्यादित हास्य का लक्ष्य बनाया है। धार्मिक और नैतिक पाखंडों के प्रति तीव्र व्यंग्य करते हुए उन्होंने ऐसे पात्रों का सृजन किया है, जो हमारी वर्तमान अवस्था के विश्वसनीय प्रतीक हैं। पाश्चात्य सभ्यता के मोह और प्रगतिशीलता के नाम पर प्रचारित पाखण्ड को परिहास-परिधि

में लाकर उन्होंने स्वस्थ हास्य के प्रेरक पात्रों का व्यक्तित्व मनोरंजक ढङ्ग से विश्लेषित किया है।

उत्कर्षकालीन कहानी-साहित्य में साहसप्रधान कहानियों को भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। शिकार सम्बन्धी कहानियों की रचना करने वाले लेखक पं० श्रीराम शर्मा ने मनोरंजक, भावोत्तेजक और आकर्षक कथावस्तु के मध्य साहसी पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। कठिन परिस्थितियों में उनके धैर्य और तात्कालिक बुद्धि का सोत्साह वर्णन किया गया है। शेर, रीछ, सर्प और अन्य भयंकर हिंस्र जतुओं का सामना करने वाले वीर, साहसी और धैर्यशाली पात्रों की विशेषताओं का उद्घाटन समुचित परिस्थितियों की रचना द्वारा हुआ है। श्री रघुवीर सिंह की शिकार सम्बन्धी कहानियो में भी ऐसे पात्रों के व्यक्तित्व की प्रधानता है जो अपने बुद्धि-कौशल, साहसी, धैर्य और कार्यकुशलता का परिचय कठिन परिस्थितियों में देते रहते हैं। महंत धनराजपुरी और ठाकुर घनश्याम नारायण सिह ने भी साहसप्रधान कहानियों में इसी प्रकार के साहसी और कार्यकुशल पात्रो के व्यक्तित्व की विशेषताओं का कुशलता के साथ विश्लेषण किया है।

८

स्वातंत्र्योत्तर कहानी-साहित्य और उसमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों और रचनाओं के आधार पर

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी कहानी-साहित्य में पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण की दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों की बाढ़-सी आ गई है। उत्कर्षकाल में सर्वश्री जैनेन्द्र, अज्ञेय और जोशी ने मनोविश्लेषण और दार्शनिक चिन्तन की जिस परम्परा को प्रवर्तित और विकसित किया, उसे अनेक उपधाराओं में विभक्त कर जीवन की गहराई में प्रवेश करने योग्य क्षमता प्रदान कर कहानी को अपनी रचना-शक्ति द्वारा अलंकृत करने का श्रेय अनेक उत्कृष्ट और विचारशील कहानीकारों को प्राप्त है। इस युग में पुरानी पीढ़ी के विख्यात कहानी लेखकों ने भी नवीन विचारों और तथ्यों के आधार पर सशक्त रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। स्वतन्त्रता और उससे सम्बन्धित अनेक राष्ट्रीय समस्याओं ने कहानीकारों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। यह आवश्यक हो गया है कि कहानी के पात्रों के व्यक्तित्व में उन सभी तत्वों को प्रतिस्थापित और विश्लेषित किया जाय जो अब तक कहानीकार की दृष्टि में नहीं आ सके थे। राष्ट्र की विविध समस्याओं ने कहानीकार को व्यक्तित्व-विश्लेषण की नई आधारभूमि प्रदान की है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् समाज में बहुत से नये वर्ग उभरे हैं, विभिन्न सामाजिक संस्कार और परम्पराएं टूट कर बिखर गई हैं। आर्थिक धरातल पर नए प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। प्रजातन्त्रीय व्यवस्था ने शासक वर्ग में नवीन प्रश्नों और समस्याओं को प्रसरित होने का अवसर दिया है। जनता के खण्डित स्वप्न-चित्र स्वयं में ही बिखर कर और उलझ कर रह गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क न विविध प्रकार के व्यक्तियों को हमारे विचार, व्यवहार और भाव-क्षेत्र में उतार दिया है। इन सभी स्थितियों को ठीक से समझने और कुशलता से व्यक्त करने का प्रयास हिन्दी कहानी-साहित्य ने किया है। इनसे सम्बन्धित असंख्य पात्र कहानी की कथा-भूमि पर प्रतिष्ठित हुए हैं। उनके व्यक्तित्व का निरूपण और विश्लेषण करते हुए इस युग के कहानीकार ने युग-धर्म और युग-सत्य पर सतर्क दृष्टि रखी है।

समाज में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन कहानीकार का ध्यान आकृष्ट करते है। नई मान्यताएँ और स्थापनाएँ उसे चिन्तन और विश्लेषण की अभिनव शक्ति प्रदान करती हैं : राजनीति और आर्थिक परिस्थितियाँ उसकी रचना को नवीन दिशा-दृष्टि प्रदान करती है। हिन्दी कहानी-साहित्य में ऐसे अनेक यशस्वी कहानीकार इस युग में आए हैं जिनमें वर्तमान को सही दृष्टि से समझने और चित्रित करने की शक्ति है, जो अतीत को समझने की शक्ति रखते हैं और जो भविष्य की सम्भावनाओं से बेखबर नहीं हैं। पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क से भी इन कहानी-लेखकों ने शिल्प और विश्लेषण की प्रेरणा ग्रहण की है। राजनीतिक पृष्ठभूमि पर गान्धीवादी दर्शन से चलकर साम्यवादी विचारधारा तक आने की क्षमता आज के हिन्दी कहानीकार में विद्यमान है। अब तो वह व्यक्ति की गहराई में उतर कर उसके मानस का निरपेक्ष विश्लेषण करने लगा है। मनोविज्ञान की स्थापनाओं और उपयोगी निष्कर्षों का कहानी के क्षेत्र में व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। फ्रायड के यौन सिद्धान्तों से बहुत आगे बढ़कर सार्त्र और कामू के जीवन दर्शन तक कहानीकार की दृष्टि पहुँच चुकी है। कतिपय कहानीकारों की रचनाओं में आदर्शवाद और मानववाद अब भी नवीन आवरण धारण कर आकर्षक रूप में आगे आ रहे हैं। आंचलिक कहानियों का तो यही आविर्भाव, विकास और उत्कर्ष काल है। ग्राम्य-जीवन की न जाने कितनी समस्याएँ कहानी के द्वारा अभिव्यक्ति का वरदान प्राप्त कर रही हैं।

उपर्युक्त स्थितियों में मानव-व्यक्तित्व को देखने और समुचित ढंग से विश्लेषित करने का प्रयास जिन उत्कृष्ट कहानीकारों द्वारा हुआ है उनमें निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय हैं :—

सर्वश्री राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, अमरकान्त, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, लक्ष्मी नारायण लाल, निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती, फणीश्वर नाथ रेणु, भीष्म साहनी, मन्नू भण्डारी, नरेश मेहता, शैलेश मटियानी, कुलभूषण, शानी, प्रयाग शुक्ल, केशव प्रसाद मिश्र, स्वरूप ढौंढियाल, चन्द्रकिरण सौनरिक्शा, मधुकर, गंगाधर, कमलेश्वर, भैरव प्रसाद गुप्त, कृष्णा सोबती, शत्रुघ्न लाल, सुरेश सिन्हा, श्रीकान्त वर्मा, मनहर चौहान, हृदयेश, विष्णु प्रभाकर, अमृत राय, उषा प्रियंवदा, सोमावीरा, श्रीमती विजय चौहान आदि।

इन कहानीकारों ने पात्रों के व्यक्तित्व को विभिन्न प्रकार की स्थितितियों के बीच विश्लेषित किया है। मनोवैज्ञानिक तथ्यपरकता और कहानी के आकर्षण को समान महत्व देते हुए अधिकांश कहानीकारों ने व्यक्तित्व विश्लेषण का सन्तुलित रूप प्रस्तुत किया है। हिन्दी कहानीकारों ने युग-सत्य को पहचान कर उसके अनुरूप पात्रों का सृजन किया है परन्तु वे अपने अतीत से कटकर निष्प्राण भी होना

नहीं चाहते, इसलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् एक दशक तक कहानीकारों की आस्था प्राचीन मूल्यों में बनी रही। संस्कार, सुधार और परिवर्तन के नाम पर कहानी के क्षेत्र में बहुत से प्रयोग होते रहे। पाश्चात्य-कहानी-साहित्य ने जीवन दर्शन के तथ्य पूर्ण रूप को एक बार पुनः तीव्र प्रकाश के साथ हिन्दी कहानीकार के समक्ष रखा। विविध कठिनाइयों के अनुभव, रूढ़ियों की कठोरता और जीवन की पार्थिव आवश्यकताओं की अनुभूति ने कहानीकार को पूर्ण यथार्थवादी बनने के लिये विवश कर दिया। नवीन मान्यताएँ और स्थापनाएँ कहानी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित होने लगीं। जाग्रत और प्रबुद्ध कहानीकार ने सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती दी। विधि और निषेध का बन्धन तोड़ने के लिये प्रयत्नशील कहानीकार वर्तमान दशक के उत्तर मध्य-भाग तक पहुँच चुका है। उसकी कहानी में प्रतिष्ठित पात्र अपनी दृष्टि से सभी स्थितियों का निरीक्षण और परीक्षण करता है। जीवन के सम्बन्ध में उसकी निज की स्वतन्त्र विचारधारा है। उसके समक्ष नैतिकता भी एक सापेक्ष वस्तु रह गई है, जो स्थिति विशेष पर निर्भर करती है। धार्मिक मान्यताएँ तो कभी की खण्डित हो चुकी हैं। आर्थिक विषमता नए प्रश्नों को कहानी के संवेदनशील पात्र के समक्ष प्रस्तुत कर रही है। प्रेम और प्रणय की भूमिका में उतरने वाले विविधरूपी पात्रों में स्वतन्त्र वासनापूर्ति की तीव्र आकांक्षा विद्यमान है। आदर्श और परम्परागत निष्कर्ष अब निष्प्रभ और बहुत कुछ क्षीण से हो गये हैं। बदलती हुई परिस्थितियों के मध्य व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्वरूप भी तेजी से बदलता रहा है। कहानीकारों ने अपनी अनुभूति और कल्पना को पात्रों के व्यक्तित्व-सृजन के लिये सचाई के साथ प्रयुक्त किया है। यहाँ तक कि जो आधुनिकतम कहानीकार अपनी रचना को अकहानी के नाम से सम्बोधित करने में गर्व और गौरव का अनुभव करते हैं वे भी पात्रों के व्यक्तित्व को समुचित ढंग से विश्लेषित करना आवश्यक समझते हैं। विशेषतः कुण्ठाओं और दमित वासनाओं को उनकी व्यक्ति-प्रधान कहानियों में विश्लेषित होने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ है। कतिपय आलोचकों की ओर से यह आक्षेप भी प्रस्तुत किया गया है कि इन कहानियों में पात्रगत कुण्ठाओं और वर्जनाओं का ही प्राधान्य है। उदाहरण के लिये सुप्रसिद्ध चिन्तक श्री मन्मथनाथ गुप्त के तर्क पर विचार किया जा सकता है। 'मेरा सुचिन्तित विचार है कि जो कलाकार है वह कुण्ठा और विषाद से भी बहुत बढ़िया सामग्री प्रस्तुत कर सकता है, जैसा कि हुआ है। पाश्चात्य में हुआ है और यहाँ भी हुआ है पर केवल कुण्ठा को सर्वस्व बनाकर कोई साहित्य आगे नहीं बढ़ सकता।'[1]

श्री गुप्त के उपर्युक्त विचार में स्वयं ही प्रश्न का समाधान भी निहित है। यह

---

१ 'गल्प भारती', नवम्बर १९६६, पृ० ११५।

सत्य है कि कुण्ठा ही जीवन का सब कुछ नहीं है परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि वह आज के विषादग्रस्त जीवन का बहुत कुछ है। प्रत्येक वर्ग का टूटता हुआ व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व कुण्ठाओं और वर्जनाओं का शिकार है। श्री ओंकार ठाकुर ने बड़ी मार्मिकता से इस सम्बन्ध में अपना विचार प्रकट किया है। 'हम पर आरोप है कि कुण्ठा, रोष और अधैर्य आयातित है। यह एक बचकानी बात है। क्लर्क से लेकर राष्ट्रपति तक व्यथित और चिन्ताग्रस्त हैं। हमारी विवशता है कि हम कैनवास तैयार नहीं करते। सीधे लिखते जाते है। दिलचस्प वह न हो घटनात्मक भी न हो, हमारे जीवन का एक ऐटमी टुकड़ा तो है'?[1]

यथार्थ भी यही है कि कुण्ठा और तिक्तता आज के कहानी के पात्रों के व्यक्तित्व के अनिवार्य तत्व बन गए हैं। युग-सत्य के रूप में इन तत्वों का तथ्यपूर्ण विश्लेषण होना आवश्यक हो गया है।

पुरानी पीढ़ी के विख्यात कहानीकार अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं से आधुनिक हिन्दी कहानी-साहित्य को अलंकृत कर रहे है। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल और भगवतीचरण वर्मा अपनी नवीन रचनाओं के साथ कहानी के मंच पर बार-बार दिखाई पड़ रहे हैं। इनकी कहानियों में अत्याधुनिक समस्याओं और प्रश्नो को पकड़ने का आग्रह है। नवीन स्थिति के अनुकूल पात्रों को ढूंढ़ने की चेष्टा इनकी कहानियों में विद्यमान है। यद्यपि इनकी रचनाओं का समुचित स्वागत नहीं हो रहा है तथापि इनके प्रयास का व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से कम मूल्य नहीं है। पुरानी पीढ़ी के लेखक जीवन और जगत् की समस्याओं को सही दृष्टिकोण से देखने का प्रयास कर रहे हैं। यह सत्य है कि वे अपनी परम्परागत मान्यताओं और संस्कारों से सर्वथा मुक्त नही हो सके हैं परन्तु अपने को मोड़ने और युगानुकूल व्याख्या देने में वे प्रयत्न-शील अवश्य हैं। नया दृष्टिबोध पाकर नया कहानीकार जितनी सतर्कता से पात्रो के व्यक्तित्व को नये परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयत्न करता है उतनी ही कुशलता से अपनी मजी हुई लेखनी से पुरानी पीढ़ी का कहानीकार विविध ज्वलन्त प्रश्नों के समाधान को प्राप्त करने के लिये सक्षम पात्रों की सृष्टि करता है। पुरानी पीढी का शिल्प के दृष्टिकोण से नयी पीढ़ी से भले ही कोई विरोध हो कहानी के संवेद्य को उपयुक्त पात्रों के माध्यम से सचाई के साथ प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में इनमें कोई सक्षम विरोध नहीं है।

सन् १९४७ से १९६६ तक हिन्दी कहानी ने अपने जीवन के दो महत्वपूर्ण दशक पूरे किये हैं। इन वर्षों में कहानी के क्षेत्र में असंख्य नये विषयों का प्रवेश हुआ

---

१ वही- नवम्बर १९६६- पृ० १११।

है जिनमें से अधिकांश का अस्तित्व स्वतंत्रता के पूर्व नहीं था। पात्रों के चयन और उनके व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप मे भी पर्याप्त अन्तर दृष्टिगत होता है। समाज के उच्च वर्ग मे अनेक समस्याओ का प्रवेश हो गया है। भौतिक आवश्यकताओं से सम्बद्ध विविध प्रश्न सामने आए हैं। मध्यम वर्ग अधिक कुण्ठित, व्यथित और निराश हुआ है। आर्थिक कठिनाइयों ने उसके साहस और उत्साह को तोड़ दिया है। श्रमिक वर्ग तथा अन्य प्रकार के निम्नवर्गीय व्यक्ति नितान्त अनिवार्य आवश्यकताओ की पूर्ति मे असमर्थ है। विगत विश्व महायुद्ध ने व्यापक मँहगाई और असह्य दैन्य का जो अभिशाप समाज को दिया है उसका सबसे अधिक घनीभूत प्रभाव निम्न वर्ग पर ही परिलक्षित होता है। हिन्दी कहानी ने इन समस्त प्रश्नो को अपने अंक में समेटने का प्रयास किया है। हिन्दी कहानी में इन नगर-जीवन और ग्राम-जीवन की विविध समस्याएँ अपने समाधान की ओर अग्रसरित हुई हैं। पिछले दशक में यदि कहानी मे व्यापकता का गुण विद्यमान था तो वर्तमान दशक में वह सूक्ष्म विश्लेषण की ओर बढ़ने की क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत कर रही है। इन दो दशकों की हिन्दी कहानी-साहित्य की जो उपलब्धियां है उन्होने कहानी को लोकप्रिय और शक्तियुक्त विधा का गौरव प्रदान किया है।

व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से स्वातन्त्र्योत्तर काल की कहानियों को निम्न-लिखित वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है :—

(१) नगर-बोध की कहानियाँ
(२) अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर प्रस्तुत कहानियाँ
(३) आंचलिक कहानियाँ
(४) प्रतीकात्मक कहानियाँ
(५) सामाजिक समस्याओं से सम्बद्ध कहानियाँ
(६) पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों की नयी रचनाएँ
(७) कुण्ठित पात्र प्रधान कहानियाँ
(८) विविध प्रयोग और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

उपर्युक्त वर्गों में विवेच्य काल अधिकांश कहानियों का समाहार हो जाता है इनके अतिरिक्त ऐसी भी कहानियाँ उपलब्ध हैं जो किसी एक वर्ग में नही आती और जिनमें कथ्य या शिल्प के नये प्रयोग हैं। उपर्युक्त वर्गों में आने वाली प्रमुख कहानियों के कतिपय उदाहरण उनमें उपलब्ध व्यक्तित्व-विश्लेषण को समझने के उद्देश्य से आवश्यक रूप से दृष्टव्य हैं।

नगरबोध की कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

आधुनिक सभ्यता के नये परिवेश में नगरबोध का महत्व बढ़ता ही गया है। छोटे और बड़े नगरों में रहने वालों के जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण में बहुत बड़ा अन्तर दिखाई देने लगा है। जहाँ बड़े नगरों का व्यक्ति गांवों के जीवन से अपरिचित और सर्वथा असंपृक्त हो गया है और दूसरी ओर ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाले व्यक्ति भी नगर-जीवन को समझ पाने में असमर्थ है, वहीं पर उपनगरों अथवा कस्बों में रहने वाले व्यक्ति ग्राम और नगर के संधि-स्थल पर खड़े हैं। नगर में रहने वाला व्यक्ति अधिकाधिक स्वकेन्द्रित और आत्मलीन हो गया है। उसे पास-पड़ोस के व्यक्तियों से कोई सम्पर्क रखने की आवश्यकता का अनुभव नहीं होता। हिन्दी कहानी में नगर-जीवन की इन स्थितियों का यथा-तथ्य निरूपण करते हुए उनके मध्य ऐसे पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया है जो नगर-जीवन के विभिन्न अनुभवों के सच्चे प्रतीक हैं। नगरबोध में नैतिकता के बन्धन भी खण्डित हो गए हैं। सभ्यता के आवरण के भीतर नगर-जीवन में न जाने कितने कुकृत्य होते रहते हैं। असामाजिक एवं अनैतिक कृत्यों के प्रति ग्रामीण-अंचल में जो क्रोध सहज ही उफन पड़ता है उसका लघु अंश मात्र ही नगर-जीवन में विद्यमान है। विशेषत: भारत के महानगरों में किसी को इतना अवकाश नहीं है कि वह दूसरों के दु:ख-दर्द को समझने की चेष्टा करे। इस मनो-वृत्ति का हिन्दी कहानियो मे मार्मिक ढंग से विश्लेषण किया गया है।

समाज के कटे हुए अंश के रूप में नगरबोध से प्रभावित व्यक्ति की स्थिति विषम है। आधुनिक हिन्दी कहानीकार ने नगरबोध की कहानियों में वृद्ध, युवा और बालकों को समान कुशलता से चित्रित किया है। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न विव-शत: स्वार्थ-पोषण में निरत व्यक्तियों के कार्यों और प्रवृत्तियों को इस वर्ग की कहा-नियों में सतर्कता से विश्लेषित किया गया है। नगर जीवन के युवक और युवतियों के मनोभावों में कैसे परिवर्त्तन आ रहे हैं, इस पर भी कहानीकार की दृष्टि है। साहित्य और कला के क्षेत्र में घुस पड़ने के लिये आकुल धनपतियों की लिप्सा का रहस्योद्घाटन भी नगर जीवन के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

वर्त्तमान दशक के कहानीकार में इतना साहस आ गया है कि वह माता की उपेक्षा कर स्वार्थ में लीन रहने वाले पुत्र के व्यक्तित्व को विश्लेपित कर बता सके कि नगर-बोध ने दायित्व-बोध को कुचल दिया है, माता के स्नेह के प्रतिदान की ओर से आँखें मूँद ली हैं। आशंकाओं में जीने वाली और उसके पाश में बंधकर पति देवता को असहाय कर देने वाली नारी के हीनभावना-ग्रस्त व्यक्तित्व को भी नगर जीवन की सीमाओं में रखकर विश्लेषित किया गया है।

नगरबोध की देन है कि आज का मानव स्वार्थकेन्द्रित और यन्त्रवत् कार्य-लीन बने रहने को विवश हो गया है। एक ओर उच्च, साधन-सम्पन्न वर्ग प्रदर्शन, दम्भ और शान-शौकत के बोझ को उठाये गर्व के साथ यानों और वाहनों के साथ आगे आ रहा है, तो दूसरी ओर मध्यम वर्ग झूठी सौम्यताओं और परम्परा के बन्धन में जकड़ा, अर्थाभाव से पीड़ित, अन्याय को दस चार सह लेने के लिये विवश हो रहा है। और सबसे अधिक दयनीय स्थिति है नगरों में किसी प्रकार साँस लेने वाले श्रमिकों, साधारण स्तर के व्यापारियों, क्लर्कों और अन्य निम्नवर्गीय व्यक्तियों की विचित्रता यह है कि नगर जीवन का मोह सब मे व्याप्त है। कोई भी नगर से टूटकर गाँव की धरती पर नहीं जाना चाहता। बल्कि गाँव ही उजड़ कर नगरों के अंक में बसते जा रहे हैं।

हिन्दी का सजग कहानीकार इन प्रवृत्तियों पर ध्यान केन्द्रित करता हुआ ऐसे पात्रों को अपनी सशक्त रचनाओं द्वारा प्रकाश में ला रहा है, जो नगरबोध के प्रतीक हैं। कतिपय उदाहरण इस तथ्य को परिपुष्ट करेंगे कि नगरबोध से सम्बद्ध हिन्दी कहानियों में व्यापकता और गहराई दोनों विशेषताएँ विद्यमान हैं।

'संधि विच्छेद' में राजकमल चौधरी ने 'संपति' नाम की युवती को नगर-जीवन के एक विशिष्ट प्रतीक के रूप मे प्रस्तुत किया है। अपनी खुदगर्ज माँ को वह तभी तक प्रिय है जब तक रुपये देने की उसमे क्षमता है। संपति कुढ़ती है और उसकी नीयत डगमगाती है और एक आवेश में वह परिवार से अपना सम्बन्ध तोड़ने का निश्चय करती है। नौकरी में लगी लड़कियों के जीवन का यहाँ एक तथ्यपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उसके मन में विद्रोह उफनता है—पाम बाबू के प्रति, दफ्तर के बड़े बाबू के प्रति, और सबसे अधिक अपनी स्वार्थी माँ के प्रति। इस कहानी मे विवश युवती के मनोभावों का उत्कृष्ट अंकन हुआ है।

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरिक्सा की 'पैसे की अम्मा'[1] में पैसे के बल पर साहित्य और संगीत के क्षेत्र में धाक जमाने वाले सेठों की यश-लालसा पर तीव्र आघात है। कहानी लेखिका का संवेद्य अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। उस्ताद खाँ का कथन है, :—

'साले ...... काठ के उल्लू संगीत के पारखी बनेंगे। पर करें क्या, साली पैसे की अम्मा सदा पहाड़ चढ़ जाती है'।[2]

पैसे के बल पर बड़ी-बड़ी पुस्तकों के प्रणेता और संगीत के पारखी बनने वाले सेठ छिद्देश्वरी के व्यक्तित्व के माध्यम से लेखिका ने उस वर्ग पर ही आक्रमण कर

---

१. 'सारिका', जुलाई १९६४।
२. वही, पृ० २७।

दिया है जो कला को धन से खरीदने और कलामर्मज्ञ कहलाने को आतुर ही नहीं वरन् किसी अंश तक इस प्रयास में सफल भी हैं।

गंगा प्रसाद विमल का 'विध्वंस'[1] साहित्य, राजनीति और दर्शन की गुत्थियों को सुलझाने वाले एक आत्मविश्लेषण-रत कलाकार के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने वाली कहानी है। उसके चतुर्दिक् विभिन्न सन्दर्भ बिखरे हैं, वह नगर जीवन के विविध पक्षों पर दृष्टि डालता है। समाज की उपेक्षा एवं तिरस्कार का शिकार बन जाने वाला पात्र कहानी के दृश्यफलक पर बड़ी कुशलता से उतारा गया है।

मायागुप्त ने 'एक कमजोर आदमी'[2] में 'राजू' के व्यक्तित्व को सधी रेखाओं से अंकित किया है। उसमें आत्मपीड़न और आत्मगोपन के भाव बार-बार उद्वेलित होते रहते हैं। रमेन्द्र की पत्नी कृष्णा के समक्ष वह अपनी हीन-मनोवृत्ति के कारण दबा-सा रहता है। रमेन्द्र की आकस्मिक मृत्यु 'राजू' को और उलझन में डाल देती है। जब कृष्णा अपने दिवंगत पति का स्मरण करती हुई 'राजू' के भावों की ओर ध्यान भी नहीं देती तो उसकी संचित आशायें धूल में मिल जाती हैं। कृष्णा के प्रति उसके मन में सम्वेदना और स्नेह के मनोभाव उफन पड़ते हैं, जब वह 'राजू दा' कहकर सम्बोधित करती है। कहानी का अन्त भावपरिवर्तन का संकेत प्रस्तुत करता है।

शान्ति मेहरोत्रा ने 'टूटती कड़ियाँ'[3] में उच्च पद प्राप्त कर माँ को महत्व न देने वाले स्वार्थी पुत्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। माँ का स्नेह, वात्सल्य, ममत्व सब कुछ कुंठित हो जाता है जब वह पुत्र की उपेक्षा का शिकार बन जाती है। अपने पुत्र को देखने की प्रबल आकांक्षा से माँ उसके निवास तक किसी प्रकार पहुँचती है। परन्तु पुत्र तो एकदम बदल गया है। ऐसा कि—

'वह आया। पैर नहीं छुए, गले से नहीं लगा, मुसकराकर पैंट की क्रीज ठीक करता हुआ सामने की एक कुरसी पर बैठ गया। और बोला—

'तुमने आने के बारे में पहले से कुछ नहीं लिखा माँ कैसे आ गयीं? कुछ काम था इधर?'

माँ की ममता जड़, कुंठित और व्यर्थ न हो, यह कैसे सम्भव था।

ममता अग्रवाल की 'बेजान शहर—खूबसूरत कैद' नारी के शंकालु, ईर्ष्याग्रस्त और पति को दूसरी स्त्रियों की दृष्टि से बचा छिपाकर रखने की संकीर्ण भावनाओं

---

१. 'नई कहानियाँ', मार्च, १९६५।
२. 'सारिका', फरवरी, १९६६।
३. 'सारिका', मार्च', १९६४।

पर तीव्र आघात करने वाली उत्कृष्ट कहानी है। पति विवश है, दीन और असहाय है. अपनी पत्नी दिव्या की दिव्य (?) शंकाओं के समक्ष। उसी के शब्दो में :—

'कुंजड़िन—पड़ोसिन—महज इन्हीं के खिलाफ मोर्चा नहीं है दिव्या का। जडजीवित नारी के हर रूप को वह मेरे लिये निषिद्ध बना देना चाहती है। उसके साथ सिनेमा में मैं फ़िल्मी सितारों की तारीफ नहीं कर सकता और आस-पास बैठी किसी स्त्री का जूड़ा-साड़ी नहीं देख सकता। ऐसे अवसरों पर मुझे आज्ञाकारी बालक की तरह अनुशासित होना पड़ता है।'[1]

'भाई साहब'[2] शीर्षक कहानी में कुलदीप सिंह ने पाश्चात्य सभ्यता का खोल ओढ कर इतराने वाले, अंग्रेजी के दैनिक व्यवहार तथा शिष्टाचार सम्बन्धी शब्दों को बलपूर्वक अपने बच्चों के गले के नीचे उतारने के लिये सतत आग्रहशील 'भाई साहब' और 'भाभी साहिबा' के व्यक्तित्व का तीव्र व्यंजनापूर्ण विश्लेषण किया है। नागरिक जीवन और सभ्यता के नाम पर जो अराष्ट्रीय भावना एवं अन्धानुकरण की प्रवृत्ति उच्चवर्गीय व्यक्तियों के मन में घर बनाती जा रही है, उसका विश्लेषण सांकेतिक रूप से प्रस्तुत कहानी में किया गया है। भाषा, रहन-सहन के ढग, शिष्टाचार के आदर्शों को पश्चिम से ही ग्रहण कर लेने की मनोवृत्ति पर तीखा और सूक्ष्म व्यंग्य भी इस रचना में निहित है।

कमलेश्वर ने 'पराया शहर'[3] में सुखवीर और उसके पिता दुर्गादयाल को ऐसे पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया है जो मध्यवर्गीय वासनाओं और अदम्य प्रवृत्तियों के अग्रदूत है, और जो अपने पूर्वअर्जित विचारों से मुक्त नही हो पाते। सुखवीर पिता के स्वभाव और आचरण से दुःखी होते हुए भी उसके प्रति विरक्त नहीं हो पाता। दुर्गादयाल में अपने कस्बे के प्रति विचित्र मोह है। जीवन की अनेक आपदायें दुर्गादयाल और सुखवीर को एक दूसरे के निकट लाती है, परन्तु दुर्गादयाल अपने कस्बे को छोड़ने को किसी मूल्य पर तैयार नहीं होता।

कृष्णा अग्निहोत्री ने 'अबोध पीड़ा'[4] शीर्षक कहानी में नगर के दमघोटू वातावरण में डूबते-उतराते शिशु पात्र के व्यक्तित्व का कुशलता के साथ विश्लेषण किया है। कृत्रिम शिष्टाचार प्रदर्शन और आडम्बरपूर्ण व्यवहार की परतों को तोड़कर उपर

---

१. 'कादम्बिनी', फरवरी, १९६४।

२. 'कादम्बिनी', जनवरी, १९६४।

३. 'केन्द्र', मार्च, १९६४।

४. 'कादम्बिनी', मई, १९६७।

आने के लिये आकुल बालिका 'पम्मी' के विकसनशील व्यक्तित्व को कहानी लेखिका ने यथार्थ स्थितियो के मध्य अंकित किया है ।

सुदर्शन चोपड़ा ने 'ऊब'[1] शीर्षक कहानी में 'ताऊ' के रूप में एक कठोर-कर्मा, उदार किन्तु स्वाभिमानी वृद्ध के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है । अपने परिवार से कट कर वह एकान्त जीवन बिताने का अभ्यास तो करता है परन्तु उसके अन्तर मे पारिवारिक सम्बन्धों का मोह पूर्ण वेग के साथ अवसर पाते ही उमड़ने लगता है । जब भावावेग में उसके घर के सदस्य उसके निवास स्थान पर जाते हैं तो उसकी भावना-ग्रन्थि सुलझने लगती है । कहानीकार के शब्दों मे :—

'अपने सारे घिरावो और बन्धनों के बावजूद ताऊ के पोर पोर में आज एक अजनबी पुलक थिरक आई थी '।[2]

अपने बन्धनों को तोड़ कर वह अपने परिवार में दूध-पानी की तरह मिल जाता है । मानवीय दुर्बलताओं का चित्रण भी इस कहानी की एक मुख्य विशेषता है । नगर-जीवन के मध्यवर्गीय पात्रो की मन:स्थिति के तथ्यपरक विश्लेषण की दृष्टि से इस रचना का अपना विशिष्ट महत्व है ।

अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर प्रस्तुत कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण—

कतिपय हिन्दी कहानी लेखकों और लेखिकाओं ने अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर पात्रों का चयनकर महत्वपूर्ण कहानियों की रचना की है । उषा प्रियंवदा, शरद जोशी, सोमावीरा, निर्मल वर्मा और मनहर चौहान ने इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया है । केवल पाश्चात्य या भारतेतर देशों के व्यक्तियों और स्थानों का नाम लेने से ही पात्रो के व्यक्तित्व विश्लेषण का उद्देश्य इस प्रकार की कहानियों में पूर्ण नहीं हो जाता, वरन् इसके लिये पात्रों के सस्कारों, भावों एवं प्रतिक्रियाओं के मूल तक जाने की आवश्यकता पड़ती है ।

इस प्रकार की कहानियाँ लिखने वाले अधिकांश कहानीकारों के पास विदेशो से प्राप्त अनुभव संचित हैं, अतएव उनके वर्णन में विश्वसनीयता है । पात्रों से व्यक्तित्व-विश्लेषण के अन्तर में प्रवेश करते हुए वे सहज, सम्भव और मनोविज्ञान-सम्मत कलात्मक अंकन को प्रश्रय देते हैं । यद्यपि बहुचर्चित कथाकार 'निर्मल वर्मा' भी 'लन्दन की एक रात' जैसी समर्थ कृति में कहीं-कहीं शराबों और होटलों के वर्णन में बुरी तरह उलझ कर पात्रों के प्रति विश्लेषण द्वारा न्याय देने में चूक गये हैं, तथापि उनकी रचनाओं ने इस प्रकार की कहानियों की परम्परा को आगे बढ़ाया है ।

---

१. 'नई कहानियाँ', नवम्बर, १९६६ ।'

२. 'नई कहानियाँ', फरवरी. १९६५ ।

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और व्यक्तिगत मान्यताओं का विश्लेषण करते हुए कहानीकार के लिये अन्य देशों की संस्कृति, रीति-रिवाज और रहन-सहन को समझना बहुत आवश्यक हो जाता है। तभी वह पात्रोचित व्यवस्था देकर कहानी का सन्तुलन सँभाल पाता है। वर्तमान दशक में जो अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर लिखी कहानियाँ प्रकाश में आई हैं उनमें से कुछ प्रस्तुत प्रसंग में विवेच्य हैं। देखना यह भी आवश्यक है कि उनमें किस प्रकार के पात्र आये हैं और उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण किस प्रकार हुआ है।

सोमावीरा की कहानी 'असली तस्वीर'[1] में कला पारखी और भावावेग में नैतिकता की सीमा का अतिक्रमण करने वाले पात्र 'बिगचीफ' और 'ब्लैक मस्टश' अन्तर्राष्ट्रीय भाव और व्यवहार की आधारभूमि पर प्रतिष्ठित किये गये हैं। 'बिगचीफ' विभिन्न परिस्थितियों से गुजरता हुआ एक विशेष प्रकार का व्यक्तित्व प्राप्त करता है जिसमें उद्दाम क्रोध, गहरे स्नेह और पुरुषोचित ललकार का अद्भुत समन्वय है। एलफीरा बिगचीफ की पत्नी ही नहीं पाश्चात्य सभ्यता के अनिश्चय की ओर ढकेलने वाले पराश्रित जीवन का प्रतीक भी है। भारतीय लेखिका ने पाश्चात्य सभ्यता में जन्मे, पले और विकसित पात्रों के व्यक्तित्व को अपूर्व सफलता के साथ विश्लेषित किया है।

'गाउन'[2] में गिरिराजकिशोर ने 'काली' और 'सुनीता' में अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर विकसित नारी मनोभावों के पार्थक्य का आकर्षक ढंग से विश्लेषण किया है। राजकुमार के व्यक्तित्व में पूर्व और पश्चिम को जोड़ने की आकुलता और आग्रह का चरम उत्कर्ष है। तटस्थ दर्शक की स्थिति में मि० बागची को चित्रित किया गया है। भारतीय परिवारों के टूटते सम्बन्धों को लेखक ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। उन्हीं के बीच शहरी जीवन में व्याप्त स्वार्थपरता के बखिये भी उधेड़े गये हैं। सुनीता देवी के व्यक्तित्व में अन्तर्विरोध भी बड़ी सतर्कता से विश्लेषित किया गया है।

'सोमावीरा' ने अमेरिकी वतावरण में भारतीय संस्कारों से लिपटे हुए भावुक नारी पात्रों को उतनी ही कुशलता से स्वार्थ, दम्भ और पदोन्नति के लोभ में आकण्ठ डूबे हुए भारतीय पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व के प्रच्छन्न रूप का उद्घाटन किया है। 'दो तारों का आकाश,'[3] की 'सवि' और 'शर्मा जी' इन दो वर्गों के दो प्रतिनिधि पात्र हैं।

उषा प्रियंवदा की 'अध्यापक'[4] शीर्षक कहानी में अमेरिकी छात्रा 'तान्या' जो

---

१. 'नई कहानियाँ', फरवरी, १९६५, पृ० २८।

२. 'नई कहानियाँ' —नवम्बर, १९६६।

३. 'ज्ञानोदय' —जून, १९६५।

४ 'नई कहानियाँ' —जून, १९६५।

हिन्दी सीखने भारत में आई है, और हिन्दी अध्यापक 'पाण्डेय' के व्यक्तित्व को अत्याधुनिक परिस्थितियो के मध्य विश्लेषित किया गया है। तान्या के स्वभाव, संस्कार और व्यवहार का कहानी लेखिका ने सांकेतिक किन्तु आकर्षक वर्णन किया है। पाण्डेय की प्रवृत्तियों का अधिक गहराई से विश्लेषण किया गया है। अन्त: प्रेरणा से परिचलित पाण्डेय के व्यक्तित्व की कई असंगतियों का ताल-मेल बैठाने में लेखिका को प्रशंसनीय सफलता प्राप्त हुई है।

सोमावीरा की 'ठंडी आंखे'[1] न्यूयार्क के व्यस्त जीवन के एक अंश को पकड़ कर उसी के मध्य जार्ज जैसे सहृदय होनहार और उदार बालक के व्यक्तित्व को सामने रख देती है। जिज्ञासा, उत्सुकता और स्नेह पाने का आग्रह, उसके व्यक्तित्व में बार-बार उभरता है। अंकिल हरबर्ट में उसकी आत्मा समाधान पाती है। उसकी आत्मविश्वास-युक्त आशावादिता का विश्लेषण कहानी लेखिका ने सांकेतिक ढग से किया है।

'हिटलर और आन्चू तम्बाकूवाला'[2] शीर्षक कहानी में शरद जोशी ने हिटलर और आन्चू के व्यक्तित्व को काल्पनिक कथा भूमि का आधार लेकर विश्लेषित किया है। कहानीकार ने ऐतिहासिक तथ्यों को सँभालते हुए पात्रों की दुर्बलताओं और विशेषताओं को बड़ी सतर्कता से प्रस्तुत किया है। गुप्त-क्लब की कल्पना ने कहानी के सन्तुलन को ठीक रखने मे सहायता दी है। फ्रंज, आदमेर और आन्चू एक दूसरे के चरित्र विकास में अपनी विरोधी प्रवृत्तियों द्वारा सहायता प्रदान करते हैं। आंचू का धैर्य और सहनशीलता कहानी के सूक्ष्म व्यंग्य पर आधारित हैं।

आंचलिक कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

यशस्वी कहानीकार श्री प्रेमचन्द ने ग्राम-कहानियाँ लिखकर हिन्दी कहानीकारों का ध्यान ग्राम-समस्याओं की ओर आकृष्ट किया था। परन्तु उनकी ग्राम-कहानियो में इतनी व्यापकता थी कि वे भारत के किसी प्रदेश से अपना संबंध जोड़ सकती थी। स्वातन्त्र्योत्तर काल में आंचलिक कहानी के नाम से एक स्वतन्त्र रचना-शैली का उद्-भव और विकास हुआ है। उसके प्रभाव-क्षेत्र का अपूर्व गति के साथ विस्तार हुआ है। यह कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ रेणु आंचलिक कथा-प्रवृत्तियों के अग्रदूत हैं। क्योंकि सर्वप्रथम उन्हीं की रचनाओं में आंचलिक कथा की आकर्षक और तथ्य-महत्वपूर्ण विशेषताओं का सन्तुलित नियोजन दृष्टिगत हुआ।

भारत के विभिन्न अंचलों की अपनी समस्याएँ हैं अपने रीति-रिवाज एवं

---

१ 'केन्द्र', सितम्बर, १९६४।

२ 'सागरिका', जनवरी, १९६३।

आस्थाएँ, मान्यताएँ हैं। उनके चित्रण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व को सही ढंग से उन्हीं के भावव्यंजक शब्दों की लपेट में प्रस्तुत करने की कुशलता वर्तमान काल की एक महत्त्व-पूर्ण माँग थी। आंचलिक कहानीकारों ने इस आवश्यकता की पूर्ति का साहस दिखलाया है। गाँवों के निरीह पात्रों को वाणी मिली है और जिस परम्परा से हम कटते जा रहे थे उससे कम से कम मानसिक सम्बन्ध जोड़ने का चिरप्रतीक्षित अवसर प्राप्त हुआ है। नगर जीवन से दूर इन उपेक्षित अंचलों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय जिन उल्लेखनीय कहानीकारों को प्राप्त है उनमें रेणु, शिवप्रसाद सिंह, नागार्जुन, अवधनारायण सिंह, शैलेश मटियानी, केशव प्रसाद सिंह, हृदयेश, नीलकान्त, मार्कण्डेय, शेखर, जोशी, परदेशी, ठाकुर प्रसाद सिंह, हर्षनाथ, भैरव प्रसाद गुप्त एवं लक्ष्मीनारायण लाल हैं।

इन कहानीकारों ने आंचलिक कहानियों के माध्यम से भारत के सच्चे विश्वसनीय पात्रों को प्रस्तुत किया है। उनके पात्रों में नगर जीवन की जटिलता नहीं है, किंतु ग्रामजीवन की समस्याओं का प्रभाव अवश्य है। पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिये स्थितियों, वातावरण एवं उनकी क्रिया-प्रतिक्रियाओं का सन्तुलनयुक्त चित्रण किया है। उनकी देन एवं सफलता का मूल्यांकन करते हुए समीक्षक श्री सीताराम शर्मा ने लिखा है :—

"शहर के बन्द कमरे के दमघोट वातावरण से उकताकर कहानीकार गाँव के खुले और साफ वातावरण में पहुँचे। प्रेमचन्द ने जिन धरातलों का स्पर्श किया था, उनके अलावे भी, उन्हें ऐसे अनछुए धरातल मिल गये, जिनमें गाँव का जीवन स्पन्दन करता है। इन नये कथाकारों के सामने ग्रामीण जीवन का रोमेण्टिक पक्ष भी उभरा लेकिन चरित्रों की स्वस्थता को लेकर।"[1]

भारत के विभिन्न अंचलों से अनेक प्रकार के पात्र आंचलिक कहानियों में आये हैं। उनमें स्थानीय विशेषताएं हैं और उन पर युग का प्रभाव भी है। दैन्य, करुणा एवं विवशता के ऊपर गीत, वाद्य एव सामूहिक नृत्यों के स्वर उभरे हैं। पात्रों के जीवन में नये और पुराने संस्कारों के संघर्ष को भी चित्रित किया गया है। लोक-गीतों और लोक-कथाओं से भी आंचलिक कहानीकारों ने पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है। पुरुष और नारी पात्रों के व्यक्तित्व को गीत और कथा के स्वर समान रूप से प्रभावित करते हैं।

आंचलिक कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व बाह्य एवं आन्तरिक स्वरूप को किस प्रकार विश्लेषित किया गया है इसे ठीक से समझने के लिये कतिपय उदाहरण प्रस्तुत

---

१. 'ठुमरी', प्रथम संस्करण, १९५९, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

हैं। इनके आलोक में हम हिन्दी के आंचलिक कहानीकारों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की क्षमता का अनुमान कर सकते हैं।

श्री फणीश्वर नाथ रेणु ने 'रसप्रिया'[1] शीर्षक कहानी में पचकौड़ी मिरदंगिया के मन की विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करते हुए आंचलिक कहानियों के क्षेत्र में एक नया प्रयोग किया है। ग्रामीण वातावरण का यथातथ्य चित्रण करते हुए रमपतिया और मोहना के साथ ही पचकौड़ी के व्यक्तित्व को अनेक मर्मस्पर्शी विशेषताओं के साथ इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है। अपने असफल प्रणय को मोहना के रूप में साकार देखकर पचकौड़ी के मन में जो भाव उठते हैं, उनका निरूपण कहानीकार ने पूर्व अनुभवों की स्मृतिरेखाओं से अंकित किया है।

रेणु की दूसरी भावप्रवण कहानी है 'तीर्थोदक'[2]—इसमें बजरंगी चौधरी और उसकी पत्नी के व्यक्तित्व को बड़ी कुशलता से अंकित किया गया है। पति की उपेक्षा और उदासीनता पत्नी के मन को व्यथित कर देती है। पति के मना करने पर भी पत्नी तीर्थयात्रा के लिये चल पड़ती है, परन्तु उसके मन की उदासी और विरक्ति दूर नहीं हो पाती। उसका मन अपने परिवार के बालकों में ही नहीं अपने पति की दैनिक चर्या में भी उलझा रहता है। घर से दूर होकर भी वह मन से घर के मोह को दूर नही कर पाती। काशी मे पहुँच कर वह अस्वस्थ हो जाती है। साथ के यात्री उसके रुपये-पैसे से लाभ उठाना ही जानते है। रुग्णावस्था में उसकी सेवा शुश्रूषा का भार काशी के पंडे की पुत्री अन्नपूर्णा सहर्ष उठा लेती है। अन्नपूर्णा के रूप में मानो सेवा की साक्षात् मूर्ति ही उपस्थित हो जाती है। जब वह निराशा के प्रवाह में डूबती रहती है तभी उसके पति बजरंगी चौधरी काशी में उसी पंडे के घर पहुँच जाते हैं, अपने पति के साथ स्नान करते हुए वह सभी स्नेही जनों का प्रेम से स्मरण करती है। कहानी के अन्त में समस्त वातावरण हर्ष और उमंग से परिपूर्ण दृष्टिगत होता है। इस रचना में कई अन्य पात्रों —जैसे शशिकान्त की पत्नी और डोमन की माँ के व्यक्तित्व को भी कहानीकार ने बड़ी कुशलता से विश्लेषित किया है। उनकी ईर्ष्या, विषाद और पारिवारिक क्लेश को कहानीकार ने पूरी संवेदना से अंकित किया है।

रेणु की तीसरी उल्लेखनीय कहानी है—'ठेस'[3]। इसमें ग्रामीण क्षेत्र में स्वाभिमान की रक्षा करते हुए कला की साधना करने वाले एक तिरस्कृत पात्र का व्यक्तित्व

---

१. 'ठुमरी', प्रथम संस्करण, १९५९, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
२. 'ठुमरी', प्रथम संस्करण, १९५९, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
३. वही।

विश्लेषित हुआ है। सिरचन के रूप में देहात का एक ऐसा पात्र कहानी के मंच पर उपस्थित हुआ है जो अभाव और बेकारी को सह सकता है लेकिन अपने काम में कोई व्यवधान अथवा व्यक्तिगत अपमान सहन करने में असमर्थ है। कहानीकार ने उसके सम्बन्ध में वर्णनात्मक परिचय उत्साहपूर्वक प्रस्तुत किया है:—

"सिरचन जाति का कारीगर है। मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढङ्ग को देखा है। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता है। फिर कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेंहुअन की तरह फुफकार उठता...फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम। सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं"।[1]

सिरचन अपने अपमान को न सहकर चिक बनाना बन्द कर देता है। मोहर छाप वाली धोती भी उसे फिर काम के लिये आकर्षित नहीं कर पाती; परन्तु गाँव की बेटी मानू अपने स्नेह-बंधन में उसे बाँध ही लेती है। उसे अपनी ससुराल सिरचन की बनायी चिक लेकर जाना ही है। सिरचन अपनी बनायी हुई चिक आसनी और सीतलपाटी लेकर मानू की विदाई के अवसर पर रेलवे स्टेशन पर पहुँच जाता है। इस कलाकार के व्यक्तित्व में कहानीकार ने जीवित स्वाभिमान का आकर्षक रूप प्रस्तुत किया है। 'सिरपंचमी का सगुन'[2] में रेणु ने सिघाय और उसकी पत्नी के व्यक्तित्व को विशेष उद्देश्य से प्रस्तुत किया है। कालू कमार और रेलवे के मिस्त्री ऐसी अनेक स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जो सिघाय के लिये अपमानजनक हैं। उसकी पत्नी का रूप उसे जितनी सुविधायें और साधन प्रदान करता है उससे कहीं अधिक चिन्ता और व्यथा का कारण बनता है। अवसर पाकर रेलवे मिस्त्री से बदला भी लेता है। और कालू कमार जो सिरपंचमी का सगुन बिगाड़ने वाला है, उसका हितचिन्तक बन जाता है। ग्रामीण वातावरण में मानसिक संघर्ष के विभिन्न रूपों को कहानीकार ने इस रचना में अपूर्व आकर्षण के साथ, प्रस्तुत किया है।

'तीसरी कसम'[3] रेणु की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। इसकी सभी विशेषताओं पर आलोचकों एवं प्रशंसकों ने ध्यान दिया है। तात्विक विवेचन करने पर यह ज्ञात होता है कि इस रचना में सप्राणता के प्रमुख स्रोत हीरामन और हीराबाई

---

१. रेणु—'ठुमरी', पृ० ६२।
२. वही।
३. वही।

के व्यक्तित्व हैं। हीरामन की क्रियायें और प्रतिक्रियायें कहानी के प्रवाह को मोड़ती रहती हैं। हीराबाई के आकर्षक रूप के भीतर जो स्नेह, ममता और दूसरे के मनोभावों को परखने की क्षमता है उसे कहानीकार ने अद्भुत सफलता के साथ विश्लेषित किया है। मार्ग से नौटंकी तक की घटना को विभिन्न संदर्भों से जोड़ कर हीरामन के व्यक्तित्व का समग्र चित्र प्रस्तुत किया गया है। उपयुक्त अवसर पाकर लेखक ने उसकी विभिन्न क्रियाओं द्वारा सरल निश्छल ग्रामीण के सहज रूप को प्रस्तुत किया है।

कहानीकार के वर्णन में आकर्षण के साथ आंचलिक सत्यता भी विद्यमान है। उदाहरण के लिये हीरामन के जिज्ञासा भाव से प्रवर्तित एक क्रिया दृष्टव्य है :—

"हीरामन टिकटी पर टिकी गाड़ी पर बैठ गया। उसने टप्पर में झाँक कर देखा। एक बार इधर-उधर देख कर हीराबाई के तकिये पर हाथ रख दिया। फिर तकिया पर केहुनी डालकर झुक गया, झुकता गया। खुश्बू उसकी देह में समा गयी। तकिये के गिलाफ पर कढ़े फूलों को उँगलियों से छूकर उसने सूँघा, हाय रे हाय! इतनी सुगन्ध। हीरामन को लगा, एक साथ पाँच चिलम गाँजा फूँक कर वह उठा है। हीराबाई के छोटे आइने में उसने अपना मुँह देखा। आँखें उसकी इतनी लाल क्यों हैं?"[1]

इस कहानी में रेणु के पात्रों ने अविस्मरणीय व्यक्तित्व प्राप्त किया है। हिन्दी की आंचलिक कहानियों पर इसका प्रभाव इसलिये विशेष सीमा तक स्वीकार करने योग्य है कि इसमें पात्रों के कार्य, स्वभाव एवं क्रिया-प्रतिक्रिया का बहुत ही उत्कृष्ट विश्लेषण है।

रेणु की अन्य उल्लेखनीय रचना है 'लाल पान की बेगम'[2]। बिरजू की माँ और जंगी की पतोहू इस कहानी के प्रमुख नारी पात्र हैं। उनमें साधारण-सी समस्याओं पर विवाद ही नहीं होता वरन् खींचतान भी हो जाती है। जंगी की पतोहू बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम कह कर सांकेतिक रूप से लक्षित करती है। बिरजू की माँ, जंगी की पतोहू के पारिवारिक संस्कारों को सन्दर्भ में रखते हुए उसकी वाचालता और उद्दण्डता पर व्यंग करती है। नाच देखने के लिये बिरजू के पिता को देर तक कोई बैलगाड़ी नहीं मिल पाती तब बिरजू की माँ का उत्साह भंग हो जाता है। वह निराश होकर अपने पति को परोक्ष में खरी-खोटी सुनाती है और जब वह गाड़ी लेकर आता है तब वह सज-धज कर स्वयं ही नाच देखने

१. रेणु, 'ठुमरी', पृ० १४०।

२. वही।

के लिये नहीं चल देती वरन् अपने साथ गाँव की अन्य स्त्रियों का भी गाड़ी में बैठा लेती है। उन स्त्रियों में जंगी की पतोहू भी है। बिरजू की माँ के भाव परिवर्तन को कहानीकार ने स्वाभाविक और सहज बनाने का सफल प्रयास किया है। कहानी के अन्त में लेखक की भावव्यंजक टिप्पणी इस प्रकार है :—

"बिरजू की माँ ने जंगी की पतोहू की ओर देखा, धीरे धीरे गुनगुना रही है वह भी। कितनी प्यारी पतोहू है। गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गंध निकलती है। ठीक ही तो कहा है उसने ! बिरजू की माँ बेगम है, लाल पान की बेगम ! यह तो कोई बुरी बात नहीं। हाँ,वह सचमुच लाल पान की बेगम है।"[1]

रेणु की इस कहानी में चम्पियां और बिरजू के शिशु व्यक्तित्व भी अनोखे आकर्षण के साथ विश्लेषित हुए हैं।

फणीश्वर नाथ रेणु ने 'पंचलाइट'[2] शीर्षक कहानी में आंचलिक जीवन की एक स्थिति पर पूर्ण प्रकाश डाला है। एक क्षण एक व्यक्ति के जीवन में कितना मूल्यवान् बन सकता है, इसका उदाहरण इस कहानी में उपलब्ध होता है। गोधन नामक युवक गाँव और बिरादरी से लांछित व बहिष्कृत है। जब गाँव की पंचायती गैस लैन्टर्न किसी से जल नहीं पाती तो उस 'पंच लाइट' को गोधन बड़ी कुशलता से जला देता है। एक ही स्थिति उसे सबकी आँखों में सम्मानित बना देती है। उसकी वर्जिता प्रेयसी मुनरी भी उसके विशेष निकट आ जाती है। कहानीकार ने वाता-वरण और स्थिति का कितनी सतर्कता से निरूपण किया है कि उनके मध्य कहानी का उपेक्षित पात्र गोधन सहज ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेता है।

शैलेश मटियानी ने 'सुहागिनी'[3] शीर्षक कहानी में पद्मावती बोज्यू के रूप में प्राचीन संस्कारों में पलने वाली, पौराणिक धारणाओं को जी-जान से बढ़ कर मानने वाली भारतीय नारी का व्यक्तित्व विश्लेषित कर दिया है। ताँबे के कलश को पति के रूप में पूजने वाली पद्मावती कृशकाया होने के कारण उसे संभाल नहीं पाती और कलश गिर कर पिचक जाता है। उसको साधारण पात्र समझने वाली पड़ोसिन नारी के प्रति पद्मावती के मुख से अपशब्दों का प्रवाह फूट पड़ता है : —

"चुप रह, ओ खासिणी। मैं तुझ जैसी तिघरिया पातर नहीं हूँ। नया कलश नहीं मिल सकता है कहती है ! रांड़ ! अरी तू ही टूटती रह, तुझे मुबारक हो नये

१. रेणु, 'ठुमरी', पृ० १८४।
२. वही।
३. 'सारिका', जनवरी, १९६४।

नये खसम। मैं तुझ जैसी कमनीयत खासिणी नहीं हूँ, पतिव्रता ब्राह्मणी हूँ।'"[1]

शैलेश मटियानी ने 'ऋणी'[2] शीर्षक कहानी में नटवर पंडित और जनार्दन पण्डा के व्यक्तित्व को समानान्तर रेखाओं से अंकित किया है। जनार्दन पण्डा के पुत्र शिवार्पण को नटवर पंडित पूरी ममता और क्षमता से साथ अपना लेते हैं। जनार्दन की मृत्यु द्वेष एवं वैभव को धो कर रख देती है। शिवार्पण को अपने पुत्र से समान मान कर उसे गोद ले लेते हैं। ग्रामीण संस्कारो का सहज और आकर्षणयुक्त केन्द्रीकरण नटवर पंडित के व्यक्तित्व में हुआ है। बड़ी सरलता से वे गाँव के लोगों की जिज्ञासा को शान्त करते हैं :—

'यारो दीठ फैला फैला कर क्या ताक रहे हो! मैंने गोद ले लिया है शिवार्पण को। अपने हिस्से का ऋण उतार कर जनार्दन चला गया बेचारा....और अपने हिस्से का ऋण अब मुझे उतारना है।'[3]

'खातू-रावत'[4] कहानीकार परदेशी की एक सशक्त और सुगठित रचना है, जिसमें आंचलिक कहानी की अनेक विशेषताएँ उभरी है। पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में कहानीकार ने खातू रावत और चुनकी को सबसे अधिक महत्व दिया है। प्रतापी डाकू खातू रावत चुनकी के दृढ़ निश्चय के सामने झुक जाता है। उसका रूप ही एकदम बदल जाता है। वह अपना डाका का कार्य एकदम छोड़ देता है। इस परिवर्तन तक उसे पहुँचाने के पूर्व लेखक ने एक-एक कर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की अनेकानेक सीढियों को धैर्य से पार किया है।

इस कहानी में पात्र-विशेष के व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप के रेखांकन की कुशलता भी विचारणीय हैं। खातू के सम्बन्ध में लेखक सोत्साह वर्णन करता है—
"उन सातों सुन्दरियों में वह पुरुष सिंह अपने पौरुष के बल पर शोभा देता है।

बड़ी बड़ी, बहुत लम्बी, घनी काली मूँछ बड़ी बड़ी, बहुत बड़ी आँखें, और उनमें तैरते लाल डोरे। कांठल के राजा, धरती के धणी उदैसिह जैसा बड़ा उसका चेहरा। बलिष्ठ उसकी भुजाएँ, विशाल अपरम्पार उसकी छाती, चौड़ाई जिसकी इतनी कि चाहे तो दो-दो औरतों को एक साथ इस छाती से चिपटा ले। कद लम्बा, बहुत लम्बा, ऐसा कि जिसकी बराबरी में लम्बा आदमी भी ठिगना दिखाई दे।"[5]

---

१. वही, पृ० ४५।
२. 'नई कहानियाँ', जून, १९६४।
३. 'नई कहानियाँ', जून, १९६४, पृ० १९।
४. 'सारिका', मई, १९६५।
५. वही, पृ० ६२।

कहीं-कहीं स्थितियों और घटनाओं को एक क्रम में बाँध कर तेजी के साथ निष्कर्ष स्थल तक पहुँचा दिया गया है। 'खातू रावत' में परदेशी ने इस कला का प्रदर्शन किया है। 'गुलबदन' कितनी छिप्रगति से उसकी अंकशायिनी बनने की स्थिति तक पहुँचती है, बीच की घटनायें कितनी त्वरा के साथ उड़ जाती हैं इसका उदाहरण लिया जाय—

'खातू रावत' का नाम सुनकर विस्मयवन्ती गुलबदन जेल की कोठरी में उसे देखने गयी। खातू ने साक्षात दिवाक् देवी की तरह उसे देखा कि जिसके दर्शन से उसे मुक्ति मिली। गुलबदन उसे रणबावजी के देवरे तक निरापद ले आयी और साल की पहली या दूसरी अंगड़ाई में गुलबदन बूँद से बदली बन गयी।'[1]

नीलकान्त ने 'दूसरा आदमी'[2] में केसो नामक चमार के व्यक्तित्व को बड़ी कुशलता से निरूपित किया है। 'अंजो' और 'ठाकुर बसावन सिंह' के विविध कार्य उसकी सुषुप्त उग्रता और प्रतिक्रिया को जाग्रत करते रहते हैं। अत्याचार जब अपनी सीमा को पार कर जाता है तो वह कैसे उग्र विद्रोही बन जाता है और ठाकुर पर टूट पड़ने का प्रयास करता है। वात्सल्य के रस में डूबे केसो और अंजो के व्यक्तित्व को कहानीकार ने पूरी संवेदना के साथ कहानी के दृश्य पट पर अंकित किया है।

नीलकान्त ने 'केसी'[3] शीर्षक कहानी में अविवाहिता किशोरी 'केसी' के व्यक्तित्व को अंकित किया है। ग्रामीण अंचल में उसका यौवन अपने निखार पर आ रहा है। माता-पिता उसके विवाह के लिये चिन्तित और प्रयत्नशील हैं। पल्टू साव का पुत्र चिरौंजी उसे बलपूर्वक अपनी तृप्ति का साधन बनाना चाहता है। विवाह के मार्ग की अनेकानेक कठिनाइयाँ उसके परिवार वालों का साहस तोड़ देती हैं। उसकी माँ बार-बार कहती है कि तेरे ही लिये तेरे पिता देश देश दौड़ रहे हैं। यह सुनकर केसी के मन को गहरी चोट लगती है। दरिद्र हिन्दू परिवार की विवाह योग्य कुमारी की मनोव्यथा का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से इस कहानी में किया गया है।

गुलाबचन्द कोटड़िया ने 'ठाकरियों'[4] शीर्षक कहानी में ठाकुर रघुनाथ सिंह के कुण्ठाग्रस्त व्यक्तित्व का विश्लेषण आंचलिक वातावरण में किया है। अपने

---

१. 'सारिका', मई, १९६५, पृ० ६५।

२. 'कहानी', जनवरी, १९६६।

३. 'सारिका', मई, १९६६।

४ वही, जनवरी, १९६२।

प्रेम और प्रणय में बार-बार असफल होकर वह गाँव वालों के बीच घोर परिश्रम-युक्त जीवन व्यतीत करता है। परन्तु दमित यौन-वासना चालीस साल की आयु में जोर मारती है और एक ठकुरानी के साथ बलात्कार करके वह पुलिस की मार के दायरे में आ जाता है। अर्द्धविक्षिप्त और विवश होकर वह कठिन श्रम से धनार्जन में जी-जान से जुट जाता है। परन्तु उपेक्षा और तिरस्कार उसका पीछा नहीं छोड़ते। मरने के लिये भी उसे गाँव वालों की छाया से दूर हटना पड़ता है। इस पात्र के व्यक्तित्व में ग्रामीण अंचल में जीवन-यापन करने वाले निराश प्रेमी का सही रूप व्यंजित हुआ है।

आंचलिक पात्रों को नगर के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं में प्रस्तुत कर गिरिराज किशोर ने पूरी सतर्कता से उनके व्यक्तित्व का मार्मिक विश्लेषण किया है। उनकी 'असमंजस'[1] शीर्षक कहानी में नगर में चौका बर्तन करने के लिये विवशता से दिन काटने वाली ग्रामीण नारी 'सुमरिया' के मनोभावों का विशेषतः अपने पुत्र छोटे के प्रति प्रत्येक स्थिति से मन को जोड़ कर आकुल होने की प्रवृत्ति का बड़ा ही भावग्राही निरूपण है। आंचलिक शब्दों का आश्रय न लेकर भी कहानीकार ने आंचलिक संवेदनशीलता की तीव्र व्यंजना प्रस्तुत की है।

गंगा प्रसाद पाण्डेय ने 'निरहू का पत्र'[2] शीर्षक व्यंग्य प्रधान कहानी में निरहू जैसे ग्रामीण भुच्चड़ को भी प्रबुद्ध पात्र की विवेचन-शक्ति प्रदान की है। देहात की समस्याओं के आलोक में वह नेहरू जी को जली-कटी ही नहीं सुनाता अपनी अन्तर्व्यथा का सप्रमाण विवरण भी प्रस्तुत करता है। उसके व्यक्तित्व में गाँव का विचारशील प्रतिनिधि जाग उठा है। कहीं-कहीं व्यंग्य बड़ा ही तीखा है—जैसे—

"चाचा नेहरू। पुराने जमाने के राजा कनपटी का बाल सफेद होते ही राज-पाट छोड़कर जंगल में चले जाते थे, तुम इलाहाबाद ही चले जाओ"।[3]

और—

"अब आवा सच्चा सुराज। विनोबा जयन्ती पर मुन्नीबाई का मुजरा हो और गाँधी बाबा के जन्म दिन पर ठर्रे का दौर चले। ऐसा सुराज ढूंढ़े मिले तो कहो"[4]

'बिजुरी सांवरी'[5] में प्रेम कपूर ने 'हरफूल' के व्यक्तित्व को ग्रामीण-जीवन

---

१. 'कादम्बिनी', जनवरी, १९६४।

२. 'सरिता', मार्च, १९६४।

३. वही, पृ० ९७।

४. 'सरिता', मार्च, १९६४, पृ० ९०।

५. 'सारिका', नवम्बर, १९६२।

की यथार्थ परिस्थितियों के मध्य विश्लेषित किया है। अपना धर्म, सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा खोकर भी वह बिजुरी सांवरी (पंचों द्वारा छोड़ी गई गाय) से अपना सम्बन्ध बनाये रखता है। पशुओं के प्रति ग्रामवासियों के घनिष्ठ प्रेमभाव को इस कहानी में उत्कृष्ट ढंग से प्रस्तुत किया गया है। रामहरख पंडित जैसे तम्बाकू के लोभी पात्र को भी कहानीकार ने रुचिपूर्वक कहानी में स्थान दिया है।

'अरुन्धती'[1] में शिव प्रसाद सिंह ने आंचलिक जीवन के सामन्तीय परिवार के वातावरण से 'बड़की बहू' को विशिष्ट नारी पात्र के रूप में चुना है। कहानीकार ने जो ममता, करुणा, मातृत्व की तृषा इस नारी के व्यक्तित्व में भर दी है, वे सब आंचलिक जीवन के सर्वथा अनुकूल हैं। हीरा को एक असहाय, पराश्रित और विवश पात्र के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। बड़की बहू के प्रति पाठक का मन सबसे अधिक संवेदना और करुणा का अनुभव तब करता है जब उसे गर्भपात के लिये विवश कर दिया जाता है। कहानीकार की पकड़ विचित्र है विशेषतः उन स्थितियों के सम्बन्ध में जिनसे नारी व्यक्तित्व अपने सहज संवेगों से आन्दोलित और सहज क्रियाओं की ओर अग्रसरित होता है।

प्रतीकात्मक कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

स्वातंत्र्योत्तर काल में कहानियों द्वारा जीवन के संघर्षों विविध कुण्ठाओं और मानसिक व्यथाओं को व्यक्त करने के लिये प्रतीकों को अपना कर पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया। अज्ञेय ने प्रतीकात्मक कहानियों की रचना कर कहानी मे प्रतीक विधान की परम्परा आरम्भ की थी। इसके पूर्व प्रतीको के सहारे जो कुछ कहा गया, उसमें सूक्ष्मता और मनोवैज्ञानिकता का अभाव था। अज्ञेय ने 'पठार का धीरज', 'सिगनेलर', 'नम्बर दस', 'साँप', 'कोठरी की बात' और 'पुलिस की सीटी' में प्रतीकों को मानव व्यक्तित्व का सफल व्यंजक प्रमाणित कर दिया। परवर्ती कहानीकारों ने प्रतीकात्मक कहानी रचना को और आगे बढ़ाया है।

प्रतीकों के सहारे ऐसे पात्र कहानी के धरातल पर आये हैं जो समाज के सच्चे और विश्वसनीय रूप को अपने कार्य, व्यवहार एवं प्रतिक्रियाओं द्वारा प्रस्तुत करते है। उनमे सभी वर्गों के पात्र हैं। कहानी का संवेद्य प्रतीकात्मकता के कारण बहुत ही सूक्ष्म हो जाता है। परन्तु उसकी प्रभविष्णुता में कोई अन्तर नहीं आने पाता। नारी और पुरुष पात्रो में ही नहीं बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व मे भी किसी प्रकार महत्वपूर्ण परिवर्तन आते जा रहे हैं, इसका सूक्ष्म एवं सांकेतिक विश्लेषण प्रतीकों के माध्यम से हो रहा है।

---

१ वही नवम्बर १९६४।

प्रतीकात्मक कहानी के क्षेत्र में इन दो दशकों में जो सशक्त रचनाएँ प्रकाश में आई है उनमें प्रमुख है मोहन राकेश की 'जँगला', 'विजय चौहान की 'मुजाहिद', उषा प्रियंवदा की 'झूठा दर्पण'' रमेश बक्षी की 'गुगली', कमलेश्वर की 'जार्ज पंचम की नाक', नरेश मेहता की 'वर्षा भीगी', राजेन्द्र यादव की 'सिलसिला', अमरकान्त की 'हत्यारे', मार्कण्डेय की 'माही' और फणीश्वरनाथ रेणु की 'अतिथि सत्कार'।

प्रतीकों के माध्यम से कहानी के पात्रों के भाव एवं प्रतिक्रियाओं को व्यक्त होने का अवसर प्राप्त होता है। परन्तु प्रतीकों को कहानी का लक्ष्य नहीं माना जा सकता है। लक्ष्य तो पात्र और उसका व्यक्तित्व ही होगा। प्रतीकों की उपयोगिता पर विचार करते हुए श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने साभिप्राय लिखा है कि :

"प्रतीकों के सम्बन्ध मे यह बात हृदयंगम कर लेना जरूरी है कि प्रतीक सिर्फ माध्यम हैं, ये स्वयं ध्येय नही हैं। प्रतीक वे माध्यम हैं, जिनके द्वारा लेखक कुछ और कहना चाहता है। प्रतीक की व्यंजनात्मकता कथ्य को अधिक प्रभावशाली और सुन्दर अवश्य बना सकती है, पर यदि कथ्य को भूल कर अथवा प्रतीक इतने दुरूह बन जाय कि आचार्य पाणिनि के सूत्रों की तरह उन्हें समझने के लिये भारी प्रयास आवश्यक बन जाय, तो कम से कम कथा-साहित्य मे उनकी उपादेयता बहुत कम हो जाती है।"

वर्तमान दशक में जो नये कहानीकार अपनी प्रतीकात्मक कहानियों द्वारा कहानी-साहित्य को गौरवान्वित कर रहे है वे व्यक्तित्व के नित नवीन रूपों का सूक्ष्म सांकेतिक विश्लेषण कर रहे हैं। पूर्व उल्लिखित प्रतीकात्मक कहानी-परम्परा में जो नवीन कड़ियाँ जुट गयी हैं उनमें से कुछ पर व्यक्तित्व विश्लेषण की दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। उदाहरण के लिये कुछ उल्लेखनीय नई रचनाएँ प्रस्तुत हैं और उनमें वर्णित पात्रों के व्यक्तित्व की गतिविधि का संक्षिप्त परिचय भी।

ये कहानियाँ हैं—

'राजा दशरथ के बेटे', 'ब्लाटिंग पेपर', 'तिनका', 'कुलबुलाहट', 'राख और व्यर्थ'।

'राजा दशरथ के बेटे' में नरेन्द्र कुमार कोहली ने व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से सर्वथा नयी जमीन तोड़ी है। परिवार में समस्या है चार अविवाहित युवकों के विवाह की। बड़े भाई अभेद्य दीवार की तरह राह रोके खड़े हैं। बार-बार विवाह से इन्कार कर वे छोटे भाइयों का मन तोड़े जा रहे है। उनसे छोटे भाई की प्रेमिका 'पुष्प' बार-बार विवाह के लिये उत्तेजित करती है, छोटे भाई की प्रेयसी 'गीत' उससे शीघ्र वरण के लिये आकुल है। पर बड़े भाई हैं कि साल पर साल बीतते जाते है और वे बराबर इन्कार कर रहे हैं विवाह से। अविवाहित भाई मारे क्रोध और आवेश के अपने घर का नाम 'बैचलर्स डेन' रख देते हैं कुमारत्व का बोझ ढो

के लिये विवश युवकों का व्यक्तित्व विश्लेषण कहानीकार ने बड़ी कुशलता से किया है।

'ब्लाटिंग पेपर'[1] शीर्षक कहानी में महीप सिंह ने प्रीति को ब्लाटिंग पेपर बताकर उसके व्यक्तित्व की रहस्यमयता की ओर संकेत किया है। ईश से मिलकर उसे अपने प्रीति का सर्वस्व दान कर भी बेचारी प्रीति ब्लाटिंग पेपर की तरह निरर्थक रह जाती है। बड़ी आकुलता है उसके मन में 'ईश' को समग्रत: पाने की। परन्तु सारी चेष्टायें व्यर्थ हो जाती हैं। जिस आंशिक सुख की ओर वह भागती है वह भी उससे दूर भाग जाता है। आशा के सूत्र वह छोड़ नहीं पाती। अपने पत्र में उसने अपने मित्र को अपनी आशा की एक झलक दी है :

'या शायद नर्स बन जाऊँ। और प्रार्थना करूँगी कि मुझे नेफा या लद्दाख के किसी अस्पताल में पोस्ट कर दो। अम्मा पर और भार बने रहना ठीक नहीं समझती कभी-कभी प्यासी होऊँगी—अभी भी होती हूँ, तो उनसे कहूँगी साल में जब एक बार छुट्टी मिलेगी एक महीना दे दो मुझे। बस थोड़े से दिन सतृप्त से दे दो मुझे।'[2]

वर्णन द्वारा मनोविश्लेषण करते हुए ज्ञान प्रकाश ने तिनका के समान व्यर्थ माने जाने वाले बेकार युवक की मनोव्यथा का तथ्यपूर्ण अंकन किया है। 'तिनका'[3] शीर्षक देकर कहानी मे प्रस्तुत पात्र की विवशता की ओर संकेत किया गया है। सबके द्वारा उपेक्षित युवक की निराशा कहानीकारों के शब्दों में इस प्रकार फूट पड़ी :

'उसकी जिन्दगी बहुत ही बेचैन होकर कुछ ढूंढ़ रही थी। क्या ? एक आश्रय, एक स्थल, प्यार और आदर ! कुछ ऐसा जो उसके होने का उसे कुछ अहसास करा सके, जीवन की गहराइयों और ऊँचाइयों का भान करा सके, आत्मा की बुलन्दियों और मन के संवेदनों को कुछ अर्थ दे सके।'[4]

'कुलबुलाहट'[5] में बटरोही ने शुभा और उसके प्रणयी के व्यक्तित्व को विश्लेषित करते हुए नाली में कुलबुलाने वाले कीड़ों को प्रतीक रूप में ग्रहण किया है। सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था वास्तव में गन्दी नाली ही है जिसमें विवश

---

१. 'सारिका', मई, १९६५।
२. वही, मई, १९६५, पृ० ७१।
३. 'कहानी', अगस्त, १९६४।
४. 'कहानी', अगस्त, १९६४, पृ० ४३।
५. 'नई कहानियाँ', मार्च, १९६५।

व्यक्ति कुलबुलाते हुए कीड़े के सदृश हैं। प्रतीक को तीव्रतर और अधिक स्पष्ट बनाते हुए कहानीकार ने लिखा है:

'कुलबुलाते कीड़े एक ढेर में पड़े थे। कोहरा गहरा होकर पानी के रूप में बरसने लगा था और उसने देखा कि कुछ कीड़े उस पानी के साथ बहकर दूर तक चले गये हैं—एक अनजान स्थान की ओर। और कुछ कीड़े बिलबिलाते हुए वहीं काफी देर तक पड़े रहे—काफी देर तक।'[1]

रमेश बख्शी की 'राख'[2] शीर्षक कहानी में निराशा और आत्मविश्लेषण में लीन पात्र के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है। सिगरेट की राख उसके जले हुए भावों, कल्पना पर आधारित नष्ट सुखों और विवशताओं का प्रतीक बन जाती है। आत्मविश्लेषण की श्रेष्ठता की दृष्टि से इस कहानी का विशेष महत्व है। प्रतिक्रियाओं के माध्यम से आन्तरिक क्षोभ को अभिव्यक्त कर लेखक ने कहानी की संवेदनशीलता को और अधिक गहरा बना दिया है।

मन के भावों को वातावरण पर आरोपित कर व्यक्तित्व के रहस्य को मुखर बनाने की चेष्टा आधुनिकतम कहानियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। मणि मधुकर के 'व्यर्थ'[3] शीर्षक कहानी से एक उदाहरण लिया जा सकता है:

'पेड़ों की रहस्यमयी मुद्राओं को देखकर प्रतीति होने लगी, समूची दुनिया मुद्दत से एक चिपचिपी धुन्ध में उलटी झूल रही है। वर्जनाओं, आशंकाओं और अपशकुनों से घिरे हुए लोग मूर्च्छा तोड़कर जागते हैं तो खम्भों से शरीरों को रगड़ते हैं। उखड़ी हुई दीवारों पर बाहें कसते हैं और पिघलते लोहे पर होठ टिका कर फिर सो जाते हैं।'[4]

खम्भे, दीवार और पिघलते लोहे का प्रतीक हमारे जीवन के प्रति तीव्र संवेद्य और अनुभूति को जाग्रत करता है।

सामयिक समस्याओं से सम्बद्ध कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व विश्लेषण

स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत में अनेक समस्याएँ राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के समक्ष आई हैं। इन समस्याओं से सम्बद्ध पात्रों को हिन्दी कहानियों में व्यापक स्थान प्राप्त हुआ है। उनके भावों, विचारों और कार्यों को यथार्थ और तथ्य के आधार पर सुनियोजित कर कहानी में युगसत्य को निरूपित किया गया है।

---

१. वही, पृ० १०४।
२. 'नई कहानियाँ, अक्तूबर, १९६६।
३. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६।
४ वही पृ० ३५

भारतीय समाज एवं शासन व्यवस्था से सम्बन्धित राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रश्नों के प्रकाश में हिन्दी कहानीकारों ने जीवन के तथ्यपूर्ण रूप को देखा है। भारत की सीमाओं की सुरक्षा के लिये प्राणार्पण करने वाले वीरों की यशगाथाएँ उनके तप:पूत व्यक्तित्व को आलोकित करती हुई कहानी के दृश्य-फलक पर अवतरित हुईं। अकाल एवं उत्पीड़न की स्थितियाँ भी अनेक पात्रों को समेटती हुई कहानी के द्वारा अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकी हैं। भारतीय नागरिक के जो कल तक पड़ोसी थे उन पाकिस्तानी व्यक्तियों के प्रति क्या भाव और विचार उसके मन में आते हैं, इसका विश्लेषण भी कहानी के द्वारा हुआ है। व्यापक अनैतिकता, रिश्वत, कपट, छल और चोरबाजारी की इस युग की समस्याएँ हैं। इन स्थितियों से लाभान्वित होने वाले तथा पीड़ित होने वाले पात्रों का समान रूप से कहानी के मध्य विश्लेषण हुआ है।

हिन्दी कहानीकारों ने सामयिक समस्याओं पर कितनी गहराई और विवेक के साथ विचार किया है और उनके पात्र कितनी क्षमता लेकर समाज के समक्ष आये, उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण किस प्रकार हुआ है इसे समझने के लिये कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं :

'धरती का स्पर्श'[1] शीर्षक कहानी मे विष्णु प्रभाकर ने युद्ध के वातावरण को प्रस्तुत कर मकसूद और असगर जैसे पाकिस्तानियों के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया है। असगर के रक्त में भारत के प्रति स्नेह के तत्व विद्यमान हैं। जिस भूमि मे उसने बचपन के सुनहले दिन गुजारे उसपर अत्याचार करने को वह प्रस्तुत नही हो पाता। उसे पकड़ने को जब उसी के गांव का चौधरी आगे बढ़ता है तब उसकी भाव-धारा फूट पड़ती है। चौधरी उसका परिचय पाकर धर्म संकट मे फंस जाता है। अपने ही गाँव में पले असगर को कैसे वह पकड़वा दे और जब वह पाकिस्तान का जासूस है तो कैसे छोड़ दे। असगर के व्यक्तित्व में वह दम है कि समस्या को इन शब्दों में सुलझा दे :

मैं जानता हूँ ताऊ। उसके अंजाम के लिये तैयार हूँ। मुझे खुशी है कि मैं अपने गाँव लौट आया। आओ मकसूद, अब कोई डर नही है। हम अपने वतन में हैं।[2]

इस कहानी में विष्णु प्रभाकर ने चौधरी के मन के द्वन्द्व का कुशलता से विश्लेषण किया है। असगर को देखकर अपनी पूर्वस्मृतियों के दर्शन से वह आकुल हो जाता है। कहानीकार ने उसके अन्तर्द्वन्द्व को कितनी तथ्यपरक शैली में व्यक्त किया है:—

---

१. 'सारिका', फरवरी, १९६६।

२. 'सारिका', फरवरी, १९६६, पृ०७५।

१८

"समझ मे नही आता कि यह कैसा जादू है। यह सचमुच असगर है। लतीफ का बेटा। लतीफ जो मेरा जिगरी दोस्त था, मेरा पड़ोसी था। इसको मैंने अपनी गोद मे खिलाया है। यह रामसिह के साथ खेलकर बड़ा हुआ है। और रामसिह भी आज मोर्चे पर है। और यह भी तो मोर्चे पर ही है। लेकिन यह कैसा मोर्चा! यह तो दुशमन का जासूस है"।[१]

सर्वदानन्द वर्मा ने 'रक्त का हस्ताक्षर'[२] शीर्षक कहानी मे मेजर आशाराम की वीरता, साहस, धैर्य और देशप्रेम का भावोत्तेजक वर्णन किया है। आशाराम के पिता चौधरी सगुवा सिह और माता वसन्ती देवी के व्यक्तित्व को भी कुरुचि-पूर्ण ढग से अंकित किया गया है। मेजर की पत्नी कविता का मौन और अप्रतिम धैर्य उसके व्यक्तित्व की महत्ता को विशेष रूप से विवर्द्धित करते है। भारतीय बलिदानी सैन्य नायकों के व्यक्तित्व-विश्लेषण का प्रयास जिन कहानियो में हुआ है उनमे इस रचना को गौरव पूर्ण स्थान् प्राप्त करने का अधिकार है।

अफसरों की कुटिल नीति और छद्म आदर्शवादिता को समझ कर भी उनके आगे घुटने ही नहीं मत्था टेकने को विवश होने वाले पदोन्नति के आकांक्षी पात्र को ज्ञानप्रकाश ने अपनी यथार्थवादी कहानी 'खिलाड़ी'[३] में प्रस्तुत किया है। जो सब-कुछ समझ कर भी अपमान और अत्याचार के विष को कण्ठ के नीचे उतारने के लिये विवश है। उसकी मनोदशा का कहानीकार ने कुशलता से विश्लेषण करते हुए लिखा है :—

"इसका मन कचोटता है।—इतना झूठ, इतनी क्रूरता लेकिन वह उसे झटक देते हैं। लाइफ तो एक गेम है — (जीवन एक खेल है)। खेल में शक्ति और कौशल की आवश्यकता होती है। बस यह केस इतना इम्पार्टेंट (महत्त्वपूर्ण) है — क्लास वन में नाम रिकमेण्ड होने वाला है"।[४]

डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने 'एक था इतिहास'[५] में प्रिंसिपल सेन के गुरु-गम्भीर व्यक्तित्व का कुशलता से विश्लेषण किया है। पुत्र की मृत्यु के दारुण शोक को हृदय मे दबा कर प्रिंसिपल साहब देश-प्रेम, राष्ट्रीयता और देश-रक्षा के उच्चादर्शों की ओर

---

१. वही, पृ० ८८।

२. 'नीहारिका', मार्च, १९६६।

३. 'नई कहानियाँ'—मार्च, १९६५।

४. वही, पृ० ५१।

५. 'सरिता', फरवरी, १९३६।

छात्रों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। उनके कथन में उपदेशात्मकता के स्थान पर सत्य और अनुभूति की प्रधानता है। अपने पुत्र सेकेण्ड लेफ्टिनेंट अमित की मृत्यु का उन्हें उतना ही दुख है जितना दुख भीखूराम के पिता सिपाही रामदास की मृत्यु का। अमित और रामदास दोनों उनके ही कालेज के भूतपूर्व छात्र थे। सेन साहब के व्यक्तित्व में भावों और विचारों का विचित्र सन्तुलन हैं। भारतीय सुरक्षा समस्या से सम्बद्ध इस कहानी में व्यक्तित्व-विश्लेषण का स्तर बहुत ऊँचा है।

डा० शशिप्रभा शास्त्री ने 'बीच की कड़ियाँ'[1] में सुषमादेवी के रूप में बड़े अधिकारियों को फँसा कर लाभान्वित होने वाली धृष्टा नारी तथा अजित के रूप में स्वार्थवश कापुरुषता और सहनशीलता का आवरण ओढ़ने वाले पुंसत्वहीन पति के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। पति के प्रेम से वंचिता नारी का प्रबल क्रोध ही ज्वालामुखी के समान इस कहानी के अंक में फूट पड़ा है। अपमान, वितृष्णा, क्षोभ और ग्लानि की जितनी स्थितियाँ आती हैं, सबकी सब अजित की अकर्मण्यता, अशक्तता और परोपजीवी वृत्ति के सागर में डूब जाती हैं। पत्नी की कमाई खाकर इतराने वाले पुरुष के व्यक्तित्व को नारी लेखिका ने बड़ी सच्चाई के साथ विश्लेषित किया है।

राजेन्द्र यादव ने 'आत्मा की आवाज़'[2] में पंडित शम्भूनाथ के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए आत्मा के स्वर का दम्भ भरने वाले घूसखोर की भौतिक सफलता के रहस्य का आवरण उसी के आत्मविश्लेषण द्वारा धीरे-धीरे हटाया है। आत्मा और ईश्वर के नाम पर कपट की चाल चलने वाले आत्मप्रवंचक के चरित्र का निरूपण बड़ी सतर्कता से किया गया है। कितनी सहज और स्वाभाविक गति से ऐसे पात्र अपने भीतर छिपे रहस्य का उद्घाटन कर देते हैं, इसका उदाहरण इस कहानी में उपलब्ध है।

गिरिराज किशोर ने 'नया चश्मा'[3] में शिव जी जैसे सत्यनिष्ठ राजनीतिज्ञ की व्यवहारिक पराजय और मुख्य मन्त्री की कूटनीतिक चाल का आकर्षक विवरण प्रस्तुत कर वर्तमान पीढ़ी के नेताओं के पाखण्ड और छल की गहरी शल्य-क्रिया कर दी है। मन्त्रियों की स्वार्थपरता और शानशौकत का वर्णन भी विभिन्न प्रसंगों में स्वाभाविक रूप से आता गया है जो उनके दम्भी व्यक्तित्व के विश्लेषण में सहायता प्रदान करता है। कहानी लेखक ने स्थान-स्थान पर अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचय देकर विश्लेषण की प्रक्रिया को तथ्यपरक और आकर्षक बनाया है।

---

१. 'नई कहानियाँ', नवम्बर १९३५।
२. 'सारिका', जनवरी १९६२।
३. वही- जुलाई १९६४।

'परित्यक्ता'[1] शीर्षक कहानी में चन्द्रकिरण सौनरिक्सा ने नमिता के व्यक्तित्व को यथार्थ परिस्थितियों में विश्लेषित किया है। राजेश के साथ उसके सम्बन्ध को जोड़ते हुए कहानी-लेखिका ने उसके मन के भावों का विवेचन किया है। अपने साहस तथा शक्ति के बल पर नमिता वर्तमान परिस्थितियों को अपने अनुकूल मोड़ती है। संगीत की शिक्षा प्राप्त कर वह नारी-स्वातंत्र्य के उदाहरण को प्रस्तुत करती है। समाज में नारी-विकास के न्यूनतम लक्षणों को अपने सक्षम नेतृत्व द्वारा व्यक्त करने की सुषुप्त प्रतिभा उसके अन्दर परिस्थितियों के आघात से जग जाती है। कहानी-लेखिका ने समाज के एक ज्वलन्त प्रश्न को समाधान देने का प्रयास किया है।

पुरानी पीढ़ी के कहानीकार एवं उनकी नयी रचनायें—व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से—

पुरानी पीढ़ी के यशस्वी कहानीकारों ने स्वातंत्र्योत्तर काल में महत्वपूर्ण रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। उनकी कहानियों के पात्र युग-चेतना से सुपरिचित हैं और उनके व्यक्तित्व में ज्वलन्त प्रश्नों के समाधान का साहस भी निहित है। सर्वश्री जैनेन्द्र, यशपाल, अश्क, अज्ञेय, उग्र, राधाकृष्ण, उषादेवी मित्रा और मन्मथनाथ गुप्त की सशक्त रचनाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि उनमें युग के साथ चलने और आवश्यकता पड़े तो परिवर्तन को स्वीकार करने की शक्ति विद्यमान है।

पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों पर यह आरोप है कि वे चुक गये हैं। परन्तु यथार्थ यह है कि वे नये प्रकाश से प्रेरणा लेकर आज के नये कहानीकारों के समानान्तर चलने का प्रयास कर रहे हैं। व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से उनकी कहानियों का विशेष महत्व है। चाहे वे अकहानी न लिख पायें परन्तु सचेतन कहानी से कम महत्व की वस्तु उनकी लेखनी से प्रसूत नहीं हो पायी है। अकहानी में जो कुंठा एवं विषाद है उसको भी पात्रों के व्यक्तित्व में सन्तुलन के साथ प्रस्तुत किया गया है। जैनेन्द्र जी की कई कहानियाँ प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं। श्री यशपाल की रचनाओं में जो सचेतनता है वह अपने विशिष्टता में अकेली है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों ने कितने साहस और शक्ति के साथ पात्रों को नयी समस्याओं के मध्य विश्लेषित किया है, इसके उदाहरणस्वरूप कतिपय कहानियों के विवेचन को प्रस्तुत किया जाता है। इन कहानियों में सम्बन्धित कहानीकारों की उपलब्धियों और सीमाओं पर व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से विचार किया गया है।

---

१. 'नीहारिका', मार्च, १९६५।

श्री जैनेन्द्रकुमार ने 'सबकी खबर'[१] में शंकर नामक लेखक को कहानी के प्रमुख-पात्र के रूप में ग्रहण किया है। सम्मान, धन और अहंकार ने उसके व्यक्तित्व को ग्रस लिया लिया है। यद्यपि वह एक ख्यातिप्राप्त विचारक और सुलेखक है, परन्तु व्यावहारिक जीवन में अपनी चौथी प्रेमिका 'तिशना' से पराजित हो जाता है। प्रयास करके भी वह अपनी बौद्धिकता से तथ्य को ढक नहीं पाता। शराब और औरत उसकी दुर्बलतायें हैं जो उसे बेचैन किये रहती हैं। लेखक-जीवन की इस विचित्रता की पकड़ बड़ी दृढ है और कहानीकार ने स्थितियों को उनकी चरमावस्था की ओर ले जाकर कहानी के संवेद्य को बहुत ही तीव्र बना दिया है।

'वह कौन'[२] में श्री जैनेन्द्र कुमार ने 'अनुजा' नाम की आधुनिका का व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है। अनेक व्यक्तियों से शारीरिक सम्पर्क रखने वाली अविवाहिता षोडशी के गर्भवती हो जाने पर उसके प्रतिष्ठित परिवार में भूकम्प-सा आ जाता है। पिता कामतानाथ तो एकदम अधीर हो जाता है। बहुत पूछ-ताछ के बाद तथ्य प्राप्त होता है कि अनुजा बता ही नहीं सकेगी कि उसके गर्भ में किसका अंश स्थित है। कालेज के कई युवकों की अंकशायिनी बनने वाली नवयुवती के व्यक्तित्व की विडम्बना कहानीकार ने बड़े ही कलात्मक ढंग से उपस्थित की है।

श्री जैनेन्द्र कुमार ने 'अविज्ञान'[३] शीर्षक कहानी में मालती और आदित्य के व्यक्तित्व का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक धरातल पर करते हुए आधुनिकतम स्थितियों की व्याख्या कर दी हैं। मालती के मन में आदिम प्रवृत्तियाँ इतनी बलवती है कि उच्च-प्रतिष्ठा और जन-सम्मान भी उसकी सेक्स भावना को दबा नहीं पाते। वह आदित्य को समग्रतः पा लेना चाहती है परन्तु आदित्य उसे देवी समझ कर पूजा की अधिकारिणी मानता है। मालती के व्यक्तित्व की उदग्र वृत्ति को कहानीकार ने उसी के शब्दों मे इस प्रकार प्रस्तुत किया है :—

'लेकिन क्या यह झूठ नहीं है कि मैं देवी हूँ ? मैं कहती हूँ इससे बड़ा दूसरा झूठ नहीं है। जो मेरे मन में उठता रहा है वह सामने खुले, तो तुम्हें भी पता चले कि मैं क्या हूँ। मैं कहती हूँ कि सपनों की लपेट में सत्य को न रखो। लपेट को हटाओ और यथार्थ को दीखने दो। वही है जो टिकेगा सपना तो उड़ जायेगा'।[४]

'जीना मरना'[५] शीर्षक कहानी में श्री जैनेन्द्र कुमार ने आधुनिक जीवन की

---

१. 'सारिका', १९६३।
२. 'सारिका', फरवरी, १९६६।
३. वही, अक्तूबर, १९६३।
४. 'सारिका', अक्तूबर, १९६३, पृ० ५५।
५. वही, मई, १९६५।

कार्यव्यस्तता के मध्य भी लीलाधर के व्यक्तित्व में निहित मानवता के प्रकाश को व्यक्त करने का प्रयास किया है। विभिन्न सुखद, सम्मानप्रद और लाभजनक स्थितियों में भी उनके अन्तर में सुखिया जैसी उपेक्षिता गृह-परिचारिका की व्यथा का दंशन तीव्र गति से व्याप्त होता रहता है। उनका विचारक बार-बार उभर आता है और उनके माध्यम से जैनेन्द्र का जीवन-दर्शन मुखरित होने लगता है :—

'सोचा कि हाँ, सब चक्कर ही है, सगाई ब्याह का चक्कर, जन्म दिन के उछाह का चक्कर, तत्वज्ञान के प्रणयन, प्रकाशन और विज्ञापन का चक्कर। और सबसे अन्त में यह मौत का चक्कर''।[१]

अन्य पात्रों की स्वार्थपरता और संकीर्ण दृष्टिकोण ने लीलाधर के व्यक्तित्व को और अधिक सप्राणता प्रदान की है।

'दीमक'[२] शीर्षक कहानी में विनोदशंकर व्यास ने प्रोफेसर मनील के व्यक्तित्व का विश्लेषण भिन्न स्थितियों में किया है। मधुशाला और आथल तक उन्हें पहुँचा कर उनकी प्रतिक्रियाओं के सहारे उनके व्यक्तित्व में निहित दार्शनिक को विश्लेषित करने की चेष्टा की गयी है। दार्शनिकता और मस्ती के पीछे जो मार्मिक कारण निहित था उस पर कहानीकार ने तीव्र प्रकाश फेंका है—

''उनके जीवन की कोमल हृदय में कूक रही थी। विवाह के पश्चात् अर्द्धांगिनी की विकृत आकृति ने उनकी भावुकता पर आघात किया। गम्भीरता की चाँदनी ओढ़नी ओढ़ कर खड़ी होने लगी। चेतना जागी। वह पुस्तकों में लीन होकर पढ़ने और पढ़ाने का काम करने लगे। जब पढ़ते-पढ़ते तबीयत घबरा उठती तब जी बहलाने के लिये वह मेरे यहाँ चले आते थे और हम दोनों मिलकर मस्ती का मार्ग प्रस्तुत कर लेते थे'।[३]

'भूख के तीन दिन'[४] में यशपाल ने प्रतिभाशाली पत्रकार नन्दन की दुर्दशा का रोमांचक विवरण प्रस्तुत किया है। रूढ़ियों और परम्पराओं के अतिरिक्त उसे अधिकार मद में डूबे उच्च पदस्थ साहित्यिकों से भी मोर्चा लेना पड़ता है। जगह से वह टूटता और घुटता हुआ पुलिस के डण्डे के नीचे तक पहुँचता है। भूख की ज्वाला शान्त करना भी उसके लिये एक समस्या बन जाती है। उसके सभी सुहृद और हितैषी उसके लिये अविश्वसनीय और अवसर से केवल लाभ उठाने वाले सिद्ध होते

---

१. वही, मई, १९६५, पृ० ११।
२. वही, मई, १९६५।
३. 'सारिका', मई १९६५, पृ० ७५।
४ वही।

हैं। व्यावहारिक दुनियाँ के दमघोंटू वातावरण से साहित्यिक प्रतिभा में सम्पन्न व्यक्तित्व किस प्रकार कुचल दिया जाता है, इसका उत्कृष्ट विश्लेषण इस कहानी में प्राप्त होता है।

'खच्चर और इन्सान'[1] में यशपाल जी ने खच्चर को स्थिति-अनुकूल आचरण करने में समर्थ बताते हुए रूढ़ियों और संस्कारों में जकड़े इन्सान को विवेकहीन और हठधर्मी सिद्ध कर दिया है। भूख से मरने की स्थिति आने पर खच्चर दूसरे जानवर का कान काट कर खा लेता है, परन्तु शीत प्रदेश में सबके बीच निर्वस्त्र होना और ब्राण्डी पीना वैष्णव धर्मानुयायी अनुसन्धानक को स्वीकार नहीं होता है। परिणामतः उनकी मृत्यु हो जाती है। 'मार्ग' के शब्दों में यशपाल का तीव्र व्यंग्य सहज ही व्यक्त हो गया है :—

'धर्म विश्वास क्या, संस्कार कहो। देख लो खच्चर ने स्थिति समझ कर आत्म-रक्षा कर ली, और संस्कारों से बँधा मनुष्य स्थिति-अनुकूल आचरण न कर सका।'[2]

सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर ने समाज की मनोवृत्तियों का गहराई से विश्लेषण किया है। 'पिचका हुआ केला और क्रान्ति'[3] उनकी एक ऐसी कहानी है जो सर्वहारा वर्ग के दीन-दरिद्र बालकों के करुण रूप को उतनी ही सशक्तता तथा यथार्थता के साथ प्रस्तुत करती है जितनी विश्वसनीयता के साथ मध्यमवर्गीय संस्कारों में पलने वाले 'मि० सिंह' के व्यक्तित्व को। अपने पुत्र को जूतों से निर्दयतापूर्वक पीटने वाली माता के हृदय के भावों को कहानीकार ने बड़ी ही जीवन्त शैली में ने विश्लेषित किया है।

श्रीमती उषा देवी मित्रा ने 'और मीना लौट गयी'[4] शीर्षक कहानी में मनोज और मीना की प्रणयभूमि पर आदर्श और त्याग के गुणों से समन्वित नारी-व्यक्तित्व का निरूपण किया है। मनोज जो अब जनरल चौधरी हो चुका है, मीना के अस्पताल में घायल होकर पहुँचता है, उसे देखकर मीना का मन भावान्दोलित हो उठता है। परन्तु वह अपने कर्तव्य पथ को भली-भाँति पहचानती है। उसकी भावनाओं का विश्ले-षण लेखिका ने सुरुचिपूर्ण ढंग से किया है :—

'वृद्धत्व के द्वार पर पहुँचा हुआ वह मनोज ही तो था—वही मनोज वही प्रेम का मूर्त रूप मनोज। इतने वर्षों के बाद महाकाल का यह कैसा परिहास है। मीना

---

१. वही, अप्रैल, १९६४।
२. वही, पृ० ११।
३. 'नई कहानियाँ' जून, १९६५।
४ 'सारिका' अगस्त १९६४।

सोचने लगी, वह तो भारत माँ के चरणों में अपने को सौंप चुकी है। निष्ठा के साथ वह अपने वीर भाइयों की सेवा कर रही है। तब फिर दैव का यह कैसा व्यंग्य —कैसा उपहास है'।[1]

राधाकृष्ण की कहानी 'पराया कफन'[2] भावुकता और स्नेह में डूबे नईम के व्यक्तित्व की रेखाएँ बड़ी कोमलता से खींचती चलती है। अपनी प्रेमिका रबिया को न पाकर भी उसके मन में कोई मैल नहीं आता। वृद्धावस्था में रबिया की मृत्यु का समाचार पाकर वह उसके कफन और ताबूत को बड़े प्रेम से तैयार करता है। इस प्रेमव्यंजक कहानी में आदर्शवादी अन्त की व्यंजना इस प्रकार है :—

'उसे लगता था मानो वह स्वयं मर गया है और उसकी लाश चली जा रही है। आज उसे अपना जीवन सार्थक मालूम हो रहा था'।[3]

अँग्रेजी ने नेताओं, मंत्रियों और अधिकारियों को अपनी नयी-ताजी कहानियो के मुख्य पात्रों के रूप में प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व के रहस्यों को खोजने का प्रयास किया है। 'लाइन पर'[4] उनकी एक प्रतिनिधि कहानी है। मंत्री महोदय अपनी पत्नी की अधिकार-सीमा का उल्लंघन नहीं कर पाते। स्वार्थ लिप्सा, अधिकार, मद और मिथ्या अहंकार का खोल ओढ़ कर अपने को अत्युच्च मान लेने वाली मन्त्री-पत्नी का व्यक्तित्व उग्र जी की लेखनी की नोक से भली-भाँति विश्लेषित हो गया है।

'सुलझाव'[5] में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने मध्यम वर्ग की टूटती हुई मान्यताओं और पारिवारिक प्रतिष्ठा के आडम्बर से जुडी हुई नारी 'सुजाता देवी' के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। पति रायसाहब और पुत्र जगन्नाथ के कुकर्मों पर पर्दा डाल-कर उनके यौन व्यापारों को छिपाने की वह जितनी ही चेष्टा करती है, उतना ही परिवार का सही रूप खुलता जाता है। गृहस्थी के सामान को प्राणों से चिपका कर रखने वाली नारी के व्यक्तित्व का उत्कृष्ट निरूपण इस कहानी में प्राप्त होता है।

कुंठित पात्र-प्रधान कहानियाँ और उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण

वर्तमान युग की विषम अर्थव्यवस्था, प्रपंचों और सामाजिक अभिशापों ने नयी पीढ़ी को कुंठाग्रस्त करने का भीषण कुचक्र रच रखा है। कहानीकार जिस

---

१. वही, अगस्त, १९६३, पृ० ३१।
२. 'नई कहानियाँ', नवम्बर, १९६६।
३. 'नई कहानियाँ', नवम्बर, १९६६, पृ० १३१।
४. 'केन्द्र', मार्च, १९६४।
५. 'नई कहानियाँ', जून, १९६४।

किसी क्षेत्र से पात्रों का चयन करता है वहीं कुण्ठाओं और विषाद के तिक्त और विषाक्त तथ्यों से उसे टकराना पड़ता है। शासन, समाज और पुरानी पीढ़ी ने उसके पात्रों के उत्साह को भंग कर उनकी इच्छाओं का दमन कर दिया है। परिणाम यह है कि आधुनिकतम प्रवृत्ति से प्रेरित कहानीकार अपने को कुण्ठाओं और विषाद का विश्लेषक मान बैठा है।

यथार्थ यह है कि आज कुण्ठाग्रस्त व्यक्तित्व ही व्यापक और विवेच्य हो गया है। कहानीकार नगर, कस्बे, ग्राम और देश के बाहर भी 'कुण्ठाग्रस्त व्यक्तियों को अनेक रूपों में पाता है आवश्यक हो जाता है कि वह उन्हीं का चित्रण-विश्लेषण ईमानदारी से करे। जब जीवन की कटु वास्तविकताएँ मुह बाये खडी हैं तो उनकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है? नयी कहानी में व्यक्ति समाज के अनेकानेक सम्बन्धो के सन्दर्भ में पात्रों के व्यक्तित्व में गहराई तक प्रविष्ट कुंठाओं का प्रभावपूर्ण विश्लेषण है। यह सत्य है कि कुछ नये कहानीकार कुंठित पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण में सन्तुलन खो बैठें हैं। कहीं वे पात्र मनोविश्लेषक और कहीं प्रचारक बन गये हैं। परन्तु ऐसी अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ बड़ी तीव्र गति से प्रकाश में आ रही हैं जो पात्रों की मानसिक स्थिति का यथातथ्य विश्लेषण करने में सक्षम हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर काल का वर्तमान दशक नये कहानीकारों के समक्ष व्यक्ति एव समाज से सम्बन्धित अनेक कठिन प्रश्न लेकर आया है। उन प्रश्नों का उत्तर मानव व्यक्तित्व के विश्लेषण द्वारा ढूंढने का प्रयास सजग कहानीकारों द्वारा हुआ है और हो रहा है। व्यक्ति के भय, आशंका, कुण्ठा और क्षोभ को आधुनिक कहानी पूरी क्षमता के साथ व्यक्त करने के लिये प्रयत्नशील है।

यह भी कह देना आवश्यक है कि कुण्ठाओं और विषाद तक ही अपनी दृष्टि को सीमित रखने वाले कहानीकारों के पात्रों में व्यक्तित्व का एक ही रूप उभर सकता है। उन्हें जीवन पर व्यापक दृष्टि रख कर समस्त गुणों-अवगुणों, भावों-विचारों और क्रियाओं के व्यक्तित्व में ढालने की चेष्टा करनी चाहिये। एक प्रबुद्ध आलोचक का विचार इस सम्बन्ध में दृष्टव्य है :—

"नई कहानी किसी व्यक्ति या वर्ग-विशेष की सम्पत्ति नहीं है। वह तो आज की जिन्दगी का सही प्रतिनिधित्व है। हम जितनी तरह की जिन्दगी जीते हैं, नई कहानी उसका प्रतिरूप है, युग की तमाम संवेदना और सचेतना की अभिव्यक्ति है, वह युग-बोध के साथ-साथ सजग भावबोध की कहानी है'।[1]

---

१. ले० सीताराम शर्मा,—"स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य"—१९६४, पृ० २०५।

कुण्ठाओं और तिक्तता की अभिव्यक्ति को प्रधानता देने वाले सचेतन विशेषण से अपने को विभूषित कर लेने वाले इस दशक के नये कथाकारों के लिये आवश्यक है कि वर्तमान के सत्यांश को प्रकट करते हुए, स्वस्थ निर्माण और उज्ज्वल भविष्य की आस्था का भी संकेत अपने द्वारा निर्मित पात्रों के संघर्षरत व्यक्तित्व के माध्यम से दें।

कुण्ठाओं और विषाद को व्यक्त करने वाली कुछ पात्र-प्रधान कहानियों का उदाहरण और उनमें प्रस्तुत व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत प्रसंग में अपेक्षित है।

राजेन्द्र यादव ने 'भविष्य के आसपास मँडराता अतीत'[1] में एक ऐसे पात्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है जिसका मुँह दुर्भाग्यवश चेचक के दाग तथा जल जाने के कारण विकृत हो गया है और जो अपनी पत्नी तथा पुत्री से अलग रहने की विवशता से छटपटा रहा है। उसके पूर्व प्रणय की वेदी पर उसके परिवार का सम्बन्ध सूत्र टूट कर बिखर गया है। उसकी बेटी बुलबुल भी उसे पापा के रूप में स्वीकार करना नहीं चाहती। बार-बार वह अपने चरित्र और रूप के प्रति क्षुब्ध होता है। आशंका और पश्चाताप का असह्य ताप उसे निरन्तर दग्ध करता है। इन स्थितियों का समुचित चित्रण कर कहानीकार ने व्यक्तित्व विश्लेषण का सूक्ष्म स्वरूप प्रस्तुत किया है।

स्वरूप ढौंडियाल ने 'दूसरा चेहरा'[2] में महेन्द्र के रूप में ऐसे कलाकार के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया है जो चित्र-कला का मर्मज्ञ और कुशल पोर्ट्रेट निर्माण-कर्त्ता होते हुए भी यौन भावना और स्त्री-साहचर्य की उग्र प्रवृत्ति से असन्तुलित तथा बेचैन होकर भटक रहा है। अपने भावावेग को रोकने में असमर्थ होकर वह अपनी प्रेयसी चम्पा और उसके घर वालों को गालियाँ भी सुना देता है :—

बज़ात, कमीने, देखूँगा कैसे करते हैं वे अपनी लड़की की शादी। वह वेश्या, हज़ारों भाइयों के रूप में जिसने खसम पाल रखे है, देखता हूँ अब कैसे घूमती है, वह बन-ठन कर। प्रेम करना जानता हूँ तो नफरत भी उतनी ही कर सकता हूँ।[3]

इन शब्दों में उसकी मूल प्रवृत्तियाँ—ईर्ष्या, घृणा और क्रोध—का प्रबल रूप व्यक्त होने लगता है।

सी० भास्करराव ने 'यात्रा'[4] शीर्षक कहानी में आधुनिक परिस्थितियों के

१. 'सारिका', जून, १९६६।
२. 'कहानी', अप्रैल, १९६४।
३. वही, पृ० २१।
४ 'कहानी' जनवरी १९६३।

अन्तर में प्रवेश करने के लिये सचेष्ट और आकुल पात्र के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया है। न जाने कितने प्रश्न उसे घेरे हैं, वह आज के समस्याग्रस्त मानव का सच्चा प्रतिनिधि है। तभी तो वह सोचता है :—

"बहुत सारे प्रश्न मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रहे हैं—क्यों सोमेश्वर बाबू एक ही रिकार्ड को सुई बदल-बदल कर बजाते रहते है ?—क्यों मिस्टर सहाय ठुड्डी के नीचे उँगलियाँ रखे, आसमान की ओर देखते रहते हैं ? क्यो महेसर बार-बार कहता है कि हम मध्यम वर्गीय जीने के लिये नहीं, बल्कि मरने के लिये ही पैदा होते हैं—क्यों ?"[1]

अनेक कुंठित व्यक्तित्व अपनी समस्याओं को लेकर इस विचारक पात्र के मानस को आन्दोलित करते रहते हैं।

'दायरे'[2] में शान्ति मेहरोत्रा ने राधा के विषादमग्न व्यक्तित्व का उत्कृष्ट अंकन किया है। अपनी समस्त सेवा, स्नेह, सम्मान और आत्मीयता का रस उँडेल कर भी न तो वह भाइयों के निश्छल स्नेह को प्राप्त कर पायी, न पिता के हृदय के एकदम निकट पहुँच सकी और न सम्बन्धियों का सहयोग ही पा सकी। नौकरी के बन्धन में बँधी सबके स्वार्थपोषण का निमित्त मात्र बनने वाली आधुनिक सुशिक्षिता युवती के मन की कचोट का बड़ा ही भावपूर्ण विश्लेषण इस कहानी में हुआ है। मन की कुण्ठाएँ किस प्रकार व्यक्तित्व के उत्साह, स्वास्थ्य और उमंग को ग्रस लेती है, इसका उत्तम निरूपण इस रचना में उपलब्ध है।

'कम्प'[3] शीर्षक कहानी में मनहर चौहान ने बुक स्टाल पर काम करने वाले एक वृद्ध के मनोभावों का विश्लेषण कर उसके व्यक्तित्व के माध्यम से खीझे हुये और वर्त्तमान पीढ़ी से सर्वथा असन्तुष्ट कुंठित वृद्धि वर्ग के प्रतिक्रियाजन्य विचारों का विवरण दे दिया है। बुक स्टाल पर आने वाले ग्राहकों के प्रति उस वृद्धि के मन में अनेक दुर्भावनाएँ आती हैं और आत्मविश्लेषण द्वारा वह सबको दोषी, अनैतिक आचरण में संलग्न तथा दायित्वहीन पाता है। बस अपनी असफलताओं का आरोपण उन सभी पाठकों और दर्शकों पर करने की चेष्टा करता है जो पत्रिकाएँ देखने, पढ़ने और खरीदने के लिये वहाँ आते हैं। मनोवैज्ञानिक विवेचन की दृष्टि से कहानी में पर्याप्त आकर्षण है।

ज्ञानरंजन ने 'सीमाएँ'[4] में सविता की प्रतिक्रिया को निम्न शब्दों में व्यक्त

---

१. वही, पृ० ६६।
२. 'सारिका', अगस्त, १९६३।
३. वही, अगस्त, १९६२।
४. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६।

करते हुए उसकी दमित वासना की सहज अभिव्यक्ति द्वारा कुंठित व्यक्तित्व के एक प्रमुख तत्व-ईर्ष्या की ओर संकेत किया है :—'

'मुझे एक बार जरूर माफ कर दीजिएगा। विवेक भैया ने हमें अलग करने के लिये जो कुछ किया, वह मैं भूल नहीं सकूंगी। आखिर ईश्वर ने भी उन्हें खूब कठोर दण्ड दिया। प्रमिला ने उन्हें ठेंगा बता दिया है। उसकी शादी आपके लखनऊ के किसी इन्जीनियर से तय हुई है। आजकल दिन भर उनका मुँह बना रहता है'।[१] और इसके प्रभाव का सांकेतिक उल्लेख भी इस प्रकार कर दिया है :—

"इस सूचना में मुझे एक निरर्थक किस्म की हलकी-सी तसल्ली हुई।"[२]

'उसका त्रास'[३] में श्रीकान्त वर्मा ने मानसिक उलझनों का विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण किया है। भीड़ और समाज उस व्यक्ति के दमन के लिये सचेष्ट हैं जो उनसे अलग होने का प्रयत्न करता है। व्यवस्था और कानून भी उसकी सहायता नहीं कर पाते। पुलिस और प्रशासन के पास से भी उसे निराश हो लौटना पड़ता है। ऐसे अनुभवों के बीच चलते हुए पात्र के व्यक्तित्व को इस कहानी में विश्लेषित किया गया है। सड़े अंडे और टमाटर उसके ऊपर बरसाये जाते हैं। मानसिक विभ्रम का चित्रण कहानी में मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया गया है।

'सपने रो पड़े'[४] शीर्षक कहानी में रोगिणी रीना की असामान्य स्थिति के मध्य उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण सर्वथा नवीन कथा-भूमि पर कहानीकार आनन्द ने किया है। कामा की रोगिणी दीर्घकाल तक निद्रा के पाश में बँधी बूढ़ी हो जाती है। उसके बाल सफेद हो जाते हैं और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। दर्पण में अपनी आकृति देख कर वह उस जीवन से मृत्यु को ही बेहतर समझने लगती है। उसकी याचना में मेडिकल साइंस के प्रति गहरा व्यंग्य निहित है। वह कहती है 'आप इतने बड़े डाक्टर हैं, जिन्होंने मुझे जीवन दे दिया, क्या वही मुझे एक घड़ी की जवानी नहीं दे सकते ?—सब चुप हैं। आप मुझे बचाकर खुश हैं, लेकिन मैं बचकर खुश नहीं हुई। जिसकी ख्वाबों से भी हसीन जवानी छिन जाये, वह भला आपसे बुढ़ापे की खैरात लेगा।'[५]

कहानी के चरम उत्कर्ष में व्यक्तित्व का विस्फोट है जबकि रीना जहर खा लेती है।

---

१. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६, पृ० ९२।
२. वही, पृ० ९२।
३. 'सारिका', जनवरी, १९६३।
४. वही, अक्तूबर, १९६३।
५. वही, पृ० ८७।

परिस्थितियों के क्रूर आघात से नारी व्यक्तित्व में प्रतिष्ठित आस्था किस प्रकार टूटने लगती है और कुण्ठाएँ किस प्रकार जीवन के समस्त उत्साह को निगल लेती है, इसका यथातथ्य और प्रभावपूर्ण विश्लेषण 'अधजली सिगरेट और रीता'[1] शीर्षक कहानी में नवोदित कथाकार ब्रजराज तिवारी ने किया है। 'रीता' अपनी विवशताओं में डूबती हुई हमारी पूरी संवेदना को प्राप्त कर लेती है।

राजेन्द्र अवस्थी की कहानी 'पानी के परदे'[2] में अपंग हो जाने वाले जयसिंह का आक्रोश शर्मा जी की सहानुभूति पाते ही कितने स्वाभाविक रूप में फूट पड़ता है। उसे सबसे अधिक क्षोभ है अपनी पत्नी के प्रति, जो जीवन-संगिनी कही जाती है। उसकी विवशता तथा दैन्य के प्रतीक हैं ये शब्द :

'शर्मा जी मैं सात बरस से इसी तरह बिस्तर पर पड़ा हूँ, न कहीं आना, न कहीं जाना। घर का कोई आदमी कभी मेरे पास आकर नहीं बैठता। यह मेरी स्त्री है—समझे, स्त्री है। सात साल हो गये, मैंने इसका हाथ भी नहीं छुआ। इसी तरह मुझे तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखती है और उसी तरह बातें भी करती है। यह तब है शर्मा जी जब यह, इसके लड़के और लड़कियाँ मेरी ही कमाई खाते हैं···अब भी मेरी कमाई खाते हैं।''[3]

राजेन्द्र अवस्थी की 'भूचाल'[4] में श्रमिक के कुंठित व्यक्तित्व का मनोविज्ञान-सम्मत विश्लेषण प्राप्त होता है। अनेक व्यक्तियों के व्यवहार को वह श्रमिक समझता पहचानता इधर-उधर भटकता रहता है। चारों ओर दैन्य, निराशा, छल और प्रवंचना के शिकञ्जे फैले हुए दिखाई देते है। उसे आभासित होता है कि ये शिकन्जे तुरन्त उसे दबोच कर अपना मुँह बन्द कर लेंगे। मैनेजर, दूधवाला, दूकानदार और टी० सी० सब उसी शोषक समाज के प्रतिनिधि हैं जो उसके अस्तित्व को ग्रसता जा रहा है।

भीष्म साहनी ने 'प्रोफेसर'[5] में एक अध्यापक की विवशता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर उसके व्यक्तित्व का स्थिति-सापेक्ष्य विश्लेषण किया है। विद्यार्थी कृष्ण लाल की कलाकार प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने का उसे सामाजिक दण्ड भोगना पड़ता है। अपने चाचा के क्रोध का शिकार कृष्णलाल ही नहीं बनता प्रोफ़ेसर वीरेन्द्र

---

१. 'भारती', जुलाई, १९६१।

२. 'सारिका', जुलाई, १९६४।

३. वही, पृ० ६५।

४. 'सारिका', जनवरी, १९६३।

५. 'नई कहानियाँ', जुलाई, १९६२।

भी उसकी लपेट मे आ जाते है। अपने भावों को कुचल कर प्रोफेसर कला-साधना का विरोध कर कृष्णलाल को पाठ्य-पुस्तकों में डूबने का परामर्श सरस भाषा में देते हैं। व्यक्तित्व के अन्तर्विरोध का सूक्ष्म विश्लेषण इस कहानी मे कुशलता से प्रस्तुत किया गया है।

सुदर्शन चोपड़ा ने मानसिक संघर्ष में डूबे हुए, निरन्तर परिस्थिति से टकराने की क्षमता को सँजोने और बटोरने के लिये प्रयत्नशील पात्रों के व्यक्तित्व को आत्म-विश्लेषण के माध्यम से निरूपित करने का प्रयास किया है। 'अधरंग'[1] का रघु अपने दादा, डैडी और उनकी नयी पत्नी के विविध सम्बन्ध सूत्रों को जोड़ने के लिये प्रयत्नशील, आकुल-मानस अवस्था से पूर्व ही अत्यधिक गम्भीर हो जाने वाला पात्र है।

नीलकान्त ने मध्यवर्गीय समाज की दयनीय स्थिति का करुण चित्र प्रस्तुत करते हुए 'करुणा'[2] शीर्षक कहानी में इसी नाम की रुग्णा बालिका का व्यक्तित्व अंकित किया है। उसके चारों ओर विवशता का जाल बिछा है। माता-पिता इतने विवश, दुखी और सन्तानों को पाकर इतने व्यथित है कि वे इनसे छुट्टी पा लेने को आकुल हो जाते हैं। करुणा की माँ के इस कथन में आज की विवश नारी का चीत्कार व्यक्त होता है—'मैं भी यही सोचती हूँ कि ये क्यों हैं? क्यों हैं? ये मेरे बच्चे क्यो हैं? अधमरे, नगे, भूखे, रोते बिलबिलाते ये बच्चे क्यों हैं? मैं रोज पश्चाताप करती हूँ। वर्षों से पश्चाताप कर रही हूँ। मुझे ममता से अब नफरत है, घृणा करती हूँ अपने मातृत्व से। यही बुद्धि पहिले आयी होती तो—मैं चाहती हूँ कि करुणा मर जाए, मेरे सारे बच्चे मर जाएँ, मैं मर जाऊँ··· ।'[3]

विश्वजीत ने 'वह कौन थी'[4] कहानी में 'अन्नो' के अन्तर्द्वंद्व का चित्रण करते हुए उसके व्यक्तित्व की गहराई में उतरने की चेष्टा की है। अपने पति और प्रेमी में अन्नो का मन बँट कर चलना चाहता है, पर किसी ओर भी ठीक से चल नहीं पाता। प्रेमी 'अनिल' उसके पत्रों को पाकर आकुल-व्याकुल हो उठता है। वह नहीं चाहता कि उसके कारण अन्नो की गृहस्थी में आग लग जाये। अन्नो की मानसिक पीड़ा को लेखक ने कितनी सीधी उक्तियों के सहारे साकार किया है :

'सोचती हूँ, आज से उनके अतिरिक्त मैं कोई दूसरी बात नहीं सोचूंगी। तुम्हारा विचार तक अपने मन में नहीं आने दूँगी। किन्तु इस आरोपित संयम से तो

१. 'ज्ञानोदय', जून, १९६५।
२. 'नई कहानियाँ', जुलाई, १९६२।
३. 'नई कहानियाँ', जुलाई १९६२, पृ० ५३।
४ 'सारिका', अगस्त १९६३।

मैं और भी उलझ जाती हूँ । क्यों अनिल ! मनुष्य के लिए केवल कर्म ही आवश्यक है न ? फिर यह कामना क्यों जीती है ?-यह कौन कर्म है ।'[1]

विविध प्रयोग : कुछ विशिष्ट रचनाएँ और उनमें व्यक्तित्व विश्लेषण का स्वरूप

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य में व्यक्तित्व-विश्लेषण की दृष्टि से कुछ विशेष महत्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाश में आई है। किसी वर्ग-विशेष में रख कर उनके साथ समुचित न्याय नही किया जा सकता है। अतएव यह आवश्यक है कि उन रचनाओं मे आये हुए पात्रों के व्यक्तित्व के स्वरूप एवं विश्लेषण की गतिविधि का परीक्षण स्वतन्त्र रूप से किया जाय। इन रचनाओं में प्रौढ़ और युवा लेखकों की देन समान रूप से आदरणीय है। दोनो के सहयोग से कहानी में व्यक्तित्व-विश्लेषण की क्षमता का विकास हुआ है।

इन कहानियों में कही-कहीं पात्रों के बाह्य रूप—आकार-प्रकार, वेश-भूषा आदि—का वर्णन है जो विकास काल और उत्कर्ष काल के बाह्य स्वरूप-वर्णन से भिन्न है। कहानीकारों ने बाह्य का सम्बन्ध अन्तर से जोड़ देना आवश्यक समझा है। कहीं संक्षिप्त संकेत ही है और कहीं पर बाह्य वर्णन विस्तृत भी हो गया है। वर्णन को पात्र के परिचय से आरम्भ करने की प्रवृत्ति भी कुछ कहानीकारो में दृष्टि-गत होती है।

उपेक्षित और तिरस्कृत पात्रों को भी कहानी के अंक में प्रतिष्ठित कर उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने का प्रयास इस काल के कहानीकारों ने किया है। निर्भीक और साहसी पात्र और पात्राओं ने इन कहानियों में पूर्वाग्रह के चश्मे को पहनने से इन्कार कर दिया है और अपनी दृष्टि से समस्याओं को देखने और समझने की चेष्टा की है। कहानी के मंच पर उनके व्यक्तित्व की रहस्यपरकता की कलई भी खुल गई है जो अपने को बहुत चतुर और व्यवहार कुशल समझते हैं। पुरानी मान्यताएँ किस प्रकार टूट रही हैं, बिखर रही हैं, इसका चित्रण भी वर्तमान दशक की कहानियों में उपलब्ध होता है।

कहानीकार ने पूरी संवेदनशीलता के साथ इन विविध रचनाओं में उन पात्रों की व्यथा, क्षोभ, संघर्ष-वृत्ति और आशा को व्यक्त किया है जो निरन्तर परिस्थितियों से जूझ रहे हैं, जिनके मन में वर्तमान के प्रति तीव्र असन्तोष और भविष्य के प्रति आस्था विद्यमान है। ऐसे पात्र भी कहानी की भूमि पर अवतरित हुए हैं जो अभाव

---

१. वही, पृ० ५०।

ग्रस्त और प्रपीड़ित होते हुए भी व्यक्तिगत नैतिकता का आधार छोड़ते नहीं हैं। प्रलोभन उन्हें विचलित करने का प्रयास करते हैं, पर सफल नहीं हो पाते।

इन समस्याओं, प्रवृत्तियों और मनोभावों को जिन उत्कृष्ट और विचारणीय कहानियों में विश्लेषित किया गया है उनके कुछ उदाहरण इस उद्देश्य से प्रस्तुत किये जा रहे है कि उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण के जिन विविध रूपों को व्यंजित होने का अवसर प्राप्त हुआ है, उनकी महत्ता तथा विश्वसनीयता को समझा जा सके।

'मेरी जायत्री को'[1] कहानी में शरद देवड़ा ने 'विजन दा' का व्यक्तित्व-विश्लेषण करते हुए उनके बाह्य आकार-प्रकार तथा वेशभूषा का सोद्देश्य वर्णन किया है। अन्तर की वृत्तियों को सही रूप देने के लिये बाह्य रूप-वर्णन को विश्वसनीय साधन के रूप मे अपनाया गया है। लेखक विस्तार में उतरना आवश्यक समझता है, जो प्रस्तुत कहानी की एक अनिवार्यता है। कहानीकार के शब्दों में विजन दा ऐसे थे—

'उसने नीली पतलून पहनी हुई थी, जिसका रंग घिसकर हलका पड़ गया था। उसमें कई सफेद धब्बे निकल आये थे। अरसे से धुलाई और स्त्री नहीं होने से उसने पाजामे की शक्ल अख्तियार कर ली थी। उसकी गंजी आस्तीनवाली थी, जैसी अक्सर खिलाड़ी पहना करते है। गंजी के रोयें उड़ गये थे और रंग पीले से तकरीबन सफेद हो चला था। सामने के बटन न होने से पिंजरनुमा सीने पर भूरे बाल दीख रहे थे। साधारण से कुछ लम्बे और उलझे हुए सिर के रूखे केश कानों तथा कनपटियों पर छितराये हुए थे। कई दिनों की बढ़ी हुई दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल चेहरे के काले रंग में इस तरह घुल-मिल गये थे कि केवल पिचके गालों की उभरी हड्डियाँ और लम्बी ठुड्डी ही दिखाई दे रहे थे।'[2]

शिवानी ने 'मामा जी'[3] शीर्षक कहानी में रोहिणी का परिचय एकदम आरंभ कर दिया है बिना किसी भूमिका के :

'कौन कह सकता था कि यह वही मरघिल्ली-सी रोहिणी है जो अपने ताऊ की लड़की की मँगनी साड़ी पहन कर, हर शादी-मुंडन पर बन्ने सोहर गाती नटनी-सी नाचती थी। वह आज किसी भी बड़े अफसर की पत्नी को मात दे सकती थी। गरमी की छुट्टियों में अब वह पहाड़ आती तो काठगोदाम स्टेशन पर उसका असबाब, एक आँख की कानी मद्रासी आया और बेंत से मढ़ा बच्चे का कमोड पूरे स्टेशन पर उसके व्यक्तित्व की मुहर लगा देते।'[4]

---

१. 'सारिका', मई, १९६५।
२. वही, पृ० ४१।
३. 'सारिका', मार्च, १९६४।
४. वही, पृ० ३६।

इस प्रकार वर्णनात्मकता के आग्रह का आभास इस रचना में प्राप्त होता है। शिवानी ने अपनी दूसरी उल्लेखनीय रचना 'गहरी नींद'[1] में नींद की गोलियों के सहारे कहानी के पट पर से बड़ा ही आकर्षक नारी-पात्र को हटा दिया है। कहानी के बीच से अख्तरी का व्यक्तित्व बड़े कलात्मक ढंग से उभरा है। उसके व्यक्तित्व के बाह्य रूप का वर्णन भी कहानी लेखिका ने रस ले लेकर प्रस्तुत किया है। एक संक्षिप्त उदाहरण :

'गोंडा कचहरी स्टेशन, कनेर के पेड़ के नीचे, सस्ते केले रेशम का बैजनी गरारा पहने, सिलवट पड़ी रेशमी फतुई की जेब से बीड़ी निकाल, पास की दूकान से माचिस खरीदने अख्तरी उठी, फिर न जाने क्या सोच कर गन्दी, फटी-सी पोटली को टाँगों के बीच दबा कर बैठ गयी। उसके होंठों पर लगे सस्ते लिपस्टिक की फूहड़ रेखा ठुड्डी तक उतर आयी थी।'[2]

'प्रेम पत्र' में डाक्टर लक्ष्मी नारायण लाल ने एक मुँहज़ोर और पुरज़ोर छात्रा के व्यक्तित्व का निरूपण किया है। उसका नाम उपमा है परन्तु यथार्थतः अपनी निर्भीकता और स्पष्टवादिता में वह निरूपमा है। मिस गुप्ता के प्रेमपत्रों का रहस्य वह सहज ही जान लेती है। स्वयं वह प्रेमपत्रों के कारण बदनाम होती है। लेकिन किसी भी आलोचना अथवा दण्डविधान से वह डरती नहीं है। छात्रावास को छोड़ते समय भी वह चिन्तित नहीं होती। दूसरी ओर मिस गुप्ता का रहस्य उनके लिये तीव्र व्यथाकारक हो जाता है। छात्रावास जीवन के मध्य युवती और प्रौढा सुशिक्षिता नारी-पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण बड़ी कुशलता से इस रचना में किया गया है।

'आकाश के आइने में'[3] मन्नू भंडारी की एक ऐसी कहानी है जिसमें लेखा, दिनेश, गौरा और भाभी के चित्र एक-एक कर सामने आते हैं। सबसे अधिक सतर्क दृष्टि से लेखा का व्यक्तित्व अंकित किया गया है। समाज की मान्यताओं और वर्जनाओं का एक साथ सन्तुलित समन्वय कर उसके मन की परतें खोली गयी हैं। विभिन्न स्थितियों में उसकी सन्तान-हीनता पर व्यंग्य की छाया पड़ती रहती है। उसका समस्त सौन्दर्य, आकर्षण, विद्वत्ता, व्यवहार-कुशलता और उदारता समाज की एक ही संकीर्ण तुला पर तौले जाते और व्यर्थ करार दिये जाते हैं। उसे सन्तान चाहिए ही यह उसकी अम्मा का दृष्टिकोण है। तावीज और मनौती तक जब बात पहुँचती है तो

---

१. 'सारिका', जुलाई, १९६४।
२. वही, पृ० ११।
३. 'सारिका', जनवरी, १९६३।

उसके अर्जित संस्कार टकराने लगते हैं। कहानी में नारी मनोवृत्तियों का आकर्षक विवेचन हुआ है।

ज्ञान प्रकाश ने 'खरा-खोटा'[1] में एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को दो स्थितियों को एक ही संवेद्य भूमि पर रख कर इतनी सहजगति से विश्लेषित किया है कि उसे एक सशक्त रचना के रूप में देखना आवश्यक हो जाता है। मुरारी कमलेश का कटु आलोचक है क्योंकि कमलेश आई० ए० एस० की प्रतियोगिता में बैठकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये सचेष्ट है और मुरारी क्लर्की की चक्की पीस रहा है। परन्तु कमलेश के आई० ए० एस० की लिस्ट में आने की सूचना जैसे ही मुरारी को प्राप्त होती है, वह उसके घर दौड़ कर जाता है और उसकी भरपेट प्रशंसा करता है। स्वार्थी, अवसरवादी और ईर्ष्यालु मित्र के व्यक्तित्व को कहानीकार ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है।

'जग्गू'[2] शीर्षक कहानी में विमला रैना ने जग्गू नामक एक समस्यामूलक व्यक्तित्व का निरूपण किया है। सरला जैसी गम्भीर और उदार-हृदय युवती का उसके प्रति दयार्द्र हो जाना स्वाभाविक रूप से चित्रित किया गया है। निरन्तर डाँट, उपेक्षा और तिरस्कार ने जग्गू को उद्दण्ड और स्वच्छन्द विचरण करने वाला बना दिया है। सरला अनुभव करती है कि वह प्यार से ठीक मार्ग पर लाया जा सकता है। जग्गू उसके विमल प्यार का संकेत पाकर सुमार्ग की ओर बढ़ता है। लेखिका के शब्दों में—

'उसकी आँखों में हृदय का प्यार उमड़ आया था।···उसे जग्गू पर दया आ रही थी। पर वह जानती थी जग्गू दया नहीं चाहता। वह प्यार चाहता है। ऐसा प्यार जो उसे समझ सके, जो उसे बाँध सके, जो उसे कर्म की प्रेरणा दे सके।'[3]

ज्ञानरंजन ने पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं को ढोने वाले वृद्ध व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण 'पिता'[4] शीर्षक कहानी में किया है। जो कुछ नया है वह तिरस्करणीय और अनैतिक है असामाजिक और हानिकर है—ऐसी धारणा को समेटे हुये वृद्ध को सभी पुरानी वस्तुओं, परम्पराओं और रीति-रिवाजों के प्रति विचित्र मोह है। आधुनिकता के प्रति कहीं-कहीं उनके मुख से तीखा व्यंग्य फूट पड़ता है :

---

१ 'कहानी', जुलाई १९६३।

२ 'सारिका', जनवरी १९६४।

३ वही, पृ० ९१।

४ 'नई कहानियाँ', फरवरी, १९६५।

'आप लोग जाइये न भाई, काफी हाउस में बैठिये, झूठी वैनिटी के लिये बेयरा को टिप दीजिए, रहमान के यहाँ डेढ़ रुपये वाला बाल कटाइये, मुझे क्यों घसीटते हैं ।[1]

रूढ़ियों और संस्कारों से बुरी तरह बँधे हुए पात्र के व्यक्तित्व का सजीव चित्रण इस कहानी की प्रमुख विशेषता है ।

'गीता सहस्त्रनाम'[2] में भीष्म साहनी ने पुरानी मान्यताओं और परम्परागत आस्थाओं से चिपकी हुई वृद्धा के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है । अपढ़ होते हुए भी सुने हुए श्लोकों को अभ्यास के कारण वृद्धा चाची पुस्तक पर अंगुली रखकर पढती जाती है । प्रत्येक श्लोक उनके लिये ब्रह्मवाक्य है । कहानी-लेखक ने द्रौपदी चाची के प्रति व्यंग्य के स्थान पर सहानुभूति और करुणा उत्पन्न करने की चेष्टा की है । कहानी के अन्त में भावाकुल वृद्धा के श्रद्धा-विगलित रूप का सोद्देश्य वर्णन है—

"मैं उलटे पाँव कोठरी की दहलीज़ तक पहुँचा । पर आगे नहीं बढ़ पाया । चाची की पोथी फर्श पर आधी पड़ी थी । चाची दोनों हाथों से दुपट्टे के छोर से आँखों को दबाये बिलख-बिलख कर रोये जा रही थी । उसके हाथ अब भी जुड़े हुए थे मानो भगवान के दरबार में बार-बार अपनी हिचकियों द्वारा शान्ति की भीख माँगे जा रही थी" ।[3]

अभावों, विवशताओं और सामाजिक मर्यादाओं के कठोर बन्धनों में बंधी मध्यवर्गीया अविवाहिता युवती को 'कमलेश्वर' ने 'दूसरे'[4] शीर्षक कहानी में बड़े ही सहज-सरल ढंग से प्रस्तुत किया है । कई छोटी-छोटी नौकरियों को जुटा कर भी वह परिवार के अर्थ-संकट को दूर नहीं कर पाती । उसकी असमर्थता ही उसके विवाह प्रस्ताव का कारण बनती है । वर्तमान युग को यथार्थ रूप में विश्लेषित किया गया है । उसकी विवशता को, अनिर्णय की स्थिति को सहज आत्मविश्लेषण द्वारा व्यक्त किया गया है—

"अगर कोई ऐसी सर्विस मिल जाती, जो दो सवा दो सौ दे सकती....और पक्की होती, तो शायद वह सब को अनिर्णय की स्थिति से निकाल लाती, अपना भी कोई निर्णय लेती—और तब एकाएक यह पूरा घर उस बेचारगी से ऊपर आता, जो उसके पूरे अस्तित्व को दबोचे है ।"[5]

---

१. वही, पृ० ७ ।
२. 'सारिका', फरवरी, १९६६ ।
३. वही, पृ० २३ ।
४. 'नई कहानियाँ', जून, १९६५ ।
५. वही ।

सोमावीरा की कहानियों में पात्रों के भावुक, करुण-कोमल और स्नेहार्द्र व्यक्तित्व का रूप भी पूरी निखार के साथ उभरा है। 'बहिन की पाती'[1] के रोचना, बल्दू और रांझी मन के तार को झंकृत कर देते और सहानुभूति को उद्वेलित कर देते हैं। कहानी लेखिका ने यथार्थ के चित्रण को महत्व देते हुए पात्रों के अन्तर की कोमल भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है। विभिन्न स्थितियों में उनके व्यक्तित्व की परतें खुलती जाती हैं और वे हमारे मन के निकट चले आते हैं।

दूधनाथ सिंह की लम्बी कहानी 'इन्द्रधनुष'[2] में कीर्ति, निरंजन और अनिल अपनी-अपनी उलझनों में फँसे हुए विभिन्न स्वभाव के ऐसे पात्रों के रूप में अंकित किये गये हैं जो संयोगवशात् एक दूसरे के निकट आ जाते पर किसी प्रकार सम्बन्ध-सूत्र में सही रूप से बँध नहीं पाते हैं। कीर्ति कुछ दबी, लाचार और भावुक है, निरंजन परिस्थितियों का दास है और अनिल स्वार्थी है। कहानीकार ने इस त्रिकोण को खड़ा कर शराबखोरी और आवारागर्दी की न जाने कितनी स्थितियों का विस्तारपूर्वक सृजन कर दिया है। कहानी में बिखराव बहुत हैं अतएव पात्रों के व्यक्तित्व में कई असंगतियाँ आ गयी हैं उनमें निहित अन्तः प्रेरणाओं का पारस्परिक संबंध बताने की ओर लेखक ने ध्यान ही नहीं दिया है।

रमेश बक्षी की 'बाजार'[3] शीर्षक कहानी में शराब में डूबने वाले, वासनाओं के ज्वार में बहने वाले, माडर्न पुरुष पात्र को सहज गति से निरूपित कर दिया गया है। लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व अपनी ऊँचाई पर पहुँच कर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। विपन्न और दयनीय स्थिति में होते हुए भी वह अपने निर्धारित पाँच रुपये से सम्बन्ध रखती है। पूड़ी-सब्जी ही नहीं वह वासनाग्रस्त पुरुष की सोने की अँगूठी भी बिना कहे-सुने लौटा देती है।

'धुएँ की परतें' ओम कुकरेती की ऐसी सशक्त रचना है जो त्रिलोकीनाथ के व्यक्तित्व की प्रभावपूर्ण व्यंजना प्रस्तुत करती है। प्रथम पत्नी 'छबि' श्यामवर्णा होने के कारण उसकी अपेक्षा और निष्ठुरता का शिकार बनती तथा आकस्मिक रूप से कालकवलित हो जाती है। दूसरी पत्नी 'छाया' रूप-यौवन-सम्पन्ना होने पर भी कठोर हृदया, ईर्ष्यालु और कटुभाषिणी है। नियति के क्रूर व्यंग्य तथा अपने पूर्वकृत अपराध की पश्चाताप-अग्नि उसे धीरे-धीरे सुलगा कर जलाती है। अन्तर्द्वन्द्व का उत्कृष्ट निरूपण इस कहानी में उपलब्ध है।

---

१. 'कादम्बिनी', फरवरी, १९६४।
२. 'नई कहानियाँ', जून, १९६५।
३. 'नई कहानियाँ', जून, १९६५।
४ 'नवनीत' जुलाई, १९६७

'खोयी हुई दिशाएं'[1] में कमलेश्वर ने चन्दर के व्यक्तित्व को बहुत से झटके दिये हैं और उसकी कमजोरियों को एकदम चित्रकार की तरह अंकित कर दिया है। वातावरण के अनेक दृश्य उसकी भावनाओं को उभारते रहते हैं। उसकी पत्नी निर्मला भी उसे अपरिचिता सी लगने लगती है। मानव मन की परतों को खोलकर उनका यथा-तथ्य विश्लेषण इस कहानी में विस्तार से किया गया है। कहीं-कहीं मांसल चेष्टाओं के रंगीन चित्र भी हैं, जो कहानी में भद्दे जोड़ के समान अनावश्यक प्रतीत होते हैं। जैसे—

'अन्धेरे में ही उसने उसके नाखूनों को टटोला, पलकों को छुआ, उसकी गर्दन मे मुँह छिपा कर खो जाना चाहा। धुले हुए बालों की चिरपरिचित सुगन्ध उसके रन्ध्र रन्ध्र में रिसने लगी और उसके हाथ पहचान के लिये पोर-पोर पर थरथराते हुए सरकने लगे'।[2]

'एक क्लर्क था'[3] शीर्षक कहानी में द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ने राधेश्याम के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए उसके त्याग, तपस्या और उदारता के गुणों की प्रतिष्ठा आदर्शवादी भूमि पर की है। एक क्लर्क की आर्थिक और सामाजिक सीमाओं से आबद्ध होते हुए भी वह ब्रजभूषण जैसे सम्पन्न व्यक्ति का मस्तक झुका देता है। अपनी दिवंगता पत्नी के धरोहर के रूप में 'मुन्ना' उसकी समस्त महत्वाकांक्षा का केन्द्र बन जाता है। यह जानते हुए भी कि उसमें ब्रजभूषण का रक्त प्रवाहित हो रहा है वह अपना सर्वस्व उसके संपोषण में लगा देता है। यथार्थ परस्थितियों के मध्य आदर्श की प्रतिष्ठा कर कहानीकार ने एक क्लर्क के व्यक्तित्व को बहुत ही ऊँचा उठाने का प्रयास किया है।

हृदयेश की कहानी 'रिश्ते'[4] में फारूक मियाँ और तुलसी गुरु और शिष्य के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। उनके रिश्ते को तोड़ने वाली परिस्थितियाँ आती हैं और वे एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं। परन्तु जब लाला घनश्यादास की दूकान में रैंच निकालने की समस्या आती है तो गुरु अपना अभिमान भूल कर शिष्य पर पुनः दयालु हो उठते हैं। संस्कारगत उदारता को कहानीकार ने व्यक्तित्व का प्रेरक तत्व मानकर ग्रहण किया है। फारूक मियाँ आत्मविश्वास और स्नेह उँड़ेलते हुए कहते हैं :—

'तुलसी मेरे तेरे और रिश्ते टूट सकते हैं, पर उस्ताद शागिर्द का नहीं। कम

---

१. 'नई कहानियाँ', जुलाई, १९६२।
२. वही, पृ० ६३।
३. वही, जनवरी, १९६३।
४. 'कादम्बिनी', जनवरी, १९६२।

से कम मेरी ओर से तो नहीं ही। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरा सिखाया हुआ आदमी इमारत के काम में ऐसी गलती करे। उसमें तुम्हारी ही नहीं मेरी भी बदनामी होती है"।[1]

'महान चेहरा'[2] में कुशल और प्रसिद्ध कहानीकार 'अमूल्य' के व्यक्तित्व को अंकित किया गया है। महान् बनने के लिये सतत उद्योगशील युवक के व्यक्तित्व की रचना जिस कुशलता से अमरकान्त द्वारा हो सकती थी, वह इस कहानी में दृष्टिगत नही होती। बहुत सी घटनाओं और प्रसंगों को जुटा कर कहानीकार ने अपने कर्त्तव्य को पूर्ण समझ लिया है। विश्वविद्यालय के होस्टल जीवन का चित्रण अवश्य ही आकर्षक है। परन्तु उससे व्यक्तित्व-विश्लेषण का उद्देश्य पूरा नहीं होता।

'गाड ब्लेस यू'[3] में महेन्दरनाथ ने जयसिंह नामक एक सैनिक को पूरी क्षमता के साथ कहानी के फलक पर प्रस्तुत किया है। 'मेरी' और 'एलिन' के रूप तथा कृत्रिम स्वागत-शिष्टाचार के जाल में फँस कर वह कंगाल हो जाता है। बड़ी निष्ठुरता से उसे घर से बाहर जाने को विवश किया जाता है। बम्बई के नगर जीवन का एक कटुसत्य।इस पात्र के व्यक्तित्व के माध्यम से पूरे आकर्षण के साथ व्यक्त हुआ है।

नैतिकता के आडम्बर पर सन्तान लिप्सा और बाह्य पवित्रता के आवरण पर तेज प्रकाश डालते हुए मोहन सिंह सेंगर ने 'खुशी का एक आँसू'[4] शीर्षक कहानी की रचना की है। स्वार्थी नपुंसक और क्रूर पिता के चरित्र का रहस्योद्घाटन कर पति की सन्तान-इच्छा की पूर्ति के लिये अवसर से लाभ उठाने वाले कामुक वैद्य को अपना सतीत्व अर्पित करने वाली माता की रोमांचक आत्मकथा को प्रस्तुत कर सेंगर जी ने नारी व्यक्तित्व का असामान्य किन्तु सर्वथा सत्य रूप विश्लेषित किया है।

द्विजेन्द्र नाथ मिश्र 'निर्गुण' की कहानी 'घोड़ी'[5] वर्तमान दशक की विशेष महत्वपूर्ण कहानियों में स्थान पाने योग्य है। सहनशीलता की सीमा पार कर जाने पर नारी का धैर्य कितने वेग से खण्डित होता और वह कितने क्रान्तिकारी निर्णय पर पहुँचती है, इसका उदाहरण 'राजरानी' के व्यक्तित्व के विश्लेषण से प्राप्त होता है। सुरेन्द्र त्रिपाठी की कामुकता पाशविक रूप ग्रहण कर लेती है और वह अपनी पत्नी

---

१. वही, पृ० ६७।
२. 'नई कहानियाँ', अक्तूबर, १६६६।
३. 'नई कहानियाँ', जून, १६६४।
४. वही।
५. 'सारिका', जुलाई, १६६६।

राजरानी और उसकी बहिन सुषमा को समान रूप से अपने भोग का साधन बनाना चाहता है। नारी उसकी दृष्टि में 'बछेड़ी' ही नहीं 'घोड़ी' है। राजरानी के व्यक्तित्व में कहानीकार ने कहानी के अन्तिम भाग में विद्रोह, दृढ़ निश्चय के साथ गृह त्याग की क्षमता और स्वावलम्बन के वरेण्य तत्वों को विकसित कर दिया है। सारी घटनाओं पर तीव्र दृष्टि डालती हुई राजरानी कहती है :

'बात तो सालों पहले ही हो गयी थी—सुहाग रात को ही हो गयी थी, उसी वक्त मुझे यह घर छोड़ देना था, लेकिन मैं ही जानवर होकर इतने लम्बे अरसे तक इस घर में जिन्दा रही। लेकिन अब नहीं—अब कतई नहीं— बहुत हो लिया, बहुत सह लिया मैंने। अब घोड़ी बनकर इस अस्तबल में रहने की ताकत मुझमें कतई नहीं है··· कतई नहीं है··· ।'[1]

राजरानी के व्यक्तित्व में आज की विद्रोहिणी नारी का आक्रोश और दृढ़ निश्चय पूरी शक्ति से व्यक्त हो उठा है।

नयी कहानी में भी पात्रों के बाह्य आकृति का संक्षिप्त किन्तु सोद्देश्य वर्णन उपलब्ध होता है। मानव मन से उसका सम्बन्ध जोड़ना आज का कहानीकार आवश्यक समझता है। ममता कालिया के 'छुटकारा'[2] शीर्षक कहानी में बन्ना की आकृति का अंकन करती हुई लेखिका उसके अन्तर को बाह्य से सहज ही जोड़ देती है :

'गहरी शाम में बन्ना की क्रीम रंग की बुशर्ट सफेद नजर आ रही थी। उसका कद दूर से औसत से कम लग रहा था। बैन्गजं में उसके शरीर में एक कड़ा-पन था, वह अब ढीला हो आया था। दिन और रात के इस गाढ़े सन्धि-स्थल में हमें एक दूसरे की चाल ऐसी लगी जैसे डाक बाँट लेने के बाद खाली थैला हिलाते डाकिए की।'[3]

मनहर चौहान ने 'ऊधो का लेना न माधो का देना'[4] में एक विचित्र और व्यवहारिक प्रश्न उठाया है। सेक्स को गायब कर देने की कल्पना को प्रस्तुत करने वाला पात्र स्वयं में कितना कुंठित और वासनाग्रस्त है इसका विवेचन कहानीकार ने पूरी सशक्तता के साथ किया है। यौन सम्बन्ध के विश्लेषण से सम्बद्ध अंश विचारणीय है—

---

१. 'सारिका', जुलाई, १९६६, पृ० ६७।
२. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६।
३. वही, पृ० ४७।
४. वही, नवम्बर, १९६६।

'सारी दुनिया में आज एक नैतिकता की एक-ही धुरी घूम रही है—यौन-सम्बन्ध। आज क्या ऐसा नहीं लगता कि वह धुरी बदल दी जानी चाहिए? या गायब कर देनी चाहिए? पुराने जमाने में यौन-सम्बन्धों के कारण बच्चे पैदा होते थे। उनके लालन-पालन का सवाल होने के कारण नैतिकता के बन्धन लगाए गये··· आज··· ।'[1]

शानी की 'गुफाएँ'[2] शीर्षक रचना एक ऐसे पात्र को कहानी के फलक पर प्रस्तुत करती है जो पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं और विश्वासों का प्रतीक है। रहमत चाचा के रूप में शानी ने पुरानी परम्परा में ढले हुए, सहानुभूति और करुणा का वरदान बाँटने वाले मौलवी को चित्रित किया है। उसके मन में असीम दया और ममता है उनके प्रति, जो दुआ और सद्वचन में विश्वास रखते हैं। 'अम्मा' के चरित्र के रूप में विगत पीढ़ी की अवशिष्ट मान्यताओं और नारी-हृदय की करुण-कोमल अनुभूतियों का समन्वित रूप विश्लेषित हुआ है।

'लेनिन का साथी'[3] में भीष्म-साहनी ने अति सूक्ष्म व्यंग्य द्वारा ऐसे पात्र का व्यक्तित्व-विश्लेषित किया है, जो लेनिन के साथ साधारण से साधारण घटना और संयोग को जोड़कर अपना महत्व सिद्ध करने को आकुल है। महान् और उच्चपदस्थ नेताओं तथा अधिकारियों से अपना सम्बन्ध किसी भी प्रकार जोड़ कर अपनी महत्ता सिद्ध करने वाले व्यक्तियों के चरित्र पर इस पात्र के माध्यम से तीव्र प्रकाश पड़ता है। कहानीकार का उद्देश्य पात्र विशेष के व्यक्तित्व में निहित स्वयं लघुता की भावना को कलात्मक ढंग से विश्लेषित करना है। यह प्रयोग अपने में निस्सन्देह महत्वपूर्ण है।

बहुत ही भावुक, करुण और संवेदनशील व्यक्तित्व 'घायल की गति'[4] शीर्षक कहानी में निसार अहमद की लेखनी से विश्लेषित हुआ है। पत्नी की निष्ठुरता बिल्ली के दो बच्चो की अकाल मृत्यु का कारण बनती है। बालिका रमा का तो मानों संसार ही उजड़ जाता है। पति की करुणा और सहानुभूति बिल्ली के प्रति सहज ही उद्वेलित होती है। और तब तो उसके विषाद की धारा अपनी सीमा तोड़ देती है जब उसे ज्ञात होता है कि उसकी पत्नी दो मृत बालकों को जन्म देकर स्वयं ही मृत्यु पथ पर तेजी से भागती जा रही है। मानवीय-वृत्तियों को सीधी और सरल रेखाओं से बड़ी आकर्षक शैली में विश्लेषित किया गया है।

१. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६, पृ० ५४।
२. 'कहानी', नवम्बर, १९६३।
३. 'कहानी', दिसम्बर, १९५९।
४. 'कहानी', दिसम्बर, १९५९।

'धुन्ध'[1] में वेद राही ने एक बालिका के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। ऐक्ट्रेस बनने के लिये विवश की जाने वाली 'सुधा' आधुनिक युग की महत्वाकांक्षा का परिणाम भुगतने को तैयार हो जाती है। एडवानी उसका पिता है जो उसकी ऐक्टिंग से लखपती होना चाहता है। स्टूडियो के वातावरण में बालिका सुधा अनेक मानसिक उथल-पुथल की सीढ़ियों को पार कर 'उर्वशी' जैसी नायिका बनने के निष्कर्ष पर कैसे पहुँच जाती है, इस विवरण को प्रस्तुत करते हुए कहानीकार ने उसके अन्तर का मनोविज्ञानवेत्ता के समान विश्लेषण किया है।

नरेश मेहता का 'अनबीता अतीत'[2] व्यक्तित्व-विश्लेषण का एक विशिष्ट प्रयोग है। डाक्टर द्रविड़ के रूप में एक अध्ययनशील, कर्मठ किन्तु पार्थिव आवश्यकताओं—विशेषतः शारीरिक भूख—की ओर ध्यान न देने वाले बौद्धिक पात्र के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है। उनकी सद्यः पाणिग्रहीता तारु विचित्र तत्वों का समन्वय है। उसमें सौन्दर्य, ममत्व, आदर और सबसे बढ़कर आत्मीयता प्रदान करने और पा लेने के गुण विद्यमान हैं। अनेक स्थितियों से गुजरती हुई पति के सहानुभूति और अधिकार के दो बोल पाकर वह सन्तुष्ट हो जाती है। नारी मन के रहस्य को सुलझाने का प्रयत्न कहानीकार ने बड़ी सतर्कता से किया है।

प्रियदर्शी प्रकाश की 'प्रेमिकाएँ'[3] स्वयं में आकर्षक और तथ्यपरक होते हुए भी व्यक्तित्व के हलके आभास देकर ही समाप्त हो जाती हैं। इन आभासों—(इम्प्रेशन्स) में न कोई सम्बन्ध सूक्ष्म है न कोई गतिशीलता। भय और वर्जनाओं का विवरण दे कर प्रणयशील के चटखारे लेने वाले तीन प्रेमियों के व्यक्तित्व के कुछ खंड उभरने के लिये आकुल से हैं परन्तु कहानीकार उन्हें ऊपर आने नहीं देता।

गुरबेल सिंह पन्नू के 'जीनत'[4] में मजदूर, मोची और कारीगरों के व्यक्तित्व की जीवन्त प्रतिष्ठा हुई है। अनेक संकट, अभाव और अपमान भी 'जीनत' जैसी नारी के धैर्य को तोड़ नहीं पाते। आनेवाले भविष्य में उसका विश्वास जाग उठता है। अनेक उदास, सूखे और पीड़ित चेहरे उसके मन में उभरते हैं परन्तु आशा का सूत्र वह छोड़ती नहीं है। उसके विचार हैं :—

"मेरा नाम जीनत है। मैं यहाँ बम्बई में अपनी लाखों बहिनों में घिरी खड़ी हूँ। स्थिर और अडिग। इन्सान को मैं अपनी गोद में सँभाले बैठी हूँ। मैं जानती हूँ

---

१. 'सारिका', मई, १९६६।
२. 'सारिका', मई, १९६६।
३. 'गल्प भारती', नवम्बर, १९६६।
४. 'कहानी', सितम्बर, १९६०।

कि यह मनुष्य जीवित रहना चाहिए, बाकी की सब मंज़िल इसे अपने बल के साथ पार कर लेनी है।"[1]

"काजल की कोठरी"[2] में श्रीमती सुधा सिंह ने अपने मन का विश्लेषण करते हुए व्यक्तित्व की परतों को खोलने का साहस प्रदर्शित किया है। असामाजिक तत्वों में जो मन भीतर ही भीतर रमता रहता है, और बाहर से जो सामाजिक संस्कारों का आवरण डाले रहता है, वह व्यक्तित्व का एक कठोर और अनिवार्य प्रेरक तत्व है। उसके विश्लेषण के माध्यम से कहानी लेखिका ने आज के पूरे समाज का मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर दिया है। इस मन की गति पर लेखिका की सटीक टिप्पणी है—

"उस मन के पर तो मैंने काट दिये है, वह उड़ नहीं पाता। लेकिन उसके अरमान बहुत हैं। वह हसीना की आँखों में झाँक कर देखना चाहता है कि उसके सुरमे के पीछे आँसू तो नहीं हैं। वह उसके पिशाची निर्मोह को उतार कर उसे खालिस औरत देखना चाहता है। वह चाहता है कि हसीना से दो टूक बोल ले। वह नहीं चाहता कि इस नाली की दुर्गन्ध से अपने को बचाऊँ। वह उस दुर्गन्ध की चरम सीमा खोजता है। वह यह भी जानने को उत्सुक है कि लड़कियों के सौदे क्या बिल्कुल लड़कियों जैसे ही किये जाते हैं। कुएँ पर नहाती अधनंगी औरतों की देह में गीली साड़ी का चिपकना उसे बड़ा अच्छा लगता है।"[3]

यह विश्लेषण वैयक्तिकता के धरातल से उठकर समाज के एक विशाल वर्ग पर छा जाता है। इसमें से अधिकांश के मन की यही दशा है।

'यक्ष सुन्दरी : द्वन्द्व : लंका का योद्धा'[4] सुशील कुमार की एक रोचक कहानी है। आर्य और अनार्य संस्कृति के संघर्ष के सन्दर्भ लेकर लेखक ने यक्ष सुन्दरी कांतारा के व्यक्तित्व का आकर्षक शैली में निरूपण किया गया है। तत्कालीन वातावरण का सृजन करने में कहानीकार ने अपनी सतर्कता का परिचय दिया है। उपयुक्त वातावरण में ही मकरन्द, गन, त्रिशिरा, शूर्पणखा और कान्तारा के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है।

प्रकाश नगायच ने 'चचलम की नर्तकी'[5] शीर्षक कहानी में मध्यकालीन भारत

---

१. वही, पृ० ४५।
२. वही, सितम्बर, १९६०।
३. 'कहानी', सितम्बर, १९६०, पृ० ६५।
४. 'नीहारिका', मार्च, १९६६।
५. 'कादम्बिनी' जनवरी, १९६२।

को ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर शहजादा कुतुबअली शाह और नर्तकी भाग-मती की प्रेम कथा का अंकन करते हुए भावपूर्ण शैली में दोनों के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है। विपरीत परिस्थितियों और दैवी प्रकोप दोनों के प्रेम को और परिपुष्ट बनाता है। बादशाह को जब शाहजादे के साहस और वीरता का रहस्य ज्ञात होता है, मूसा नदी की धारा को घोड़े की पीठ पर बैठ कर पार कर जाने की घटना ज्ञात होती है तो दोनो को विवाह सूत्र में बाँध देता है। भावुकता का प्रवाह शाहजादे के व्यक्तित्व को अपूर्व गति प्रदान करता है।

'दमयन्ती'[1] शीर्षक कहानी में स्वरूप ढौंढियाल ने दो समानान्तर कथाएँ प्रस्तुत की हैं। सुप्रसिद्ध पौराणिक कहानी नल-दमयन्ती के आख्यान से सन्दर्भ ले कर भाग्य की मारी हुई 'दमयन्ती' नाम की निम्नवर्गीया युवती का करुण रूप इस कहानी में अंकित किया गया है। आर्थिक विपन्नता के कारण उसके पिता दो हजार रुपयों में उसे एक वृद्ध को बेच देते हैं। अनेकानेक आघात सह कर भी वह जीवन युद्ध में आगे बढ़ती है। नारी की मौन करुणा और स्वभाव-सिद्ध सहनशीलता उसके व्यक्तित्व में समन्वित है।

---

१. 'नीहारिका', मार्च, १९६६।

उपसंहार

कहानी ने इस समय तक साहित्य में लोकप्रिय और सशक्त विधा का विशेष गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। मानव और उससे सम्बन्धित समस्त क्रियाओं का निरूपण एवं विश्लेषण कहानी द्वारा होने लगा है। अब यह एक मान्य तथ्य है कि कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण एक ऐसी अनिवार्य प्रक्रिया है जिसके बिना कहानी अपने लक्ष्य अथवा संवेद्य तक नही पहुँच सकती। मानव व्यक्तित्व के चतुर्दिक घटनाओं और उनसे सम्बद्ध स्थितियों का कहानी के आकार में विस्तार होता रहता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से यह प्रमाणित हो गया है कि व्यक्तित्व विकसनशील औरस्वसत्तायुक्त विशिष्ट तत्व है। जीवन के विविध कार्य-व्यवहार, विचार और भाव मानव व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण में सतर्क कहानीकार इन सब तथ्यो पर अपनी विवेकपूर्ण दृष्टि रखता है। इसमें सन्देह नही कि कहानी का मुख्य विषय मानव है। और प्रत्येक मानव का पृथक् व्यक्तित्व होता है जो उसकी समस्त क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का प्रेरक है। मानव व्यक्तित्व के विश्लेषण द्वारा कहानीकार उसकी निगूढ़ रहस्यमयता पर भी विचार करता है। पात्रों के व्यक्तित्व की गहराई में उतर कर वह उसकी ज्ञात-अज्ञात विशेषताओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

जीवन के विविध कार्यकलाप मानव व्यक्तित्व की व्याख्या के लिये विश्वसनीय संकेत प्रस्तुत करते हैं। इसलिये आवश्यक है कि कहानीकार मानव व्यक्तित्व को जीवन के क्रियात्मक पक्ष के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करें। जीवन से कट कर पात्र के की व्यक्तित्व का कोई महत्व नहीं रह जाता। कहानीकार अपने पात्रों के व्यक्तित्व की सर्जना कल्पना और अनुभव के आधार पर करता है। विभिन्न स्थितियों में रख कर वह स्वरचित पात्रों के व्यक्तित्व का आवश्यकतानुकूल विश्लेषण भी करता है। पात्र की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते हुए वह उनका सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व से जोड़ता चलता है। तात्पर्य यह है कि कहानी में पात्र और उसके व्यक्तित्व की प्रधानता होती है। इसलिये कहानीकार पूर्ण दक्षता व सतर्कता के साथ पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित और विश्लेषित करता है।

कहानी मनोवैज्ञानिक प्रयोगों और निष्कर्षों को ग्रहण करती हुई पात्रों के व्यक्तित्व की मनोविज्ञान-सम्मत व्याख्या प्रस्तुत करती है। यह सत्य है कि कहानीकार

मनोवैज्ञानिक या मनोविश्लेषक नहीं होता, और ऐसा बनने का प्रयत्न करने पर वह कहानीकार के धर्म और दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाता, अतएव उसकी व्याख्या एवं विश्लेषण में कलात्मक-विधान एवं सांकेतिकता का प्राधान्य होता है। विभिन्न युगों में मनोविज्ञान ने जो महत्वपूर्ण देन कथा-साहित्य को दी है उसे सन्तुलन के साथ कथा-भूमि पर प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न पाश्चात्य-साहित्य में व्यापक रूप से हुआ है। विगत तीन दशकों में हिन्दी कहानी-साहित्य ने भी मनोविज्ञान के निष्कर्षों और परीक्षणों से प्रेरणा ग्रहण की है। फ्रायड, जुंग और एडलर की विचार-पद्धति ने हिन्दी के प्रमुख कहानीकारों को प्रभावित किया है। मनोविश्लेषणवादियों की परम्परा से आगे बढ़-कर सार्त्र और कामू ने जो विचार और चिन्तन प्रस्तुत किया है, उसका प्रभाव भी हिन्दी कहानियों में उपलब्ध व्यक्तित्व-विश्लेषण पर परिलक्षित होता है।

हिन्दी की प्रारम्भिक कहानियों मे धार्मिकता और नैतिकता को विशेष महत्व दिया गया। अतएव उपदेशप्रद कहानियों की रचना में ही प्रारम्भिक युग के कहानी-कार संलग्न रहे। पात्रों के व्यक्तित्व को बाह्य विशेषताओं द्वारा अभिव्यक्त करने की सीमा से आगे जाने की कल्पना भी इनके मन मे नहीं थी। तत्कालीन परिस्थितियों के आलोक में उन्होने मानवीय कार्यव्यापारों का वर्णन करना उपयुक्त समझा। पाठक-वर्ग का मनोरंजन भी इस युग की कहानियों का एक मुख्य उद्देश्य था। अतएव विचित्र कल्पनाओं के आधार पर अद्भुत पात्रों को कहानी की भूमि पर अवतरित किया गया है। किशोरीलाल गोस्वामी और गोपालराम गहमरी ने मनोरंजन के उद्देश्य से जो जासूसी कहानियाँ प्रस्तुत कीं उनमें व्यक्तित्व के कुछ मुख्य तत्वों को प्रकाश में लाने का अवसर प्राप्त हुआ। विवेक, साहस और तात्कालिक बुद्धि का प्रयोग कर जासूसों के व्यक्तित्व को प्रभावोत्पादक रूप में प्रस्तुत किया गया। यद्यपि उनके समस्त कार्यों के पीछे मनोरंजन और कौतूहल-प्रशमन का उद्देश्य निहित था, तथापि व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप से सम्बद्ध कतिपय महत्वपूर्ण तत्व उनकी रचनाओं के माध्यम से प्रकाश में आये। पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की ओर उनका ध्यान नहीं था, परन्तु उनकी वर्णनात्मकता को भेद कर अनेक अविस्मरणीय पात्र अपने आकर्षक व्यक्तित्व के साथ विश्लेषण की भूमि पर स्वयं आ गये। उनके बाह्य स्वरूप का वर्णन तो कहानीकारों ने ही कर दिया और उनके साहसपूर्ण कार्यों में उनके आन्तरिक स्वरूप के संकेत भी प्राप्त हुए।

इस शताब्दी के प्रथम दशक में ही अनुवादों के माध्यम से हिन्दी कहानी साहित्य के भाण्डार में महत्वपूर्ण रचनाएँ आई हैं। उनमें प्राप्त व्यक्तित्व-विश्लेषण की प्रेरणा ग्रहण कर हिन्दी कहानीकारों ने पात्रों की कल्पना और अवतारणा कहानी के फलक पर की है। पाश्चात्य और बँगला साहित्य की अनूदित रचनाओं ने विभिन्न

स्थितियों के मध्य पात्रों के व्यक्तित्व को निरूपित करने की दिशा-दृष्टि प्रदान की है। इस दशक मे कल्पना और भावोन्मेष की प्रधानता के साथ जिन कहानियों की रचना हुई उनमें पात्रों के मनोभावों के निरूपण की ओर भी कतिपय लेखकों का ध्यान आकृष्ट हुआ। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बंगमहिला को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। विविध प्रयोगों के माध्यम से हिन्दी कहानी इस दशा मे अपने विकास पथ को पाने के लिये प्रयत्नशील रही, अतएव व्यक्तित्व विश्लेषण का कोई निश्चित रूप इस काल में प्राप्त नहीं होता है। नैतिकता, उपदेश और आदर्शों की प्रधानता ने कहानी में पात्रों के सक्षम एवं स्वसत्तायुक्त व्यक्तित्व को उभरने का अवसर नहीं दिया। संयोग और आकस्मिकता को महत्व देकर कहानीकारों ने पात्रो को अपने इंगित पर चलने के लिये विवश किया। परिणामतः इस दशक की कहानी मे व्यक्तित्व-विश्लेषण का सन्तुलित और मनोविज्ञान-सम्मत रूप सामने न आ सका।

हिन्दी कहानी-साहित्य के विकास काल में (सन् १९११ से १९३६ तक) पात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण व्यापक रूप से हुआ है। देश और समाज की विभिन्न समस्याओं के आलोक में असंख्य पात्र अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ कहानी के विशद् क्षेत्र में प्रविष्ट हुए हैं। समाज सुधार के प्रयत्नों, राष्ट्रीय आन्दोलनो, आर्थिक समस्याओ, ग्राम जीवन से सम्बद्ध प्रश्नों और व्यक्तिगत अनुभवों की विविधता ने कहानी में अनेक वर्गों के भिन्न आयु, योग्यता, संस्कार और प्रभाव से युक्त पात्रों को स्थान दिया। इन पात्रो के व्यक्तित्व का विश्लेषण इनके कार्यों और विचारों के आधार पर किया गया। विकास काल में जो भावमूलक आदर्शवादी कहानियाँ प्रकाश में आईं उनमे पात्रों के भावुक और आदर्शवादी व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित किया गया। जयशंकर प्रसाद की प्रेरणा से जो यशस्वी कहानीकार भावुकता-मूलक आदर्शवादी कहानियों के क्षेत्र में अवतरित हुए वे आदर्श और भावप्रवणता को विशेष महत्व देते रहे। सर्वश्री राजा राधिकारमण सिंह, रायकृष्णदास, चण्डी प्रसाद हृदयेश, विनोदशंकर व्यास और उग्र इस संस्थान के प्रमुख कहानीकार हैं। इनकी रचनाओं में व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिये एक ही प्रक्रिया को ग्रहण किया गया है—आदर्श-रक्षण और उससे सम्बन्धित कार्यों एवं व्यवहारों का चित्रण। विकास काल में दूसरी ओर श्री प्रेमचन्द और उनके संस्थान के अन्य प्रतिभाशाली कहानीकार जैसे सर्वश्री विश्वम्भरनाथ जिज्जा, ज्वालादत्त शर्मा, सुदर्शन विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक और उपेन्द्रनाथ अश्क अपनी सशक्त रचनाओ के साथ हिन्दी कहानी के क्षेत्र में नवीन संभावनाओं को लेकर आते है। देश और व्यक्ति की अनेकानेक समस्याएँ उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति का वरदान प्राप्त करती हैं। व्यक्तित्व को यथार्थ की भूमि पर विश्लेषित करने का आग्रह इन रचनाओ में विद्य-

मान है। परन्तु अन्तिम लक्ष्य के रूप में आदर्श को ही प्रश्रय दिया गया है। व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप के विश्लेषण के प्रति प्रेमचन्द-संस्थान के कहानीकारों की विशेष रुचि रही है। अपने जीवन के उत्तर काल में मनोवृत्ति, लागडाँट, नशा, प्रेरणा, बड़े भाई साहब और कफन जैसी मनोविज्ञान और यथार्थ की आधारभूमि पर प्रस्तुत कहानियों की रचना कर पात्रों के व्यक्तित्व को आदर्श से पृथक् कर वस्तुजगत् के तत्वों और तथ्यों के बीच विश्लेषित करने का स्तुत्य प्रयास प्रेमचन्द द्वारा हुआ। इसी युग में श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की पात्रप्रधान कहानियाँ प्रकाश में आयीं। उनमें व्यक्तित्व-विश्लेषण का विशिष्ट रूप व्यक्त हुआ। आदर्श और जीवनगत वास्तविकताओं का संतुलित समन्वय इनकी कहानियों में उपलब्ध होता है।

विकास काल में समाज के संस्कारों, रीति-रिवाजों और कुप्रथाओं पर तीव्र व्यंग्य और मर्मस्पर्शी विवेचन प्रस्तुत करते हुए सर्वश्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भगवती प्रसाद वाजपेयी और चतुरसेन शास्त्री ने भावपूर्ण कहानियों की रचना की। इन कहानीकारों ने मानव-व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न रूपों को सामाजिक यथार्थ के मध्य देखा और उसे पूरी क्षमता से व्यक्त किया। सामयिक समस्याओं और प्रश्नों को कहीं पूरी व्याख्या के साथ पात्रों के व्यक्तित्व से जोड़ दिया गया और कहीं उनके सन्दर्भ ही प्रस्तुत किये गये। प्रतीकवादी कहानियों में पात्रो के व्यक्तित्व को सांकेतिक रूप से विश्लेषित किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि विकास काल में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण के अनेक रूप उपलब्ध होते हैं। प्रसाद संस्थान के कहानीकारों ने भावुक और आदर्शवादी पात्रों के व्यक्तित्व की आन्तरिक वृत्तियों की ओर संकेत प्रस्तुत कर व्यक्तित्व-विश्लेषण को सूक्ष्म और प्रभावशाली रूप प्रदान किया। प्रेम-चन्द संस्थान के कहानीकारों ने विभिन्न वर्गों के पात्रों के व्यक्तित्व के बाह्य रूप का विश्लेषण भी उतनी ही कुशलता से किया जितनी कुशलता से उनके मनोभावों, संवेगों और अन्तःप्रेरणाओं को सांकेतिक रूप से व्यक्त किया।

हिन्दी कहानी का उत्कर्ष काल (सन् १९२७ से १९४७ तक) दार्शनिक चिंतन और मनोविश्लेषणपरक विवेचन से अनुप्राणित है। सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी और पहाड़ी की कहानियों में दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की प्रधानता है। जैनेन्द्र जी ने कहानी में विचारों की गम्भीरता और विश्लेषण की तथ्यपरकता पर समान रूप से ध्यान दिया है। उनके चिन्तन और निष्कर्षों का प्रभाव उनकी कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व पर दृष्टिगत होता है। श्री अज्ञेय ने अपने विशद् अनुभवों का उपयोग कहानी रचना के क्षेत्र में किया है। अतएव कई प्रकार के पात्र उनकी कहानियों के अंक में अवतरित हुए हैं। इनमें क्रान्तिकारी, विद्रोही, शोषित और पीड़ित पात्र अधिक प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के साथ आये हैं। फ्रायड के मनोविश्लेषण

से प्रभावित कहानीकारों में श्री इलाचन्द्र जोशी का प्रमुख स्थान है। उनकी कहानियों में कुंठाओं, दमित वासनाओं और समस्यामूलक वृत्तियों का तात्विक विश्लेषण और कलात्मक निरूपण उपलब्ध होता है। भारतीय वातावरण से सम्बन्धित अनेक व्यक्तिगत एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उनकी कहानियों में समाधान की ओर बढ़ती हैं। उनके मध्य जिन पात्रों की क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण हुआ वे मनोवैज्ञानिक विवेचन के आधार पर सर्वथा विश्वसनीय है। श्री पहाड़ी की कहानियों मे यौन भावनाओं और क्रिया-व्यापारो का स्वच्छन्द वर्णन है। व्यक्तित्व के कुंठित और वासनाग्रस्त रूप का नग्न यथार्थवादी वर्णन उनकी रचनाओं की अपनी विशेषता है।

इस युग में व्यक्तित्व-विश्लेषण की दूसरी उल्लेखनीय परम्परा का प्रवर्तन एव नेतृत्व श्री यशपाल ने किया है। उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य मे पात्रो के व्यक्तित्व को स्वाभाविक रूप में उनकी क्षमताओं और दुर्बलताओं के साथ प्रस्तुत करती हैं। समाज के अनय, उत्पीडन एवं असन्तुलन का यथातथ्य रूप इनके द्वारा प्रस्तुत पात्रों के कार्यों, विचारों एवं प्रतिक्रियाओं के द्वारा प्रत्यक्ष हो जाता है। उत्कर्षकालीन कहानियों में यशपाल की रचना-शक्ति निरन्तर विकास के पथ पर रही है अतएव उत्तरोत्तर उनकी रचनाओं में अधिक स्वस्थ, सन्तुलित और सुनियोजित व्यक्तित्व-विश्लेषण का विकसनशील रूप दृष्टिगत होता है। श्री भगवतीचरण वर्मा की यथार्थवादी कहानियों में पात्रों को सुपरिचित घटनाओं के बीच नवीन आकर्षण के साथ आने का अवसर प्राप्त हुआ है।

उत्कर्ष काल में भावुकतामूलक कहानियों की परम्परा भी विकास के पथ पर रही है। सर्वश्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सियारामशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त, मोहनलाल महतो वियोगी और कमलाकान्त वर्मा ने भावुकतामूलक कहानियों की परम्परा को अग्रसित करते हुए ऐसे पात्रों को प्रस्तुत किया है जो भावुक, और आदर्शवादी हैं। परन्तु उन्हें काल्पनिक धरातल पर प्रतिष्ठित न कर वस्तु जगत मे स्थान दिया गया है। अतएव उनमें गतिशील व्यक्तित्व का आभास मिलता है। इस युग में परिवार और समाज की विविध समस्याओं से सम्बद्ध कहानियों की रचना का श्रेय सर्वश्री यमुनादत्त, कमलादेवी चौधरी, व्यथित हृदय, उषादेवी मित्रा और होमवती देवी को प्राप्त है। इनकी रचनाओं में पात्रों के व्यक्तित्व को पारिवारिक और सामाजिक संस्कारों, रीति-रिवाजों, कुप्रथा और शोषण-वृत्तियो से संयुक्त कर दिया गया है। सहनशीलता, करुणा और उदारता के साथ ही इन पात्रों द्वारा कहीं-कहीं विद्रोह और विरोध का स्वर भी ऊँचा हुआ है।

उत्कर्ष काल के पश्चात् हिन्दी कहानी में कुछ विशेष महत्वपूर्ण मोड युग परि-

वर्त्तन के कारण आये हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही देश और समाज के समक्ष जो विपुल और भिन्नरूपा समस्याएँ आयी हैं उनको विश्लेषित करने और उनका समाधान पाने के लिये हिन्दी कहानी सचेष्ट रही है। नगरों से ग्राम-अंचलों तक कहानीकार की दृष्टि गयी है। अतएव विविध क्षेत्रों से पात्रों का चयन कर युग की आवश्यकताओं के अनुकूल सक्षम रचनाएँ प्रस्तुत करने का प्रयत्न स्वातंत्र्योत्तर काल के कहानीकारों ने किया है। नगरों में जीवन की धारा सिमट कर स्वकेन्द्रित मानव को जन्म दे रही है। इस तथ्य की ओर नगरबोध से सम्बद्ध कहानियों में कहानीकारों का ध्यान आकृष्ट हुआ है। आंचलिक समस्याओं और परंपरागत मान्यताओं के प्रतिनिधि पात्रों को हिन्दी कहानी में बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत का सम्पर्क विश्व के अन्य राष्ट्रों से बड़ी तीव्र गति से बढ़ता गया है। अतएव अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर रचित कहानियों में भारतीय और विदेशी पात्रों के व्यक्तित्व को उपस्थित कर विश्लेषण की चयन-भूमिका विस्तार किया गया है। उन पात्रों के संस्कारों, व्यवहारों और क्रिया-प्रतिक्रियाओं का यथातथ्य विश्लेषण इन कहानियों में प्राप्त होता है।

इस युग में (सन् १९४८ से १९६६ तक) हिन्दी कहानी ने कई सोपानों को पार किया है। कहानी से 'नयी कहानी' फिर 'सचेतन कहानी' और अब 'अकहानी' की ओर भागती हुई कहानी स्वयं अपनी विचित्र कहानी का रहस्य समझ नहीं पा रही है। यथार्थ और मनोविज्ञान की शक्ति को प्राप्त कर अब यह कुंठित मानवीय वृत्तियों और विषाद की तिक्तता को व्यक्त करना अनिवार्य समझती है। कहानी के सम्बन्ध में यह दृष्टिकोण इस क्षेत्र में आने वाले वर्तमान दशक के उन होनहार युवकों का है जो पुरानी पीढ़ी से आगे निकल जाने के लिये प्रयत्नशील हैं। पिछले दशक ने जिन विशिष्ट प्रतिभाशाली कहानीकारों को जन्म दिया वे अब भी अपनी पूरी क्षमता से विभिन्न क्षेत्रों से पात्रों के सशक्त, प्रभविष्णु और सन्तुलित व्यक्तित्व का विश्लेषण अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं में कर रहे हैं। पुरानी पीढ़ी के रंजे हुए कहानीकार भी जैनेन्द्र, अज्ञेय, जोशी, अश्क और यशपाल जैसी प्रतिभा के नेतृत्व में युग के साथ चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी कहानियों के पात्र अत्याधुनिक समस्याओं के प्रकाश में अपने व्यक्तित्व की क्षमता का परीक्षण कर रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल ने जिन प्रतिभाशाली और रचना-कुशल कहानीकारों को विभिन्न प्रकार के पात्रों को प्रस्तुत करने और उनके व्यक्तित्व को विश्लेषित करने की प्रेरणा दी है उनमें प्रमुख हैं :—

सर्वश्री राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, अमरकान्त, शिवप्रसाद सिंह, फणीश्वर नाथ रेणु, निर्मल वर्मा, लक्ष्मी नारायण लाल, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, शैलेश मटियानी, मन्नू भण्डारी, नरेश मेहता, केशव प्रसाद मिश्र कमलेश्वर, भैरव प्र० गुप्त,

मनहर चौहान, अमृतराय, उषा प्रियंवदा, मार्कण्डेय, सोमावीरा, हृदयेश और प्रयाग शुक्ल आदि।

इन कहानीकारों ने पात्रों के व्यक्तित्व के आन्तरिक स्वरूप का विश्लेषण मनोयोगपूर्वक किया है। व्यक्तित्व के बाह्य रूप का सांकेतिक उल्लेख भी उपयुक्त स्थानों पर प्राप्त होता है। उसका सम्बन्ध आन्तरिक वृत्तियों से अनिवार्य रूप से जोड़ दिया गया है। इस युग में कहानीकार व्यक्तित्व-विश्लेषण की सूक्ष्मता की ओर गतिशील ही नहीं उस पर कुछ सीमा तक अधिकार भी प्राप्त कर चुके हैं।

हिन्दी कहानी-साहित्य के विभिन्न युगों में व्यक्तित्व-विश्लेषण के स्वरूप पर विचार करते हुए हमने यह देखा कि कहानीकार ने उपदेशात्मकता, चरित्रविधान, मनोविश्लेषण और दार्शनिक चिन्तन के सोपानों से क्रमशः आगे बढ़ते हुए मानव व्यक्तित्व के बाह्य और अन्तर का व्यापक दृष्टि से विश्लेषण किया है। जहाँ आरम्भिक कहानियों में पात्र के व्यक्तित्व का आभास मात्र है, वह कहानीकार के अँगुलि-निर्देश पर चलने को विवश है, वहाँ विश्लेषण केवल विवरण-प्रधान है। प्रेमचन्द युग तक आते-आते उसमें सोद्देश्यता का प्रवेश हो गया है और व्यक्ति के चरित्रगत गुणावगुणों को प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त होने लगी। अतएव व्यक्तित्व-विश्लेषण के आयाम का विस्तार हो गया है।

उत्कर्ष काल में मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विश्लेषण की प्रधानता ने व्यक्तित्व के गूढ़ रहस्यमय रूप की ओर कहानीकार को आकृष्ट किया है। व्यक्ति की अपेक्षा उसने अव्यक्त को अधिक महत्व दिया है और इस प्रकार व्यक्तित्व विश्लेषण की धारा अन्तर्मुखी हुई है। साम्यवादी विचारधारा ने वर्ग-संघर्ष और सामाजिक चेतना के प्रकाश में जीवन की यथार्थताओं से टकराने वाले पात्रों के व्यक्तित्व को विश्लेषित किया है। नग्न-चित्रण के मोह ने कहानीकार को यौन-वृत्तियों के संवाहक के रूप में पात्रों के व्यक्तित्व-विश्लेषण की ओर प्रेरित किया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में विविध प्रवृत्तियों, समस्याओं और सामयिक प्रश्नों ने कहानीकार के समक्ष नये पुराने पात्रों के भिन्न रूपों की सुविस्तृत पंक्तियाँ खड़ी कर दी हैं। इन पात्रों के व्यक्तित्व के अन्तर में प्रवेश करने के लिये कहानी कई रूपों में आगे बढ़ी है। उसका आधुनिकतम रूप 'अकहानी' हो या वह 'सचेतन कहानी' की संज्ञा को धारण किये रहे, यह समीक्षकों के लिये अभी विवाद का विषय है। परन्तु यह सत्य है कि कहानी की व्यक्तित्व-विश्लेषण की दिशा में जो उपलब्धियाँ हैं उनका विशिष्ट मूल्य है। पात्र को तथा उसके सक्षम और स्वसत्तायुक्त व्यक्तित्व को कहानी में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका है और निश्चित है कि कहानी के आगामी स्वरूप में भी व्यक्तित्व-विश्लेषण को मुख्य एवं आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार किया

जायेगा, क्योंकि पात्रों के बिना किसी कहानी की कल्पना नहीं की जा सकती और पात्रों के व्यक्तित्व-शून्य होने पर कहानी का अस्तित्व एवं महत्व समाप्त हो जायगा। जब कहानी में पात्रों के व्यक्तित्व की अवतारणा होगी तो उसका विश्लेषण भी होगा ही। अतएव व्यक्तित्व-विश्लेषण भावी युग की कहानियों का एक महत्वपूर्ण अंग होगा।

सहायक ग्रन्थ-सूची

कहानी-संग्रह

१. अंकुर	: उपेन्द्रनाथ अश्क	:
२. अभिशप्त	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
३. अग्निसमाधि	: प्रेमचन्द	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
४. अनाख्या	: रायकृष्ण दास	: भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
५. अधूरा चित्र	: पहाड़ी	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
६. अशान्त	: विनोदशंकर व्यास	: हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरिया सराय
७. अस्थिपिंजर	: यमुनादास वैष्णव	: नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर
८. अमावस	: चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	: विश्व साहित्य ग्रंथमाला
९. आँधी	: जयशंकर प्रसाद	: लीडर प्रेस, इलाहाबाद
१०. आकाशदीप	:	:
११. आँधी के छन्द	: उषादेवी मित्रा	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
१२. आँखों की थाह	: रायकृष्ण दास	: हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ
१३. इन्स्टालमेंट	: भगवतीचरण वर्मा	: भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
१४. इन्दुमती	: किशोरीलाल गोस्वामी	: काशी हितचिन्तक प्रेस
१५. इन्द्रजाल	: जयशंकर प्रसाद	: लीडर प्रेस, इलाहाबाद
१६. इन्द्रधनुष	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रन्थागार, कवि कुटीर, लखनऊ
१७. उन्माद	: कमलादेवी चौधरी	: साहित्य सेवा सदन, मेरठ
१८. ऐतिहासिक कथायें	: इलाचन्द्र जोशी	: हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

२०. क्रान्तिकारी कहानियाँ	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रन्थागार, कवि कुटीर, लखनऊ
२१. कफन	: प्रेमचन्द	: सरस्वती प्रेस, बनारस
२२. कोठरी की बात	: 'अज्ञेय'	: सरस्वती प्रेस, बनारस
२३. गांधी टोपी	: राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह	: राजराजेश्वरी साहित्य मन्दिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद
२४. गल्प गुच्छ	: प्रेमचन्द	: सरस्वती प्रेस, बनारस
२५. ग्राम्य जीवन की कहानियाँ	: प्रेमचन्द	: हिन्दी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय, बम्बई
२६. गल्प मन्दिर	: विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	
२७. गल्प कुसुमांजलि	: राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह	साहित्य मन्दिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद
२८. गल्प पंचक	: गोपालराम गहमरी	: जासूस कार्यालय, बनारस
२९. गुल बहार	: किशोरीलाल गोस्वामी	: बनारस कल्पतरु प्रेस
३०. गल्पांजली	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रन्थागार, कवि कुटीर लखनऊ
३१. चन्द्रकला	: चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	: हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई
३२. चित्रशाला	: विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	: गंगा ग्रंथागार, ३६ गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ
३३. चतुरी चमार	: पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	: भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
३४. चक्कर क्लब	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
३५. चतुर चंचला	: गोपालराम गहमरी	: भारत भ्रमण यंत्रालय, रीवाँ
३६. चरित्र निर्माण की कहानियाँ	: व्यथित हृदय	: भार्गव पुस्तकालय, बनारस
३७. चन्द्रिका	: किशोरीलाल गोस्वामी	: बनारस कल्पतरु प्रेस
३८. चिनगारियाँ	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रंथागार, कवि कुटीर लखनऊ
३९. चार कहानियाँ	: सुदर्शन	
४०. छींटें	: उपेन्द्रनाथ अश्क	
४१. छाया में	: पहाड़ी	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
४२. छाया	: जयशंकर प्रसाद	: लीडर प्रेस, इलाहाबाद

क्रम	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक
४३.	ज्वारभाटा	: भगवती प्रसाद बाजपेयी	
४४	जयदोल	: अज्ञेय	: भारतीय ज्ञानपीठ, कलकत्ता
४५.	ठुमरी	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	:
४६.	डाकू की पहुनाई	: गोपालराम गहमरी	: जासूस, गहमर, गाजीपुर
४७.	तर्क का तूफान	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय लखनऊ
४८	तीन तहकीकात	: गोपालराम गहमरी	: चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस
४९.	तीर्थ यात्रा	: सुदर्शन	:
५०.	दो धारा	: उपेन्द्रनाथ अश्क	:
५१.	गुलेरी जी की अमर कहानियाँ	: चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	: सरस्वती प्रेस, बनारस
५२.	दीप मालिका	: भगवती प्रसाद वाजपेयी	
५३.	दो बांके	: भगवतीचरण वर्मा	: भारती भंडार, लीडर प्रेस इलाहाबाद
५४.	दीवाली और होली	: इलाचन्द्र जोशी	: हिन्दी साहित्य स०, प्रयाग
५५.	दोजख की आग	: पाण्डेय बेचन शर्मा	: गंगा ग्रंथागार, कवि कुटीर, लखनऊ
५६.	देवरानी जेठानी की कहानी	: गौरी दत्त शर्मा	: हरदेव सहाय, ज्ञान सागर प्रेस, मेरठ
५७.	धर्मयुद्ध	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
५८.	धरोहर	: होमवती देवी	: इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबाद
५९.	ध्रुवयात्रा	: जैनेन्द्र कुमार	
६०.	नया रास्ता	: पहाड़ी	: न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद
६१.	निशानियाँ	: उपेन्द्रनाथ अश्क	:
६२.	नीम चमेली	: उषा देवी मित्रा	: इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबा
६३.	नीलम देश की राजकन्या	: जैनेन्द्र कुमार	
६४.	नन्दन निकुंज	: चण्डीप्रसाद हृदयेश	: गंगा ग्रंथागार, लाटूश रो लखनऊ
६५.	निर्लज्जा	: पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रंथागार, कवि कुटी लखनऊ
६६.	नासिकेतोपाख्यान	: सदल मिश्र सं० श्याम सुन्दर दास	: नागरी प्रचारिणी सभा, का

६७. पिकनिक	: कमलादेवी चौधरी	: सरस्वती प्रेस, बनारस
६८. परम्परा	: अज्ञेय	: ,, ,,
६९. पिंजड़े की उड़ान	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
७०. प्रतिध्वनि	: जयशंकर प्रसाद	: लीडर प्रेस, इलाहाबाद
७१. पचास कहानियाँ	: विनोदशंकर व्यास	: भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग
७२. पनघट	: सुदर्शन	
७३. पुष्पलता	: सुदर्शन	
७४. पेरिस की नर्तकी	: विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	
७५. पाँच कहानियाँ	: सुमित्रानन्दन पन्त	: लीडर प्रेस, प्रयाग
७६. प्रेम सागर	: लल्लुराम सं० पं० योगधन मिश्र	: फोर्ट विलियम कालेज
७७. प्रेम पचीसी	: प्रेमचन्द	: हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता
७८. प्रेमपूर्णिमा	: प्रेमचन्द	: ,, ,,
७९. प्रेमद्वादशी	: प्रेमचन्द	: गंगा ग्रंथागार, लखनऊ
८०. प्रेमतीर्थ	: प्रेमचन्द	: सरस्वती प्रेस, बनारस
८१. प्रेमचतुर्थी	: प्रेमचन्द	: हिन्दी पुस्तक एजेंसी, हरिसन रोड, कलकत्ता
८२. प्रेमप्रसून	: प्रेमचन्द	: गंगा ग्रंथागार, लखनऊ
८३. प्रेम प्रतिमा	: ,,	: भार्गव पुस्तकालय, बनारस
८४. प्रेरणा	: ,,	: सरस्वती प्रेस, बनारस
८५. प्रेम पंचमी	: ,,	: गंगा ग्रंथागार, लखनऊ
८६. पाँच फूल	: ,,	: सरस्वती प्रेस, बनारस
८७. फूलों का कुर्ता	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
८८. बया का घोसला	: पहाड़ी	: न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद
८९. बेलपत्र	: कमला देवी चौधरी	: निष्काम प्रेस, मेरठ
९०. बोल	: सियारामशरण गुप्त	: साहित्य सदन, झाँसी
९१. विवाह की कहानियाँ	: व्यथित हृदय	: भार्गव पुस्तकालय, बनारस
९२. भय का राज्य	: चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	: विश्व साहित्य ग्रंथमाला, लाहौर
९३. भूमिलता	: इलाचन्द्र जोशी	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
९४. भस्मावृत चिंगारियाँ	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ

९५. भूली बात	: विनोदशंकर व्यास	: पुस्तक मन्दिर, बनारस
९६. मोली	: पहाड़ी	: प्रकाश गृह, इलाहाबाद
९७. महावर	: उषादेवी मित्रा	: इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद
९८. मधुपर्क	: भगवती प्रसाद वाजपेयी	
९९. मानुषी	: सियारामशरण गुप्त	: साहित्य सदन, झाँसी
१००. मंगल मोद	: अन्नपूर्णानन्द	: सरस्वती प्रेस, बनारस
१०१. मधुकरी	: विनोदशंकर व्यास	: भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
१०२. मानसरोवर (आठ भाग)	: प्रेमचन्द	: सरस्वती प्रेस, बनारस
१०३. मृतक भोज	: प्रेमचन्द	: मोतीलाल ला०, १६० हरिसन रोड, कलकत्ता
१०४. यथार्थवादी रोमांस	: पहाड़ी	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
१०५. यात्रा	: कमला देवी चौधरी	: नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर
१०६. ये तेरे प्रतिरूप	: अज्ञेय	
१०७. राजा भोज का सपना	: राजा शिवप्रसाद	: नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
१०८. रानी केतकी की कहानी	: इंशाअल्ला खां	: सरिमल प्रकाशन प्रतिष्ठान
१०९. रेशमी	: पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रंथागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ
११०. लड़कों की कहानी	: राजा शिवप्रसाद	: मेडिकल हाल प्रेस, बनारस
१११. लिली	: पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	: गंगा ग्रंथागार, लखनऊ
११२. वातायन	: जैनेन्द्र	
११३. विपथगा	: अज्ञेय,	लीडर प्रेस, इलाहाबाद
११४. वो दुनिया	: यशपाल	: विप्लव कार्यालय, लखनऊ
११५. वोल्गा से गंगा तक	: राहुल सांकृत्यायन	: किताब महल, इलाहाबाद
११६. शिकार की कहानियाँ	: रघुवीर सिंह	
११७. शैतान मण्डली	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	: गंगा ग्रंथागार, कवि कुटीर, लखनऊ
११८. शरणार्थी	: अज्ञेय	

११९. सफर : पहाड़ी : नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ

१२०. सड़क पर : पहाड़ी : प्रकाश गृह, इलाहाबाद

१२१. स्वप्न भंग : होमवती देवी : इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

१२२. सुहागरात की कहानियाँ : व्यथित हृदय : भार्गव पुस्तकालय, बनारस

१२३. सुदर्शन सुमन : सुदर्शन

१२४. सतमी के बच्चे : राहुल सांकृत्यायन : किताब महल, इलाहाबाद

१२५. सेंडफोर्ड और मरटन : राजा शिवप्रसाद : मेडिकल हाल प्रेस, बनारस

१२६. सावनी समा : राजा राधिकारमण प्र० सिंह : साहित्य मन्दिर, शाहाबाद

१२७. सुदर्शन सुधा : सुदर्शन

१२८. सुप्रभात : सुदर्शन

१२९. स्त्रियों का ओज : चतुरसेन शास्त्री : गौतम बुक डिपो, दिल्ली

१३०. सुकुल की बीबी : पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : लीडर प्रेस, प्रयाग

१३१. सप्तसरोज : प्रेमचन्द : हिन्दी पुस्तक एजेंसी, १२६हरिसन रोड, कलकत्ता

१३२. सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ : उपेन्द्रनाथ अश्क

१३३. हिरन की आँखें : पहाड़ी : न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद

१३४. हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ : सं० भगवती प्रसाद : वाजपेयी : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१३५. हिलोर : भगवती प्रसाद वाजपेयी : गंगा ग्रंथागार, लखनऊ

१३६. त्रिवेणी : गोपालराम गहमरी : मैनेजर 'जासूस', बनारस

१३७. ज्ञान दान : यशपाल : विप्लव कार्यालय, लखनऊ

समीक्षा ग्रन्थ

१३८. आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान : डा० देवराज उपाध्याय

१३९. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास : डा० श्रीकृष्ण लाल

१४०. आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका : डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

१४१. आधुनिक साहित्य : पं० नन्ददुलारे बाजपेयी
१४२. आधुनिक हिन्दी-कथा साहित्य : गंगा प्रसाद पाण्डेय
१४३. आधुनिक हिन्दी साहित्य : सं० हजारी प्रसाद द्विवेदी
१४४. उन्नीसवीं शताब्दी : डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
१४५. कहानी का रचना-विधान : डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
१४६. कहानी कला : गिरिधारीलाल गर्ग
१४७. कहानी कला और प्रेमचन्द : डा० श्रीपति शर्मा
१४८. प्रेमचन्द : उनकी कहानी कला : डा० सत्येन्द्र
१४९. प्रसाद का कथा-साहित्य : श्री मार्कण्डेय सिंह
१५०. प्रेमचन्द: उनकी कहानी : डा० सत्येन्द्र
१५१. प्रेमचन्द : चिन्तन और कला : डा० इन्द्रनाथ मदान
१५२. मनोविज्ञान और शिक्षा : डा० सरयू प्रसाद चौबे
१५३. विचार और अनुभूति : डा० नगेन्द्र
१५४. स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य : सीताराम शर्मा
१५५. साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचन्द
१५६. साहित्य सरोवर : डा० गोपीनाथ तिवारी
१५७. साहित्य का श्रेय और प्रेय : श्री जैनेन्द्र कुमार
१५८. सिद्धान्त और अध्ययन : गुलाब राय (द्वितीय भाग)
१५९. साहित्यालोचन : डा० श्याम सुन्दर दास
१६०. साहित्य सर्जना : इलाचन्द्र जोशी
१६१. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आ० रामचन्द्र शुक्ल
१६२. हिन्दी कहानी : उद्भव और विकास : डा० सुरेश सिन्हा
१६३. हिन्दी गद्य-साहित्य : डा० रामचन्द्र तिवारी
१६४. हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया : डा० परमानन्द श्रीवास्तव
१६५. हिन्दी कहानी : एक सर्वेक्षण : राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

१६६. हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन : डा० ब्रह्मदत्त शर्मा
१६७. हिन्दी कवियों की शिल्प विधि का विकास : डा० लक्ष्मी नारायण लाल
१६८. हिन्दी कहानियाँ : डा० श्रीकृष्ण लाल
१६९. हिन्दी कथा-साहित्य : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
१७०. हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास : डा० रणवीर रांगा

संस्कृत

१७१. काव्य प्रकाश : आ० मम्मट
१७२. काव्यालंकार : आ० भामह
१७३. काव्यालंकार : आ० रुद्रट
१७४. काव्यादर्श : आ० दण्डी

अँग्रेजी

175. An Advanced History of India : R. C. Majumdar
176. An Outline of Psychology : Mc. Dougall
177. Common Principles in Psychology and Philosophy : J. C. Maccurdy
178. Contemporary School of Psychology : R. Woodworth
179. Corpus Jurris, Vol. 48 : Edited by W. Pack and D. J. Kiser
180. English Influence on Hindi Language and Literature : Dr. Vishwa Nath Misra
181. Enjoyment of Literature : R. P. Wddwin
182. Explorations of Personality : W. A. Murray
183. General Psychology : G. Murphy
184. Interpretation of Dreams : S. Freud
185. Indian Philosophy : Dr. S. Radhakrishnan
186 India's Past : A. A. Macdonell

187. Impact of Science on Society : Bertrand Russel
188. Lights on Yoga : Aurobindo (Yogiraj)
189. Literature and Psychology : F. L. Lucas
190. New Introductory Lectures on Psycho-analysis : S. Freud
191. Personality : A Psychological Interpretation : G. W. Allport
192. Plot or Character : Lajoi Egri
193. Proclaimation of Second Coloquinum on Personality Investigation : E. W. Burgess
194. Psychology of Personality : Ross Stagner
195. Psycho-Dynamics of Abnormal Behaviour : J. F. Brown
196. The British Impact on India : P. Griffiths
197. The Craft of Fiction : Percy Lubbock
198. The Character of Man : E. Mounier
199. The Cambridge History of India (Vol. VI) : H. H. Dodwell
200. The Living Character : William E. Barret
201. The Modern Short Story : H. E. Bates
202. The Naughty Child of Fiction : Q. Patrick
203. The Psychology of Character : A. A. Roback
204. The Short Story : Barry Pain
205. The Short Story : Seon O. Faolain
206. The Unconscious : Prince Martin
207. Theories of Personality : Hall & Lindzey
208 The Theory of Literature R. Wellock

209. Understanding Human Nature : Alfred Adler
210 Writing for Young People : M. L. Robinson

कोश

१. अमरकोश
२. कानसाइज इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका
३. डिक्शनरी ऑव वर्ल्ड लिटरेचर-- शिप्ले
४. डिक्शनरी आव फलासफी एण्ड साइकोलोजी--सं० जेम्स मार्ग बाल्डविन
५. वृहद् हिन्दी कोश-- सं० कालिका प्रसाद एवं अन्य
६. संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी (मोनियर विलियम्स)
७. हिन्दी साहित्य कोश--(सं० डा० धीरेंद्र वर्मा-दोनों भाग)

पत्र-पत्रिकाएँ

१. आलोचना
२. आस्था
३. इंदु
४. कल्पना
५. कहानी
६. कादम्बिनी
७. केन्द्र
८. गल्प भारती
९. धर्मयुग
१०. नई कहानियाँ
११. नीहारिका
१२. नवनीत
१३. प्रतीक
१४. माधुरी
१५. विशाल भारत
१६. सरस्वती
१७. सरिता
१८ साप्ताहिक हिन्दुस्तान